

बापूवरी
प्रेम-प्रसादी



प्रेम



1954

घनश्यामदास खिड़ला

का
र
की
रा
जा
की

खण्ड ३

गांधी-युग की
एक महत्वपूर्ण पत्रावली

वि
श्व
म

© देवब के अधीन

• प्रकाशक भारतीय विद्या भवन बम्बई • प्रथम संस्करण १९७७

• मूल्य दस रुपये • मुद्रक रूपक प्रिंटर्स, नवीन गाहदरा, दिल्ली ३२



समर्पण

वायु की यह प्रकाश वायु की समर्पण

वायु के समय 2 40 मुझे जो पत्र लि

क मैंने जो उल्टे लिखा उन सब का यह

है। महारथ माई इत्यादि ने भी जो मुझे लि

क मैंने उल्टे लिखा, उन सब का भी समर्पण

इसलिए है कि वे सब पत्र-व्यवहार वायु की

प्रकार का समर्पण करी हुआ है। मैंने

उनको जो उल्टे लिखा वह सब वायु के लिखे ही

उन सबको वायु के ही पत्र व्यवहार मान

इस प्रकार मैं इस लिखे स्थान दे दिया

कि यदि मेरे पत्रों को निराल दिया जा

ती तारी सुलभा टट जाती है।

वायु के अधिकतर पत्र लिखे ही

य यदि कभी पत्रों ने मुझे उल्टे लि

उगकी ओर से महादेव माई इत्यादिने उगोनी के
 पुत्रे मिले, ती उग सब पत्रो का हिरोने उगवा
 परके रसके समावेश हुआ है। जब उगोनी का
 प्रकाशन होगा ती उगी वरु सब हिरो पत्रो का
 उगोनी में उगवाइवके समावेश होगा।

इस प्रकाशन में वायुके भागकी उच्च
 मग कहतेका मग समाजकी एक उगुपम उव
 कलमिल गावाये। शिक्षा भी मिलती है, क्योंकि
 वायुके पत्रो के सब तरह का महामा है। सब
 से महत्वकी बात यह समझनी है कि इन सब
 में व्यक्तिगत आदेश, राजनैतिक और धार्मिक
 आदेश गोभी है वर-एक महा चाकेगी ५८
 एक साम्य युद्धके है। एक युद्धके उद्देश है,
 जो उममग समाजके जीवनमें आकाशी उ। रि। २
 उरें है। अपने जीवनमें उवत। ए सबके में।

क छपात का अरु न है मरा कोई हकल्पन ही था
मेरी पुत्र वधु हरमादा आ गये। पर आगे
मे उच्छाला ॥ डौ (मैने उरवी मान लिया।
सही का फल यह प्रकाश है। छपात का उ
डौ (उल्लार दुगि प्रहार में उलिया का है। मे
विशाल रसिम नैमी कई उदोती प्रभा नदि मे।

पुपरीन काई के मूल पूर्ण प्रलय व्यापक थी
मी प्रकीर रोग दल मेरे प्रचाल निगरे। उ
एक सारे मन व्यवहार को पठक कुछ पन जा
"नये उदें निशाम देते का परा मर दिम।।
उगार कुछ पन इस प्रकाश नके उनिशाम दि
एक सारक ही मेरी मैमी पूरु हकल्पन
यमी आर हो है डौ (वर उव मू है। एतनी म
मैमी दूटने पली वाजा (मे आ सानी के ग
मिनी।

नये उदिक दू। डू के काका काल
कली का डू। जायीने के कुछ प्रगतिं ह

जे जोगिदा है उमे दादा दातामदादा एवमिसे
आन है। दादा एव तापु पुत्रु है। उरोने
हसगरी प्रमिदा लिखके मुने उलोत वृताभा
विमा ।

उपातेदा हेतु तो मर है कि लोको दो वापू
के मनुष्य एवमकी मराणादादरी - समझने मे
हसमतामिने । म मरमी हेतु है कि ते दो
सौवमो देवाद्द हरे हवमन उममममर
ममममम, को कि वापू दए उलोती ममती
को दो को सामवे कादरी अममरोग । हरे
मरी ममम है । हसलिमे भी मर मंगर उव-
ममम है ।

मेरे जीवनमे ईश्वर को मर रमा ली है
कि मे व पूदा प्रमपा मतो लारी - मर ममम उर
मामममम - उगे ममममे मे मममममी लो उ ।
उने द्वारा मर मर महेल ममे कि म भी मने
पाये । ममममम मर ममम उलोत उमममम

कार्य की लिखित रूप में उद्योग संतोष है
कोवि -

यस-सनाकी विनाम व्युत्प
उद्योग दृष्टि में उद्योग है

दरती हुई उद्योग संतोष है
देखती गानी है"

मे जो जिदा है उमरे दादा का लमदा (दा एव विशेष
आन है। दादा एव हाथु युग है। उमरे ने
हम गरीबी मुक्ति का लिये (दा) मुझे उमरे वृत्ता भी
दिना।

उपरोक्त हेतु तो पर है कि माता को वायु
के मनुष्य हृदय की मरणाधिकारी - मनुष्य के
हृदय का लिये। पर मरणा हेतु है कि मैं दो
हो वयो के बाद पर मरणा उमरे मरणा
वगैरह, जो कि वायु का उमरे मरणा
हो दो ही नाम के वरि उमरे। पर
मरी मरणा है। हृदय के भी पर मरणा उमरे-
मरणा है।

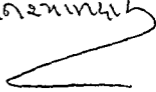
मेरे जीवन के ईश्वर का पर मरणा है
कि मैं वरुदा प्रेम का मरणा है - पर मरणा उमरे
मरणा वरुदा - उमरे मरणा के मैं वरुदा मरणा (दा) है।
उमरे दादा मरणा (दा) मरणा कि मरणा मैं
माता। मरणा का पर मरणा उमरे उमरे मरणा

ਪੰਜੀ ਲਿਖਿ ਕੇ ਮੁਖੇ ਤੁਯੇ ਨ ਲਾਏ ਮੈ ਹੈ.

ਕਿ -

ਮਨ-ਮਨਾ ਕੀ ਬਿਨਮ ਘੁਮ
ਤੁਯਾ ਏ ਦਿਖੇ ਤੀ ਨੀ ਹੈ

ਦੁਖੀ ਹੁੰ ਤੁਝ ਵੀ ਜਾਂ ਕੇ
ਦੇ ਦੁਖੀ ਜਾਨੀ ਹੈਂ"

ਬਲਬਲਬਲ


प्रस्तावना

गाधीजी पत्र व्यवहार में बहुत ही नियमित थे। पत्र-व्यवहार के द्वारा ही वे असह्य लोग स हार्दिक सम्बन्ध रख सकते थे और उह जीवन के ऊचे आदर्श सिद्ध करने के लिए प्रेरित करत थे। जिसके साथ सम्य ध आया उसके व्यक्तिगत जीवन में हृदय से प्रवेश पाना उसकी योग्यता उसकी खूबी और उसकी गहराई को समझकर उसके विकास में मदद देना, यह थी उनके पत्र-व्यवहार की विशेषता। गाधीजी का पत्र-साहित्य उनके लेखा और भाषणा के जितना ही महत्व का है। उनके व्यक्तित्व को समझने के लिए उनका यह पत्र साहित्य बहुत ही उपयोगी है। मैंने देखा है कि पत्रों में उनकी लेखन शक्ती भी अनोखी होती है। सप्ताह में शायद ही ऐसा कोई नेता हुआ होगा जिसमें अपन पीछे गाधीजी के जितना पत्र व्यवहार छोड़ रखा हो।

गाधीजी का पत्र व्यवहार पढते समय मुझे हमेशा यही प्रतीत हुआ है, माना मैं पवित्र गंगाजी में स्नान और पान कर रहा हू। मुझे उसमें हमेशा पवित्रता और प्रसन्नता का ही अनुभव हुआ है। उसके इद गिद का वायुमंडल पावन, प्राणदायी और प्रशमकारी है।

इसीलिए जब श्री घनश्यामदासजी विडला न गाधीजी के साथ का अपना पत्र-व्यवहार मेरे पास भेज दिया तो मुझे बड़ा जानत हुआ और उत्साह के साथ मैं उसे पढने लगा। जैसे-जैसे पढता गया वसे वसे स्पष्ट होता गया कि यह केवल घनश्यामदासजी और गाधीजी के बीच का ही पत्र व्यवहार नहीं है। इसमें ता गाधीजी के अभिन साथी स्व० महादेवभाइ देसाइ और घनश्यामदासजी के वाच का पत्र-व्यवहार ही सबसे अधिक है। इसके अतिरिक्त गाधीजी के जय साविया, दशक वर्द्धनताओ और पायकर्ताओ अग्रज वाइसरामा और कूटनीतिज्ञा के साथ का पत्र-व्यवहार भी है और उनकी मुलाकाता का विवरण भी।

संक्षेप में—हमारे युग का एक महत्व का इतिहास इनमें भरा हुआ है।

यह दफ्तर मेर मुह से उद्गार निकल पडा

काश ! यह सारी सामग्री पाच साल पहले भर हाया में आती।'

आज मरी उन्नत इक्यान्वे वय की है । विस्मरण ने अपनी हुकूमत मेरे दिमाग पर जोरा से चलाना शुरू कर दिया है । कई महत्व की बातें अब बड़ी रफ्तार के साथ भूलता जा रहा हूँ । मुझे विपाद के साथ कूल करना चाहिए कि पाच साल पहले यह सामग्री मरे हाथ में आती तो जितनी गहराई में उतरकर मैं उसमें अवगाहन कर सकता उतना आज नहीं कर पाऊँगा । फिर भी मैं मानता हूँ कि मूलभूत तत्वा के चिंतन की वृत्ति अब भी मुझमें साबूत है । उसी के सहारे मैं इस सागर में डुबकी लगाने का ढाँस कर रहा हूँ ।

सन १९१५ के पहले हमारे देशवासियों ने स्वराज्य प्राप्ति के तरह-तरह के प्रयोग आजमाने शुरू किये थे । हमने विद्रोह का प्रयोग करके देखा । प्राथमिक विनय का मार्ग भी आजमाया । औद्योगिक प्रगति में जाने बढने के प्रयत्न किये । सामाजिक सुधार के आन्दोलन चलाये । धर्म निष्ठा बचाने की भी काशिशें की । स्वदेशी और बहिष्कार के रास्ते से भी चले और धर्म पिस्तौल का मार्ग भी अपनाकर देखा । स्वराज्य के लिए जो जो इलाज सूझे, या सुझाये गये सब लगन के साथ आजमा कर हम भारतवासियों ने देखा । फिर भी न तो स्वराज्य नजदीक आया, न आशा की कोई किरण दिखाई दी । हमारे चर्चे प्रयत्न तो अंग्रेजों का राज हटाने के बदले उसमें मजबूत करने में ही मददगार हुए । देश बिलकुल घोर निराशा में पड़ा हुआ था, जब सन १९१५ में गांधीजी दक्षिण आफ्रिका से भारत लौट आये ।

दक्षिण आफ्रिका में जहाँ न हमारा राज था न वायुमंडल बहा गांधीजी ने जनपद, करीब-करीब असस्कारी और दुर्द्वेषी भारतीयों की मदद से सत्याग्रह का एक तेजस्वी आंदोलन चलाकर उसमें सफलता पाई । दक्षिण आफ्रिका के इस अभिनव प्रयाग की ओर उसके नेता कमवीर गांधी की खबरें हमने यहाँ बड़े आदर के साथ पढ़ी थी या सुनी थी । भारत लौटते ही जब गांधीजी ने आसतु हिमाचल यात्रा करके सत्याग्रह की अपनी जीवन दृष्टि को समझाना शुरू किया, तब स्वराज्य की जिह सचमुच भूख थी वे सब लोग उनकी ओर आकर्षित हुए । देखते ही-देखते गांधीजी के हृदय का तार राष्ट्र हृदय के तार के साथ एकराग हो गया और सारा देश उनके पीछे निःसर्क होकर चलने के लिए तैयार हुआ । गांधीजी भारतीय सभ्यता और भारतीय पुरुषार्थ के महान प्रतिनिधि बने । त्याग सयम और तजस्विता की भाषा बोलने लगे जो भारतीय लोकहृदय की भाषा थी । उनका असाधारण विनम्रता और लोकोत्तर आत्मविश्वास को देखकर देश का विश्वास हुआ कि अवश्य ही यह कुछ करके दिखानेवाले हैं ।

और जिस प्रकार सभी नदियाँ अपना सारा जल लेकर समुद्र को जा मिलती हैं उसी प्रकार स्वराज्य की लालसावाले हम भिन्न भिन्न सस्कारों, पृष्ठभूमियों

और जीवन प्रणालिया के सभी लोग गांधीजी से जाकर मिले। प्रसन्नता के साथ हमने उनके नतुत्व को स्वीकार किया और उनके दिखाये हुए कार्यों में अपना अपना हिस्सा जदा करने के लिए प्रवृत्त हुए।

उस समय उनके निकट सपक में आये हुए, उनके गिन चुने आत्मीय जना में श्री घनश्यामदासजी बिडला का स्थान अनोखा है।

यह तो सभी जानते हैं कि घनश्यामदासजी देश के इन गिने धनिका में से एक हैं। उनका मुख्य क्षेत्र तो औद्योगिक ही रहा है। चाय यह भी जानते हैं कि उन्होंने खूब कामाया है और अनेक सत्कार्यों में मुक्तहस्त से खूब खर्च भी किया है। गांधीजी का जब भी धन की जरूरत महसूस हुई, उन्होंने बिना सकारण घनश्यामदासजी के सामने बह रखी और घनश्यामदासजी ने बिना विलंब के उसकी पूर्ति की है।

गांधीजी की अनवर शिखाओं में एक महत्व की शिक्षा थी कि 'धनिकों को अपने-आपको अपनी संपत्ति के धनी नहीं मानना चाहिए, बल्कि ट्रस्टी बनकर समाज की भलाई के लिए उसका उपयोग करना चाहिए।' 'यह समाज की ही संपत्ति मेरे पास है, मैं उसका धरोहर या विश्वस्त हूँ' ऐसा समझकर ही उसका वित्तियोग करना चाहिए। घनश्यामदासजी को यह शिक्षा तत्त्वतः मान्य न होते हुए भी उन्होंने वह अच्छी तरह से हृदयगम की है। देश में अनेक जगहों पर बिडला के नाम से जो शिक्षण संस्थाएँ, धर्मशालाएँ, अस्पताल आदि चल रहे हैं, वे इसकी गवाही देते हैं। उनकी अपनी संस्थाओं के जलावा ऐसी अनेक संस्थाएँ दश में हैं जो प्रधानतया बिडलो के दान से चल रही हैं। गांधीजी की करीब करीब सभी संस्थाएँ घनश्यामदासजी के धन से भाग्यवित्त हुई हैं। स्व० जमनालालजी बजाज को छोड़कर शायद ही दूसरा कोई धनिक हागा, जिनमें घनश्यामदासजी के जितना गांधी-काम का आर्थिक बोझ उठाया है।

एक प्रसिद्ध किस्सा है

गांधीजी दिल्ली आय हुए थे। उन्ही दिना गुम्दव रवीन्द्रनाथ भी अपनी विश्वभारती के लिए धन संग्रह करने हेतु दिल्ली पहुँचे। वे जगह जगह अपने नाट्य और नृत्य का कार्यक्रम रखते थे और बाद में लोगों से धन के लिए प्रार्थना करते थे। गांधीजी को यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ। इतना बड़ा पुरुष बुढ़ापे में धन इकट्ठा करने के लिए मा भी केवल साठ हजार रुपया के लिए इस प्रकार अपना नाट्य और नृत्य का प्रदर्शन करता फिर यह गांधीजी को जमहा हुआ। उन्हें तुरंत घनश्यामदासजी का ही स्मरण हुआ। महादवभाद से उन्हें कहलवा दिया आप अपने धनी मित्रों का लियें और छह-दस हजार की रकम गुम्दव का भेजकर हिन्दुस्तान का इस शम से बचा लें।

वहूँ की आवश्यकता नहीं कि स्वयं धनश्यामदासजी ने यह पूरी रकम गुरु देव का गुप्तदान के रूप में भेजकर उनको चिंतामुक्त कर दिया।

गांधीजी ने अपनी सस्याओ के लिए ता उनसे रुपये लिए ही, दुमरा को भी इस तरह दिलाये। इस पत्र संग्रह में ऐसे कई प्रमाण मिलेंगे, जिनसे यह मालूम होगा कि गांधीजी ने किन किन लोगों को रिडलाजी व द्वारा आर्थिक सहायता पहुंचाई थी और रिडलाजी ने किन हद तक अपनी संपत्ति गांधीजी के चरणों में अर्पित की थी।

मचमुच एक तरह से यह एक अद्वितीय मन्त्र था।

लेकिन इस पर से कोई यह न मान बैठे कि उदारता के साथ दान देना इतना ही बेवत धनश्यामदासजी का गांधी काम के साथ सम्बन्ध रहा है।

स्वराज्य की जा साधना गांधीजी ने हमारे सामने रखी उसके दो प्रमुख अंग थे। एक था रचनात्मक और दूसरा राजनितिक।

गांधीजी ने देखा कि 'मामाजिक प्रतिष्ठा का उच्च नीच भाव' और 'सांस्कृतिक प्रणाली के लिए पसंद किया हुआ आपस पर भाव' इन दो तत्वों की नींव पर हमने अपना समाज विनाश तैयार किया है। परिणाम स्वरूप शांति स्वास्थ्य और सहजीवन के तत्व हमारे समाज जीवन में होते हुए भी हम राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता को मंगलान में जममथ हुए हैं। भारतवर्ष का पूरा इतिहास हम कमजोरी का प्रमाण होता है।

हमारी इस राष्ट्रीय कमजोरी को हटाकर भविष्य के प्राणवान सर्वाधिकारी नए समाज का निर्माण करना गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने हिंदू मुस्लिम एकता अस्पृश्यता निवारण छात्र प्रामोद्योग राष्ट्रभाषा प्रचार जैसे अठारह-धीन कार्यक्रम देश के सामने रखे और कहा कि इस कार्यक्रम का पूरा अमल ही पूरा स्वराज्य है।

गांधीजी का यह कार्यक्रम बस दया धर्म मूलक सेवा कायदा का कार्यक्रम नहीं था बल्कि बहुवर्षी बहुजाति बहुधर्मी बहुभाषी विशाल भारत को संघटित करने का एक दीर्घदर्शी प्रयास था। मानस परिवर्तन के द्वारा जीवन-परिवर्तन और जीवन परिवर्तन के द्वारा समाज परिवर्तन की सावभौम नीति का यह अभिन्न अंग था। इसमें गांधीजी ने पुराने मृत्यु का नया रूप देना प्रारम्भ किया था।

धनश्यामदासजी ने इस कार्यक्रम की नीतिकारण सभावनाओं को पहचानकर उसे हृदय से अपनाया। हिंदू मुस्लिम एकता और अस्पृश्यता निवारण जैसे कार्यक्रमों में उनकी कितनी गंभीर दिनचर्या थी और उनका अमल में लाने के लिए उन्होंने क्या क्या किया इसका प्रमाण इस संग्रह के कई पत्र देते हैं। गांधीजी के

साथ उनका अगर कहीं मतभेद रहा हा तो वह कुछ अंश में खादी की अधनीति के बारे में रहा होगा। इस मामले में स्वतंत्र विचार रखते हैं। फिर भी ध्यान खींचनवाली बात तो यह है कि स्वतंत्र विचार रखते हुए भी एक निष्ठावान सैनिक की भाँति बचरखा कातते रहे, यहाँ तक कि उन्होंने खादी का व्रत भी लिया। उनके इस अनुशासन प्रिय स्वभाव पर गांधीजी मुग्ध थे। उन्होंने अपनी खुशी व्यक्त करने के लिए घनश्यामदासजी को एक खास किस्म का चरखा भी भेंट में दिया था और उनके बते हुए सूत की सराहना करके 'जिस पवित्र काय का आपने आरम्भ किया है, उसका आप हरगिज न छोड़ें' इस प्रकार की तसीहत भी दी थी।

गांधीजी की एक विशेषता थी। वे मनुष्य के सदगुणों को तुरन्त परख लेते थे और दश हित के लिए उसका पूरा उपयोग कर लेते थे। हमारा अपने ऊपर जितना विश्वास होता है, उससे कहीं अधिक विश्वास गांधीजी का हम पर था। हमको गहते समय वे 'हमारी कमजोर धृष्टता को मजबूत बनाते थे' और अंत में हमारी सामान्य शक्ति से अधिक काम सहज ही हमसे करा लेते थे।

घनिक होत हुए भी धन की माया से अलिप्त रहने की घनश्यामदामजी की आकांक्षा को गांधीजी ने परख लिया था। उनकी व्यवहार कुशलता को भी परख लिया था। उनके विकास में मददगार होम के लिए गांधीजी ने जो उनका मांग लक्षण दिया है उसमें व्यापक मनुष्य जीवन के अनेक छोटे मोटे पहलुआ पर एक वातार्थी शिक्षा शास्त्री का प्रभाव हमें देखने का मितता है। गांधीजी के पत्रों की यह सबसे बड़ी विशेषता है।

इसमें भी विशेष बात तो यह है कि स्वयं घनश्यामदासजी के दिनअ और निमित्त जीवन का चित्र भी हम इस पत्र मशह में देखने को मितता है।

घनश्यामदासजी गांधीजी के प्रति आकर्षित हुए, गांधीजी की धर्म परायणता, नमनीयता और सत्य की खाज की उत्कटता को देखकर वह धीरे धीरे उनके परमभवत बन गये। गांधीजी का भी जिम्मेदारी उठाते थे उनका वाग अपना सिर पर लेना घनश्यामदासजी ने अपना कर्त्तव्य माना और पूरे हृत्स के साथ वह अदा किया।

मगर उन्होंने अपना पूरा हृत्स उत्साह के साथ उडेल दिया था गांधीजी के राजनतिक काय में। गांधीजी और सरकार के बीच उन दिना पदों की आड में जो कुछ चरता था उसका भीतरी इतिहास हम इस पुस्तक में पढ़ने का मितता है। हमारे युग के वे दिन ही ऐसे थे कि प्रनिष्ठा कुछ-न-कुछ नया इतिहास गांधीजी के आस पास हुआ या बना करता था। घनश्यामदासजी को गांधी काय के इसी अंग

म विशय और गहरी रचि थी। हर छोटी-बड़ी बात म गहराई के साथ ध्यान देते देत व धीरे धीरे उन गिन चुने व्यक्तिया म माने जाने लग जो गाधीजी का राजनतिक मानस अच्छी तरह स समझत है। देखते ही देखत व गाधीजी के राज नतिक मानस व विश्वासी व्याख्याता व रूप म अग्रेज राजनीतिज्ञा के सामन आत्मविश्वास के साथ पग बाने लग। गाधीजी किम दिशा म सोच रहे हैं इसका प्रयाल अग्रेज राजनीतिज्ञा को करा देना और अग्रेजा के मानस का प्रयाल गाधीजी को करा देना यह उहाने अपनी जिम्मेदारी मानी। यह स्वेच्छा-स्वीकृत जिम्म दारी थी जा उहाने असाधारण कुशलता और सफनता के साथ निभाई।

इम पुस्तक म घनश्यामदासजी का जो चित्त विशेष रूप से नजर के नामने जाना है वह है एन कुशल राजनीतिज्ञ का और वह कौरवा के दरवार म समगौते के लिए गये हुए श्रीकृष्ण का स्मरण हम करा देता है।

बरीय बत्तीस सात तब चले हुए इस पत्र व्यवहार को देखकर प्रथम भरे मन म आया कि मैं इसकी तीन स्वतंत्र पुस्तकें बनाने की सलाह दू। एक मे भिफ गाधीजी और घनश्यामदासजी के बीच का ही पत्र-व्यवहार हो, जिससे हम इस बात का ज्ञान हा सके कि कितने विविध विषया की गहराई म उतरकर और प्रत्येक विषय का मम समग्रर गाधीजी करते अपने माने हुए आत्मीय जना का मागदशन करत व और किम प्रकार अपना वात्मल्य उन पर उडलत थे।

दूसरी पुस्तक म गिन महादेवभाई और घाश्यामदासजी क बीच का ही पत्र व्यवहार हा जिसमे दो निवटतम स्नेहिया व मिथय वार्तालाप की मुशरू का हम अनुभव मिल।

और तीसरी म बारी की गभी मामग्री हो जा एतिहासिक दृष्टि म महत्व रखती है।

मगर सोचन पर मुग लगा कि नहीं जो सामग्री यहा है वह बत्ती ही एकत्र प्रकाशित की जानी चाहिए जसी यह जमश यहा दी गई है भल ही पुस्तक का आकार बढ़ जाय या नस दा जिला म प्रकाशित करना पडे। यह काँ मनारजन क लिए निग्री हूँ पुराव नही है। यह ता एन मागर है जा गूर एतिहासिक महत्त्व रखता है। जानकारी पाणिया जब हमार जमान का समजन की वाशिश करेगी तब उह क् सत्प्र-प्रय बन्त ही उपयागी और आनपक मालूम हागा। इतिहास क विद्याविषय क लिए इमम काफी महत्व की सामग्री भरी हुई मिलेगी। यह एन बन्त ही बीमती एतिहासिक दस्तावेज है जिसका पूरा महत्व भविष्य की पाणिया हा जानगी।

सर्वह

मर जस गांधी भक्त को तो इससे लोकोत्तर प्रेरणा मिली है।

इस उम्र में जीव तवीयत की ऐसी हालत में यह प्रस्तावना तयार कर सका
उसका बहुत बड़ा श्रेय मेरे तरण साथी श्री रवीन्द्र केलेकर को मदद का है।

स्नेहाधीन,

DR. JAL K. K. K. K. K. K. K.
स्नेहाधीन के साथी

अनुक्रमिका

१६३७

१ महादेव देसाई को मेरा पत्र (७ जुलाई)	अनु०	३
२ महादेव देसाई को मेरा पत्र (८ जुलाई)	अनु०	५
३ मुझे महादेव देसाई का पत्र (९ जुलाई)	अनु०	६
४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१२ जुलाई)	अनु०	११
५ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१६ जुलाई)	अनु०	१२
६ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१७ जुलाई)	अनु०	१६
७ मुझे वापू का पत्र (१८ जुलाई)	मूल	१७
८ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१९ जुलाई)	अनु०	१८
९ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१९ जुलाई)	अनु०	२१
१० महादेव देसाई का मेरा पत्र (२० जुलाई)	अनु०	२३
११ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२२ जुलाई)	अनु०	२५
१२ वापू को लाड लिगलियनो का पत्र (२३ जुलाई)	अनु०	२७
१३ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२३ जुलाई)	अनु०	२७
१४ अपक्षाए	अनु०	३१
१५ वाङ्गराय को वापू का पत्र (२७ जुलाई)	अनु०	३३
१६ महादेव देसाई का मेरा पत्र (२७ जुलाई)	अनु०	३४
१७ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२८ जुलाई)	अनु०	३७
१८ वापू का मेरा पत्र (२९ जुलाई)	मूल	३८
१९ महादेव देसाई को मेरा पत्र (३० जुलाई)	अनु०	३९
२० मुझे महादेव देसाई का पत्र (१ अगस्त)	अनु०	४३
२१ मुझे महादेव देसाई का पत्र (३ अगस्त)	अनु०	४७
२२ मुझे महादेव देसाई का पत्र (४ अगस्त)	अनु०	४८

२३	मुझे महादेव दसाई का पत्र (६ अगस्त)	अनु०	४६
२४	बापू का मरा पत्र (८ अगस्त)	अनु०	५३
२५	महादेव दसाई का मरा पत्र (८ अगस्त)	अनु०	६०
२६	महादेव दसाई का मरा पत्र (९ अगस्त)	अनु०	६०
२७	महादेव दसाई का मरा पत्र (१६ अगस्त)	अनु०	६१
२८	बापू का जी० बनिधम का पत्र (१७ अगस्त)	अनु०	६५
२९	मुझे महादेव दसाई का पत्र (१८ अगस्त)	अनु०	६६
३०	मुझे बापू का पत्र (१८ अगस्त)	मूल	७०
३१	मुझे महादेव दसाई का पत्र (१९ अगस्त)	अनु०	७१
३२	महादेव दसाई का मरा पत्र (२० अगस्त)	अनु०	७२
३३	सीमा प्रांत के गवर्नर को बापू का पत्र (२४ अगस्त)	अनु०	७३
३४	मुझे महादेव दसाई का पत्र (२५ अगस्त)	अनु०	७४
३५	मुझे महादेव दसाई का पत्र (२७ अगस्त)	मूल	७७
३६	मुझे महादेव दसाई का पत्र (३० अगस्त)	अनु०	७८
३७	बापू को अमान के कठिया का तार (२ सितम्बर)	अनु०	८०
३८	अमान के कठिया का बापू का तार (३ सितम्बर)	अनु०	८१
३९	अमान के कठिया का बापू का तार (३० सितम्बर)	अनु०	८२
४०	बापू का मरा पत्र (२१ अगस्त)	मूल	८३
४१	महादेव दसाई का मरा पत्र (६ सितम्बर)	अनु०	८४
४२	पत्र हल करने के तार में मरा अभिप्राय (४ सितम्बर)	अनु०	८५
४३	रिहा हुए कठिया में अपील	अनु०	८६
४४	मुझे महादेव दसाई का पत्र (६ सितम्बर)	अनु०	९१
४५	मुझे महादेव दसाई का पत्र (७ सितम्बर)	अनु०	९३
४६	पत्र-वहाय कठिया में नहीं	अनु०	९४
४७	महादेव दसाई का मरा पत्र (८ सितम्बर)	अनु०	९६
४८	वाल्मराय को बापू का पत्र (८ सितम्बर)	अनु०	९७
४९	सीमा प्रांत के गवर्नर का बापू का पत्र (८ सितम्बर)	अनु०	९८
५०	भूताभाई दसाई का मरा पत्र (१६ सितम्बर)	अनु०	९९
५१	मुझे महादेव दसाई का पत्र (१६ सितम्बर)	अनु०	१००
५२	महादेव दसाई का मरा पत्र (२० सितम्बर)	अनु०	१००
५३	मुझे महादेव दसाई का पत्र (२० सितम्बर)	अनु०	१०१
५४	महादेव दसाई का मरा पत्र (२० सितम्बर)	अनु०	१०६

इकतीस

५५	महादेव देसाई का मेरा पत्र (१८ नवम्बर)	अनु०	१०८
५६	वापू को ट्वाजा नाजिमुद्दीन का पत्र (२८ नवम्बर)	अनु०	१०९
५७	महादेव देसाई को नलिनीरजन सरकार का पत्र (२७ नवम्बर)	अनु०	१११
५८	ट्वाजा नाजिमुद्दीन को वापू का पत्र (२८ नवम्बर)	अनु०	११३
५९	महादेव देसाई का शरतचन्द्र गोस का पत्र (२८ नवम्बर)	अनु०	११४
६०	महादेव देसाई को मरा पत्र (४ दिसम्बर)	अनु०	११५
६१	महादेव देसाई को मरा पत्र (५ दिसम्बर)	अनु०	११६
६२	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१३ दिसम्बर)	अनु०	१२०
६३	महादेव देसाई को मरा पत्र (१३ दिसम्बर)	अनु०	१२०
६४	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१४ दिसम्बर)	अनु०	१२८
६५	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१६ दिसम्बर)	अनु०	१२६
६६	महादेव देसाई का मरा पत्र (१७ दिसम्बर)	अनु०	१२९
६७	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१७ दिसम्बर)	मूल	१३०
६८	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१८ दिसम्बर)	अनु०	१३१
६९	लाड लादियन को मेरा पत्र (१९ दिसम्बर)	अनु०	१३२
७०	महादेव देसाई का मेरा पत्र (२० दिसम्बर)	अनु०	१३३
७१	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२१ दिसम्बर)	अनु०	१३५
७२	महादेव देसाई को मेरा पत्र (२५ दिसम्बर)	अनु०	१३७
७३	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२२ दिसम्बर)	अनु०	१३८
७४	महादेव देसाई को मरा पत्र (२२ दिसम्बर)	अनु०	१४१
७५	महादेव देसाई का मेरा पत्र (२५ दिसम्बर)	अनु०	१४०
७६	महादेव देसाई को मेरा पत्र (२८ दिसम्बर)	अनु०	१४३
७७	महादेव देसाई का मेरा पत्र (३० दिसम्बर)	अनु०	१४४
७८	महादेव देसाई का मरा पत्र (३१ दिसम्बर)	अनु०	१४५

बिना तारीख के पत्र

७९	वापू का वाइमगाय का तार	अनु०	१४८
८०	अडमान के कलिया से सम्बन्धित तांग का जापान प्रश्न	अनु०	१४८

१ महादेव देसाई को मरा पत्र (३ जनवरी)	अनु०	१५३
२ मुझे महादेव देसाई का पत्र (६ जनवरी)	अनु०	१५४
३ महादेव देसाई को मेरा पत्र (११ जनवरी)	अनु०	१५७
४ महादेव देसाई को मरा पत्र (१२ जनवरी)	अनु०	१५६
५ बापू का पत्र वेवन लाड लोदिया और जग्रण्य राजनेताओं के लिए (२० जनवरी)	अनु०	१६०
६ महादेव देसाई को मरा पत्र (२६ जनवरी)	अनु०	१६१
७ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२८ जनवरी)	अनु०	१६२
८ महादेव देसाई को मरा पत्र (३ फरवरी)	अनु०	१६३
९ बापू का मरा पत्र (२० फरवरी)	अनु०	१६४
१० बापू को मरा पत्र (२५ फरवरी)	अनु०	१६८
११ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१४ मार्च)	अनु०	१७२
१२ महादेव देसाई को मरा पत्र (१७ मार्च)	अनु०	१७४
१३ बापू का मरा पत्र (२० अप्रैल)	अनु०	१७४
१४ मुझे बापू का पत्र (२ अप्रैल)	मूल	१७५
१५ आम निरीक्षण	अनु०	१७६
१६ बापू को अगाधा हरिसन का पत्र (५ मई)	अनु०	१७८
१७ मुझे महादेव देसाई का पत्र (४ जून)	अनु०	१८४
१८ महादेव देसाई को मरा पत्र (१० जून)	अनु०	१८५
१९ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१७ जून)	अनु०	१८६
२० मुझे महादेव देसाई का पत्र (२४ जून)	अनु०	१८७
२१ बापू का अगाधा हरिसन का पत्र (३ जुलाई)	अनु०	१८६
२२ मुझे महादेव देसाई का पत्र (११ जुलाई)	अनु०	१९०
२३ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१४ जुलाई)	अनु०	१९१
२४ महादेव देसाई का मरा पत्र (२० जुलाई)	अनु०	१९१
२५ एक मित्र का महादेव देसाई का पत्र (२२ जुलाई)	अनु०	१९२
२६ महादेव देसाई का मरा पत्र (२४ जुलाई)	अनु०	१९४
२७ महादेव देसाई का मरा पत्र (२८ जुलाई)	अनु०	१९५
२८ महादेव देसाई का मरा पत्र (३० जुलाई)	अनु०	१९५
२९ मुझे मोरावत का पत्र (३१ जुलाई)	अनु०	१९७

तर्कस

३० महादेव देसाई को मेरा पत्र (३१ जुलाई)	अनु०	१६८
३१ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२ अगस्त)	अनु०	१६८
३२ अगाथा हैरिसन को दत्त का पत्र (३ अगस्त)	अनु०	१६६
३३ बापू को अगाथा हैरिसन का पत्र (४ अगस्त)	अनु०	२०१
३४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (५ अगस्त)	अनु०	२०४
३५ मुझे महादेव देसाई का पत्र (८ अगस्त)	अनु०	२०४
३६ मुझे बापू का पत्र (१२ अगस्त)	मूल	२०५
३७ मुझे बापू का पत्र (२६ अगस्त)	मूल	२०६
३८ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२७ अगस्त)	अनु०	२०६
३९ महादेव देसाई को मेरा पत्र (३१ अगस्त)	अनु०	२०७
४० बापू को मेरा तार (१६ अक्टूबर)	अनु०	२०८
४१ मुझे प्यारेलाल का पत्र (२१ अक्टूबर)	अनु०	२०६
४२ मुझे बापू का तार (२२ अक्टूबर)	अनु०	२०६
४३ बापू को अगाथा हैरिसन का पत्र (७ नवम्बर)	अनु०	२१२
४४ मुझे प्यारेलाल का पत्र (२२ दिसम्बर)	अनु०	२१२
४५ प्यारेलाल का मेरा पत्र (२५ दिसम्बर)	अनु०	२१४
४६ मुझे प्यारेलाल का पत्र (३० दिसम्बर)	अनु०	२१५

बिना तारीख के पत्र

४७ एक महानतम काय	अनु०	२१७
४८ गांधीजी के साथ प्रेम मुलाकात	अनु०	२२०
४९ सहकारी योजना के अंतर्गत नारियल व तेल का उत्पादन	अनु०	२२१
५० नार्समुद्दीन के माथ हुई बातचीत पर नाट	अनु०	२२४

१९३६

१ बापू को मेरा पत्र (१ जनवरी)	अनु०	२२६
२ जयपुर (१८ जनवरी)	अनु०	२१
३ बीकम सेंट जॉन को बापू का पत्र (१८ जनवरी)	अनु०	२२३
४ बापू को बीकम सेंट जॉन का पत्र (२० जनवरी)	अनु०	२३
५ बीकम सेंट जॉन को बापू का पत्र (२२ जनवरी)	अनु०	२३४
६ बापू को बीकम सेंट जॉन का पत्र (२५ जनवरी)	अनु०	२३५
७ बीकम सेंट जॉन को बापू का पत्र (२७ जनवरी)	अनु०	२३५

चीनीस

८	अमनाताल बजाज का	पी० एल० चुडगर का पत्र		
	(२८ जनवरी)		अनु०	२३६
९	महादेव देसाइ को	मेरा पत्र (२१ जनवरी)	अनु०	२३७
१०	मुझे	महादेव देसाइ का पत्र (२४ जनवरी)	अनु०	२३८
११	महादेव देसाई को	मेरा पत्र (२५ जनवरी)	अनु०	२३९
१२	महादेव देसाई को	मेरा पत्र (२६ जनवरी)	अनु०	२४०
१३	महादेव देसाइ को	मेरा पत्र (२६ जनवरी)	अनु०	२४१
१४	महादेव देसाइ का	मेरा पत्र (२६ जनवरी)	अनु०	२४१
१५	मुझे	महादेव देसाई का पत्र (२७ जनवरी)	अनु०	२४३
१६	मुझे	प्यारेलाल का पत्र (२८ जनवरी)	अनु०	२४३
१७	मुझे	महादेव देसाइ का पत्र (२९ जनवरी)	अनु०	२४४
१८	मुझे	महादेव देसाइ का पत्र (३० जनवरी)	अनु०	२४५
१९	महादेव देसाई का	मेरा पत्र (३० जनवरी)	अनु०	२४६
२०	प्यारेलाल को	मेरा पत्र (२१ जनवरी)	अनु०	२५०
२१	लाड लिनलिथगो को	बापू का पत्र (३१ जनवरी)	अनु०	२५१
२२	प्यारेलाल को	मेरा पत्र (१ फरवरी)	अनु०	२५२
२३	प्यारेलाल का	मेरा तार (१ फरवरी)	अनु०	२५४
२४	मुझे	महादेव देसाइ का तार (१ फरवरी)	अनु०	२५६
२५	मुझे	बापू का तार (२ फरवरी)	अनु०	२५५
२६	मुझे	बापू का तार (३ फरवरी)	अनु०	२५५
२७	बापू को	मेरा तार (३ फरवरी)	अनु०	२५६
२८	बापू को	महादेव देसाई का तार (४ फरवरी)	अनु०	२५६
२९	मुझे	प्यारेलाल का पत्र (४ फरवरी)	अनु०	२५७
३०	मुझे	प्यारेलाल का पत्र (६ फरवरी)	अनु०	२५९
३१	प्यारेलाल का	मेरा पत्र (८ फरवरी)	अनु०	२६०
३२	सुशीला नयर को	मेरा पत्र (८ फरवरी)	अनु०	२६०
३३	बापू को	मेरा तार (८ फरवरी)	अनु०	२६१
३४	महादेव देसाइ का	बहनभमाइ पटेल का पत्र		
	(८ फरवरी)		अनु०	२६१
३५	मुझे	महादेव देसाई का पत्र (९ फरवरी)	अनु०	२६२
३६	मुझे	बापू का तार (९ फरवरी)	अनु०	२६३
३७	मुझे	सुशीला नयर का पत्र (९ फरवरी)	अनु०	२६४

पञ्चीस

३८ प्यारलाल को मेरा पत्र (१० फरवरी)	अनु०	२६४
३९ मुझे महादेव देसाइ का पत्र (१० फरवरी)	अनु०	२६६
४० मुझे प्यारलाल का पत्र (१० फरवरी)	अनु०	२६६
४१ प्यारलाल का मेर सनेटरी का पत्र (११ फरवरी)	अनु०	२६७
४२ स्वास्थ्य बुलेटिन (११ फरवरी)	अनु०	२६८
४३ प्यारलाल को मेरा तार (११ फरवरी)	अनु०	२६८
४४ महानंद देसाइ को मेरा पत्र (११ फरवरी)	अनु०	२६९
४५ स्वास्थ्य बुलेटिन (१२ फरवरी)	अनु०	२७०
४६ स्वास्थ्य बुलेटिन (१३ फरवरी)	अनु०	२७०
४७ मुझे बापू का तार (१३ फरवरी)	अनु०	२७१
४८ प्यारलाल का मेरा पत्र (१४ फरवरी)	अनु०	२७१
४९ मुझे महादेव देसाइ का तार (१४ फरवरी)	अनु०	२७२
५० महादेव देसाइ को मेरा पत्र (१५ फरवरी)	अनु०	२७३
५१ प्यारलाल को मेरा पत्र (१८ फरवरी)	अनु०	२७३
५२ मुझे बापू का तार (१८ फरवरी)	अनु०	२७५
५३ मुझे प्यारलाल का पत्र (१८ फरवरी)	मूल	२७५
५४ बापू का लाल लिनलियगो का पत्र (१९ फरवरी)	अनु०	२७६
५५ मुझे प्यारलाल का पत्र (२० फरवरी)	अनु०	२७७
५६ लाल लिनलियगो को बापू का पत्र (२१ फरवरी)	अनु०	२७८
५७ मुझे प्यारलाल का पत्र (२२ फरवरी)	अनु०	२८०
५८ वाङ्मय के प्राइवेट सेनेटरी को बापू का तार (२४ फरवरी)	अनु०	२८०
५९ बापू का मेरा महादेव, देवदास का तार (७ मार्च)	अनु०	२८१
६० महादेव देसाइ का जे० जी० लेथवेट का पत्र (१० मार्च)	अनु०	२८२
६१ जे० जी० लेथवेट का महादेव देसाइ का पत्र (१० मार्च)	अनु०	२८२
६२ गांधाजी का लिनलियगो का पत्र (१६ मार्च)	अनु०	२८४
६३ सर रेजिनाल्ड मक्मवल को बापू का पत्र (१६ मार्च)	अनु०	२८६
६४ सर रेजिनाल्ड मक्मवल का बापू को पत्र (१६ मार्च)	अनु०	२८६
६५ महात्माजी का लाल लिनलियगो को पत्र (१७ मार्च)	अनु०	२८८
६६ सर मारिग स्वायर भारत के प्रधान-यायाधीश के नाम	अनु०	२८८
६७ पश्चिमी भारत के राज्या के रेजिडेंट को वल्लभभाइ पटेल का पत्र (१७ मार्च)	अनु०	२८९

छब्बीस

६८	जे० जी० लेयवेट की	मेरा पत्र (२० मार्च)	अनु०	२६०
६९	ज० जी० लेयवेट का	वत्तभभाई पटेल का पत्र (२१ मार्च)	अनु०	२६१
७०	श्री गाई बिट व साय हुए	वार्तालाप के नोट (१ अप्रैल)	अनु०	२६२
७१	सुभाषचन्द्र बोस की	बापू का पत्र (२ अप्रैल)	अनु०	२६८
७२	लाड लिनलिथगा का	बापू का पत्र (७ अप्रैल)	अनु०	३०२
७३	ग० जी० लेयवेट का	महादेव देसाई का पत्र (७ अप्रैल)	अनु०	३०२
७४	गिगन की	बापू का पत्र (१६ अप्रैल)	अनु०	३०३
७५	मुझे	महादेव देसाई का पत्र (२० अप्रैल)	अनु०	३०६
७६	मुझे	महादेव देसाई का पत्र (२१ अप्रैल)	मूल	३०८
७७	महादेव देसाई का	मेरा पत्र (२२ अप्रैल)	अनु०	३०८
७८	बापू की	मेरा तार (२३ अप्रैल)	अनु०	३१०
७९	मुझे	बापू का तार (२४ अप्रैल)	अनु०	३११
८०	मुझे	बापू का तार (२५ अप्रैल)	अनु०	३११
८१	मुझे	महादेव देसाई का पत्र (२ मई)	अनु०	३१२
८२	मुझे	महादेव देसाई का पत्र (३ मई)	अनु०	३१२
८३	दरवार बीराबाला की	बापू का तार	अनु०	३१४
८४	बापू का	दरवार बीराबाला का तार	अनु०	३१५
८५	महादेव देसाई का	मेरा पत्र (४ मई)	अनु०	३१६
८६	महादेव देसाई की	मेरा पत्र (५ मई)	अनु०	३१७
८७	महादेव देसाई का	मेरा तार (६ मई)	अनु०	३१८
८८	महादेव देसाई का	मेरा पत्र (६ मई)	अनु०	३१९
८९	मुझे	महादेव देसाई का पत्र (८ मई)	अनु०	३२०
९०	महादेव देसाई की	मेरा पत्र (१० मई)	अनु०	३२१
९१	मुझे	महादेव देसाई का पत्र (११ मई)	अनु०	३२१
९२	महादेव देसाई का	मेरा पत्र (१८ मई)	अनु०	३२२
९३	मुझे	महादेव देसाई का पत्र (१९ मई)	अनु०	३२३
९४	महादेव देसाई का	मेरा पत्र (२५ मई)	अनु०	३२४
९५	मुझे	महादेव देसाई का पत्र (२५ मई)	मूल	३२६
९६	मुझे	महादेव देसाई का पत्र (२६ मई)	अनु०	३२७
९७	मुझे	महादेव देसाई का पत्र (३० मई)	अनु०	३२८

सत्ताइस

६८ महादेव देसाइ का मेरा पत्र (१ जून)	अनु०	३३०
६९ मुझे महादेव देसाइ का पत्र (१७ जून)	अनु०	३३१
१०० मुझे महादेव देसाइ का पत्र (१८ जून)	अनु०	३३२
१०१ महादेव देसाइ का मेरा तार (१९ जून)	अनु०	३३३
१०२ महादेव देसाइ को मेरा पत्र (१९ जून)	अनु०	३३३
१०३ महादेव देसाइ का मेरा पत्र (२० जून)	अनु०	३३४
१०४ महादेव देसाइ को मेरा पत्र (२० जून)	अनु०	३३५
१०५ मुझे महादेव देसाइ का पत्र (२२ जून)	अनु०	३३५
१०६ लाड लिनलिथगो का बापू का पत्र (२२ जून)	अनु०	३३६
१०७ बापू को लाड लिनलिथगो का पत्र (१ जुलाई)	अनु०	३३८
१०८ अगाथा हैरिसन को महादेव देसाइ का पत्र (४ जुलाई)	अनु०	३३९
१०९ मुझे मीराबन का पत्र (५ जुलाई)	अनु०	३४०
११० मुझे महादेव देसाइ का पत्र (५ जुलाई)	अनु०	३४२
१११ मीराबन को मेरा पत्र (७ जुलाई)	अनु०	३४३
११२ मुझे बापू का पत्र (९ जुलाई)	मूल	३४४
११३ बापू का अगाथा हैरिसन का पत्र (१४ जुलाई)	अनु०	३४५
११४ महादेव देसाइ को मेरा पत्र (१६ जुलाई)	अनु०	३४०
११५ मुझे मीराबन का पत्र (२८ जुलाई)	अनु०	३४१
११६ बापू को लाड लिनलिथगो का पत्र (२८ जुलाई)	अनु०	३४३
११७ अगाथा हैरिसन के कुछ सम्मरण (जुलाई अगस्त)	अनु०	३४३
११८ वाइमराय को बापू का तार (१ अगस्त)	अनु०	३४८
११९ बापू को लाड लिनलिथगो का पत्र (२ अगस्त)	अनु०	३४९
१२० मुझे महादेव देसाइ का पत्र (२ अगस्त)	अनु०	३६०
१२१ महादेव देसाइ का मेरा पत्र (४ अगस्त)	अनु०	३६०
१२२ मुझे महादेव देसाइ का पत्र (४ अगस्त)	अनु०	३६१
१२३ मुझे महादेव देसाइ का पत्र (५ अगस्त)	अनु०	३६२
१२४ महादेव देसाइ को मेरा पत्र (७ अगस्त)	अनु०	३६३
१२५ महादेव देसाइ का मेरा पत्र (९ अगस्त)	अनु०	३६४
१२६ मुझे महादेव देसाइ का पत्र (१० अगस्त)	अनु०	३६५
१२७ महादेव देसाइ का मेरा पत्र (१४ अगस्त)	अनु०	३६६
१२८ प्यारलान को मेरा तार (२४ अगस्त)	अनु०	३६७
१२९ महादेव देसाइ का मेरा पत्र (२६ अगस्त)	अनु०	३६८

अट्टाईस

१३०	मुझे महादेव देसाई का तार (२८ अगस्त)	अनु०	३७१
१३१	महादेव देसाई को मेरा तार (३० अगस्त)	अनु०	३७२
१३२	मुझे महादेव देसाई का पत्र (३० अगस्त)	अनु०	३७२
१३३	महादेव देसाई को मेरा पत्र (३१ अगस्त)	अनु०	३७३
१३४	मुझे बापू का तार (३१ अगस्त)	अनु०	३७४
१३५	महादेव देसाई का मेरा तार (१ सितम्बर)	अनु०	३७५
१३६	मुझे महादेव देसाई का पत्र (८ सितम्बर)	अनु०	३७५
१३७	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१० सितम्बर)	अनु०	३७७
१३८	महादेव देसाई को मेरा पत्र (११ सितम्बर)	अनु०	३७६
१३९	कायकारिणी समिति का युद्ध विषय प्रस्ताव	अनु०	३७८
१४०	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१५ सितम्बर)	अनु०	३८०
१४१	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१५ सितम्बर)	अनु०	३८१
१४२	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१६ सितम्बर)	अनु०	३८३
१४३	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१८ सितम्बर)	अनु०	३८४
१४४	मुझे सुशीला नगर का पत्र (४ अक्टूबर)	अनु०	३८५
१४५	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१५ अक्टूबर)	अनु०	३८६
१४६	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१५ अक्टूबर)	अनु०	३८७
१४७	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१७ अक्टूबर)	अनु०	३८८
१४८	महादेव देसाई का मेरा पत्र (१८ अक्टूबर)	अनु०	३८९
१४९	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२१ अक्टूबर)	अनु०	३९०
१५०	महादेव देसाई का मेरा पत्र (२३ अक्टूबर)	अनु०	३९१
१५१	महादेव देसाई को मेरा पत्र (२६ नवम्बर)	अनु०	३९२
१५२	महादेव देसाई को मेरा पत्र (२७ नवम्बर)	अनु०	३९३
१५३	महादेव देसाई को मेरा पत्र (२८ नवम्बर)	अनु०	३९४
१५४	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२९ दिसम्बर)	अनु०	३९५
१५५	महादेव देसाई को मेरा पत्र (२९ दिसम्बर)	अनु०	३९६
१५६	महादेव देसाई का मेरा पत्र (२९ दिसम्बर)	अनु०	३९७
१५७	महादेव देसाई का मेरा पत्र (२९ दिसम्बर)	अनु०	४००

बिना तारीख के पत्र

१५८	मुझे प्यारेलाल का पत्र	अनु०	४०२
१५९	स्वास्थ्य बुलटिन	अनु०	४०३

उनतीस

१६० स्वास्थ्य बुनेटिन	अनु०	८०४
१६१ प्रमुख सदस्य, राजकाट का वापू का तार	अनु०	४०८
१६२ गाधीजी स यूयाक टाइम्स' के सवाददाता श्री स्टील की मुलाकात का अप्रकाशित विवरण	अनु०	४०५
१६३ अगाथा हैरिसन को वापू का पत्र	अनु०	४०६

जट्टाईस

१३०	मुझे महादेव देसाई का तार (२८ अगस्त)	अनु०	३७१
१३१	महादेव देसाइ का मरा तार (३० अगस्त)	अनु०	३७२
१३२	मुझे महादेव देसाई का पत्र (३० अगस्त)	अनु०	३७२
१३३	महादेव देसाई को मेरा पत्र (३१ अगस्त)	अनु०	३७३
१३४	मुझे वापू का तार (३१ अगस्त)	अनु०	३७४
१३५	महादेव देसाई का मेरा तार (१ सितम्बर)	अनु०	३७५
१३६	मुझे महादेव देसाइ का पत्र (८ सितम्बर)	अनु०	३७५
१३७	मुझे महादेव देसाइ का पत्र (१० सितम्बर)	अनु०	३७७
१३८	महादेव देसाइ को मेरा पत्र (११ सितम्बर)	अनु०	३७६
१३९	कायकारिणी समिति का मुझे विषयक प्रस्ताव	अनु०	३७६
१४०	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१५ सितम्बर)	अनु०	३८०
१४१	मुझे महादेव देसाइ का पत्र (१५ सितम्बर)	अनु०	३८१
१४२	महादेव देसाइ को मेरा पत्र (१६ सितम्बर)	अनु०	३८३
१४३	मुझे महादेव देसाइ का पत्र (१८ सितम्बर)	अनु०	३८४
१४४	मुझे सुशीला नगर का पत्र (४ अक्टूबर)	अनु०	३८५
१४५	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१५ अक्टूबर)	अनु०	३८६
१४६	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१७ अक्टूबर)	अनु०	३८७
१४७	महादेव देसाइ को मेरा पत्र (१७ अक्टूबर)	अनु०	३८०
१४८	महादेव देसाई का मेरा पत्र (१८ अक्टूबर)	अनु०	३८१
१४९	मुझे महादेव देसाइ का पत्र (२१ अक्टूबर)	अनु०	३८२
१५०	महादेव देसाइ का मेरा पत्र (२३ अक्टूबर)	अनु०	३८३
१५१	महादेव देसाइ का मेरा पत्र (२६ नवम्बर)	अनु०	३८४
१५२	महादेव देसाई को मेरा पत्र (३० नवम्बर)	अनु०	३८४
१५३	महादेव देसाई का मेरा पत्र (८ दिसम्बर)	अनु०	३८६
१५४	मुझे महादेव देसाइ का पत्र (२१ दिसम्बर)	अनु०	३८७
१५५	महादेव देसाइ को मेरा पत्र (२८ दिसम्बर)	अनु०	३८८
१५६	महादेव देसाइ का मेरा पत्र (२८ दिसम्बर)	अनु०	३८६
१५७	महादेव देसाई का मेरा पत्र (२९ दिसम्बर)	अनु०	४००

बिना तारीख के पत्र

१५८	मुझे प्यारलाल का पत्र	अनु०	४०२
१५९	स्वास्थ्य बुलटिन	अनु०	४०३

उत्तरीस

१६०	स्वास्थ्य बुनेटिन	अनु०	४०४
१६१	प्रमुख सदस्य, राजकाट को वापू का तार	अनु०	४०६
१६२	गाधीजी स ' यूयाक टाडम्स' के सवाददाता श्री स्टील की मुलावात का जप्रकाशित विवरण	अनु०	४०१
१६३	अगाथा हैरिसन को वापू का पत्र	अनु०	४०८

बापू की प्रेम-प्रसादी

१९३७ के पत्र

ग्रासवेनर हाउस

पाक लेन

लन्दन, इंग्लैंड १

७ जुलाई १९३७

प्रिय महादेवभाई

मुझे रायटर से अभी-अभी फान द्वारा खबर मिली कि बापू के बहने पर कांग्रेस कार्यकारिणी न छह प्राता म पद ग्रहण करने का निणय लिया है। मैं बेहद खुश हुआ। मुझे इमम तनिक भी सन्देह नहीं है कि बापू ने बिलकुल ठीक निणय लिया है। ऐसा निणय करवाना किसी और के लिए सम्भव नहीं था। मेरी तो यही धारणा है कि भागा को अशत स्वीकार कर लिया गया है, पर जैसी परिस्थिति है, उस देखते हुए किसी साधारण कोटिक राजनेता के लिए यह कदम उठान का साहस करना सम्भव नहीं होता। यह हमारा परीक्षा काल है और इसम मुझे कोई सन्देह नहीं है कि बापू के मागदशन म कांग्रेस मद्रि मडल न केवल सबसे बढ चढ कर सफल सिद्ध होगे, बल्कि हम अपने अतिम लक्ष्य की ओर भी अग्रसर हो सकेंगे।

मेरी धारणा है कि बापू न अपन अत करण की प्रेरणा स यह जान लिया था कि इस समय यही सलाह देना आवश्यक है। पर मेरी यह धारणा कि इस निणय म मेरे पत्र न भी कुछ हाय बटाया होगा, एन मिथ्या गव तो नहीं है? कम-से कम इतना तो है ही कि यद्यपि मैं बापू के फामूल को पूणतया स्वीकृत कराने मे सफल नहीं हुआ तो भी बापू की सफलता की राह मे मुझे भी सफलता मिली। पर यह भी हा सकता है कि ऐसी बात न हो।

अब मैं कल लाड हैलिफकम से मिलूंगा और दो एव दिन म सर फाइणलेटर स्टीवाट से भेंट करूंगा। साथ ही, लाड जेटलड तथा लाड लोदियन से भी दुबारा मिलूंगा। यहा से विदा हाने स पहले दो एक अय राजनताआ से भी मिलने का विचार है। मैं उन्हें यह बताऊंगा कि कांग्रेस को पद-ग्रहण करने के लिए राजी करने मे कठिनाई हुई है और यदि अब उ हाने इस राजनतिक खेन म बराबर के औचित्य का ध्यान नहीं रखा तो कांग्रेस को सत्ता बनाए रखना सम्भव नहीं होगा। मैं उन्हें इस बात की आवश्यकता सुनाऊंगा कि सरकारी अमले को सीमा उत्तघन न करन निया जाए। मैं उन्हें यह भी बताऊंगा कि कांग्रेस के शासन-काल म उनम

से दो एक राजनेताओं का भारत भ्रमण करना अच्छा होगा।

मैं तुम्हें यह बता दूँ कि राजाजी के पत्र ने मेरी आशाओं पर तुपारपात कर दिया था तब भी मैंने कांग्रेस द्वारा यह पद ग्रहण किये जान की अपनी आशा नहीं गवाई। आशा बन रहने का एक कारण यह भी था कि तुमने गामोशी अखिल्यार कर रखी थी। तुम जानते ही हो कि मरे यहाँ आने के बाद तुमने मुझे एक भी चिट्ठी नहीं लिखी, और मैंने स्वगत कहा कि यह मौन व्रत आकस्मिक नहीं हो सकता, अवश्य ही इसके पीछे बापू का निर्देश छिपा हुआ है। इसका एक ही अर्थ था कि बापू का मन किस दिशा में दौड़ रहा है इसका सक्त तुम्हारे पत्र से कहीं प्रकट न हो जाय। शायद वर्धा में होनेवाली कायकारिणी की बैठक तक बापू यह बात मन ही मन रखना चाहते थे।

जब मैंने अगाथा के पास लोदियन को लिखे गए बापू के पत्र की नकल और छुद तुम्हारा पत्र देखा तो मैंने मन ही मन उनमें कहीं गई बातों का अपना ही अर्थ लगा लिया और मैं समझ गया कि मुझे तुमने जान बूझकर पत्र नहीं लिखा है और इसका कुछ कारण है। मेरी इसी प्रतीति ने मेरी आशा को बलवान बनाया, और जब आज रायटर से मुझे पता चला कि कांग्रेस ने पत्र ग्रहण करने का निणय लिया है तो मुझे बड़ा हृष हुआ आश्चर्य बिलकुल नहीं हुआ।

अब तुम लिखो कि मैं यहाँ लोगो से क्या कहूँ? मुझे पूरी तरह सूचित रखो ताकि मेरे लिए जो कुछ करना सम्भव है सो मैं कर सकूँ। मैं तुम्हें पिछले पत्र में लिख ही चुका हूँ कि सफल मनोरथ न रहने पर भी मैंने यहाँ लोगो को प्रभावित अवश्य किया है। मेरा विश्वास है कि यह व्यक्तिगत सम्पर्क आगे चलकर बहुत काम जाएगा।

बापू से कह दना कि मैं बिलकुल स्वस्थ हूँ। शुरू शुरू में जब मेरे पास विशेष काम नहीं था तो मैंने पटेवाजी सीखने में कुछ समय बिताना शुरू किया। जब काम बढ़ गया तो पटेवाजी का प्रशिक्षण लेना बन्द कर दिया। पर मैं 'यायाम खूब करता हूँ। मेरे लिए पटेवाजी कोई नयी चीज नहीं थी। लडकपन में खब लाठी चलाई है खब कुश्ती लड़ी है। मैं वह पुराना अनुभव ताजा करना चाहता था। पर यह सब बेकार लिख रहा हूँ क्योंकि यह सब तुम्हारे बिनोद की सामग्री बन कर रह जाँगा।

सप्रेम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

वधा

प्रासवेनर हाउस

पाक लेन

लन्दन, टब्ल्यू० १

८ जुलाई, १९३७

प्रिय महाद्वभाई,

आज लाड हेलिफैक्स से बात हुई। मैंने उ-ह यह बात मुझाई कि अब गवर्नर और सरकारी अमले का भी अपना पाट अदा करना चाहिए। मैंने उनसे कह दिया कि कांग्रेस ने शासन विधान को अमल में लाने के लिए पद ग्रहण नहीं किया है बल्कि इसलिए किया है कि बसा करने से उसको लक्ष्य सिद्धि में सहायता मिलेगी। मैंने कहा कि कांग्रेस अपनी उद्देश्य सिद्धि के लिए दो मार्गों का सहारा ले सकती है या तो शासन विधान को अमल में लाकर या फिर सीधी कारवाई करके। फिलहाल कांग्रेस ने सीधी कारवाई का मार्ग छोड़कर शासन विधान का मार्ग अपनाया है। यदि गवर्नर और नौकरशाही ने अपना पाट अदा करने में कोताही न की तो कांग्रेस शासन विधान की सीमाओं के भीतर रहकर काम करेगी अन्यथा उसे दूसरा रास्ता ढूँढना पड़ेगा। राजनीतिमत्ता का तकाजा तो यही है कि गवर्नर और सरकारी अमले को इस सबंध में पार्लियामेंट की अभिलाषा अच्छी तरह बता दी जाए और वे अपना पाट अदा करने में जी-जान से जुट जाए।

उन्होंने मुझे इस सबंध में आश्वासन देते हुए कहा मैं आपसे पहले ही कह चुका हूँ और फिर दुहगता हूँ कि इस विषय में किसी प्रकार का सशय नहीं रखना चाहिए। अंग्रेज चरित्र ही ऐसा है कि वह अपने आपका नवीन परिस्थितियाँ के अनुकूल अविलम्ब ढाल देता है। सरकारी अमले के भारतवासी अंश का इमम कुछ देर लग सकती है पर अंग्रेजों का देर नहीं लगेगी।'

सुम्ह शायद मालूम होगा कि तीथल में बापू न मुझे बताया था कि कांग्रेस द्वारा पद ग्रहण किया जाना के बाद वह शायद वाइमराय से भेंट का आग्रह करके सीमा प्रांत के प्रस्तावित दौर की बात उठाएंगे। जब मैंने लाड हेलिफैक्स की यह बात बताई तो वह बड़े खुश हुए। बोल लाड लिनलियगो को भी बापू से मिलकर बड़ी प्रसन्नता होगी तथा उनकी याजना की प्रति में कोई बाधा खड़ी नहीं होगी।

मैंने उनसे कहा कि सीमा प्रांत का दौरा उतना महत्व नहीं रखता, तितनी कि यह बात कि वाइमराय बापू के साथ मेल मुलाकात रखकर व्यक्तियत मन्त्री का

सबघ स्थापित करें।

मैंन यह शका व्यक्त की कि कांग्रेसी शासन-याल निर्विघ्न सावित नहीं हागा। बीच-बीच म अडचनें पैदा होती रहेंगी, और यदि लाड लिनलियगो की बापू स जान-महचान हो जाएगी, तो वह उनकी सलाह कभी भी माग सगत हैं, जिसम उन्हें काफी सहायता मिलगी। उन्हें भी ऐसी ही शका है। वह बाल कि बापू के साथ मन्त्री का सबघ जुडन का लाडें लिनलियगो अवश्य पायदा उठाएग। मैं समझता हू अब बापू को अपना वायत्रम पहल स ही बना लेना चाहिए।

मुझ लाड लादियन क नाम लिख बापू क पत्र म बडी दिलचस्पी रही। उन्होंने लाड लोनियन का भारत आने का निमन्त्रण दिया है। कुछ दिन पहल मैं भी उनके साथ बातचीत म यह प्रसंग उठाया था और मैं समझता हू वह इन मुझाय पर गम्भीरतापूर्वक विचार कर रह हैं। मैंने लाड हैलिफवम स इस बात का जित्र किया और अपनी ओर स यह मुझाय पण किया कि लाड लोनियन ही कयो अच लाग भी भारत आकर 'यक्तिगत सम्पक स्थापित करें। मैंने इस सदन मे सेंसबरी और चर्चिल के भी नाम लिय। उन्हें यह विचार रचा। वह बोल कि व्यक्तिगत मन्त्री का सबघ स्थापित करने के अलावा के लाग कांग्रेस को ब्रिटिश इरादा म तथा अंग्रेज जनता को कांग्रेस क इरागे मे परिचित कर सकेंगे।

आज शाम मैं सर फाहण्डलटर स्टीवाट स फिर मिला। मैंने जिन बातों की चचा लाड हैलिफवस स की थी उनन भी की और उनक उत्तर भी प्राय लाड हैलिफवस के उत्तरा के समान ही थ। लाड जटलड स भी मिनूगा और उन्हें भी वही बातें बताऊगा जा अच लाग को बताता आ रहा हू। तुमने कोई ताजा सामग्री भेजी तो वह भी मिनू को आग प्रस्तुत कर दूगा।

यहा से रवाना होने से पहल सम्भव है प्रधान मन्त्री से भी मिलना हा जाए। मुझ सारी बातें बताते रहो। यदि यहा से चल पडने से पहल मुझे जीर कुछ करना हो ता मुझे निखने स मत चूकना।

कन रात मैं शुस्टर दम्पति के साथ खाना खाया। आज शुस्टर क साथ भारतीय जथ-व्यवस्था पर बातचीत बडी रोचक रही। मैंन उस बताया कि सामाजिक कार्यों के लिए धन जुटान के मामल म बठिनाइया उत्पन हा सकती है। मैंने मुझाय माग ता मैं यह देखकर चर्चित रह गया कि बापू न शेगाव म फरवरी मे जो-कुछ बताया था लगभग वही बात सर जॉज ने भी वही।

शुस्टर ने कहा कि भारत म ब्रिटिश राज की सबसे बुरी विरासत उच्चतर श्रेणी के अधिकारियों के रूप म है। साथ ही उसन कहा कि जो हो चुका सो हा चुका अब उसम फेर बल्ल करना सम्भव नहीं है। पर हम लागों को स्वतन्त्र रूप स

कुछ-न कुछ करना चाहिए। जो काम इस समय रुपया बमाने की प्रेरणा से किया जाता है वह आगे चलकर सेवा की भावना से प्रेरित होकर किया जाना सम्भव बनाना होगा। उसन प्रश्न किया, 'सामाजिक काय के लिए डॉक्टरों और अध्यापकों का इतने ऊँचे वेतन क्यों दिये जाए ? यह सारा काम सहकारिता के आधार पर क्यों न किया जाए ? जब आपके पास ७० करोड़ हाथ परिश्रम करने को प्रस्तुत हैं तो आपको पूँजी की चिंता करने की क्या जरूरत है ? यदि काम सहकारिता के आधार पर किया जाए, जिसे दूसरे शब्दों में 'सशोधित समाजवाद' कहा जा सकता है तो रुपये की जरूरत नहीं रहेगी। कम से-कम बहुत बड़ी तादाद में तो अवश्य ही नहीं रहेगी।'

उसने कहा कि मुझे नावें स्वीडन आदि देशों में जाकर वहाँ की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना चाहिए। मुझे डेनियल हैमिल्टन का स्थान देखने का भी मुझसे कहा। बोला 'मेरे लिए भारत में कुछ अधिक कर सकना इसलिए सम्भव नहीं हुआ कि वहाँ सारा काम पैसा बमाने के उद्देश्य से किये जाते हैं। बैंकिंग, जाच कमीशन पर भारत सरकार को २० लाख रुपये खर्च करने पड़े। इंग्लैंड तक, मैं भी कुछ सौ पौंडों से अधिक खर्च नहीं बैठता। इंग्लैंड में पैसा बमाने का ध्येय रहता है पर भारत में तो सेवा की भावना को प्राप्ति के लिए करना वाञ्छनीय है। लेकिन वहाँ इस समय पैसा बमाने की प्रवृत्ति का ही दौर दौरा है। जब सेवा की भावना जाग्रत और विकसित हो जाएगी, तो यह प्रवृत्ति कम हो जाएगी।'

माथ ही उसने मुझे यह चेतावनी भी दी कि मैं इस विषय पर सैद्धांतिक भाषा में चर्चा न करूँ, नहीं तो भारत का अनुदार बग डर जाएगा। पर इस बात में उसका दृढ़ विश्वास है कि बापू की प्रेरणा से सेवा की भावना को बल मिलेगा और तब बड़े बड़े बजट बनाने की जरूरत नहीं रहेगी। दूसरे शब्दों में वह रुपये के माप-दण्ड का स्थान परिश्रम के माप-दण्ड का दान के पक्ष में है।

अब बापू 'यग इण्डिया' का प्रकाशन पुनः आरम्भ कर दें, ता कसा रहे ? मैं यह कदापि नहीं चाहूँगा कि हरिजन एक राजनतिक पक्ष बन जाए। एक-साथ गे-गे पक्ष निकालना भी ठीक नहीं जचता। पर 'यग इण्डिया' की अपनी एक परिपत्ति है, और इस नाम को भुला देना ठीक नहीं रहेगा। इसलिए अधिक उत्तम यही रहेगा कि 'यग इण्डिया' का प्रकाशन पुनः आरम्भ कर दिया जाए और हरिजन बंद कर दिया जाए। इसका नतीजा यह होगा कि तुम 'यग इण्डिया' में राजनतिक लेख भी लिख सकोगे और हरिजनोद्धार-सम्बन्धी लेख भी ठीक जिस प्रकार उन गुजरे दिनों में बापू किया करते थे।

आशा है तुम हम पत्र के साथ भेजी जा रही टाइम्स की कटिंग में यह दयाग

कि सम्पादक ने 'सघप' और तोड़ फोड़' में अंतर ममत्वान की कोशिश की है। जब इन लोगो की समझ में यह अंतर आने लगा है।

उस दिन मैं श्री वटलर के साथ दोपहर का भोजन कर रहा था। मालूम पड़ता है कि किसी दिन वह भारत में गवर्नर बनकर आयेगा। सभी को इस सतुष्ट दिखाई पड़ते हैं और इसमें भी सदेह नहीं कि सब कांग्रेस की सहायता करना और उसके प्रति महानुभूति का रख अपनाये रखना चाहते हैं। कुछ दिन बाद चर्चिल से भी भेंट होगी। लाड डर्बी ने दोपहर के खान पर मुझे और ओलिवर स्टेनले को बुलाया है और स्टेनले इस समय व्यापार छोड़ गए हैं और कबिनेट में भी हैं। बबई व गवर्नर श्री राजर लमले मेरे यहां रात के भोजन पर आ रहे हैं।

इन सारे व्यक्तिगत सम्पर्कों के दौरान मैं इन लोगो के गले यह उतारना चाहता हू कि कांग्रेस न शासन विधान को महज कारगर बनाने के लिए पत्ग्रहण नहीं किया है बल्कि अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए सत्ता सभाली है। मैं इन लोगो को समझाता आ रहा हू कि उन्हें कांग्रेस की प्रगति में बाधा न डालकर उलटे उसकी सहायता करनी चाहिए। यदि बाधा डाली गई तो कांग्रेस को सीधी कार्रवाई का पथ अपनाने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। पर मैं सभी को महानुभूति से जोत प्रोत्साहित आ रहा हू। सभी मुझे यह आश्वासन दत्त नहीं अघाते कि ब्रिटिश जनता कांग्रेस को अपने लक्ष्य की दिशा में अग्रसर होने का समर्थन करेगी। लेकिन इन लोगो की निगाह में मात्र औपनिवेशिक स्वराज्य ही एक लक्ष्य है। यदि स्वतंत्रता का अर्थ ब्रिटिश साम्राज्य में सम्बन्ध विच्छेद है तो सबके-सब विरोध में उठ खड़े होंगे। पर सम्बन्ध विच्छेद करने का सुझाव तो जवाहरलालजी का है बापू का नहीं। औपनिवेशिक स्वराज्य में हम सम्बन्ध विच्छेद करने की स्वतंत्रता रखती है और यही यथेष्ट है।

सप्रेम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

वर्धा

३

मगनवाडी,
वर्धा (मध्य प्रात)
६ ७-३७

प्रिय धनश्यामदासजी

आपके सभी पत्र पढ़े हैं। और अब कल तड़क ही आपका तार आ गया। खबर भी कितनी जल्दी यात्रा करती है। कायवारिणी के प्रस्ताव की खबर यहां के कोटि-नाटि नर नारिया से पहले आपके पास जा पट्टची। यह तो बह ही दू कि आपके आह्लात् में यहां के असह्य नर नारी भाग ले रह है। हमारे राष्ट्रीय चरित्र में स्थायित्व का अभाव है, हम शीघ्र ही उद्वेलित हो जाते हैं। यदि कायवारिणी के पीछे ममुचे देश का समर्थन रहता, तो मैं यह निश्चयपूर्वक कह सकता हू कि हम ब्रिटिश हुकूमत का भी आश्वासन प्राप्त कर सकते थे। पर सरकार हमारी कमजोरियां को हमसे अधिक जानती है। क्या उसे पता नहीं है कि हमारे पास देश के कोने कोने से आये उ माद से भरे तारों और पत्रों का ताता लग गया है ?

पर अ त भला सा मव भला। यदि प्रस्ताव की मुलम्मवाजी न की जाती तो मैं अधिक सुखी हाता। पर जवाहरलाल तो जवाहरलाल ही ठहरे। एक विदेशी आलोचक ने कह दिया कि ' जो लजानवाली शर्तें लगाई गई हैं उनसे जवाहरलाल व्यक्तिगत रूप से ममात्त व्यक्ति प्रतीत हाते हैं उनकी मनायथा आयरलंड के रुख की याद दिलाती है। काश, गांधीजी ऐसा आभास न देते कि व झुक रह हैं। वह, विनयशील हैं और कभी कभी प्रश्नकर्त्ता की उमकी दीनता का बोध भी करा दते हैं और सो भी स्वयं उसी के दाप से, पर वह सभी स्थितियां म 'आत्मगौरव' का परिचय देन हैं। '

प्रस्ताव बापू की एक व्यक्तिगत विजय है। जवाहरलाल और उनके मित्रों का आचरण भी बहुत बढ़िया रहा पर बापू के बिना स्थिति पर काबू पाना कठिन हो जाता। राजाजी के क्या कहन हैं शीघ्र ही वह अपना सिक्का जमा लत हैं। जनता की अनिश्चय तथा विक्तव्यविमूढ-जसी मनादशा से उत्पन्न हुई दीध कालीन व्यथा से राहत की आवश्यकता थी, जब उस निवृत्ति का अनुभव हागा एमा मेरा विश्वास है। पर यह स्थिति अधिक दिनों तक टिकनेवाली है इसमें मुझे संदेह है। लेकिन हमें पहले स ही कठिनाइयां की बात नहीं सोचनी चाहिए।

कि सम्पात्क न 'सधप' और तोड फोड' म अतर समझान की कोशिश की है। अब इन लोगो की समझ म यह अतर आने लगा है।

उस दिन मैं श्री बटलर के साथ दोपहर का भोजन कर रहा था। मालूम पडता है कि किसी दिन वह भारत म गवनर बनकर आयगा। सभी बाई सतुष्ट दिखाई पडते हैं और इसम भी सदेह नहीं कि सब कांग्रेस की सहायता करना और उसके प्रति सहानुभूति का रुख अपनाये रखना चाहते हैं। कुछ दिन बाद चर्चिल स भी भेंट होगी। लाड डर्वी ने दोपहर के घाने पर मुझे और ओलिवर स्टेनले को बुलाया है और स्टेनले इस समय व्यापार बोड म हैं और क्विनट म भी हैं। बर्बई व गवनर श्री रोजर लमले भर यहा रात के भाजन पर आ रह हैं।

इन सारे व्यक्तिगत सम्पर्को के दौरान मैं इन लोगो के गले यह उतारना चाहता हू कि कांग्रेस न शासन विधान का महज कारगर बनाने के लिए पदग्रहण नहीं किया है बल्कि अपन लक्ष्य की ओर बल्ल के लिए सत्ता सभाली है। मैं इन लोगो की समझाता आ रहा हू कि उह कांग्रेस की प्रगति म बाधा न डालकर उलट उसकी सहायता करनी चाहिए। यदि बाधा डाली गई, तो कांग्रेस की सीधी कारबाई का पथ अपनाए न लिए बाध्य होना पडेगा। पर मैं सभी को सहानुभूति से ओत प्रीत पा रहा हू। सभी मुझे यह आश्वासन दत नहीं अघाते कि ब्रिटिश जनता कांग्रेस को अपने लक्ष्य की दिशा म अग्रसर होने का समर्थन करेगी। लेकिन इन लोगो की निगाह म मात्र औपनिवेशिक स्वराज्य ही एक लक्ष्य है। यदि स्वतन्त्रता का अर्थ ब्रिटिश साम्राज्य स सम्बन्ध विच्छेद है तो सबके-सब विराध मे उठ पडे हांग। पर सम्बन्ध विच्छेद करने का सुप्ताव ती जवाहरलालजी का है बापू का नहीं। औपनिवेशिक स्वराज्य म हमे सम्बन्ध विच्छेद करने की स्वतन्त्रता रहती है और यही यथेष्ट है।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महात्माभाइ दसाइ

वर्धा

३

मगावाडी,
वर्धा (मध्य प्रांत)

६७-३७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके सभी पत्र पढ़े हैं। और अब कल तड़क ही आपका तार आ गया। खबर भी कितनी जल्दी यात्रा करती है। वायुवारिणी के प्रस्ताव की खबर यहाँ के कोटि-वाटि नर-नारियाँ से पहले आपके पास जा पढ़ी। यह तो यह ही दू कि आपने आह्लाद में यहाँ के असह्य नर-नारी भाग ले रहे हैं। हमारे राष्ट्रीय चरित्र में स्थायित्व का अभाव है हम शीघ्र ही उद्वेलित हो जाते हैं। यदि वायुवारिणी के पीछे गमूचे दश का समर्थन रहता तो मैं यह निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि हम त्रिटिश हुकूमत का भी आश्वासन प्राप्त कर सकते थे। पर सरकार हमारा कमजोरियों को हमसे अधिक् जानती है। क्या उस पता नहीं है कि हमारे पास देश के काने-कान स आये उमाद से भरे तारा और पत्रों का ताता लग गया है ?

पर अत भला सा सब भला। यदि प्रस्ताव की मुलम्मवाजी न की जाती, तो मैं अधिक सुखी होता। पर जवाहरलाल तो जवाहरलाल ही ठहर। एक विदेशी ब्राह्मण ने कह दिया कि जा लजानवाली शर्तें लगाई गई हैं उनसे जवाहरलाल व्यक्तिगत रूप से समर्पित व्यक्ति प्रतीत होते हैं उनकी मनो-यथा आयरलंड के रूप की याद दिलाती है। काश गांधीजी ऐसा आभास न देते कि वह झुक् रह है। वह विनयशील है और कभी कभी प्रश्नकर्ता को उसकी दीनता का बोध भी करा देते हैं और सो भी स्वयं उसी के दोष से पर वह सभी स्थितियाँ में आत्मगौरव का परिचय देने हैं।

प्रस्ताव बापू की एक व्यक्तिगत विजय है। जवाहरलाल और उनके मित्रों का आचरण भी बहुत बढ़िया रहा पर बापू के बिना स्थिति पर बापू पाना कठिन हो जाता। राजाजी क क्या कहें हैं शीघ्र ही वह अपना सिक्का जमा लत ह। जनता को अनिश्चय तथा क्लिप्तव्यवित्त जसी मनादशा से उत्पन्न हुई नीच कालीन व्यथा से राहत की आवश्यकता थी, अब उस निवृत्ति का अनुभव होगा ऐसा मेरा विश्वास है। पर यह स्थिति अधिक दिना तक टिकनवाली है इसमें मुझे सदेह है। लेकिन हम पहले से ही कठिनाइयों की बात नहीं सोचनी चाहिए।

भूलाभाइ ने लाड हैलिफैक्स का सदेशा बापू के पास जया वा-स्यो पहुचा दिया है और बापू बडे कृतज्ञ हैं ।

अब आपका क्या प्रोग्राम है ? वहा और कितने दिन ठहरने का विचार है ?

पता नही आपने फ्रांस के लुदुस को देया है या नही ? वहा के जादू भरे स्नात म स्नान मात्र स क'सर दुसाध्य क्षय राग, व्रण आदि के रोगियो का चमत्कारपूण आराम्य लाभ होता है । प्रख्यात डाक्टरा द्वारा लिखे गये अधिनारपूण वत्तात मीने पढे हैं । अब तो नोबल पुरस्कार विजता कारल ने भी उनकी पुष्टि की है । वहा हर साल हजारो रोगी जाते हैं । वहा एक चिबित्सा मिशन भी है, जा ऐस चमत्कारपूण स्वास्थ्य-लाभ के ठीक ठीक आकडे एकत्र करता ह । यदि मी आपकें साथ गया होता तो स्वय को वहा ले जान को अवश्य हठ करता । देघन लायक जगह है । आप अपनी आखो-देखी जो बात बसायेंगे मी उस उन सभी लोगो क वत्तात स अधिक प्रामाणिक मानूंगा जिह मीन न कभी दखा है, न जिनके बार म मी कुछ जानता ही ह ।

जब आप वापस लौटें ता क्या मी आपका दा तीन चीजें लान का कष्ट दे सकता हू ? हरोट अथवा मेफ्रिज म बडई के काम के बन्िया ओजार् मिलत ह । वे विज्ञान के यत्न भी बेचते हैं । य वपानिक यत्न रसायन शास्त्र के विद्यार्थियो के लिए बडे काम के सिद्ध हुए हैं । क्या आप ये चीजें भरे लडके के लिए ला सकेंगे ? आप जानत ही है कि मी उसकी शिक्षा दीक्षा घर पर ही कर रहा हू । उस वपानिक प्रयोगा का शौक है, पर मी ये प्रयोग कसे करू ? ये पिटारिया उसक बडे काम आयेंगी । आप किसी ऐसे आदमी का जानत हो जो य चीजें ला सने तो ठीक, नहा तो खुद कष्ट उठाइये ।

कलेनवक ९ तारीख का जहाज से खाना हुए है ।

सप्रेम
महादेव

४

प्रासवनर हाउस,
पाक लेन,
लन्दन, डब्ल्यू० १
१२ जुलाई, १९२७

प्रिय महादवभाई,

ऐसा मालूम पड़ता है कि इन तथाकथित नरम दलवाला मे स कुछ न यहा अभी स इस ढंग स बात करना शुरू कर दिया है जिससे लोगो की यह धारणा हा जाए कि कांग्रेस अधिक दिना तक पद-ग्रहण नही कर पायेगी। इन लोगो क वार म यह कथन चरिताम होता है कि 'अभिलाषा विचार का जन्म दती है। इन लोगो की बातचीत का शली कुछ इस प्रकार की है "अगर जवाहर ने राजद्रोह फनाना शुरू किया ता क्या होगा ? क्या उहे गिरफ्तार किया जायगा ? यदि ऐसा नही किया गया ता गवतार को हस्तक्षेप करना पडेगा।" यहा क राजनेताओ जीर राजनातिनो म इसी प्रकार की वेहूदा बातें फैलाई जा रही हैं। पर एसी बातो का कोई अमर पडता दिखाई नही देता है।

मैंन एस ही एक नरम दलवाले को चुनौती दी कि वह जरा यह तो प्रताय कि जवाहरनात के राजद्रोह फलाने की बात म उमका क्या अभिप्राय है। उसने बन्ना, यह स्वतंत्रता की बातें करन लग जायेंगे। मैंने मुहताड उत्तर दिया, स्वतंत्रता की बात करने म बुराई भी क्या है ? क्या प्रत्येक उपनिवेश का सबध विच्छेद करन की स्वतंत्रता प्राप्त नही है ? दक्षिण अफ्रिकी यूनियन क सदस्य सभध विच्छेद करन की बात ता इस समय भी कर रहे है। मैं यह सब तुम्हें यह बतलान के लिए लिख रहा हू कि नरम दलवाला का काग्रम क पद ग्रहण करने म पुरी नही हुई है क्योंकि कांग्रेस शासन-काय म लग जायेगी ता इन लागो के इतिहास का सदब क लिए अत हुआ समझो। ये लोग अब भी शासन करन का स्वप्न देख रहे हैं।

तुम्हारा,
धनश्यामदास

मगनवाडो

वर्धा,

१६ जुलाई, १९३७

प्रिय धनश्यामदासजा,

आप मेरी खामोशी का कारण समझ गये यह खुशी की बात है। ऐसा जान बूझकर किया गया था और अनिचाय भी था क्योंकि कहन योग्य कोई बात थी ही नहीं। मैं यह देख रहा था कि देश क कौन-कौने से जो पत्र जा रहे थे उनसे बापू का झुकाव पत्र ग्रहण करने की ओर बढ़ता जा रहा था। पर लाड जेटलड की दूसरी स्पीच न उन्हें इस बाबत अंतिम निणय लेने को तत्पर कर दिया। लाड जेटलड न अपनी उस स्पीच के दौरान इस आलोचना का खण्डन किया था कि उन्होंने मेल मिलाप का रास्ता बन्द कर दिया है। उम स्पीच का बापू पर अनुकूल प्रभाव पडा। जब कायकारिणी की बठक मे तीन दिन पहले जवाहरलाल यहा आए तब तक बापू यह बात तय कर चुके थे और जवाहर की तारीफ म यह कहना पडगा कि उन्हें रागी करने म कठिनाई नहीं हुई। कायकारिणी की बठक के दौरान उनका रवया भद्र रहा जो उनके अनुरूप ही था और यही कारण था कि बठक का काम निर्विघ्न सम्प न हा सका।

यह सब भी इतिहास का एक परिच्छेद था। बापू ने इस मामल को जिस भावना स हाथ म लिया सो भी बता दू। जब राजाजी और उनके सगो साथिया न शपथ ली तो राजाजी ने बापू का तार भेजकर उनके आशीर्वाद की कामना की। बापू ने तार तो भेजा पर ताकीद कर दी कि उसे प्रकाशित न किया जाए। तार इस प्रकार था निजी। बैठक के पथ प्रदर्शन म मुझे सतत प्रार्थना स प्रेरणा मिली। आप पर कितना भरोसा करता हू आप जानते है। भगवान आपका कल्याण करें। इस प्रकाशित मत करिय। सदस्यो का सदेशा दन का मुझे अधिकार नहीं ह। यह काम जवाहरलाल के जिम्म है। सप्रेम।

लाड हैलिफक्स जादि लोगा से बातचीत के दौरान आप इस तार का हवाला द सकते हैं चाहे ता तार की भाषा भी उद्धृत कर सकते हैं। बापू ने विधायका को जिस भावना के साथ विधान-सभाओ म जाने का परामश दिया है उसका अब दाज हरिजन म लिख उनक इस लेख से हाता है जिसकी नकल आपक पास भज रहा हू। मैं एक प्रति अगाथा का भी भेजना चाहता था पर अब मर पास

कोई प्रति नहीं बची है। वह चाह तो हारजन कार्यालय समगा लें। इस लेख की अग्रेजा मे क्या प्रतिक्रिया होती है सो जानना चाहूंगा। इसका पता आप अपनी वाली प्रति दिखाकर लगा सकते हैं, क्योंकि अ यथा उहे यह लख पढने का अवसर शायद न मिले। आप इसकी और अधिक प्रतिया तयार कर मित्रों को भेज सकते हैं। मैं राजाजी के उस भाषण की कटिंग भी भेज रहा हू जो उन्होंने गवनर के आह्वान के दो दिन पहले दिया था।

सप्रेम,
महादेव

सलग्न बापू का लेख

कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल

जब कायदागिणी तथा अय कांग्रेसी पद-ग्रहण के प्रश्न पर मेरी सम्मति पर ध्यान देने के लिए तयार हैं तो मेरा भी जन-साधारण के प्रति यह कतव्य हो जाना है कि मैं अपना विचार उनके सामने रख दू। 'हरिजन' के संचालन में मैंने अपने लिए जो सीमाएँ स्वेच्छा से निर्धारित की थी, उनका यतिजम करने की सफाई देने की मैं कोई जरूरत नहीं समझता। भारत शासन कानून को सब कोई भारत की स्वसद्वता के ध्येय के लिए नितान्त अपर्याप्त समझत हैं। लेकिन यह कितना ही कमजोर और मर्यादित कानून हो यह सभव है कि तलवार के शासन का स्थान बहुमत द्वारा संचालित शासन ले ले। इस दिशा में यह एक शुभ प्रयत्न है। तीन करोड़ नर नारियाँ की मताधिकार प्रदान करने तथा उनके हाथों में शासन क व्यापक अधिकार देने को अय किसी नाम से पुकारना सम्भव नहीं है।

इस जाशा से यह विधान हमारे ऊपर थोपने की चेष्टा की गई है कि हम शन शन इसे एक अच्छी चीज मानने लगेंगे, अर्थात् हम अत में अपने शोषण-काय को वरदान के रूप में ग्रहण कर लेंगे। इस आशा को निराशा के रूप में बदलाना तभी सम्भव होगा, जब इन तीन करोड़ मतदाताओं के प्रतिनिधि पद-ग्रहण करके इन सारे अधिकारों का उपयोग बुद्धि विवेक से करेंगे और इनके रचयिताओं के निहित इरादा को निकम्मा साबित कर देंगे। यह काम कानून की भीमा में गहते हुए आसानी से हो सकता है। वास्तव में, शासन विधान के रचयिताओं से अपक्षित आचरण में भिन्न आचरण करके ऐसा किया जा सकता है। वे हमसे इस शासन विधान के माध्यम से जो काम कराना चाहते हैं वह हम न करें। उदाहरण के लिए, मली लोग शिक्षा के लिए आवश्यक धन आवकारी कर से प्राप्त करने के बजाय शिक्षा को स्वावलंबी ही बना दें। और मादक द्रव्य निषेध कानून

नागू कर दें। यह सुभाव कुछ चौंरानेवाला प्रतीत होगा पर वास्तव में यह पूणतया व्यवहाय तथा तकमिद्ध। जेलखाना को बारखानो और सुधारगृहो में बदल दिया जाए। वे खर्चोले और दण्ड देनेवाले विभाग न रहकर स्वावलवी शिक्षण संस्थाए बनाई जा सकती हैं। इविन गाधी समथीते का केवल नमक वाला अश ही जीवित है पर गरीबो को अब भी नमक वहां करमुक्त मिलता है ? अब कम से-कम काप्रेसी प्रातो में तो यह करमुक्त कर ही दिया जाए। जिनना कपडा खरीदा जाए सब खादी हो। नगरो की अपेक्षा गावो और ग्रामीणा पर अधिक ध्यान दिया जाए। य उठाहरण अकस्मात ही चुन लिये गए हैं। इन मारे कामो को वध रूप से हाथ में लिया जा सकता है, पर अभी इस दिशा में कोइ कोशिश तक नही हुई है।

अब रही मस्त्रियों के व्युक्तिगत आचरण की बात। काप्रेस का अध्यक्ष तीसरे दर्जे में यात्रा करता है क्या मंत्री लोग पहले दर्जे में जायेंगे ? काप्रेस का अध्यक्ष मोटी खादी का कुर्ता मिर्जई और धोती पहनता है, क्या मंत्री लोग पारचात्य वश भूपा धारण करेंगे और पारचात्य ढग का खर्चीना रहन-सहन अपनायेंगे ? पिछले सत्रह वर्षों में काप्रेसियो ने कमाल की सान्गी सीधी है। राष्ट्र अपने मस्त्रियो से यह अपेक्षा करेगा कि वे लोग इस मादगी को अपने अपने प्राण की शासन व्यवस्था में भी अमल में लाए। यह उनके लिए गव की बात होगी, लज्जा की नहीं। हमारा देश ससार में सबसे दरिद्र देश है लाखो प्राणी अध पट खाते हैं। उसके प्रतिनिधि अपने निर्वाचको के रहन-सहन से भिन्न प्रकार का रहन सहन नहीं अपना सकते। अग्रेज लोग म्हा विजेताओं की हैसियत में जाए उ हान विजिता की असहायावस्था की ओर पीठ करके अपने ढग के जीवन-स्तर का जन्म दिया। यदि मस्त्रिगण गवनरा तथा सुपापित नौकरशाही की नकल करने में वचे रहें तो इतने ही स भली भांति प्रकट हो जाएगा कि काप्रेस की मनोवृत्ति और उनकी मनोवृत्ति में कितना अंतर है। हमारे और उनक बीच साझेदारी का नाता षुडना उतना ही असम्भव है जितना एक भीमकाय और एक बौने के बीच।

काप्रेसी लोग यह न समझ बैठें कि सादगी का ठंका उन्हाने ही ले रखा है और न यह सोचने लगे कि उन्होंने १९२० में कोट पतसून और मेज-कुर्सी का परित्याग करके गलती की। मैं खलीफा अबूबकर और खलीफा उमर का दृष्टांत पेश करता हू। राम और कृष्ण प्रागतिहासिक महापुरुष हैं इसलिए इस सदभ में नाम लेना उचित नहीं लगगा, पर इतिहास हम बताता है कि प्रताप और शिवाजी सादगी के जीते जागते उदाहरण थे। शक्ति हाथ में रहते उन्होंने क्या कुछ किया इस बारे में लोगो की अलग अलग रायें हो सकती हैं पर खलीफा अबूबकर और

खलीफा उमर के वार म दो रायें हो ही नहीं सकती। सत्सार की सम्पदा उनके कदम चूमती थी, पर उहानि जसा कठोर जीवन विताया उसकी मिसाल दुनिया के इतिहास म बूढ न मिलेगी। खलीफा यह बरदाशन न कर सके कि उनके मातहत सिपहसालार दूर देशा म भोटा बपडा और भोटा आटा छोड और किसी चीज स जीवन बलायें। काग्रेसी भी १९२० मे विरासत म मिली सादगी से काम लेंगे, तो हजारों रूपयो की बचत कर सकेंगे गरीबो को आशा प्रदान करेंगे और सम्भवत शासन के ढांचे को भी बदल सकेंगे। मरे लिए यह कहना आवश्यक है कि सादगी का अर्थ फटेहाल रहना कदापि नहीं है। सादगी मे कुछ ऐसा सौंदर्य है जिसे कोई भी देख सकता है। साफ-सुथरे और चुस्त दिखाई देने के लिए पैने की जरूरत नहीं है। शान शौकत और तडक भडक अधिकतर छैलछबीलेपन के पर्यायवाची हैं। तडक भडक को एक ओर रखकर जो काम किया जायेगा, उससे यह साबित करना सम्भव होगा कि जनता की आकांक्षाओं की पूर्ति की दिशा म यह नया शासन विधान कितना अनुपयुक्त है। साथ ही इस व्यवस्था का अन्त करने के हमारे सकल्प का भी बल मिलेगा।

ब्रिटिश पत्र भारत को हिंदू व मुसलमान—इन दो भागो म बाटन मे लग हुए हैं। काग्रेस-बहल प्रातो को हिन्दू प्रात और अ-य प्रातो को मुस्लिम प्रात बताया जा रहा है। उन्हें इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि यह सचोसर बूठ है। मैं तो यही आशा किये बैठा हू कि इन छोहो प्रातो के मन्त्री अपने आवरण द्वारा इस बारे मे सारे सशयो का निवारण करेंगे। वे अपने मुसलमान सहकर्मिया को लिखा देंगे कि वे हिंदू, मुसलमान सिख ईसाई, पारसी इस प्रकार क भेद भाव म विश्वास नहीं रखते। न वे सवण और अवण हिन्दुओ म ही कोई भेद करेंगे। वे अपना प्रत्येक काय से यह सिद्ध कर लेंगे कि उनकी दृष्टि म सब समान हैं। सभी इस भारत भूमि की सत्तान हैं न को ऊंचा है, न नीचा। दरिद्रता और जलवायु सबक हिस्से म समान रूप स आई है। बड़ी बड़ी समस्याओ का सबको समान रूप से सामना करना है। यद्यपि अग्रेजी व्यवस्था के व्यावहारिक स्वरूप स हम यह प्रतीत होता है कि इस व्यवस्था का लक्ष्य हमारे लक्ष्य स भिन्न है, तथापि जो नर नारी इन लक्ष्यो का प्रतिनिधित्व करते हैं वे एक ही मानव परिवार के सदस्य हैं। अब य सब इतिहास म पहली बार एक जगह एकत्र होग। मैंने मानवता के दृष्टिकोण स इस विधान का जो अध्ययन किया है यदि वह ठीक है तो कहना होगा कि य दोना जातिया—अग्रज और भारतीय—अपना-अपना इतिहास लेकर एक जगह एकत्र होगी। दोना की अलग-अलग पृष्ठभूमि है अलग-अलग लक्ष्य हैं। अब ये दोना जातिया अपनी-अपनी विचार शली और परिपाटी की साथकता एक-

लागू कर दें। यह मुझाव कुछ चौकानेवाला प्रतीत होगा पर वास्तव में है यह पूणतया व्यवहाय तथा तकसिद्ध। जेलखानो को कारखानो और सुधारगही में बदल दिया जाए। वे खर्चिले और दण्ड देनवाते विभाग न रहकर स्वावलंबी शिक्षण संस्थाएं बनाई जा सकती हैं। इविन गांधी समझौते का केवल नमक वाला अंश ही जीवित है पर गरीबो को अब भी नमक कहा करमुक्त मिलता है? अब कम से-कम कांग्रेसी प्रांती में तो यह करमुक्त कर ही दिया जाए। जितना कपडा खरीदा जाए सब खादी ही। नगरो की अपेक्षा गावा और ग्रामीणो पर अधिक ध्यान दिया जाए। ये उदाहरण अकस्मात् ही चुन लिय गए हैं। इन मारे कामा को बध रूप से हाथ में लिया जा सकता है पर अभी इस दिशा में कोई कोशिश तक नहीं हुई है।

अब रही मन्त्रियो के व्यक्तिगत आचरण की बात। कांग्रेस का अध्यक्ष तीसरे दर्जे में यात्रा करता है क्या मंत्री लोग पहले दर्जे में जायेंगे? कांग्रेस का अध्यक्ष मोटी खादी का कुर्ता मिजई और धोती पहनता है क्या मंत्री लोग पाश्चात्य वेश भूषा धारण करेंगे और पाश्चात्य ढंग का खर्चिला रहन-सहन अपनायेंगे? पिछले सत्रह वर्षों में कांग्रेसिया ने कमाल की सादगी सीखी है। राष्ट्र अपने मन्त्रिया से यह अपेक्षा करेगा कि वे लोग हम मादगी को अपने अपने प्रांत की शासन व्यवस्था में भी अमल में लाएं। यह उनके लिए गव की बात हीनी लज्जा की नहीं। हमारा देश ससार में सबसे दरिद्र देश है। नाखो प्राणी अध पेट खाते हैं। उसके प्रतिनिधि अपने निर्वाचकों के रहन-सहन से भिन्न प्रकार का रहन सहन नहीं अपना सकते। अंग्रेज लोग यहां विजैताओ की हैसियत से आए उ होन विजितो की असहाय्यवस्था की जोर पीठ करके अपने ढंग के जीवन-स्तर का जन्म दिया। यदि मन्त्रिगण गवनरो तथा सुपोषित नौकरशाही की नकल करने से बचे रहें तो इतने ही स भली भांति प्रकट हो जाएगा कि कांग्रेस की मनावृत्ति और उनकी मनोवृत्ति में कितना अंतर है। हमारे और उनके बीच साझेदारी का नाता जुडना उतना ही असम्भव है जितना एक भीमकाय और एक बौने के बीच।

कांग्रेसी लोग यह न समझ बैठें कि सादगी का ठेका उन्होंने ही ले रखा है और न यह सोचन लगे कि उन्होंने १९२० में कोट पतलून और मेज-कुर्सी का परि त्याग करके गनती की। मैं खलीफा अबूबकर और खलीफा उमर का दृष्टांत पेश करता हूँ। राम और कृष्ण प्रागतिहासिक महापुरुष हैं इसलिए इस सद्म में नाम लेना उचित नहीं लगेगा पर इतिहास हम बताता है कि प्रताप और शिवाजी सादगी के जीते-जागते उदाहरण थे। शक्ति हाथ में रहते उन्होंने क्या कुछ किया हम वार में लागो की अलग-अलग रायें हो सकती हैं पर खलीफा अबूबकर और

खलीफा उमर के वारे म दा रायें हो ही नही सकती । सत्तार की सम्पदा उनके कदम चूमती थी, पर उहाने जसा कठोर जीवन बिताया उसकी मिसाल दुनिया के इतिहास मे दूडे न मिलेगी । खलीफा यह बरदाश्त न कर सके कि उनके मातहत सिपहसालार दूर देशो म मोटा कपडा और मोटा आटा छोड और किसी चीज स जीवन चलायें । काप्रेसी भी १९२० से विरासत मे मिली सादगी से काम लेंगे, तो हजारो रुपयो की बचत कर सकेंगे गरीबो को आशा प्रदान करेंगे और सम्भवत शासन के ढांचे को भी बदल सकेंगे । मेरे लिए यह कहना आवश्यक है कि सादगी का अर्थ फटेहाल रहना कदापि नही है । सादगी म कुछ ऐसा सौंदर्य है जिसे कोई भी देख सकता है । साफ-सुथरे और चुस्त दिखाइ देने के लिए पस की जरूरत नही है । शान शौकत और तटव भडक अधिकतर छलछत्रीलेपन के पर्यायवाची हैं । तटव भडक को एक ओर रखकर जो काम किया जायेगा, उससे यह साबित करना सभव होगा कि जनता की आकांक्षाओ की पूर्ति की दिशा म यह नया शासन विधान कितना अनुपयुक्त है । साथ ही, इस व्यवस्था का अन्त, करने के हमारे सकल्प को भी बल मिलेगा ।

ब्रिटिश पत्र भारत का हिंदू व मुसलमान—इन दो भागो म बाटन मे लग हुए हैं । काप्रेस-बहुल प्रातो को हिंदू प्रात और अ य प्रातो को मुस्लिम प्रात बताया जा रहा है । उहें इस बात की कोई चिंता नहीं है कि यह सरामर झूठ है । मैं तो यही आशा किय बठा हू कि इन छोहो प्राता के मत्तो अपन आचरण द्वारा इस बारे म सारे सशयो का निवारण करेंगे । वे अपन मुसलमान सहकर्मिमा को दिखा देंगे कि वे हिंदू, मुसलमान सिख, ईसाई पारसी इस प्रकार के भेद भाव म विश्वास नहीं रखत । न वे सत्रण और अवण हिंदुओ मे ही कोई भेद करेंगे । व अपन प्रत्येक काय से यह सिद्ध कर देंगे कि उनकी दष्टि मे सब समान हैं । सभी इस भारत भूमि की सतान हैं न कोई ऊचा है न नीचा । दरिद्रता और जलवायु सबके हिस्स म समान रूप से आई है । बडी बडी समस्याओ का सबको समान रूप स सामना करना है । यद्यपि अंग्रेजी व्यवस्था के 'यावहारिक' स्वरूप से हम यह प्रतीत होता है कि इस व्यवस्था का लक्ष्य हमार लक्ष्य से भिन्न है तथापि जानर नारी इन लक्ष्यो का प्रतिनिधित्व करते हैं वे एक ही मानव परिवार के सदस्य हैं । अब ये सब इतिहास मे पहली बार एक जगह एकत्र होंगे । मैंने मानवता के दृष्टिकोण स इस विधान का जो अध्ययन किया है यदि वह ठीक है तो कहना होगा कि ये दोना जातिया—अंग्रेज और भारतीय—अपना-अपना इतिहास लेकर एक जगह एकत्र होंगे । दाना की अलग-अलग पच्छभूमि है अलग-अलग लक्ष्य हैं । अब ये दोनो जातिया अपनी अपनी विचार शाली और परिपाटी की सायकता एक-

दूसरे से स्वीकार कराने की कोशिश करेंगी। सस्थाए प्रायः जड़ और निष्प्राण होती है पर जो लोग उनका उपयोग करते हैं या उनमें शामिल होते हैं वे तो चेतन होते हैं प्राणवान होते हैं। यदि अंग्रेज तथा अंग्रेजियत के रग म रग भारतीय कांग्रेस के दृष्टिकोण को जो वस्तुतः भारत का दृष्टिकोण है, देख पायेंगे तो सग्राम में स्वतः ही कांग्रेस की विजय हो जायेगी, और रक्त की एक बूद गिराये बिना पूरा स्वराज्य हो जायेगा। मैं इसी को अहिंसात्मक पद्धति की शक्ति कहता हूँ। यह पद्धति मूखतापूर्ण कौरी कल्पना पर आधारित तथा बिल्कुल अवावहारिक भल ही लग, पर विधान को साधक बनाने में कांग्रेसियों को भारतवामियों को, तथा अंग्रेजों को एकमात्र इसी पद्धति का सहारा लेना होगा। हम पद ग्रहण करने को राजी हो गये इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम इस शासन विधान को सफल करने मात्र की कोशिश में लगे रहेंगे। कांग्रेसी लोग जिस ध्येय सिद्धि में जुटे हैं, उस मांग पर उन्हें आगे बढानेवाला यह एक गम्भीर बधानिक कदम-मात्र है जिससे एक ओर रक्तपातपूर्ण शक्ति और दूसरी ओर व्यापक पमाने पर उठ खड़े होनेवाले सविनय अवज्ञा आन्दोलन से बचा जा सकता है। भगवान करे यह सफल हो।

६

ग्रासवेनर हाउस,

पाक लेन

लंदन, डब्ल्यू० १

१७ जुलाई १९३७

प्रिय महादेवभाई

इस डाक से मेरे लिए इसके सिवा और कोई बात लिखने योग्य नहीं रह गई है कि इस समय वापू की प्रख्याति चरम सीमा तक जा पहुँची है। यहाँ लोग उनकी विवेक-बुद्धि, उनकी निष्णय करने की क्षमता तथा उनके अत्यंत सद्गुणों की प्रशंसा करते नहीं अघाते, और उनकी साख इस समय चोटी पर है। पर जिस बात से मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता हो रही है वह यह है कि यहाँ हर कोई यह कहता है कि यदि कांग्रेस ने प्रातो में शासन काय सुचारु रूप से चला लिया, तो हमने स्वतंत्रता सौंपने की जो अवधि सोच रखी है उससे दशमात्र समय में उसकी

उपलब्धि हो जायेगी। एक मित्र बाल उठा भगवान की सौगंध, यदि आप लोग ठीक ढंग से शासन प्रबन्ध चलायें तो अगला वाइसराय अपनी जेब में औपनिवेशिक स्वराज्य का दस्तावेज लेकर यहाँ से विदा होगा।

ऐसी मनोवृत्ति का जन्म हुआ यह सतोप की बात है, क्योंकि इसका भी महत्त्व है। पर जहाँ सब कोई कांग्रेस के पद-ग्रहण करने से बहिष्कार है वहाँ मुझे अपने लोगों की स्थिति देख-देखकर बेचैनी हो रही है। मेरा यह आंतरिक विश्वास है कि यह हमारे लिए परीक्षा की घड़ी है और यदि हम कमीटी पर खर नहीं उतरे तो हम घड़ी की सुई विपरीत दिशा में घुमा देंगे। इस समय जिस चीज की सबसे अधिक जरूरत है वह है प्रष्टाचार शून्य शासन काम और आपस का संगठन। मुझे जिन बातों की आशंका है वह यह है कि कहीं साम्प्रदायिक उपद्रवों की सध्या में वृद्धि न हो जाए, और हमारा ही आदमी हम परेशान न करने लग जाए।

अभी उस दिन मैं लाड डर्बी के यहाँ खाना खा रहा था। मण्डली में लाड विलिंगडन, लाड हार्डिंग तथा अन्य कई लाड थे—सब छोटी के लोग। मैं लाड विलिंगडन के पास बठा था। चर्चा का विषय था—भारत। हमने क्या चर्चा की होगी तुम खुद ही सोच लो।

कायकारिणी की वर्धावाली बठक के बाद से मुझे तुम्हारी कोई चिट्ठी नहीं मिली। तुम कृष्णकीर्ण की नींद ले रहे दिखाई दे रहे हो।

सप्रम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
बधा

७

भाई धनश्यामदास

तुम्हारी भारी चिट्ठियाँ मैंने बड़े ध्यान से पढ़ी। तुम्हें लिखने का समय भी नहीं मिलता इच्छा भी नहीं थी। और लिखता भी क्या? प्रतिक्षण अपस्था बदन और सुघर रही थी। ऐसी हालत में कुछ लिखना मुनासिब नहीं होता। औरा का निखना तो इसलिये जरूरी था कि वे मुझे जितना अधिक प्रभावित कर सकें

करें। तुम्हारी चिट्ठियों का मुझपर कितना असर हुआ वह नहीं सकता। पर इतना तो वह ही दू कि विदेशा से जो पत्र आए उनका मुझपर इतना प्रभाव नहीं पडा जितना भारत में पडित होनेवाले घटनाचक्र का प्रभाव पडा। तुम चाहा, तो मेरी तुलना एक ऐसी निरीह गभवती से कर सकते हो जो प्रसव के लिए तैयार बठी है और जिसके गभ में कितना कुछ ही रहा है क्या हो रहा है इसका बयान उस बेचारी की सामर्थ्य से बाहर है। पर एक बात कह दू ? कायकारिणी की बैठक में जवाहर ने जो कुछ बर दिखाया लाजवाब था। वह मेरी निगाह में पहले से ही काफी ऊंचे थे जब वह और ऊंचे उठ गये हैं। तिस पर तुरी यह कि हममें अब भी मतभेद है।

हमारी परेशानिया का जालम तो अब शुरू हुआ है। मंगलप्रद परिणाम खुद हमारी सामर्थ्य सत्य की उपासना सत्साहस सकल्प जागरूकता और नियंत्रण पर ही निर्भर है। तुम जिस काम में जुटे हुए हो वह भी अच्छा ही है। अधिकारियों को यह समझ लेना चाहिये कि कायकारिणी के प्रस्ताव में मुलम्मेबाजी से काम नहीं लिया गया है। उसका एक एक शब्द ममपूण है और उसे कायरूप में परिणत किया जायेगा। साथ ही जो कुछ किया गया ईश्वर के नाम पर, और उसपर भरोसा करके। तम साधु हो, मेरी कामना है कि तुम साधु ही बने रहो।

बापू के आशीर्वाद

सगाव

१८ जुलाई १९३७

८

मगनवाडी

वर्धा (मध्य प्रात)

सोमवार १९ जुलाई १९३७

प्रिय धनश्यामदामजी

बापू का कलवाला पत्र तो पडा ही होगा। मैं अपने नोट में कहा था कि मैं स्थिति स्पष्ट कर दूंगा। पर ऐसा लगता है कि न तो बापू ने डॉ० चोड्यराम के तार को और न पत्रों में प्रकाशित समाचार को ही गलत समझा। वास्तव में

बापू का ता यह कहना था कि मंत्रिया तथा उनके सेक्रेटरिया के लिए बड़े-बड़े वेतन की बात स्वीकार करने के बजाय यह सभी विधायकों के लिए (१००) मासिक वेतन नियत किये जाने को श्रेयस्वर समझेंगे। मैं बल सध्या समय उनसे मिला तो नेया कि इस प्रश्न को लेकर वे उद्दिग्ण हैं। मैं पूछा कि क्या उन्होंने वायव्यारिणी की हाल की बठक में म बात का स्पष्टीकरण नहीं किया था। बापू ने उत्तर दिया कि किया तो था पर जवाहरलाल की यह धारणा थी कि वेतन में कमी की जायेगी तो जो लोग शहरों में रहते हैं उन्हें पूरा नहीं पड़ेगा। बापू बोले 'इस विषय को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा हुई है। माना हुआ है यह बात मामूली-नी समझवाले आत्मी के भी मले उतरनी चाहिए कि राज्य के उच्चतम पदाधिकारी के लिए अधिकतम-अधिक (१००) मासिक रखा जाये। यदि हम भारी वेतन में आरम्भ करेंगे, तो हम कहा जाकर रहेंगे?' इसके बाद उनका मौन आरम्भ हो गया और उन्होंने एक लेख मेरे सुपुत्र कर दिया जिसकी नकल इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ। यह जाहिर था कि बापू २३ बजे ही उठ बैठेंगे और प्रायना के समय तक उन्होंने यह लेख तैयार कर लिया होगा।

मैं इस लेख की नकल मारे मुख्य मंत्रियों के पास भेज रहा हूँ। यह आपके पास बुधवार की सुबह तक पहुँच जायगा। मैं आपके 'हाँ' या 'नहीं' के उत्तर की अपेक्षा आपकी सविस्तार टीका की प्रतीक्षा बुधवार की सध्या या बहस्पतिवार की सुबह तक करूँगा। हरिजन शुक्रवार को छपता है।

आपका

महादेव

सलग्न बापू का लेख

मंत्रियों का वेतन

शिक्षा श्रेण के एक सुप्रसिद्ध कायकर्ता ने कुछ इस प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं— आशा है समाचार-पत्रों में छपी इस रिपोर्ट से आपका आनन्द नहीं हुआ होगा कि कांग्रेसी मंत्रिया ने अपने लिए ५०० ६० मासिक वेतन तथा रहने और दौरा करने के निमित्त ३०० ६० लेन का निश्चय किया है। वेतन का यह परिमाण पहले के वेतन से कम है, केवल इतना ही यथेष्ट नहीं है। इस प्रश्न को इस दृष्टिकोण से देखना सबका अवाञ्छनीय है। इस प्रश्न को एकमात्र इसी दृष्टि काण से देखना उपयुक्त होगा कि इस वेतन का परिमाण सत्सार के इस परमदरिद्र दश के लोगों की औसत आय के अनुपात में कितना उतरता है। कांग्रेस के सेक्रेटरी और एक मंत्री म क्या जतर है? आपने विद्यापीठ अधिल भारतीय कांग्रेस

कमेटी तथा अन्य संस्थाओं के लिए उच्चतम वेतन ७५ रु० निर्धारित किया है। विद्यापीठ के किसी अध्यापक के लिए बल को मंजूर करना बिलकुल सम्भव है, पर वह मंत्री बनते ही ७५ रु० के बजाय ५०० रु० क्या पाने लगेंगे ? फर्ग्युसन कॉलेज का उदाहरण लीजिए। वहाँ भी अध्यापकों को ७५ रु० में अधिष्ठित नहीं मिलता था। एक मंत्री तथा उसका सेक्रेटरी का वेतना में भी किसी प्रकार का अंतर क्या हो ? यह सब अपनी नियुक्ति छुट्टी ही कर लेते हैं। क्या उन्हें यह भेदभाव बरतने का कोई अधिकार है ? मैं स्वीकार करता हूँ कि यह सारी बातें मंत्री समक्ष में बाहर है। मैं तो यही आशा लगाय बठा हूँ कि समाचार-पत्रों में छपी यह रिपोर्ट निराधार होगी और इन सभी छद्म कांग्रेसी प्रजा के मन्त्रिगण अपने आचरण के द्वारा यह सिद्धा देंगे कि जिन बराबरी बुभुक्षित नर-नारियों के नाम पर उन्होंने पद ग्रहण किया है उनसे वे सच्चे प्रतिनिधि हैं। उन्हें मोटर गाड़ियाँ की क्या जरूरत है ? वे अपने दफ्तरो तक पदसूचक बयोन जाएँ या ट्रामा या बसों का उपयोग क्या न करें ? मैं जापान हो आया हूँ। वहाँ के वेतनों का परिमाण रिपोर्ट में दिये गये परिमाण से काफी नीचा है। जापान एक स्वतंत्र देश है और हमसे कहीं अधिक समृद्ध है। यदि हम मंत्रियों के पदों को ऐश-आराम का साधन बना देंगे तो इसका अर्थ यह होगा कि शासन विधान के धीमणेश से ही हम उसका भजन करने में जुट जायेंगे। अब जबकि आपने हरिजन के स्तम्भों में इस प्रकार के विषयों की चर्चा आरम्भ कर दी है तो क्या इस बारे में अपनी सम्मति व्यक्त करके इस दोष का निवारण नहीं करेंगे ? हाँ यदि रिपोर्ट निराधार हो तो बात दूसरी है।

उत्त शिक्षा प्रमी के साथ जा बातचीत हुई उसका यही सारांश याद पड़ता है। मैं इन मज्जनों की मनोव्यथा समझता हूँ। उनकी तरफ मुझे भी यही आशा है कि जो रिपोर्ट छपी है वह ध्रामिक है। इस सदभ में यह याद रखना उचित होगा कि कांग्रेस ने अपने प्रस्ताव में ५०० रु० उच्चतम वेतन निर्धारित किया है। जहाँ तक मुझे याद पड़ता है इस रकम में मंत्री भी कुछ जा जाता है, इससे अधिक की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए।

६

वर्धा

१६ जुलाई, १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

इस पत्र के साथ 'हरिजन' के लिए लिखे बापू के एक सक्षिप्त लेख की नकल भेज रहा हूँ। बापू का दिमाग किस दिशा में काम कर रहा है इसका आभास आपको इस लेख से हो जाएगा।

यह अगाथा का भी दिवा दीजिए। जल्दी में लिख रहा हूँ।

आपका,

महादेव

सलग्न बापू का लेख

बुनियादी अंतर

एक क्षण के लिए पुरानी और नयी व्यवस्था के पारस्परिक अंतर पर विचार करना आवश्यक है। इस अंतर को पूरी तरह हृदयगम करने के लिए हम कुछ दर के लिए विधान की सकीणता को भूल जाय। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि कांग्रेस पद-ग्रहण करके अधिक-से अधिक दूरी तक पहुँची है, सभी कांग्रेसियों को यह देखना है कि इनके हाथ में किस तरह का अधिकार आया है। पहले मंत्री साग गवर्नर के नियंत्रण में रहते थे अब वे कांग्रेस के नियंत्रण में हैं। वे कांग्रेस के प्रति उत्तरदायी हैं। उन्हें जा दर्जा मिला है, कांग्रेस की बदौलत मिला है। यद्यपि गवर्नर और सरकारी अमल को हटाया नहीं जा सकता तब भी उनकी जवाबदेही मंत्रियों के प्रति है। पर मंत्री नाग उनपर एक मर्यादा तक ही नियंत्रण रख सकते हैं। इस तथ्य का सामने रखकर मंत्रिगण कांग्रेस की अर्थात् जनता की शक्ति सामर्थ्य को ठोस रूप दे सकते हैं। जब तक मंत्रिगण विधान की सीमाओं के भीतर रहेंगे, उन्हें सब-कुछ करने की छूट रहेगी भले ही उनके काम गवर्नरों का अरुचि कर लगे। वस्तुस्थिति की जांच पड़ताल करने से पता लगगा कि जब तक जनता हिंसा का परित्याग किए रहनी, मंत्री साग राष्ट्रीय शक्ति के विकास के लिए बहुत-कुछ करने का स्वतंत्र रहेंगे।

इस अधिनियम के समुचित उपयोग के लिए यह आवश्यक है कि जनता कांग्रेस और उसके मंत्रियों के साथ हार्दिक सहयोग करे। यदि कोई मंत्री अपना कर्तव्य

पालन करने में तिलाई बरत ता इसकी शिकायत अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी से कोई भी आदमी कर सकता है और राहत की माग कर सकता है। पर बानून को कोई अपन हाथ में नहीं ले सकता।

कांग्रेसिया को भी यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कांग्रेस की क्षमता को चुनौती देनेवाली राजनतिक पार्टी मंदान में नहीं है। इसका कारण यह है कि गांधी ने किसी अन्य राजनतिक पार्टी में अभी प्रवेश नहीं किया है। यह कोई एक दिन का काम नहीं है। फलतः जहां तक मैं देख पाता हूँ मंत्रियों के लिए कांग्रेस का पूर्ण स्वराज्य का ध्येय सामने रखकर काम करने की असीम सुविधा है। पर हमें यह जरूरी है कि वे ईमानदारी, स्वायत्त्याग, परिश्रम और जागरूकता से काम लें तथा बुभुक्षित जन-समुदाय के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहें। इसमें शक नहीं कि विधान ने मंत्रियों के लिए राष्ट्र निर्माण-कार्य पर व्यय करने के निमित्त धन की समुचित व्यवस्था नहीं की है पर यह भी भाति मात्र है। मैं सर डेनियल हैमिल्टन के इस कथन की माधकता में आस्था रखता हूँ कि असला धन परिश्रम है धातु नहीं। कांग्रेस द्वारा पोषित श्रम अधिक नहीं तो उतना धारण करता है ही जितना परिश्रम द्वारा पोषित कांग्रेस। भारत में ऊंचे-ऊंचे पदों पर रह एक अंग्रेज अथवा स्त्री के उदगार य हैं भारत का हमारी सबसे बुरी देन यह रही कि हम उन पर मोटी मोटी तनख्वाहावां जमल को लाता है। जो हो चुका उसका क्या किया जाय पर अब मुझे स्वतंत्र रूप में कुछ करना है। इस समय जो-कुछ रूपया कमान की मनावलि से किया जा रहा है वह अब सवा की भावना से अनुप्राणित होकर करना चाहिए। अध्यापकों और डाक्टरों का माटी तनख्वाहा देन की जरूरत क्या है? क्या यह काम सहकारिता के आधार पर किया जाना सम्भव नहीं है? जब आपके पास ७० करांड हाथ काम में जुटने को तयार हैं तो आपको रूपये की चिंता क्या करनी चाहिए? यदि मारा काम सहकारिता के आधार पर किया जाय तो वह वास्तव में समाजवाद का ही एक सशोधित रूप होगा। इस तरह रूपये की जरूरत नहीं पड़ेगी कम से कम अधिक मात्रा में तो कदापि नहीं पड़ेगी। मैं इसकी पुष्टि छोटे से पात्र में पाता हूँ। संगठन के चार सौ बयस्क नर नारी प्रतिवर्ष १० हजार रूपये अपनी जवा में जासानी में रख सकते हैं। यस उनके मर कहने पर चलन की देर है। पर वे ऐसा नहीं करते क्योंकि उनमें सहकारिता की भावना का अभाव है। वे विवकयुक्त परिश्रम की कला से अनभिज्ञ हैं। वे कोई नयी बात सीखना नहीं चाहते हैं। अस्पश्यता ने उनका रास्ता रोक रखा है। यदि उन्हें एक लाख रूपया दे दिया जाय तो वे उसका सदुपयोग करने में असमर्थ रहेंगे। अपनी ऐसी दशा के लिए वे खुद ही जिम्मेदार हैं। वे, अर्थात् हम मध्यम

श्रेणी के लागे। जो बात सगाव के बार में साधक है वही अर्थ गावा पर भी लागू होती है। सगाव में हमारी सतत मेहनत सफल हो तो रही है, पर गति मथर है। सरकार इस दिशा में एक पसा अतिरिक्त खच किए बिना बहुत कुछ कर सकती है। सरकारी कमचारी लागे को हैरान परशान करने के बजाय उनकी सेवा में जुट सकते हैं। ग्रामीणा स जबरन कोई काम नहीं कराना चाहिए। उन्हें ऐसी शिक्षा देनी चाहिए, जिससे उनके नतिक, मानसिक, भौतिक और आर्थिक बल में बढि हो। १-

मो० ब० गाधी

१०

ग्रासबेनर हाउस,

पाक लेन

लन्दन डब्ल्यू० १

२० जुलाई १९३७

प्रिय महादेवभाइ

आखिरकार तुम्हारा ६ तारीख का पत्र आ ही पहुँचा। उस पत्रकर मन कुछ खिन्न हुआ, क्योंकि मुझे एसा लगा कि तुम्हारे विचार में कांग्रेस का निणय युक्ति युक्त ता नहीं था, पर लागे की उतावली के कारण उससे बचन का कोई उपाय नहीं था। पर तुम्हें अगाथा की जो पत्र लिखा है उस पत्रकर मुझे अपनी धारणा में परिवर्तन करना पडा। मुझे आशा है कि जो निणय लिया गया है वह इस कारण से नहीं कि हमारे राष्ट्रीय चरित्र में स्थायित्व का अभाव है बल्कि इस कारण कि वही निणय ठीक था। तुम्हारा यह कथन ठीक ही है कि यदि हम जडे रहते ता जो आश्वासन चाहते थे, वह हमें मिल जाता। पर वसी उपलब्धि उपादेय सिद्ध होती इसमें मुझे मन्दह है। सम्भवत गाधी इतिहास की पुनरावृत्ति ही जाती। दूसरी ओर उसका यहा पर हृद दर्ज का अनुकूल प्रभाव पडा है और यदि यह प्रयोग असफल रहा ता उसका दाव हम अपनी ही कठिनाइया का देना होगा। पर मेरा विश्वास है कि यह प्रयोग सफल ही होगा असफल नहीं। यह हमारी परीक्षा की घड़ी है। यदि हमने बठार परिश्रम किया तथा बुद्धि विवक में काम लिया साथ ही हम बापू का मागदशन मिलता रहा तो हम इन अग्नि

परीक्षा में घरे उतरेंगे ।

तुम्हारा यह समझ बटना ठान गयी है कि यह सब अधिक दिया तथा किया जाना नहीं है । वास्तव में यह सब तब तक बहुत अधिक बाल तथा किया ही, बल्कि इसके द्वारा हम अपना अंतिम ध्येय के बहुत निकट जा पहुँचेंगे । पर यह गवर्नर पर नहीं स्वयं हमारे ऊपर निर्भर करेगा । हम सम्भव में मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि मैं आज जब बम्बई के मनोनीत गवर्नर श्री राजेश लाम्बे के साथ दोपहर के भोजन पर था तब हमारी बातचीत लगभग इस घट घटा । यह हम लाम्बे के बारे में अधिक से-अधिक जानकारी हासिल करना चाहना था । वह बापू से भेंट करने के लिए ग्यासतौर से उत्सुक है । कहता था कि भारत पहुँचने पर उनसे जल्दी-से जल्दी मिलना की वासिना करता । अब यह बताया कि हमारी ध्येयस्था किस की जाय । बापू बम्बई बहुत कम जाते हैं पर लाम्बे गवर्नर से मिलने के लिए चल जाय । उससे उतने ही महत्त्व की एक और बात भी पूछी— क्या मन्त्री लोग उसके निमंत्रण पर उसके साथ भागन करन आयेंगे ? मैंने कहा कि मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता । मैंने उसे बताया कि वास्तव में बापू दावता के विचार हैं पर मन्त्री नाम बुलाए जान पर मान पर आ सकेंगे या नहीं इस बारे में उस जिस व्यक्ति में जान करनी चाहिए यह बापू ही हैं ।

नया गवर्नर सितम्बर के मध्य तक बम्बई पहुँचगा । मैं भी लगभग उन्ही दिना ग्हाज से उतरूँगा और सम्भव है यहाँ के लिए रवाना होने से पहले मैं उससे मिलूँ ।

मुझे स देयन के तुम्हारे मुझाव के बारे में दतना हा कहूँगा कि इस समय जल्दी से जल्दी भारत लौटने के अलावा मुझ और किमी चीज में दिलचस्पी नहीं है । पर ऐसा लगता है कि मुझे सितम्बर के मध्य तक गायद यही अटके रहना पड़े ।

हाँ मैं उड्गिरी के बढ़िया औजारों और वजानिक प्रयोग के बढ़िया विटम जरूर लेता आऊँगा और भी कुछ मगाना हाँ ता लिये ।

सप्रम

धनश्यामभासा

श्री महादेवभाई दसाइ

बधा

११

ग्रासवेनर हाउस,

पाक लन

लन्दन डब्ल्यू० १

२२ जुलाई १९३७

प्रिय महादेवभाइ

आज मैंने चर्चिल क यहा दापहर का भोजन किया और उनके साथ दो घंटे बिताए। सदा की भांति इस बार भी वह बड़ी सहृदयता से पत्र आए पर भारत के बारे में उनका ज्ञान ज्यो का-र्या है।

वह मुझे देखते ही बोले, तो, एक महान प्रयोग का आरम्भ हो गया है है न ? 'मैंने उत्तर में कहा 'सो तो है, आरम्भ तो हुआ गया है पर उसकी सफलता के लिए आपकी सहानुभूति और सद्भावना चाहिए।' उन्होंने मुझे आश्वासन दिया पर साथ-ही साथ कहा, यह सब खुद आप लागा पर निभर है। आप जानते ही है कि राजा के हस्ताक्षर होने के बाद मैंने विधान क विरुद्ध नवान तक नहीं हिलाई है। आप इस प्रयोग को सफलतापूर्वक निभा ल गये तो आप अपने लक्ष्य स्थान पर स्वत ही पहुंच जायेंगे। सत्तार भर में प्रजातन्त्र की कमी छीछालेदार हो रही है आप जानते ही है पर आप लोग प्रजातन्त्र का सफल मित्र बन पायेंगे तो आपको और भी आगे बढ़ने में कोई कठिनाई नहीं होगी। आप हमारे साथ 'याय का व्यवहार कीजिए, हम आपका साथ देंगे।'

मैंने पूछा 'याय के व्यवहार से आपका क्या अभिप्राय है ?' उन्होंने उत्तर दिया 'प्रातो को सतुष्ट कीजिए उनमें शांति का वातावरण निर्माण कीजिए लागा को खुशहाल बनाइय। हिंसा मत करिये अंग्रेजों की हत्या मत करिये।' मैंने उत्तर दिया 'आपने जा-कुछ कहा है उसमें मैं तो अवाक रह गया। क्या आप सचमुच यह मानते है कि हम अंग्रेजों की हत्या करेंगे ? उन्हें मेरे सहज सहजे पर आश्चर्य हुआ। पर उन्होंने मेरा यह आश्वासन स्वीकार किया कि भारत हिंसा में विश्वास नहीं रखता। मैंने कहा, 'कट्टर-स कट्टर अतिवादी कांग्रेसी का भी अंग्रेज विरोधी नहीं कहा जा सकता। वह स्वतन्त्रता के ध्येय में अवश्य विश्वास रखता है, पर इसलिए उसे अंग्रेज विरोधी बनने की जरूरत नहीं है।' उन्होंने पूछा कि 'क्या यह बात जवाहरलाल पर भी लागू होती है ?' मैंने कहा निस्संदेह। मैं पूजीबानी हूँ वह समाजवादी हूँ। और सामाजिक मामला में मेरा

उनसे मतभेद है पर यदि निष्पक्षता से काम लिया जाय तो कहना पड़ेगा कि वह एक महान् पुरुष हैं नीयत के साफ हैं, और अप्रेज विरोधी ता विलकुल ही नहीं हैं। आप एक बार भारत आकर अपनी आखा से देखिए कि वहा क्या वातावरण है। इससे हम भी बड़ी सहायता मिलेगी।' वे बाले मैं अवश्य जाना चाहूंगा। लिन लिथगो ने तो मुझे 'योता दे भी रखा है। बस मिस्टर गांधी के निमन्त्रण की आवश्यकता है तुरत चल पड़ूंगा। आप अपने नेता को मेरी शुभकामनाएं दीजिए, और कहिए कि मैं उनकी पूरी सफलता की कामना करता हू। समाजवाद से लोहा लेने में कभी मत हिचकिचाइए। धनसंग्रह एक अच्छी चीज है क्याकि उसकी सहायता से नये माग खोज निकालने की प्रवृत्ति को बल मिलता है। अलवृत्ता पूजीपतियों को सेवकों-जसा आचरण करना चाहिए स्वामियों-जैसा नहीं।'

यूरोपीय राजनतिक स्थिति के भविष्य के बारे में उन्होंने काफी सशय प्रकट किया। आनेवाले एक साल तक लड़ाई नहीं छिड़ेगी ऐसी उनकी धारणा है पर उसके बाद क्या होगा सो वे नहीं बता सकते। बोले 'थ डिक्टेटर पागलो जसा आचरण कर रहे हैं। अपना सिक्का जमाये रखने के लिए वे जो न कर गुजरें थोडा है। एक ओर इस उत्तरोत्तर कम साम्यवादी होता जा रहा है ता दूसरी ओर जमनी अधिकाधिक समाजवादी बनता जा रहा है। इस प्रकार एक हद तक दोनों एक ही माग पर चल रहे हैं। अकेला ब्रिटेन ही ऐसा देश है जहा प्रजातंत्र पनप रहा है। मैंने इंग्लड के शस्त्रीकरण का आदोलन इसलिए उठाया कि इस तसार में राष्ट्र का शासन या तो 'याय के बल पर होता है या भौतिक शक्ति के बल पर। पर 'याय का माग अपम्याृत बेहतर माग है। आपके पास भौतिक शक्ति का अभाव होगा तो आप 'याय का प्रतिपादन करने में असमथ रहेगे। अब हमारे पास शक्ति है इसलिए हम 'याय का प्रतिपादन करने में समथ हैं। इटली एक साम्राज्य स्थापित करने का स्वप्न देख रहा है।'

इस लहजे में वह देर तक बोलते रहे। इस बार उन्होंने मुझसे अनुरोध किया है कि मैं उन्हें भारत की स्थिति के बारे में अभिप्य रखू। मैंने वचन दिया।

मैं जो वक्त भेजता रहा हू उनमें से कुछ एक के प्रति बापू की क्या प्रतिश्रिया हुई, वह मुझे अवश्य बताओ।

कुछ कटिंग भेज रहा हू जो बापू को दिनचर्य लगगे। मार्निंग 'यूज ता लोगी के कानों में बिप उडेलता ही रहता है। पर इससे क्या हुआ? हम ठीक रास्ते पर चलते रहें।

१२

वाइसराय गिविर

भारत

२३ जुलाई, १९३७

प्रिय मिस्टर गांधी,

जब मैं शिमला वापस लौट रहा हूँ तब यदि आप आकर मुम्बई नयी दिल्ली में मिल सकें, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। यदि यह सुझाव आपको ठीक लगे तो क्या आगामी बुधवार, ४ अगस्त को, सुबह ११। बजे वाइसराय भवन में बैठे का समय आपके लिए सुविधाजनक रहेगा ?

मुझे आपसे किसी सावजनिक विषय पर चर्चा नहीं करनी है। पर मुझे आपसे मिलकर हादिक प्रसन्नता होगी और मुझे पूरी आशा है कि आपके लिए जाना सम्भव होगा।

भवनीय

लिनलिथगो

प्रतिनिधि

१३

वधा

२३ ७ ३७

प्रिय पनश्यामदासजी

बापू का वह लख जिम्मेकी अग्रिम प्रति मैंने पिछले हफ्ते के पत्र के साथ भजी थी लोका को बहुत पसंद आया। टाइम्स ऑफ इंडिया ने उस प्रकाश डालनेवाला बनाया और 'स्टेट्समैन' ने उस पर विस्तार के साथ टिप्पणी की। स्टेट्समैन के उक्त अंक की कटिंग भेज रहा हूँ। साथ ही, मंत्रिया के बतन के विषय पर लिखे गए लेख की नकल भी भेज रहा हूँ। यह लख प्रकाशित नहीं किया जा रहा है क्योंकि यह अभी प्रकाशित किया जाता जब मुख्य मंत्रिगण इस पसंद करते। इस लख का छापन में सभी मुख्य मंत्रिया का आपत्ति है। पर इससे बापू के मानन का दिग्दर्शन

हाता है। बापू न लेख रद्द तो कर दिया है पर वह खामोश रहनवाले नहा हैं। ठीक जिम प्रकार उहान अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सभ को अस्तित्व म लान के तुरत बाद ही हमारे अपन रहन सहन को ग्राम्य रूप देने की हूठ की थी उसी प्रकार अब उाकी हूठ है कि मत्ती लाग भारतीय जन साधारण की मनावृत्ति अपनायें। वचार मत्ती लाग अभी म छटपटा रहे है और दया की याचना कर रह है। राजाजी कहते हैं मैं बापू की सारी बात समझ गया हू पर बापू की जरा सत्र स काम लेना चाहिए। वह मुझमे जा कुछ करन को कहेग मैं अवश्य करूंगा पर मैं अपने सहयोगियो स यह सब कस करा सकूंगा ? मुशी (कहैयालाल माणक साल) ने लिखा है 'दया करिय और जो कुछ हम आपक चरणाम चढाये, उमी से सताप कर लाजिए। जा हमारी सामर्थ्य क बाहर हो उसकी अपक्षा मत करिये।

उधर नयी जिम्मेदारिया न राजाजी जस शुद्ध मानसवाला की नाद हराम कर रखी है। राजाजी का तो कहना ह कि बापू उनस जितने की अपक्षा करत हैं, उसक आसपास तक पहुचने के प्रयत्न म ही उनका प्राणात् हा जायगा। एम ध्यक्षितयो म उनकी परेशानिया तो और भी बढ गई हैं जो पदा की जान लगाय बढे थ। अब व निराश हो गय है ता मलावार और उढीसा म साम्प्रदायिक त्या की बान कहपर मन का राप निकाल रहे हैं। कुछ लाग का मत्रिमडला म नही लिया जा सका। हार्निमन दिन रात अपने स्तम्भो म यह लिख लिखकर कि सरकार न नरोमान को परम कर दिया और साथ ही पाय और कानून का भी गना घाट किया, साम्प्रदायिकता की जाग म इधन झाकन म लगा हुआ है।

पर मुचे आशा है कि समय के माय-माय यह सब भी जाती बात हो जायेगी और हम ठोम काम म लग जायेंगे। जब नय मत्रिमन्त्रा का गठन पूरा हा जायगा तो ये लोग भी खामोश हो जायेंगे।

आजकन बापू की तबीयत ठीक नहा रहती। कायकारिणी की बैठना न उहें थका डाला है। मुचे पता लगा कि वह सामर्थ्य स बाहर परिश्रम कर रह थ। जब यह विश्वास ले गू है। पर उहें पुराना डर्रा अपना न म क्या दर लगती है ? अगर बाई उहें प्रायना क बात् रोज मोन धारण करन का राजा कर पाये ता बडी बान हा। इसम व नम-नम-नम रात म जाराम स सा सकेंगे। आप उहें लिखियगा। मैं सरकार और जमनालालजी म भी यही कहन का विचार कर रहा ह।

तपन पूछा है कि क्या मग इडिया का पुनर्जीवित करना ठीक नही रहगा ? जवग रहगा। पर बापू का विचार है कि वह एसा करन म पहुँच यत् दखेंगे कि बतमान मत्रिमन्त्र कस चस रह है। कौन कह सकता है कि सब-कुछ ताग क पता

के मकान की तरह जवानक गिर नहीं पड़ेगा। इसलिए वह फिताहाल 'हरिजन को ही अधिक जन्म देना के प्रयत्न में हैं और इतने में ही सतुष्ट रहेंगे। उन्होंने इस काम में हाथ लगा भी दिया है। इस सप्ताह का लेख भेज रहा हूँ। बापू ३४ महीने ठहरकर देखेंगे कि मन्त्रिमंडल ने अपने लिए स्थान बना लिया है और वे निर्धारित योजना का कार्यान्वित करने में जुटे हुए हैं, तो हम यग इडिया भी निकालेंगे। जकेले हम एक लेख से और जब दो लेखों से हरिजन की ग्राहक मध्या सजी स बनने लगी है।

क्या आप मरे लिए या मेर दफ्तर के लिए 'स्टेटसमन्स इयर बुक' (नवान सस्करण) तथा एक आधुनिक एटलस अपने साथ ला सकेंगे? मुझे अब गवारा जमी आदत छोडकर शहरी बनना होगा। यह चिट्ठी अगाथा का भी दिखा दीजिए।

सप्रेम

आपका
महादेव

मह पारितोषिक वितरण नहीं है

मर पास विभिन्न प्राता स लोगा की शिकायतें आ रही हैं कि मन्त्रिमंडल में उन्हें अथवा उनके मित्रा का नहीं लिया गया। वे चाहते हैं कि मैं हस्तक्षेप करूँ। मैं तो नहीं समझता कि ऐसा कोई प्रात बचा हो, जहा से ऐसी शिकायतें न जाईं हा। कुछ पत्रा में तो भयकर परिणाम की धमकी दी गई है कहा गया है कि यदि इन इन लोगा को नहीं लिया गया, तो साम्प्रदायिक दंगे शुरू हो जायेंगे।

मबस पहले तो यह बता दू कि मैंने मन्त्रिया का चुनने के मामले में एक बार भी हस्तक्षेप नहीं किया है, ऐसे मामलों में दखल देने की न तो मरी इच्छा है न अधिहार। क्योंकि मैंने कांग्रेस में विलकुल नाना तोड लिया है। कांग्रेस के कार्य में मेरा योगदान पद-ग्रहण करने में उत्पन्न होनेवाली समस्याओं का हल तलाश करने तथा पूण स्वराज्य के ध्येय की ओर प्रगतिशील रहने के लिए आवश्यक नातिया का अनुमर्ण करने तक ही सीमित है।

पर मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा है कि ये असह्य लोग 'गो मुझे टेर की-डेर चिट्ठिया भेज रहे हैं इस भ्रम में हैं कि मन्त्रि पर पुरानी सेवाओं के पारितोषिकस्वरूप है इसलिए कुछ काग्रमी तो निश्चिन्त रूप से मन्त्रि मंडलों में शामिल किये जानें के अधिकांगी हैं ही। इन मन्त्रियों से भय बहना यह है कि मन्त्रियों के पर सेवा-कार

के विभिन्न क्षेत्र मात्र है जिनमें उन लोगों को जिन्हें इन पदों के लिए चुना गया है अपनी पूरी शक्ति और योग्यता का उपयोग करना होगा। अतः इन पदों के लिए छीना झपटी का सबाल ही पैदा नहीं होता। निहित हितों को संतुष्ट रखने के लिए मंत्रियों के ओहदे कायम करना एक हृदय दर्जे का गलत काम होगा। अगर मैं मुख्य मंत्री होता और मुझे ऐसी मांगों का सामना करना पड़ता तो मैं तो अपने निवाचकों से कह देता किसी और को अपना नेता चुनो। इन पदों की जिम्मेदारी निभाना हमी खेल नहीं है। वास्तव में ये पद काटा के ताज हैं प्रसिद्धि के ताज नहीं हैं। यह पद केवल इसलिए ग्रहण किया गया है कि अपने ध्येयों की ओर चले जाने में इसके माध्यम में गति मिलती है या नहीं यह देखा जाय। यदि स्वार्थी या गलत ढंग के उत्साह से आतुर तत्त्व मुख्य मंत्रियों पर अपना दबदबा बैठाने में और प्रगति के मार्ग में रोड़े जटकाने में समर्थ हुए तो यह बड़े दुर्भाग्य की बात होगी। जिन व्यक्तियों का अधिकार का चोगा पहनाया गया है यदि उनसे आश्वासन लेना आवश्यक था तो शपथसमुदाय से असदिग्ध वफादारी, सम्यक्दारी और स्वच्छापूर्वक अनुशासन के आचरण का वचन प्राप्त करना और भी अधिक आवश्यक है। लक्ष्य सिद्धि के निमित्त कांग्रेस ने जो साधन निर्धारित किये हैं यदि कांग्रेसियों ने उनमें पर्याप्त मात्रा में आस्था नहीं रखी और अपने आचरण द्वारा स्वाध-स्याग तथा समय की भावना का परिचय नहीं दिया तो देश जिस घोर संप्राम में लगा है उसमें विजय की आशा करना व्यर्थ सिद्ध होगा।

कराची के प्रस्तावों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि कांग्रेस के तत्त्वावधान में मंत्रियों के पदों में आर्थिक दृष्टि में कोई जाकफण नहीं है। मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि ५०० रु० को अधिकतम के बजाय न्यूनतम वेतन कहना एक गलती थी। ५०० रु० अंतिम सीमा थी। यदि देश पर बड़े बड़े वेतन न लदे होते तो हम ५०० रु० को भी अधिक मानते। कांग्रेस ने पिछले १२ वर्षों से कम-से-कम ७५ रु० मासिक का ही उचित समझा है। उसकी तीनों बड़ी भारतव्यापी रचनात्मक संस्थाओं—राष्ट्रीय शिक्षण खादी तथा ग्रामोद्योग—में अधिकतम वेतन ७५ रु० ही रहा है। इन संस्थाओं में जो लोग काम करते हैं वे योग्यता की दृष्टि से किसी भी समय मंत्रियों के समान सिद्ध हो सकते हैं। इन लोगों में प्रतिष्ठित शिक्षा शास्त्रज्ञ कानून विद्वान् रसायन विशेषज्ञ तथा व्यापारी हैं जो सत्त्व ही आसना से ५०० रु० मासिक से अधिक कमा सकते थे। मंत्री बन जाने से ही हम लोगों का इतना भिन्न क्या समझन लगे? पर अब तो पासा पड़ चुका है। मेरे उद्वेग विलकुल यत्नित उद्गार हैं। मुख्य मंत्रियों के विवेक तथा लोगों के निष्ठात्मक तरीके का बार-बार मेरी बड़ी ऊंची धारणा है। शायद उन्हें लगा होगा कि वे जिन

परिस्थिति का सामना कर रहे हैं उसमें यही ठीक रहेगा। मैं इन पत्र-लेखकों के समक्ष जो बात स्पष्ट करना चाहता हूँ वह यह है कि यह पद वेतन के आकषण के कारण ग्रहण नहीं किये गए हैं।

य पद पार्टी में केवल उन्हीं को दिये जा सकते हैं, जो अपने मिर जाई जिम्मेदारियों को निभाने में सक्षम समझे जायेंगे।

जिसी भी व्यक्ति की योग्यता की सबसे बड़ी कसौटी तो यह है कि समूची पार्टी उसकी योग्यता की कायल हो। कोई मुख्य मंत्री केवल अपनी पसन्द के किसी पुरुष या स्त्री को पार्टी पर एक क्षण के लिए भी नहीं थोप सकता। उसे मुख्य मंत्री केवल इस कारण बनाया गया है कि उसमें लोगों को समझने तथा पार्टी का विश्वास अजन करने की क्षमता है और उसमें अन्य ऐसे गुणा का समावेश भी है जो नेता बनने के लिए आवश्यक है।

मो० क० गांधी

१४

बापू का लेख

अपेक्षाएँ

हमारा यह देश सप्ताह भर में सबसे दरिद्र है। कांग्रेसी मंत्रियों ने अपने लिए जा वेतन-स्तर निश्चित किया है वह देश की गरीबी को देखते हुए बहुत ऊँचा है, ऐसी सम्मति व्यक्त करने में मैंने सकोच नहीं किया है। प्रो० वे० टी० शाह ने जल्दी में जो नोट भेजा है और जिसे पाठकगण अत्यन्त पढ़ेंगे उससे पता चलता है कि देश की औसत आय ४ पौंड है जबकि ब्रिटेन की औसत आय ५० पौंड है। दुर्भाग्य से, हमें ब्रिटिश उत्तराधिकार का भार अभी कुछ दिन और बहन करना पड़ेगा, और भरसक कोशिश करने पर भी आन्ध्र स्तर हमारी पहुँच के बाहर ही रहेगा। अब वेतन और भत्ते की बात तय हो चुकी है। शेष यही प्रश्न रह जाता है कि क्या मंत्रिगण उनके सचिव तथा सदस्यगण अपने-आपको वेतन का अधिकारी प्रमाणित करने के लिए आवश्यक कठोर परिश्रम करने को उद्यत रहेंगे? क्या सदस्यगण राष्ट्र की सेवा में अर्हतिश तम रहेंगे और अपने काम का पूरा व्योरा पेश करने को तत्पर पाये जायेंगे? हम इस भ्रांति में कदापि नहीं पड़ना

चाहिए कि जसी स्थिति है वसी ही हम चाहते थे अथवा वसी ही होनी चाहिए।

और इतना ही यथेष्ट नहीं है कि मन्त्रिगण सादगी से रहे और कठोर परिश्रम करें। उह यह भी देखना है कि वे जिन जिन विभागों की देखभाल कर रहे हैं वे भी उनका अनुकरण कर रहे हैं या नहीं। 'याय पहले की भांति महंगा नहीं रहना चाहिए और 'याय करने में पहले की तरह देर भी नहीं होनी चाहिए। अब तक तो याय पसवाला के विलास की मामूली रक्कत है और दाव लगानवालों के कौतुक का विषय बना है। पुलिस की जनता का तास में के बजाय उसके प्रति मित्रों जसा जाचरण करना सीखना होगा। शासन व्यवस्था का ऐसा कायापलट होना चाहिए कि वह साम्राज्यवादी शोषका की आवश्यकताएं पूरी करने के बजाय गरीब से गरीब ग्रामीण के अभावों की पूर्ति करे।

यदि मन्त्रिगण की चला तो जो लोग जेलों में बंद हैं और जिन पर हिंसात्मक कायवाहियों के आरोप हैं वे भी अब रिहा कर दिये जाएंगे। यह कोई मामूली बात नहीं है। कांग्रेस तो अहिंसा में भरौसा रखती है इसलिए इसका महत्त्व और बढ़ जाना है। कांग्रेस हिंसा की छाटी छोटी बातों को भी गहन गम्भीर मानती है जबकि उस एक महान् सत्ता को अपनस्य करना है। वह हिंसा की व्यक्तिगत कायवाहियों का सामना दण्ड व्यवस्था की सगठित हिंसा से नहीं बल्कि अपराधी व्यक्तियों से मनी का नाता जोड़कर उहे अहिंसा सिखाने और हिंसा के खिलाफ नो-मनत तयार करने की उपायमत्ता में विश्वास रखती है। उसकी काय प्रणाली निरोधात्मक है दण्डात्मक नहीं। दूसरे शब्दों में, कांग्रेस सेना के सहयोग और पुलिस के माध्यम से शासन काय नहीं चलाएगी वह तो जन माधारण के अधिक में अधिक सहयोग और सहभाव से प्राप्त अधिकार से काम लगी। वह शस्त्रयुद्ध से नहीं जनता जनाने की सवा के चल पर हकूमत करेगी। वह जो-कुछ करेगी जनता के नाम पर करेगी क्योंकि वह जनता की प्रतिनिधि संस्था है।

अब तक जब्त रखा गया साहित्य अब सबको उपलब्ध रहेगा। कुछ ऐसी भी निपिद्ध पुस्तकें हैं जिनके पठन-पाठन से सम्भव है हिंसा को प्रोत्साहन मिले अश्लीलता और पकड़े या साम्प्रदायिक भावना बलवती हो। इस सारे अन्तशुद्धा साहित्य को मुक्त करने का अर्थ हिंसा, अश्लीलता अथवा साम्प्रदायिक रागद्वेष को परखाना देना नहीं है। आपत्तिजनक साहित्य से निपटने में वह प्रशुद्ध जनमत के मुक्त समर्थन की अपेक्षा रखेगी। मन्त्रिगण अपने प्राता में हिंसा घणा तथा अश्लीलता का जोर पकड़ते देखेंगे ता अपराध विधान की धाराओं का आश्रय लेने से पहले कांग्रेसी सगठनों और अततोगवा कायकारिणी ममिति से सत्रिय सहयोग की याचना करेंगे। वास्तव में कांग्रेस की सफ-रता का मापदण्ड पुलिस और मेना

का एक प्रकार से निष्क्रिय मिट्टे करने के प्रयत्न में निहित है। यदि उसने सबूट की वेला में पुलिस तथा सेना का सहारा लिया, तो उसे शासन काम के अयोग्य समझा जाना चाहिए। इस शासन विधान की निष्कर्षा सारित करने का एकमात्र तरीका यही है कि अपने शासन काम से कांग्रेस सेना के उपयोग को बिलकुल अनावश्यक तथा पुलिस की सहायता का बिल असामान्य परिस्थितियों में ही ग्राह्य माने। एक सज्जन ने सुझाव दिया है कि सेना और पुलिस का अधिक मंत्री सूचक नामकरण किया जाए। यह सुझाव उत्तम है।

मो० क० गांधी

१५

वर्धा

२७ ७ ३७

प्रिय मित्र

आपके कृपा पत्र के लिए धन्यवाद।

मैं इधर कुछ दिनों में सीमा प्रांत में छान साहब अदुल गफ्फार खा के प्रवेश पर लग प्रतिबंध को उठा लेने की सम्भावना तथा वहाँ जाने के अपने विचार के मध्य में चर्चा करने के निमित्त आपसे भेंट का अनुरोध करने की बात साच रहा था। हालांकि मर वहाँ जाने पर कोई बन्धन नहीं है पर मैं अधिकांशियों की इच्छा के विरुद्ध वहाँ नहीं जाना चाहता था।

अतः आपके पत्र का दुहरा स्वागत है। मैं यह मान लेता हूँ कि इन दोनों बातों की चर्चा के बाद में कोई आपत्ति नहीं होगी। मुझे आगामी ४ अगस्त मोम बार का दिन के ५॥ उजे वाइमरायभवन में उपस्थित रहने में प्रसन्नता होगी।

आपका

मो० क० गांधी

महामहिम वाइमराय,

नवी दिल्ली

ग्रासवेनर हाउस,
पाक लेन,
नॉदन डब्ल्यू० १
२७ जुलाई, १९३७

प्रिय महादेवभाई

मुझे तुम्हारा पत्र तथा तुम्हारे लेख की प्रतिलिपि अभी-अभी मिली है। तुमने लेख की नकल भेजकर अच्छा ही किया क्योंकि मैंने लाड जटलड से आज ही बात की थी और उनका कहना था कि उक्त लेख उनकी नजर से नहीं गुजरा है पर पत्रा म जा कुछ निकला है उसके आधार पर उन्होंने यह धारणा बनाई है कि माना मिस्टर गांधी ने वामपंथियों को थोड़ा बहुत खुश करने के लिए यह लेख लिखा था। मैंने पूछा कि उनका अभिप्राय लेख के किस वाक्य से है? पर वह कुछ नहीं बता सके केवल अपनी अस्पष्ट धारणा ही दुहराकर रह गए।

मैंने लाड जटलड का ध्यान लेख के दो वाक्यों की आगे विशेष रूप से आकृष्ट किया। एक तो वह था जिसमें बापू ने ग्रीटेन की तलवार का स्थान बहुमत को देने की बात कही है। दूसरा यह कि पद ग्रहण एक बार रक्तपातपूर्ण क्रांति से तथा दूसरी ओर सविनय अवज्ञा से वचन के लिए किया गया है। उन्होंने पूरा लेख देखने की अभिलाषा प्रकट की। मैंने लेख की नकल भेजने का वचन दिया है।

पर एक बात जाहिर है। ठीक जिन प्रकार हम लोगो में विश्वास का अभाव है इसी प्रकार उनमें भी है। यद्यपि मुझे इसमें सन्देह नहीं है कि धीरे धीरे इस अविश्वास की भावना का अंत हो जाएगा। अन्तर्गत बातों की चर्चा के दौरान मुझे लगा कि वह बापू और वाइसराय के एक दूसरे के निकट आने की अभिलाषा रखते हैं। मैंने उन्हें बताया कि जब मैं भारत से रवाना हो रहा था तो बापू ने समयवश यह कहा था कि सम्भव है वह सीमा प्रांत के प्रश्न पर बात करने के निमित्त वाइसराय से मिलें पर मैं यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि अब भी उनका वसा ही इरादा है साथ ही मैंने सुझाव दिया 'स्वयं वाइसराय ही गांधीजी को लिखकर मिलने का निमन्त्रण क्या नहीं दे देते?' भारत-सचिव को यह सुझाव पसंद आया। शायद वह वाइसराय को लिखें भी पर उन्होंने यह भी कहा कि सारी कठिनाई इस बात की है कि गांधीजी अनेक बार कह चुके हैं कि कांग्रेस में उनका कोई स्थान नहीं है। भारत-सचिव का शायद यह अभिप्राय रहा होगा कि वाइसराय में

अपना कोई दर्जा न रहने का यहाँना लेकर बापू वाइसराय द्वारा आमन्त्रित किये जाने पर भी भेंट न करें। वाइसराय और बापू की मुलाकात से पहले वाइसराय जीर जवाहरलालजी की मुलाकात की उपादेयता के बारे में लाड जेंटलमैन को सदेह था। हो सकता है, वह वाइसराय को लिखें।

पर इस मद्द्द में बापू की वतमान विचारधारा क्या है मुझे बताना सकोगे ? मैंने यह बात अपनी पिछनी चिट्ठी में भी उठाई थी पर अभी तक उत्तर नहीं आया है। आशा है, मेरे काय में हाथ बटाने के लिए तुम मुझे पूरी तरह सूचित रखोगे। इधर मेगाव में क्या हो रहा है इस बाबत मुझे कुछ पता नहीं है और तुम चाहते हो कि मुझे जानकारी रहनी चाहिए, सो तुम्हें मेरी मदद करनी होगी।

मैंने राजाजी के नाम बापू के तार की नकल लाड हैलिफक्स के पास भेज दी है। मुझे यकीन है कि उह वट तार अच्छा लगगा। मैं 'हरिजन' में बापू के प्रकाशित लेख की नकलें भी लाड हैलिफक्स लाड लोडियन तथा श्री बटलर का भेज दी हैं। तुम्हें मालूम ही है कि बटलर भी भारत के बारे में अपनी जानकारी बनाये रखने को उत्सुक हैं।

तुम्हें मेरा पत्रा स अदाज लगा होगा कि अगले जाडों में कुछ प्रमुख अगेजों का भारत भ्रमण मैं नितना जरूरी समझता हूँ जिससे उनके साथ हमारा सम्पर्क स्थापित हो सके। मैं दोषप बाद की बात साच रहा हूँ, जब हमें अगले कदम के बारे में बातचीत चलानी होगी। यह सम्पर्क तब बडे काम आएगा। हमारे प्रमुख लोगों को भी अगले बसत में यहाँ आकर लोगो में मिलना जुलना चाहिए। अब सरसे पहले यह बताना कि बापू का यह सुझाव क्या जचा। मैं तुम्हें लिख ही चुका हूँ कि चंचिल ने मुझे यह बताया है कि उह लाड लिनलिथगो का निमन्त्रण तो मिल चुका है पर यदि बापू भी उनके भारत आगमन के पक्ष में हो तो शायद वह भारत के लिए चल पडेंगे। यदि बापू को चंचिल का यह सुझाव ठीक लगे तो मैं अल बाल्डविन के सामने यह बात रखूँगा। यो उनका राजनतिक क्षेत्र में अब पहले जैसा योगदान नहीं है। फिर भी उनका प्रभाव अक्षुण्ण है। यहाँ मैंने इस सुझाव की चर्चा जिस किसी से की, उसी ने ईर्ष्या पसद किया। पर जब तक मुझे बापू के विचार का पता नहीं लगेगा मैं इस मामले को जाने बढाना पसद नहीं करूँगा। इन शीपस्थ जागा में से कोई भारत जाएगा ऐसा तो मुझे नहीं लगता है पर यदि यह सुझाव उनके सामने रखा जाए, तो इस पर सोच विचार करत के बाद सम्भव है दो एक जाने का राजी हो जाए।

लाड हैलिफक्स अपने एक पत्र में लिखते हैं 'मैं आपसे इस बारे में बिलकुल

सहमत हूँ कि कांग्रेस की कठिनाइयाँ का जब आरम्भ होता है, पर उम यह भरोसा रखना चाहिए कि उसका साथ हमारी सदभावना प्रचुर मात्रा में है ही।

सप्रेम,

धनश्यामदाम

श्री महादेवभार्गव देसाई

वर्धा

पुनरुत्तर

कुछ रोज़ के बाद मैं एक ट्रेड् पब्लिक के बारे में एक विस्तृत पत्र वापू को लिखने वाला हूँ। मगर यह है कि यदि मुझे ऐसा लगे कि हम अमुक तरह की सधि कर लेनी चाहिए तो ऐसा करने से पहले वापू से मन्त्रविरा करना चाहता हूँ और उनकी तथा हमारे अन्य राजनतिक नेताओं की राय जानना चाहता हूँ। आशा है जब मैं लिखूँगा तब वापू सारी बात को समझकर मुझे हाँ या नाँ में उत्तर भेज देंगे। कोई काम हम करें और बाद में दश को वह पसन्द न आवे यह तो ठीक नहीं। इसलिए कुछ करने से पहले वापू की राय जाननी होगी। वापू मुझे ऐसा न लिख दें कि यह मामला मरे क्षेत्र से बाहर है। व्यापारियों की मनोवृत्ति हम जानते हैं और यह भी जानते हैं कि वे सब अपने अपने क्षेत्र के लाभ ही ही सोचेंगे। सावजनिक लाभ का विचार तो वापू ही कर सकते हैं और इस संबंध में वे चाहें तो कलमभर्गव राजेन्द्र बाबू आदि से सलाह करें। हम यदि कोई गुजाइश मालूम नहीं की तो हम खुद न तो कुछ करेंगे और न वापू को ही कष्ट देंगे। पर जो चीज मुझे पसन्द आए उस करने से पहले सलाह लनी होगी। वापू मुझे उसके बारे में अपनी राय दें यह निवेदन है।

धनश्यामदाम

१७

ग्रासवनर हाउस

पाक सेन

लन्दन टक्यू० १

२८ जुलाई १९३७

प्रिय महादेवभाई,

इस पत्र के माध्य भारत-सचिव की संक्षिप्त स्पीच का एक जश भेजता हूँ जो उन्होंने शर्मा द्वारा आयोजित दापहर के भोजन के समय आज दी थी।

“उन्होंने सर आर० एस० शर्मा के इस कथन के साथ महमति व्यक्त की कि राजनैतिक स्थिति के प्रति दृष्टिकोण में बड़ा परिवर्तन हुआ है और यह परिवर्तन बड़ा ही महत्त्व का है।” उन्होंने कहा ‘मैं स्थिति को जसा कुछ समझ सका हूँ उस आधार पर कह सकता हूँ कि भारत प्रगति के पथ पर चलकर अब इस मजिल पर जा पहुँचा है जहाँ माग दो दिशाओं में बढ़ता है। भारत का यह तय करना है कि उस कौन-सा माग पसंद है। एक माग के जाने पर लिखा हुआ है ‘श्रुति’ दूसरे माग के कौन पर लिखा है ‘विकास’। मेरी भारत के बारे में सदैव यह आस्था रही है कि उसने श्रुति के पथ का अनुसरण करने के बजाय विकास का पथ अपनाएगी अधिक क्षमता दिखाई है। यद्यपि किसी का भविष्यवाणी करने का दुस्साहस नहीं करना चाहिए, फिर भी मेरी यह आशा साथ ही सिद्ध हुई है।”

“अब हमारा एकमात्र कर्तव्य यह है कि वातावरण में जो अविश्वास व्याप्त हो गया है, उस पर विजय पाएँ और कांग्रेस में सदेह की जिस भावना ने घर कर लिया है उसका निवारण करें। कांग्रेस ने पद ग्रहण करने का निणय लेते समय जिस भाषा का प्रयोग किया था उसमें सदेह का संकेत था। फिर भी कांग्रेस ने पद ग्रहण किया। अविश्वास और सदेह का वातावरण दाना धार मौजूद है और यदि कांग्रेस और सरकार के अंतर्गत के संघर्षों को ध्यान में रखा जाएँ तो ऐसा वातावरण स्वाभाविक ही है। पर मेरा विश्वास है कि जया जया कांग्रेस का शासन सम्बन्धी अनुभव चला जाएगा यह वातावरण भी उगी अनुपान में स्थिति हाता जाएगा।

इस दौरान हम जो बातें मना अपन ध्यान में रखती हैं वह ब्रिटेन और भारत के एक-साथ आग घटने का बात है—यह एक ऐसा चित्र है जितने दाना एक दूसरे का सहायता करते स्थिति देते हैं—एसा चित्र जितने हम लोग भारत

का अधिक-से अधिक प्रदान करने को प्रस्तुत दिखाई दें। यदि हम यह चिन्त अपनी आँखों के सामने रखेंगे तो भारत में मेरी जास्या 'याम्य सिद्ध' होगी।

सप्रेम

तुम्हारा,
धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

१८

शासवेनर हाउस,
पाक लेन,
सदन, डब्ल्यू० १
२६ जुलाई १९३७

पूज्य बापू,

आपका हाथ से लिखा हुआ पत्र मिला। मन उसकी प्रतीक्षा नहीं की थी। महादेवभाई का पत्र आते ही हैं। हाल में तो हर डाक से आने लग है पर आपके पत्र से मुझे काफी उत्साह मिलता है। कभी कभी लगता है कि कोई गलती तो नहीं हुई। बाकी तो ईश्वर जसी सून देता है वैसे ही चलता हूँ। ध्येय तो एक ही है कि हमारा मंगल हो। मत्रिया के वेतन के सबंध में आपके लख की तथा राजाजी को लिख आपके पत्र की नकलें मिली। यदि मंत्री लोग सादगी से रहे तो खूब प्रभाव पड़ेगा। यह सत्य है कि जापान में लोग बहुत सादगी से रहते हैं। मैंने सुना है कि हमारी मुद्रा में चार मी रूपय से ज्यादा वहाँ वेतन नहीं है पर यह भी सही है कि वहाँ इरवपति भी उसी सादगी से रहता है। हमारे यहाँ पमवाला का उच ऊँचा है बल्कि बहुत ऊँचा है और मत्रिया के लिए कुछ जश में धनिका का यह रहन सहन उनकी सादगी में बाधक बनेगा। या मत्रियों की सादगी धनिकों के लिए एक उदाहरण होगी। आपन ठीक ही कहा है कि सादगी से रहना भी एक कला है। इस कला से हम लोग अनभिन्न हैं। हमारे चाकर अनभिन्न हैं। इसलिए हम लोग का ऊँचा रहन सहन कुछ जश में अनिवाय हो गया है। पर मरा खयाल है कि हम लागो का रहन सहन सादगी का हा जाय तो भविष्य की समालोचना और आफता से हम लाग बच जाएंगे और ध्येय तो मिलना ही। मुझे तो भडकीला रहन-सहन

प्रिय भी नहीं है। पर दुविधाएँ भी हैं। जैसे जाति बंधन, वैसे ही यह बंधन भी कुछ अर्थ में बाहर का है। मैंने कई बार सोचा है कि नय करों में व्यक्तिगत खर्च पर भी कर हो। मृत्यु-कर की अपेक्षा व्यक्तिगत खर्च पर कर कहीं अधिक आवश्यक है। किसी अधशास्त्री से इस बारे में एक बार मैंने बात की थी तो ऐसा याद पड़ता है कि उसने मुझे बताया था कि किसी जगह ऐसा है। ५००) प्रति कुटुम्ब के खर्च पर कोई कर नहीं इसमें अधिक पर ज्यादा ज्यादा व्याख्या कर दुगुना-चौगुना तक है। तो फिर धनिका का धन दान-पुण्य या व्यापार में लग जाय और ट्रस्टी की कल्पना सायब हो। मुझे तो इससे काफी सुख मिलेगा। इंग्लैंड में किसी समय 'विडो टक्स' था। शायद इसका ध्येय धनिकों पर कर लगाना ही रहा होगा।

विनीत,
धनश्यामदास

१६

ग्रामवनर हाउस
पाक लन
लॉन डब्ल्यू० १
३० जुलाई, १९३७

प्रिय महादेवभाई

एक शाम लाहौरादियन मिलन आय था। भविष्य के बारे में दर दर बातें हानी रही। मैंने उनसे कहा 'कांग्रेस में पद-ग्रहण तो कर लिया है पर एता उसने बचन बतमान शासन विधान का मफल बनाने के निमित्त नयी किया है बल्कि इसका अपनी अभिरुचि के अनुरूप शासन विधान का स्थापित करने का उद्देश्य से किया है। आप जाग जसा चाहते थे, वसा कांग्रेस में किया अब यह बात आपसे साचन का है कि हम शासन विधान का अमल में लाकर वह अपनी पगल का शासन विधान कम प्राप्त करेगी। उतने उत्तर में कहा अभी आप न तो सरकारी अमले को ही छेड़िए न साम्प्रदायिक समस्या का ही हाथ लगाइय। पर सामाजिक प्रगति के अर्थ होता है जाय गवर्नर का हस्त पर का पतादि महा मन करिय। धीरे धीरे यह एक परिपाली का रूप धारण कर मगा, और न्य प्रकार

प्रातीय स्वराज्य की उपलब्धि का वायू पूरा हो जाएगा। रहा कॅड्र, सा मरा धारणा है कि व्यवस्था स्थापित हान के उपरांत वायूस अपना मन्त्रिमण्डल बनाने में सफल होगी।

मैंने कहा कि कॅड्रीय व्यवस्थापिका सभा की ३७५ सीटों में से वायूस बदल १०० सीटों ही जीत पायगी और इस प्रकार अल्प मत में बनी रहगी। उन्होंने उत्तर दिया कि यदि कांग्रेस बहुमत में न भी हो तो भी सबसे बड़ी पार्टी के नाते बहुमत उसके पक्ष में रहेगा। मैंने इस तथ्य का खण्डन नहीं किया। हमें वायू उन्होंने सुझाव दिया कि हम अभी से सना के बजट को चुनौती देना आरम्भ कर देना चाहिए। इसके फलस्वरूप हम गवर्नर जनरल से इस बाबत वास्तविक बरत का अवसर मिलेगा और शनैः शनैः सना के बजट में हमारी आवाज अधिकाधिक महत्त्व प्राप्त करने लगेगा। मैंने पूछा वेवल इतना ही सना जयवा विदश सबधी मामला पर हमारा अधिक नियंत्रण कैसे हो जायगा? आपका दावा है कि शासन विधान में स्वतः विकास के बीज मौजूद हैं। जब आप ही बताइय कि हम वह बीज कैसे प्राप्त कर सकयें जिस औपनिवेशिक स्वराज्य के नाम से पुरारा जाता है।

लाड लाण्डियन का मानना पडा कि हमें लिए एक नय कानून की जरूरत होगी। तब मैंने उन्हें इस बारे में अपना दृष्टिकोण बताया। मैंने यह स्वीकार किया कि यदि व्यवहारकुशलता और मूल जाल से काम लिया गया तो ऐसी परिपाटिया का जन्म मिल सकता है जिनके द्वारा प्रातीय औपनिवेशिक स्वराज्य दो-तीन वर्षों में ही प्राप्त हो जाय। हम कानून और व्यवस्था का अक्षुण्ण रक्षण होगा जोर साम्प्रदायिक मामलों में निष्पक्षता बरतनी होगी। नीकरणाही सचमुच सेवकों जसा आचरण करने लगगी। यह सब तो होगा और हो जाय तो सतोष का विषय बनेगा पर केवल इतना ही स कॅड्र में उन बातों का हस्तांतरण हो जाएगा जो औपनिवेशिक स्वराज्य के लिए जरूरी है इस बारे में मुझ सादेह है। इसलिए मैंने कहा, मरा सुझाव यह है कि शासन विधान का सफलतापूर्वक जन्म में लाने के बाद भारत में एक छोटा सा प्रतिनिधि मंडल यहा आवे जिसमें लोकप्रिय लोग रहे और जो ब्रिटिश कबिनेट के मन्त्रियों से अनौपचारिक बात करके उहे यह बतलायें कि हम लागू न बतमान शासन विधान के माध्यम से आगे बत्न की भरसक चेष्टा की पर जबतक नया विधान लागू नहा किया जायगा प्रगति सम्भव नहीं होगी। इस प्रतिनिधि मंडल की कांशिश हो कि यहा की सरकार को समझा बुझाकर भारत को नया शासन विधान देने के लिए तयार करें। प्रतिनिधि मण्डल को यह स्पष्ट रूप से बता देना होगा कि भारत अपनी बतमान स्थिति से सतुष्ट

नहीं है और यदि काइ स्थायी समझीता नहीं हुआ ता सीधी कारवाई करनी पड़ेगी।

इसके बाद मैं लार्ड लोदियन से पूछा कि क्या ऐसा कदम उठाने से यहाँ की सरकार का समझदारी में काम लेने और हमारी बात की जोर ध्यान देने के लिए राजा कर पायेंगे? समय आने पर यहाँ की सरकार और जनता हमारे प्रतिनिधि मण्डल का स्वागत करने को तैयार रहे इसलिए मैंने सुझाया कि अगले दो-तीन साल हम शासन विधान को पूर्णतया सफल बनाने और पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करने में लगाने चाहिए। इंग्लैंड के प्रमुख व्यापारी भारत जायें और भारत के व्यापारी यहाँ आयें।

लार्ड लोदियन ने मेरे विचार का अच्छा बतवाया और यह आशा प्रकट की कि समय आने पर ऐसे विचार का ब्रिटिश मानस पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने कहा कि यह भाग अपनाने से, संभव है, हमें अपना मनोरथ पूरा करने में सफलता मिले। वोंने कि उन्होंने वापू को चिट्ठी लिखी है और सम्भव है कि आगामी नवम्बर के मध्य तक शायद वह भारत के लिए रवाना हो जायें। उन्होंने कहा कि मैं यह बात अपने तक ही रखूँ। मैंने पूछा, क्या आपने अपना कार्यक्रम बना लिया है? वह बोले 'नहीं मेरा इरादा स्पीचें झाड़ने का नहीं है। मैं उत्तर में कहा 'मैं आपसे स्पीचें झाड़ने को नहीं कह रहा हूँ। मैं तो सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि भारत में आप जयेंगे के अतिथि हाकर जायेंगे, या भारत के। उन्होंने उत्तर दिया 'निश्चिन्त रूप से भारत का। मैंने कहा इतने से ही काम नहीं चलगा। आपको बड़ा अधिक-से-अधिक कांफ्रेंसिया से मिलना चाहिए। साथ ही आपका राजभवन में नहीं, भारतवासियों के यहाँ ठहरना चाहिए।

मैंने उनसे पूछा कि जब वह दिल्ली और कलकत्ता में हों, तो क्या मेरे यहाँ ठहरना पसन्द करेंगे? उन्होंने उत्तर दिया 'एक-दो दिन के लिए तो राजभवन में ठहरना ही पड़ेगा पर वस मुझे आपके यहाँ ठहरने में प्रसन्नता होगी।

मैंने उन्हें बताया कि मैं चर्चिल से भी ऐसा ही अनुरोध कर चुका हूँ पर वह शायद तभी जायेंगे जब वापू उन्हें आने का निमन्त्रण देंगे। यह बात जानकर उन्हें बड़ी दिलचस्पी हुई। उन्होंने मुझे इस विचार से महत्तम व्यक्त की कि मैं जल बाल्बिन से भी वसा ही अनुरोध करने का विचार कर रहा हूँ।

जब मैंने उनसे कहा कि यदि दो-तीन वर्ष बाद भी कोई प्रगति नहीं हुई तो भारत सीधी कारवाई करेगा तो उन्होंने सीधी कारवाई का अर्थ यह लगाया कि मैं स्वतन्त्रतापूर्ण शक्ति की बात कह रहा हूँ। उन्हें अहिंसात्मक मन्दिनय अवस्था की कल्पना तक करना असम्भव-ना लगता है। उनकी धारणा है कि पिन्हाल

जवाहरलाल वापू के बहने में इसलिए चल रहे हैं कि उनका लिए और कोई चारा नहीं है पर समय आने पर वह उठ खड़े होंगे और चूँकि उनकी अहिंसात्मक सविनय अवज्ञा में आस्था नहीं है इसलिए वह भारत की शान्ति के मांग पर ल जायेंगे। तरुण समाज उनके पीछे हो लेगा। इमरान नतीजा यह होगा कि पूजा वादी समाज तानाशाही की प्रणाली अपना लगा और किसान लोग साम्यवाद का नारा बुलंद करेंगे।

मैंने उन्हें बारम्बार यह बताया कि वह यूरोपियन हैं इसलिए वह साम्यवाद और तानाशाही को छोड़कर और किसी वाद की कल्पना तक नहीं कर सकते पर भारत में एक और वाद पनप रहा है और उसकी आशिक सफलता भी हुई है। वह वाद है 'अहिंसात्मक शान्तिवाद।' मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि कांग्रेस सीधी कारवाई का मांग तभी अपनाएगी जब कि उसका कार्य विशुद्ध अहिंसा की सीमाओं में रहेगा। उन्होंने कहा कि मानव स्वभाव जन्मा कुछ है उसे ध्यान में रखते हुए यह असम्भव कल्पना प्रतीत होती है।

इसके बाद वह बोले मिस्टर गांधी का आदर सम्मान इसलिए हाता है कि वह सत पुष्प है पर जब सघष की नीबत आ जाएगी तो लाग उनकी एक नहीं मुनेंगे। जवाहरलाल गांधीवाद के आगे कभी सिर नहीं झुकायेंगे। मैंने दलील-पर दलील दी पर उनका समाधान कराने में असमर्थ रहा। अंत में उन्होंने कहा कि मर कथन को अनुभव की कसौटी पर कसन के लिए ही उनका भारत यात्रा करना आवश्यक हो गया है।

इस डाक से मुझे वापू का हस्तलिखित पत्र और साथ ही तुम्हारा पत्र भी मिला। मुझे वापू का पत्र इतना पसंद आया कि मैंने उसकी प्रतिलिपिया लाड हैलिफवम और लाड लोदियन का भेज दी। एक प्रतिलिपि चर्चिल का भी भेजी है। मैंने मन्त्रियों के वेतन के विषय पर उनके लेख की नकलें यहाँ के सभी प्रमुख व्यक्तियों के पास भेज ली हैं।

मुझ सारी बाता की खबर दत रहिय। मैं यूरोप व दशो का भ्रमण आरम्भ करनेवाला हूँ क्योंकि ये लाग जगरत व महीन में कुछ काम घाम नहीं करत। सितम्बर व पहले हपन में हम लाग फिर इकटठे होंगे। कितनी बुद्धनवाली बात है कि हम तब तक हाथ पर हाथ रख बठे रहेंगे पर क्या किया जाए लाचारी हूँ।

हम टाइम्स और डेली हेरल्ड में यदा कदा तार द्वारा भेज गए भारत सबधा समाचार पढने को मिल जाते हैं। पर वसे हम बिलकुल अलग थलग होकर

रह गए हैं। मैंने देवदास का 'हिन्दुस्तान टाइम्स' नियमित रूप से भेजन का कह दिया है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

२०

मगनवाडी वर्धा (मध्य प्रात)

१ अगस्त १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपके २० और २२ तारीख के पत्र मिल गए हैं। आखिर आपका मरा ६ तारीख का खत मिल ही गया। मैं तो कार्याकारिणी की बैठक के बाद से आपका नियमित रूप से लिखता आ रहा हूँ। मर पत्र केवल आपके लिए होते हैं, इसलिए मैं उनमें अपना हृदय उडेल देता हूँ और जो मन में होता है वह डालता हूँ। मुझे निणय से ता प्रसन्नता हुई पर जिन परिस्थितियों में वह निणय लिया गया, उसमें प्रसन्नता नहीं हुई। अनुकूल निणय के लिए खूब दौड़ धूप हुई। काश मैं आपको देश के कोने-कोने से आये तारा और पत्रा के बण्डल दिखा पाता। बिलकुल गांधी इचिन पैक्ट के बाद के इतिहास की पुनरावृत्ति हुई। यदि मैं निणय की पृष्ठभूमि में रही बापू की मानसिक स्थिति से आपको अवगत कराने से चूकना तो अपने आपसे आपके प्रति दोषी ही पाता।

मैं यह तो निश्चित रूप से जानता हूँ कि पदग्रहण करने के निणय का उद्भूत गहरा प्रभाव पड़ा है। पर जब मैंने बापू का आपके पत्र का वह वाक्य सुनाया जिसमें आपन कहा है कि उनकी साख बहुत ऊँची उठ गई है तो वह जविश्वाम पूवन पित्तघ्निलाकर हस पड़े। रुपये के बाजार की तरह राजनीति के बाजार में भी साख की दर में उतार-चढ़ाव अचानक आता है और उसमें सटोरियों ही बाजी मारते हैं। काश आपकी तरह मैं भी यह यकान कर पाता कि यह सारा व्यापार बहुत दिनों तक टिकेगा। अभी उस दिन बापू ने एक मन्त्री से कहा, 'अगर यह सब एक साल से अधिक टिक गया तो मैं या तो समझूंगा कि अमेरिका और

दबदूत बन गए हैं या यह कि हमारे मंत्रियों ने गवर्नर के जाग घुटने टक दिए हैं।' पर मानव स्वभाव जसा कुछ है उसे ध्यान में रखते हुए हम इस धारणा के साथ काम में लगे रहना चाहिए कि सब कुछ ठीक ही होगा। मद्रास में पहले ही दिन एक विचित्र स्थिति उत्पन्न हो गई। राजाजी मेहरअली की रिहाई का आदेश देना चाहते थे। गवर्नर ने आनाकानी की, कहा कि "वह अत्यंत आपत्तिजनक स्पीचें काड रहा था। गवर्नर की इस आपत्ति में सार था। मेहरअली ने अपनी रिहाई के तुरंत बाद वसी ही आपत्तिजनक एक और स्पीच दे डाली है। पर राजाजी जड़े रहे। गवर्नर ने कहा 'मैं केवल इन बातों को लेकर बाधा उपस्थित नहीं करूंगा। और मेहरअली को दूसरे दिन सुबह रिहा कर दिया गया। मैं आपको जय प्राप्ति के दृष्टांत भी यह बतलाने के लिए दे सकता हूँ कि गवर्नरों तथा मंत्रियों ने ठीक ढंग में शीघ्रगणेश किया है। युक्त प्रातः में पद ग्रहण करने के तुरंत बाद पतंजली ने विभागीय मन्त्रेरी के साथ घण्टा भर बात की। यह मानना पड़ेगा कि सेक्रेटरियों ने पतंजली के उद्गारा का अच्छे रूप में ग्रहण किया। हर जगह वन्देमातरम गान के साथ काम शुरू किया गया। गान के दौरान सभा सरकारी सम्पत्ति—यूरोपियन और गांधीवादी लोग—खड़े रहे। अकल बेंचर उड़ीमा में अधिभारियों ने खड़े होना अपनी शान के खिलाफ समझा। बौद्धिक क्षमता की दृष्टि से उड़ीमा के मन्त्रिमंडल को मुदत कहना गलत ही होगा पर हैं सब भले लागू तप हुए और बात के सच्चे, और मैं नहीं समझता कि वे बेहतर बौद्धिक क्षमता का लाहा मान लेंगे अथवा कोई मूखता का काम कर बैठेंगे। मद्रास का मन्त्रिमंडल सब दृष्टियां से भारत का सबसे अधिक मजबूत मन्त्रिमंडल है।

आपने बताया है कि सर राजर लमले बापू में मिलने को उत्सुक हैं और पूछा है कि यह किस तरह सम्भव है। शायद इस बात शर्तों का उसे आपसे अधिक पता होगा और इस पत्र के पहुँचते पहुँचते शायद ससार भर में यह खबर पहुँच जाएगी कि बापू वाइसराय से मिल लिये हैं। चार दिन पहले हम यह देखकर आश्चर्य हुआ और प्रसन्नता भी हुई कि यहाँ संग्रह का मजिस्ट्रेट बापू को कुछ जरूरी सरकारी कागज पत्र खुद देने आया है। वह सरकारी कागज पत्र वास्तव में लाडलिन लिथोग्राफ का बापू के नाम निमन्त्रण पत्र था। ऐसा लगता है कि वाइसराय ने वह पत्र गवर्नर के पास भेजा होगा और यह ताकीद कर दी होगी कि उस व्यक्तिगत रूप से बापू को लिया जाए। बापू का मानस अहिंसा की भावना से कितना ओत प्रोत है इसका अंदाजा इस साधारण-सी बात के प्रति उनकी प्रतिक्रिया से लगाया जा सकता है। वह बाल, यह जाहिर है कि किसी ने वाइसराय से कह रखा होगा कि मैं बिना बुलाये उनसे मिलने कदापि नहीं जाऊँगा

और जब सर जगह यह खबर फल जाएगी कि मुलाकात की याचना मैं नही वाइसराय ने की थी तो बचारा परशानी म पड जाएगा । बापू के स्वभाव मे अहिंसा की भावना कूट कूटकर भरी हुई है इसलिए उनका अत वर्ण वाइसराय की मान-मर्यादा की क्षति पट्टवान की सभावना मात्र से पमीजन लगा । इसके बाद उन्हाने अपने हाथ स उत्तर लिखा । मैं दाना की नखल भेज रहा हू । वह अपने उत्तर मे अपने मन की बात लिख सकते थे पर उहाने ऐसा नही किया । वह बाल उनका क्या कृत्य है सो वह खुद जानत हाग मैं उहे बताने का दुःसाहस क्या करू ? ' इस समय वाइसराय असम और बिहार के दारे पर हैं और शायद बापू का उत्तर उनके दिवनी लौटन पर ही उन तक पहुंच पाए । बापू ने सीमा प्रात का प्रश्न अवश्य उठाया है पर शायद उसको लेकर कोई कठिनाई उपस्थित नही हागी । यदि इस मुलाकात का एकमात्र उद्देश्य सम्पक जोडन का श्रीगणेश करना हो तो वाइसराय ने अपने पत्र म जा-कुछ लिखा है उससे अधिक वह क्या लिख सकता था ? यह जाहिर है कि केवल मिस्टर गांधी म भेंट करन की प्रसन्नता प्राप्त करने के हेतु से यह मुलाकात नही हा रही है । दोना केवल मिजाज शरीफ' कहकर एक-दूसरे स विदा नही लेंगे । पर यह स्पष्ट है कि भेंट एक घण्टे स अधिक समय लेगी पर मरे त्रिए पहले स ही अटकल लगाना उचित नहा होगा । अतएव आप सर रोजर लमले स कह सकते हैं कि उनके बापू को बुला भेजत भर की जरूरत है और वह 'उपस्थित हा जायेंगे । आपन उनके इस प्रश्न का कि यदि मन्निया को भोज-सहभोजा मे आमंत्रित किया गया तो वे कसा आचरण करेंगे जा उत्तर दिया उसस पता चलता है कि आपन बापू का कितना ममता ह । गत सप्ताह वल्लभभाई यहा इस विषय की तथा अय वाता की चर्चा करन आए थ कि मन्निया क लिए कसा तौर-तरीका बरतना ठीक रहगा । आपको यह जानकर खेद हागा कि दाना इस निणय पर पहुंचे हैं कि मन्निया को भोज सहभाजा स कोई सरानार नही रखना चाहिए । भवनर के निमंत्रण का स्वीकार करन का अय यह हागा बंदने म उमक प्रति कसा ही शिष्टाचार लिखाना चाहिए । हमारे बचारे मत्री इस ढग का मीजय शिष्टाचार बरतन की स्थिति म नही हैं । वान दरिद्रता क प्रश्न तक ही मीमित नही है बापू की धारणा है कि कम-मे-कम कुछ वर्षों तक विणुद औपचारिक नाता रखन म ही देश की भलाई है ।

आपन चर्चित के बारे म जो लिखा बडा दिलचस्प लगा । जिम समय उसने हिंसा की वान उठाई थी और भारतवासियो द्वारा अप्रेजों की हत्या की आका व्यक्त की थी तो आपने उसके उम भेज की याद क्या नही दिनाई जिमम उमने म धमकी दी थी कि यदि हमन पद-ग्रहण करन म इन्कार किया तो भयकर

परिणाम होगा ? बापू के वक्तव्य को लेकर उसने जिन निमम शब्दों का प्रयोग किया वे मरे स्मृति-पटल पर अंकित हैं। आपको पता है उसने किन शब्दों का प्रयोग किया था ? उसने बापू के वक्तव्या को कटीले तारों में लिपटी चापलूसी कहकर पुकारा था। पर यह सब चर्चिल के अनुरूप ही है। आयरलैंड-सम्बन्धी ममकौते के अवसर पर उसने माइकल कोलिस को अपने यहाँ बुलाया। उसके साथ घुल मिलकर बातें की हसी मजाक किया और कहा कि ब्रिटिश सरकार ने ता उस जीवित पकड़ने के लिए १००० पौण्ड के इनाम का वचन दिया था। खुद उसका (अर्थात् चर्चिल के) ऊपर बोअरा ने मात्र १० पौण्ड के इनाम की घोषणा की थी। पर बापू के प्रति उसका अभिवादन हार्दिक है इसमें मुझे संदेह नहीं है। आप उसका पास बापू के धर्मवाद का संदेश अवश्य पहुँचा दीजिए। १९३१ में उसने बापू से मिलने का इन्कार कर दिया था पर अब यदि वह भारत आता है तो शायद स्वयं मुलाकात की याचना करेगा।

यह पत्र काफी लम्बा हो गया है। जब इस खत्म करूँगा। दिल्ली से वापसी के तुरंत बाद आपको फिर लिखूँगा।

लूद से जान की आपकी अनिच्छा का कारण समझ गया। आपके पास समय का भी अभाव है। पर जाग चलकर जब हम और सारी वृक्षता से छुटकारा पा जाएँ तो मैं आपके साथ लूद से अवश्य जाना चाहूँगा। शायद जुगलकिशोरजी ने इस स्थान का नाम नहीं सुना है। सुना होता तो जसा उनका स्वभाव है वह यह स्थान देखने के लिए दौड़ पड़ते। आप लूद से अवश्य देख इसकी हठ में इसलिए कर रहा हूँ कि आपका स्वभाव उनका (जुगलकिशोरजी के) स्वभाव के ठीक विपरीत है।

सप्रम,
महादेव

पुनश्च

दिल्ली में आपकी अनुपस्थिति हम सबको खलेगी। कृपा करके यह पत्र अगाथा को भी दिखा दीजिए।

२१

मगनवाड़ी
वधा (मध्य प्रात)

३ ८ ३७

प्रिय घनश्यामदासजी

मुझे आशा है कि अब तक आपका मर सार पत्र मिल चुका होगा और जसा कि आपन अपने एक पत्र में लिखा है आपको विश्वास हो जाएगा कि मैं कुम्भकण में हाट नहीं ले रहा हूँ।

लक्ष्मीनिवास कहते हैं कि आप वहाँ और एक महीने तक रुकेंगे इसलिए आप विद्यना में अपना ऑपरेशन कराने की बात सोच रहे हैं। यह जानकर सतोप हुआ। आशा है कि इस ऑपरेशन के बाद व्याधि जड़-मूल से नष्ट हो जाएगी।

बापू हर हफ्ते लेख लिखने की अपनी पुरानी टेबल पर बापम आ गए हैं। साथ में उनका ताजा लख भेजता हूँ। पढ़ने के बाद जगाया को दे दीजिए। राजाजी अपनी कायकर्मता में महारथिया-जम धय और साहस का परिचय दे रहे हैं। उन्होंने मुझे जा पत्र लिखा है उसका एक वाक्य यहाँ उद्धृत करता हूँ कोई भी बुद्धि विवेक और लगनवाला मंत्री तब तक अपनी नमकहलाली साबित नहीं कर सकेगा जब तक वह रोज १८ घंटे ठाम काम न करे। और वह मधमूच यही कर रहे हैं। आशा है इतने कठोर परिश्रम से उनका स्वास्थ्य पर छतरा नहीं आएगा। यदि अगले प्रातः में भी एस ही मंत्री होते, तो क्या बात थी। मैं तो यह सरदार पटेल और राजेन्द्रबाबू की बहुत बड़ी गलती समझता हूँ कि वे खुद आगे नहीं बढ़ें।

आपने कहा है कि और किसी चीज की जरूरत है तो लिखें। हमारा मधु-मक्षिका-पालन विभाग सुचारु रूप में एक अनुभवही आदमी की देख रेख में चल रहा है। यह संजान मधुमक्षिका-पालन पर बड़े राखक लख लिख रहे हैं। इन्हें ग्रामोद्योग संघ के पुस्तकालय के लिए मधुमक्षिका पालन पर कई-एक पुस्तक की जरूरत है। सूची साथ भेजी जा रही है। इनमें से जितनी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हों क्या आप सान की कृपा करेंगे ?

और मरे लिए कबिनेट सरकार पर अनियमित पुस्तक लाइए। हरिजन के अंक पढ़ते रहें हैं ? यदि पढ़ते भी होंगे तो भा आपका उन पर सुझाव - योजना का समय तो कहा मिलना होगा ?

हम लाग दिल्ली स ६ तारीख को नोट रहे हैं। यदि मुलाकान के पार म कोई लिखन लायक बात हुई तो ७ को लिखूंगा।

सप्रेम
महादेव

२२

बादमराय लाज
४ = २७

प्रिय घनश्यामदासजी

मैंने भी लिखन के लिए अजीब जगह चुनी क्या है न यही बात ? और आप देखेंगे कि मैं इस स्थान के नाम से परिचित नहीं हूँ क्योंकि शायद दिल्लीवाला प्रासाद बादमराय भवन के नाम से जाना जाता है और शिमलावाले स्थान का नाम शायद बादमराय लाज है। खर जा भी हो।

उधर बापू बादमराय के साथ बातचीत में तल्लीन हैं इधर मैं कुछ चिट्ठिया लिखकर अपनी उपयोगिता सिद्ध करने में लगा हुआ हूँ। बापू ने यहाँ के लिए बात ममय मुझे कुछैक पत्र लिखने का आदेश दिया था। आपके प्रिय डाइवर ने (मेरा मतलब उस खूबसूरत म नौजवान डाइवर से है जिसकी वर्ण मरे कपडों से ज्यादा साफ सुथरी है) हमें यहाँ पहुँचाया और बापू महामहिम बादमराय के साथ साठे ग्यारह बजे मे बातचीत कर रहे हैं। मैं आपको बता ही चुका हूँ कि यह मुलाकान गतिरोध का अंत करने मात्र के लिए हुआ रही है किसी खाम विषय की चर्चा के लिए नहीं और बापू ने भी निश्चय कर लिया है कि सीमा प्रांत के अतिरिक्त और किसी विषय की चर्चा वह अपनी ओर से आरम्भ नहीं करेंगे। सीमा प्रांत का उल्लेख बापू ने बादमराय के नाम अपने पत्र में पहले ही कर दिया था। मैंने अपने मारे पत्र पूरे कर डाले और अब १ बजने को है कि तु बापू अभी तक बाहर नहीं जाए हैं इसका अर्थ यह है कि काम की बात हो रही है।

ऐसा लगता है कि आपका ताजा पत्र वर्धा में भरी घाट जोड़ रहा होगा क्योंकि कल देवदास को उसकी नकल मिल गई। मूल पत्र भी नकल के साथ ही रवाना हुआ होगा। मैं समझता हूँ कि जब लाड जेम्स ने इस भेंट की बात कही थी तो वह जानते थे कि वह क्या कर रहे हैं।

पुनश्च

य मुलाकात के बाद की पकितया हैं। भेंट अच्छी खासी रही, सौहादपूर्ण थी और बातचीत में स्पष्टवादिता रही। बातचीत लगभग डेढ़ घण्टा चली। जहाँ तक बापू का सम्बन्ध है उनके लिए सीमा प्रात का द्वार खुल गया ह पर खान साहब के लिए नहीं। वाइसराय न कहा कि इस निमित्त खान साहब को उस प्रात के गवनर से लिखा पडी करनी चाहिए। बापू न महामहिम को विस्तार के साथ बताया कि खान साहब जिस धातु के बने हुए हैं वह अपनी बात को लेकर गवनर से परियाद नहीं करेंगे। पर बापू की धारणा है कि माग खुल जाएगा, और अब जबकि सीमा प्रात के मन्त्रिमडल ने इस्तीफा दे दिया है तो सब कुछ ठीक ठाक हो जाएगा।

बाइमगाय ने सीमा प्रात का प्रसंग उठाए जान पर कोई आपत्ति नहीं की और बापू को वहाँ का दौरा करन के विचार को लेकर कोई बठिनाई खडी नहीं हुई।

जिन अन्य विषयो की चर्चा हुई वे थे ग्रामाद्वार गोधन हाय का बना नागज नरकुल की वनम आदि।

सप्रेम,
महादेव

२३

मगनवाडी,
वधा मध्य प्रात
६ न ३७

प्रिय घनश्यामरासजी

इस पत्र के साथ जो सामग्री जा रही है वह मुलाकात का सक्षिप्त विवरण है। यह कबल आपके लिए है और आपके २७ और २८ के पत्रों के उत्तर में है। गतिरोध का अंत तो हुआ पर बापू इस मुलाकात को एक मैत्रीपूर्ण विचार विनिमय में अधिक महत्त्व नहीं दे रहे हैं। चिरपरिचित माम्राज्यवाद अक्षुण्ण है और उसके आत्म-समर्पण में अभी बहुत दिन लगेंगे। बापू आपको इन पारस्परिक

सम्पकों की उपादेयता के बार में मतकता बरतने का संकेत देना चाहेंगे। लाड लोडियन को दिए गए निमंत्रण की पुनरावृत्ति व नहीं करना चाहेंगे। चर्चिल व लाड वाल्डविन खुद आना चाहें, तो उनका स्वागत है पर बापू उनसे आन का अनुरोध नहीं करेंगे। इसके अलावा यह एस निमंत्रण देने के लिए काग्रेसी नता की हैसियत भी नहीं रखत। लाड लाडियन की बात जलम थी। उन्होंने खाई को पाटन में काफी सरगर्मी से काम लिया था और बापू को भी वह कई बार लिख चुके थे। सुनाव वही निमंत्रण वही लाड लोडियन का आगमन इस घटना का पूरक मात्र है न कि अक्स्मात् भावावेश का परिणाम। चर्चिल आदि लोग यहाँ आकर दुनिया भर की साम्राज्यवादी अनगल बातें कर सकत हैं, और उन्हें बुतान का अथ वमी बात करने की छूट देन जसा हागा। बापू इस पारस्परिक सम्पर्क के सारे मामले से अपन आपको अलग थलग रखना चाहेंगे।

रही आपके हिन्दी पत्र के उत्तराद्ध में वही गई बात, मा बापू वचन देते हैं कि आप जो कुछ भेजेंगे उम पर वह पूरी तरह से विचार करेंगे और जहाँ तक संभव होगा, अपनी सम्मति भी प्रदान करगें।

सीमा प्रात की समस्या के बारे में वाइसराय ने वहाँ के गवर्नर में लिखा-पत्नी वग्न के बाद बापू को पत्र लिखने का वचन दिया है। सम्भव है प्रतिवध उठा लिया जाए।

आशा है आपका स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा। आपको मेरे सारे खत मिल गण न? यह कमबख्त जगह ही ऐसी है कि जक्सर समय पर पत्र डालने के बाद भी हवाई डाक में जाने से वे रह जाते हैं।

एण्ड्रूज कल पहुँच रहे हैं। किमलिंग इसका जदाज मैं अभी तक नहीं लगा पाया हूँ।

मप्रैम
महादेव

सलग्न

४ = १९३७

बापू की वाइसराय से मुलाकात का ब्योरा

उम दिन मैंने आपको वाइसराय भवन से पत्र लिखा था और अपने पुनश्च में मुलाकात का त्वरित सक्षिप्त विवरण दिया था। वह सचमुच ऊपर ऊपर

था ! क्योंकि उसमें वही सब कुछ था, जो गांधी में बापू के साथ लौटते समय रास्ते में उनसे बात करके ग्रहण किया था। हम वाइसराय भवन से सीधे अपने डेरे पर नहीं गए थे पहले आपके यहाँ जुगलकिशोरजी से मिलने जाना था। वहाँ बापू उन्हें अधिक समय नहीं दे सके इसलिए वह स्वयं हमारे साथ हरिजन निवास आए।

जब मैं आपको घातचित का पूरा ब्योरा देने की काशिश करता हूँ। बापू को वाइसराय के पास ल जाने से पहले श्री लेथबट (हिज्जे ठीक हैं या गलत, नहीं जानता) ने उन्हें बताया कि महामहिम का उनके पत्र का उत्तर देने का समय नहीं मिला, पर वह उनके साथ उस विषय पर जिसका उल्लेख उन्होंने पत्र में किया था, बात कर सकते हैं।

वाइसराय ने भी घातचित का आरम्भ इन आश्वासन के साथ किया कि बापू जिस किसी विषय पर चाहे, बात कर सकते हैं। बापू ने उत्तर में कहा कि वह तो उन्हीं दो प्रश्नों पर बात करके सतुष्ट हो जाएंगे स्वयं वे कोई प्रसंग उठाना चाहें तो बात दूसरी है। बापू के सीमा प्रांत का दौरा करने के बारे में वाइसराय वहाँ के गवर्नर से पहले ही लिखा पढ़ी कर रहे थे। उन्होंने बापू को बताया कि उनके वहाँ जाने में कोई कठिनाई नहीं है, हाँ वह यह अनुरोध अवश्य करेंगे कि बापू प्रांत की सीमा को न लाघें। बापू ने यह स्पष्ट कर दिया कि उनका सीमा लाघन का कोई इरादा नहीं है हाँ यदि सरकार को यह भरोसा हो जाए कि वह वहाँ कबीला से निपटने में समर्थ हैं तो बात दूसरी है। साथ ही सरकार को उनकी नेकनीयती पर भरोसा रहना चाहिए।

खान साहब के सीमांत प्रदेश में राक के सम्बन्ध में वाइसराय ने जानना चाहा कि खान साहब अपने विरुद्ध आरोपों की सफाई में वहाँ के गवर्नर से लिखा पत्र करें तो कसा हो? जा जा रोप हैं उनमें से एक यह है कि खान साहब कबीलों को उबसा रहे थे, और दूसरा यह कि वह खुदाई विद्रोहियों को एक सत्त्व सस्था का रूप देने में लगे हुए थे। बापू ने कहा कि खान साहब ने इन दोनों आरोपों का आमूल खण्डन किया है, और यह परिताप का विषय है कि उन्हें अपने-आपको निर्दोष सिद्ध करने के अवसर से वंचित रखा जा रहा है। खान साहब का बहुत गलत समझा जा रहा है। उनमें त्रुटियाँ ही सकती हैं, पर कुछ मिलाकर यह मानना होगा कि वह धर्मभीरु आदमी हैं असत्य भाषण और हिंसा से परहज करते हैं और घोषा देने की प्रवृत्ति तो उनमें बिलकुल ही नहीं है। बापू ने उनसे निवेदन किया कि वह खान साहब का परिषय प्राप्त करें तो बाद में उन्हें पछानना नहीं पड़ेगा। रही सीमा प्रांत के गवर्नर से परियाद करने की बात तो

खान साहब के लिए वसा करना सम्भव नहीं है। क्या खान साहब ने पंजाब के मदनर सपरियाद की थी? तब फिर जिस प्रकार उनका लिए पंजाब का द्वार खुला रखा गया है, उसी प्रकार उन्हें अपने घर का द्वार भी खुला मिलना चाहिए। बापू ने कहा कि सरकार चाहे तो यह आशा व्यक्त कर सकती है कि खान साहब अपने प्रात म जाकर अमुक-अमुक काम नहीं करेंगे और बापू ने इसका जिम्मा लिया कि खान साहब सरकार की इस आशा को झुठलानेवाला कोई काम नहीं करेंगे। पर उन्हें अपने प्रात म जाने की अनुमति बिना शत मिलनी चाहिए।

वाइसराय के साथ जवाहरलाल के भेंट करने का प्रसंग भी उठा। वाइसराय ने जानना चाहा कि जवाहरलाल किस कोटि का आदमी हैं और बापू ने उत्तर म क्या कहा होगा आप स्वयं कल्पना कर सकते हैं। जवाहरलाल वसा निमंत्रण स्वीकार करेंगे या नहीं इस बारे म बापू को थोड़ा-बहुत संशय था। (वाइसराय स भेंट करने के लिए जाने से पहले बापू को जवाहरलाल का एक संक्षिप्त सा पत्र मिला था जिसमे उन्होंने कहा था आपने दिल्ली जान म जिस आतुरता स काम लिया है मुझ अच्छा नहीं लगा पर शायद यह अनिवाय था। बापू ने अब जवाहरलाल को लिखा है कि सम्भव है वाइसराय उन्हें मिलने का निमंत्रण दें। उन्होंने वाइसराय स कह रखा है कि यदि उन्हें निमंत्रण भेजा गया तो वह उस अस्वीकार नहीं करेंगे)। बापू ने वाइसराय का भरोसा दिलाया कि जवाहरलाल के सम्बन्ध मे उन्हें किसी तरह का शक शुबहा नहीं रखना चाहिए वह बहुत भद्र है और उनसे भेंट करना व कदापि अस्वीकार नहीं करेंगे।

मन्निमडला मे जिन जिन लागे का लिया गया है उनके सबघ म भी प्रसंग वश चर्चा छिडी। बापू ने बताया कि अच्छे-स-अच्छे आदमिया को छाटा गया है। मुसलमाना और दलित वर्गों म से आदमी चुनने मे कुछ कठिनाई रही फिर भी लिया गया है। सम्भव है उनकी अपेक्षा अधिक योग्य आदमी भी मिल जाते। वाइसराय न कहा कि वह राजाजी का अच्छी तरह से जानत हैं और मद्रास म जिस तग स काम चल रहा है उसस वह सतुष्ट हैं।

फिर ग्रामोद्धार हाथ के बने कागज और खादी आदि ग्रामोद्योग सबधी कार्यों की जनरल चर्चा छिडी। बापू न वाइसराय को जो चिट्ठी लिखी थी वह हाथ के बने कागज पर लिखी थी और वाइसराय क ध्यान म यह बात थी। बापू ने कहा कि जो कागज काम म लाया गया था उसस भी अच्छा कागज तयार किया जा सकता है और किया जाता है पत्र लिखने म जिस क्लम से काम लिया गया है वह गाव म उग मरकडे स तयार की गई थी और जा स्याही बरती गई थी वह भी गाव

म ही तयार की गई थी। बाइमराय न कहा कि सरकडे की कलम लाहे की निब-
वाली कलम में कही अच्छी है क्योंकि उससे लिखने में हाथ पर जोर नहीं पड़ता।

महादेव

२४

होटल बाउअर आलाक

ज्यूरिख

८ अगस्त १९३७

पूज्य बापू,

आटावा पैकेट की माटी रूपरखा इस प्रकार है। हम ब्रिटिश बाजार में निम्न
लिखित वस्तुओं पर आटावा पैकेट का अतगत तरजीह मिलती है। कितना माल
ब्रिटेन को निर्यात होता है इसके आकड़े देता हूँ

	लाख रुपयों में
चाय	१७००
सत्र भाति की खाले	७,००
मूंगफली	१५०
वनस्पति तेल	१५०
अलसी	३००
पटसन का प्रस्तुत माल	२,७०
खली	१,५०
कालीन व कम्बल	६५
तम्बाकू	६०
सूती वस्त्र मुख्यतः हाथ-बुन	२०
फुटकर	१५०

७,१५

इसके बदले में हम जिस ब्रिटिश माल का जपन बाजार में तरजीह देते हैं
उसमें बिजली का सामान मोटर गाड़िया इमारत का सामान शामिल है। कुल

रकम २२ करोड़ क आसपास बठती है। इन मारी चीजा का यारा देने की जरूरत नहीं है। इनके अतिरिक्त ब्रिटिश कपडे और इस्पात के सामान को भी भारत के बाजार मे तरजीह मिलती है इस माल का मूल्य आटावा पकट के बाद १३ करोड़ कूता गया है। लेकिन अब इसम कमी हुई है। इस प्रकार भारतीय बाजार मे ३५ करोड़ के माल की खपत है।

हम अधिकाश ब्रिटिश माल पर ७॥ प्रतिशत से १० प्रतिशत तर भुगतत हैं। पर ब्रिटिश कपडे पर तो ३० प्रतिशत का भार उठाते हैं। इसके मुकाबले हमारे माल पर ब्रिटिश बाजार म १० प्रतिशत मिलता है। हा चाय मे यह प्रतिशत काफी अधिक है। सरकारी तौर पर देखन से लगता है कि पैकट म याय से काम लिया गया है क्योकि दोनो ओर से जिन जिन वस्तुओ की वावत प्राथमिकता दी गई है उनका यापार प्राय उतन ही मूल्य का है तथा तरजीह का परिणाम भी प्राय एकसमान है। इस प्रकार यह दमिल पश की जा सकती है कि यह पकट समान आदान प्रदान के आधार पर हुआ। पर वात ऐसी नहीं है। वस्तुओ की मात्रा मे समानता हो सकती है पर उनकी गुणवत्ता के मामले म कमी समानता नहीं पाई जाती।

भवम पहली बात तो यह है कि हमारी जिन वस्तुआ का तरजीह मिली है उनमे से अधिकाश कच्चा माल है जिसकी ब्रिटेन का अपने ही हक मे जरूरत है। दूसरी बात यह है कि जिन वस्तुआ पर हम तरजीह मिली है उनका उत्पादन साम्राज्य के अय देश भी करते है जो उहे भी कसी ही तरजीह मिली हुई है, या फिर ब्रिटेन को जिन उत्पादना की जरूरत होती है उनके ८० प्रतिशत से ९० प्रतिशत अश की पूर्ति हम करते है इसलिए अय देशो के माल के निर्यात पर चुगी नगाकर तथा हमारे माल को चुगी से मुक्त रखकर ब्रिटेन अपने हितो का कोई बलिदान नहीं कर रहा है।

उदाहरण के लिए हमे चाय के निर्यात म तरजीह है पर भारत तथा लका ब्रिटेन की चाय की ९० प्रतिशत जरूरत की पूर्ति करते है। इस प्रकार चाय के मामले मे हम जा तरजीह है उसस हम माल क बीमे म लिखित मूल्य के अतिरिक्त और किसी प्रकार का लाभ नहीं हुआ है न ब्रिटेन न ही यह तरजीह दकर कोई एहसान किया है। कितनी ही अय वस्तुआ के बार म भी यही बात है। हा, मैं यह मानता हू कि माल के बीमे म लिखित मूल्य का भी मूल्य है।

इसके विपरीत हम जिन ब्रिटिश वस्तुआ पर तरजीह दिए हुए है उनके लिए अपने हितो की कुर्बानी करते है और उमसे ब्रिटेन को ठोस लाभ होता है। दूसरी ओर उमकी क वस्तुएं ऐसी हैं जिह हम भी तयार कर रहे हैं। ब्रिटेन

की ये वस्तुएँ हमारी वस्तुओं की प्रतिद्वंद्वी सिद्ध हो रही हैं। इस प्रकार यह पकट वापस नहीं थी, क्योंकि इसमें वस्तुओं की घटिया-बर्तिया होने के प्रश्न की ओर ध्यान ही नहीं दिया गया।

एक अन्य तथ्य की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है। हम एक श्रेणी देश हैं जबकि ब्रिटेन महाजन देश है इसलिए हम श्रेण का ठीक-ठीक भुगतान करने में समर्थ रहने के लिए अपने ही हित में ब्रिटेन को मुह्यत हमारा माल खरीदना चाहिए। एक और बात ध्यान देने योग्य है। हम ब्रिटेन का जिन तयार वस्तुओं में तरजीह देते हैं उनमें से इस्पात और कपड़े का अलग रखा गया है और उन्हें अलग कोटि का माना गया है। कम-से कम सिद्धांत के रूप में इस्पात और सूती कपड़े पर ब्रिटेन का जो तरजीह मिली हुई है सो जाटावा पकट की बदौलत नहीं बल्कि पक्षपातपूर्ण संरक्षण की नीति बरते जान के कारण है। दरिफ बाह की सिफारिश थी कि भारत को ब्रिटिश माल की अपेक्षा जापानी माल के प्रति संरक्षण की अधिक जरूरत है। परिणाम यह है कि ब्रिटेन के माल का इस भेद भाव का लाभ मिला है।

इसलिए यदि ओटावा पकट का अंत कर दिया जाए और उसके स्थान पर कोई नया पकट न किया जाए, तो जहाँ हम एक ओर ब्रिटेन के इस्पात और कपड़े का तरजीह दस्त रहेंगे हमें बदले में ब्रिटेन के बाजार में उन पदार्थों पर तरजीह मिलनी बतल जायेगा जो हम अब तक मिनती आ रही है। इसमें हमारा नुकसान है और फिलहाल इस समस्या का कोई हल नहीं है। इसलिए हमें नये पकट की बात चलाने में दो मुद्दे सामने रखे।

एक मुद्दा यह है कि हम अब तक जिन वस्तुओं पर ब्रिटिश बाजार में तरजीह मिलती आ रही है वह वैसे ही मिलती रहे जबकि हम बदले में ब्रिटिश इस्पात और कपड़े का छोड़ अन्य किसी वस्तु को अपने बाजार में तरजीह न दें। ओटावा पकट के अंतगत ब्रिटेन ने हमें यह नतिक वचन दिया था कि भविष्य में भारतीय रूई अधिक मात्रा में आयात की जायेगी। ब्रिटेन ने इस वचन का थोड़ा बहुत पालन भी किया। पहले वह भारतीय रूई की दो लाख गांठें आयात करता था आतावा पकट के बाद उसमें लगभग साने छह लाख गांठें मगानी शुरू कर दी। अब ब्रिटेन को यह निश्चित वचन देना चाहिए कि वह प्रतिवर्ष कम-से-कम १० लाख गांठों का आयात करेगा।

एक मुद्दा और है। ब्रिटेन द्वारा आयात की गई अलसी पर लगाई गई चुगी की वापसी का मुद्दा। इस समय भारत का यह चुगी नहीं दनी पडती है। यहाँ यह बात साफ करना उचित होगा कि निर्यात पर लगाई गई चुगी की वापसी

वास्तव में क्या चीज है। ब्रिटेन भारत और अर्जेंटाइना, दोना दशा से अलसी का आयात करता है। भारत को अपन इस निर्यात माल पर चुगी नहीं देनी पडती, जबकि अर्जेंटाइना को देनी पडती है। अब ब्रिटेन अलसी के जा पदाथ तमार करेगा—तेल, वार्निश बगैरह-बगैरह उनका निर्यात करते समय वह अलसी पर लगाई गई चुगी अर्जेंटाइन को वापस लौटा देगा। इसी को 'चुगी की वापसी' का नाम से पुकारा जाता है।

अर्जेंटाइना को उसकी चुगी वापस मिल जाती है, इसके कारण हम अपनी अलसी पर तरजीह वाले स्तर का लाभ नहीं मिलता। पर ब्रिटेन इस चुगी की वापसीवाली व्यवस्था का अंत करने को राजी नहीं है साथ ही वह अपन कपडे पर और भी अधिक तरजीह चाहता है और चुगी में ६ प्रतिशत नयी छूट की माग भी कर रहा है। इसके अलावा उसकी यह माग भी है कि वहा पटसन के तैयार माल की सीमा तक कमाए हुए चमडे के निर्यात में कमी कर। उसका यह भी कहना है कि वह केवल कपडे और इस्पात पर तरजीह मान जाने से सतुष्ट नहीं है। उसका कहना है कि यह जो तरजीह दी जा रही है सो उसके तयार करने वाला के लाभार्थ नहीं बल्कि स्वयं भारत में इन दोना चीजों की उपलब्ध करनेवाला का हित में बरती जा रही है। अतः वह अन्य कई पदार्थों पर भी तरजीह बरत जान की माग कर रहा है। हमने उसकी माग को ठुकरा दिया है।

यहां यह बताना भी आवश्यक है कि हम अपन कच्चे और तैयार माल पर जो तरजीह मिली उससे हमारे पन्सन के तयार माल कमाए हुए चमडे और कालीना का सचमुच का लाभ पहुंचा। इससे इन तीना वस्तुओं का ब्रिटिश निर्माताओं की जेठें हिल गई। इसीलिए व चाहत है कि इन तीना चीजों का व्यापार को सीमित कर लिया जाय।

इन सारी बातों पर विचार करने का बाद मैंने अपन कुछ महकर्मियों का यह सुझाव दिया है कि हम एक समझौते का निमित्त निम्नलिखित सीमा तक आगे बढन का लिए तयार हा जाना चाहिए

१. इस समय भारत का जिन जिन वस्तुओं पर तरजीह मिला हुई है, वह जारी रखा जाए। हम ब्रिटेन का इन चीजों का ३५ करोड़ रुपये का माल निर्यात करते हैं।

२. हम चुगी की वापसी का व्यवस्था का अंत किए जान की माग कर रहे थ लेकिन वह व्यवस्था ज्या की-तया रहने दी जाय।

३. पन्सन का तमार माग कमाए चमडे और कालीना का व्यापार का मर्यादित न किया जाए।

४ इनके बदले में हम लकाशायर के कपडे पर ५ प्रतिशत अधिक छूट देने की राजी हा जायें, पर हम वसी तरजीह ब्रिटेन के अन्य किसी तयार माल पर न दें। हा, उसका आयान घोडी मात्रा में होता हा तो बात दूसरी है। या ऐसी चीजा के व्यापार की मात्रा भी १॥ करोड से अधिक नहीं हानी चाहिए।

५ इन सारी बातों के अलावा ब्रिटेन हम यह गारण्टी दे कि वह हमारी रई का अधिकाधिक आयात करेगा और तीन बष की अवधि के भीतर हम आयात की मात्रा १० लाख गाठा तक पहुच जायेगी।

सरसरी तौर से देखन से लगगा कि एगा ममझीता हमार लिए लाभप्रद है और ब्रिटेन के लिए हानिकारक है। पर जैसा कि मैं बता चुका हू हम जा तरजीह दी गइ है, उसम स अधिकाश का मूल्य केवल बीम म लिखित मूल्य तक ही सीमित है और व्यापार का मात्रा को ध्यान म रखा जाय, तो उसक द्वारा प्राप्त होनेवाला लाभ सीमित-सा ही है। दूसरी ओर हम लकाशायर के कपडे की मिली तरजीह की मात्रा म ५ प्रतिशत की बद्धि केवल लकाशायर को सतुष्ट रखन के हतु कर रहे हैं क्याकि चुगी म ५ प्रतिशत की कमी करने और उस घटाकर १५ प्रतिशत पर लान के फनस्वरूप भारतीय मिला के कपडे के उत्पादा-ध्वय म जो कमी हुई है उसम मिने फायद म नहीं रहेगी। १९३५ म भारतीय मिला द्वारा तयार कपडे का व्यापार ४५ करोड गज का था, १९३६ म यह घटकर ३८ कराड गज रह गया, और १९३७ म चुगी म ५ प्रतिशत कमी के बावजद व्यापार २८ करोड गज तक सीमित रहता नजर आता है।

मरी और कस्तूरभाई—दोना की यह धारणा है कि लकाशायर का ५ प्रतिशत की ताजा छूट देने स भारतीय मिला का काई क्षति नहा होगी। लकाशायर यह गारण्टी देने की तयार है कि यदि उसका व्यापार ५० करोड गज की सीमा लाघ गया—इस समय ३० करोड गज तक सीमित है—तो हम तरजीह की मात्रा म २॥ प्रतिशत की कमी करें और अगर यह कारगर साबित न हो, ता और भी २॥ प्रतिशत की कमी कर दें, और जब तक कपडा ५० कराड गज तक न आ जाए यह सिलसिला जारी रखें। साथ ही लकाशायर की यह भी माग है कि यदि उसका व्यापार २५ कराड गज से भी नीच गिरा ता ड्यूटी म जोर कमी करनी हागी।

सिद्धांत के रूप म यह बुरी बात नहीं है यद्यपि म चाहूगा कि भारत म लकाशायर का कपडा अधिक स-अधिक ८० कराड गज और कम-स कम २० करोड गज खपे। पर मरा विश्वास है कि वह समय आ रहा है, जब हम अपने बाजार म मीचेस्टर से होड लेने म समथ होग। वसी जवस्था म हमे सरक्षण की

जरूरत रहेगी। इसलिए मेरी समझ में मैकेस्टर का ५ प्रतिशत और अधिक छूट देकर भारतीय उद्योग को कोई क्षति नहीं पहुँचेगी, साथ ही पटसन के तमाम माल, वमाए चमड़े और कालीनो के व्यापार में विस्तार की काफी गुंजाइश रहेगी। यदि हम त्रिनिदाद बाजार में इन तीन चीजों के व्यापार की खुली छूट रहे तो हम इन चीजों के व्यापार को खूब बढ़ा सकेंगे।

जिन अर्थ चीजों पर हमें तरजीह का दर्जा मिला हुआ है उनका व्यापार उतना अधिक नहीं है जितना प्रतीत होता है। फलतः जिन चीजों पर हम तरजीह मिलना बहुत जरूरी है वे ये हैं

पटसन	२७० लाख
कालीन	६० लाख
वमाया हुआ चमड़ा	३० लाख
	<hr/>
	योग ३६० लाख

इसके साथ ही यदि ब्रिटेन हमारी रई की १० लाख गांठें खपा सके, जिनका मूल्य लगभग १० करोड़ रुपये होगा तो इससे ब्रिटेन को तो कोई असुविधा नहीं होगी पर हम काफी लाभ होंगे। इसके अतिरिक्त अर्थ अनेक वस्तुओं पर तरजीह मिलती रहेगी। इनमें कुछ का व्यापार सीमित सा है पर कई ऐसी वस्तुएँ हैं जिनके व्यापार की मात्रा प्रचुर है। कुल मिलाकर यह व्यापार ३० से ३२ करोड़ तक पहुँचता है। इसके मुकाबले में मेरा सुझाव है कि लक्वाशियर को ५ प्रतिशत की ताजी छूट दी जाए। फिलहाल लक्वाशियर का व्यापार ७ करोड़ के आसपास है। हम ब्रिटेन के इम्पाट को भी तरजीह देनी चाहिए। इसका व्यापार २॥ करोड़ के आसपास है। अर्थ कई वस्तुओं पर भी जिनका व्यापार कुल मिलाकर १॥ करोड़ के आसपास है हमें ब्रिटेन को तरजीह देना चाहिए।

मेरी सम्मति में दानो हा पक्षा के लिए यह व्यायप्रद सिद्ध होगा, और इससे भारतीय हिता को भी जाच नहीं आयेगी। वस्तुतः अहमदाबादवाला की राय लेने की तयारी में हैं, पर मेरी सम्मति में कांग्रेस की राय का सर्वाधिक महत्त्व है क्योंकि यदि समझौता भारत का हित साधन करता प्रतीत हुआ तो भी कपास उद्योग व्यापक दृष्टिकोण अपनाएँ में समर्थ नहीं रहेगा और शायद लक्वाशियर के पक्ष में छूट देने को राजी नहीं होगा।

पर इधर मुझे यह आशंका है कि मैंने समझौते की जा रूप रखा तयार की है उम कहीं ब्रिटेन नामजूर न कर दे। हो सकता है कि बातचीत सफल न हो पर मेरी समझ में हम यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि हम इस सीमा तक ही जाने का

तयार हैं। यदि बातचीत भग हा गई, तो वैसी स्थिति में हम ब्रिटेन का इस्पात और सूती कपड़े के मामले में तरजीह देते रहेगे, और बदले में हम कोई लाभप्रद चीज हासिल नहीं होगी। बसा होगा ता लाचारी है। पर ब्रिटेन को भी यह जान लेना चाहिए कि बातचीत भग न करन में ही उसकी भलाई है इसके जलावा स्वेच्छा से किए समझौते का राजनतिक महत्व भी कुछ कम नहीं है।

यह दलील पेश की जा सकती है कि और अधिक वस्तुआ को तरजीह क्या न दी जाए और कपड़े पर तरजीह एकदम समाप्त ही क्या न कर दी जाए ? इसके उत्तर में मेरा कहना है कि ब्रिटेन कपड़े को सर्वाधिक महत्व देता है, जबकि हम अकेले कपड़े के मामले में ही अपने-आपको नुकसान पहुँचाये बिना झुक सकते हैं।

वार्ता में व्यवधान का एक परिणाम यह होगा कि हमारा रद्द क निर्यात-व्यापार को धक्का लगा और चूकि मैचेस्टर कच्ची रई खपाता है इसलिए हमें उसे सतुष्ट रखना चाहिए। जब मैंने इसकी चर्चा सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास स की ता उहे विचार र्चा तो पर वह कपड़े के प्रश्न को छून तक के लिए राजी नहीं हुए क्योंकि इस प्रश्न में भारत में राजनतिक महत्व प्राप्त कर रखा है। मैंने उनस कह दिया कि आपकी सलाह लिये बगर हमें कोई गम्भीर कदम नहीं उठाना चाहिए। फलत यदि जच्छी तरह सावने विचारने क बाद आपका भरा सुझाव जके तो हम आपके आशीर्वाद की कामना करेंगे। यदि आपका सुझाव पसंद न आया, ता हम इस आलाचना की बिलकुल परवाह नहीं करेंगे कि हम स्वयं मिल मालिक हैं इसलिए हमने कपास की खेती करनेवालो तथा अ य कृषको क टिता की जार ध्यान नहीं लिया। यह विषय बडे ही महत्व का है इसलिए आपके परामश के बिना हम कुछ नहीं कर सकते। यदि आपका और अधिक सूचना की जरूरत हा ता अवश्य पूछिए। पर हम हर हालत में आपकी अन्तिम सम्मति ७ सितम्बर स पहले-पहले मिल जाय तो अच्छा रहेगा।

प्रणामपूर्वक,

स्नेहभाजन

धनश्यामदास

पूज्य श्री महात्मा गांधीजी

बधा

२५

हाटल बाउअर आलाक

ज्यूरिख

८ जगस्त १९३५

प्रिय महादवभाई

मैं जपन एक पत्र म लिख ही चुका हू कि नये व्यापारिक समझौते के बारे म मुझे बापू की सलाह चाहिए। यह सलाह गोपनीय समझी जाएगी। मुझे अबतक यह पता नहीं लग जाएगा कि इस विषय म बापू का अर्थात् बाप्रेस का, क्या रय है तयतक मैं इस दिशा म निश्चित रूप से कुछ नहीं करूंगा। शायद बापू इस बारे म अपनी सम्मति देने से पहले बरलभभाइ अथवा किसी जीर म सलाह मशवरा करना चाहेंग। ऐसा वह भल ही करें पर कम सं-कम यह कहकर कि यह मामला बापू के जाय क्षेत्र म नहीं आता मुझे हताश मत कर देना क्यकि उनकी सम्मति के बिना मेरे लिए इस सवध म भारत के हित म होते हुए भी कुछ करना अत्यत कठिन हा जाएगा। हम ऐसे किसी दस्तावेज पर अपनी सही नहीं करना चाहते, जिम देश अगीकार न कर। इसलिए कोई निश्चित कारवाई करने से पहल हम लोग बापू की सलाह लेना चाहते हैं। मुझे यकीन है कि जब बापू जय किसी से मशवरा करन लगें तो वह यह स्पष्ट कर देंगे कि मामले को गोपनीय रखना है। कोई चीज बाहर न फूट निकल।

सप्रेम,

धनश्यामदास

२६

हाटल बाउअर आलाक

ज्यूरिख

६ जगस्त १९३७

प्रिय महादवभाई

तुम्हारे पत्र अत्यत राचक और सूचनात्मक सामग्री से भर रहते है। तुमसे यह उम्मीद रखना कि ऐसे ही पत्र बराबर लिखत रहा करो तुम्हारे साथ ज्यादाती

आपरेशन स्थान सुन करक किया गया था। प्रोफेसर ने मुह की तरफ स नासिका की नीवार मे छेन किया और झिल्ली निकाल डाली। इसके बाद उसन नाक की हड्डी म एक ओर छेन किया। बडी चतुराई स काम किया गया था। मुझे वेहोश नही किया गया था। इसलिए जब तक छेनी जोर हथौडी चलती रही मैं बराबर बेचन रहा। सारा काम रोचक भी था और जजीब-सा भी था। मुझे भरासा है कि यह आपरेशन मेरे लिए लाभप्रद होगा पर मार जापणनो म जोखिम तो उठानी ही पडती है।

तुम्हारे दो पत्र बिना उत्तर न्यि पडे हैं। कुम्भकण से तुम क्या होड बन्गे ? तुमन तो मुजे बडे त्रिस्तार के साथ सभी वाता की सूचना दे दी है धयवाद। 'हिन्दुस्तान टाइम्स मेरे पास नही पहुच रहा है और जब स लटन छोडा है, हरिजन से भी नाता टूट रहा है। भारत के बारे म मुझे जो-कुछ जानकारी हासिल होती है वह या ता निजी पत्राचार क द्वारा अथवा ब्रिटन के पत्रा के द्वारा। ल दन टाइम्स ने अब तक बडी सहन्यता बरती है, जोर श्री इगलिश हमेशा शुभ समाचार भेजते हैं। मार्निंग यूज पहले विरोधी भावना रखता था, पर चर्चिल और लाड हैलिफैक्स के माध बातचीत हान के बाद उसकी टिप्पणिया की कडबाहट म कुछ कमी हुई है। हो सकता है यह सयाग मात्र ही हो।

जसी खबरे आ रही हैं उन पर मुझे आश्चय नही हुआ। एक दिन यह पत्ने का मिलता है कि शिक्षा मंत्री न अमुक माग स्वीकार नही की थी इसलिए विद्यार्थियो न हडताल कर दी। दूसरे दिन यह समाचार आता है कि उद्याग मंत्री न दिया सलाइ के कारखाने म काम करनेवालो की माग मजूर नही की, इसलिए उहाने काम बन्द कर दिया। कानपुर की बडी हडताल खत्म हो गई पर मैंन पत्रो म पढा कि एक बार तो हडतालियो न पतजी के निणय का मानन स इकार ही कर दिया था। अण्डमान की हडताल तो बदस्तूर चल रही है जो लोगो की बेचनी का कारण बनी हुई है।

एसा मातूम पडता है कि काग्रेसी शासन म हर कोई सब-कुछ अपने ही डग से करना चाहता है। मुझे यकीन है कि बापू आत्मसयम की आवश्यकता की तरफ जनता का ध्यान खीचने की पूरी कोशिश मे लगे होंगे। यदि किसी दिन लोग जुलूस बनाकर और झण्डे लेकर नारे लगाते हुए मलियो के डेरा पर पहुचें, तो मुझे आश्चय नही होगा। अब तब लोगो की भावनाओ को जिस प्रकार दबाये रखा गया था अब यह सब उसकी प्रतिक्रिया मात्र ही है। यदि लोगो क दिला का गुवार निकन जाए तो कोई बुराई की बात नही है। पर लोगो को यह समझ रखना चाहिए कि स्वराज्य म सयम समझदारी और कानून पालन की आवश्यकता

अधिक रहेगी। मैं तो यही आशा लगाये बैठा हू कि धीरे धीरे लोगो की समझ में यह बात आ जाएगी। पर क्या तुम्हारा भी यह खयाल नहीं है कि इस दिशा में जनता के शिक्षण का कार्य अविलम्ब आरम्भ हो जाना चाहिए ?

और, इधर जवाहरलालजी के भाषण जारी हैं, उनका अभिप्राय जो भी हो। मैं जानता हू कि वह जो कुछ कह रहे हैं वह बापू की आलोचना के रूप में नहीं कह रहे हैं पर अशिक्षित जनता तो यह समझेगी कि उन्हें वाइसराय के साथ बापू की भेंट अच्छी नहीं लगी। इसका कहीं भी अच्छा असर पड़ने से रहा।

बापू मेरे इस कथन पर, कि उनकी साथ बहुत ऊंची उठ गई है अविश्वास के साथ हंस क्यों पड़े यह मेरी समझ में नहीं आया है। मैं यह तो मानता हू कि रुपये के बाजार में शेयरा की साथ घटती बढ़ती रहती है, पर एक व्यापारी के नाते मैं यह तो तुम्हें बता ही दू कि उनमें अचानक उतना उतार चढ़ाव नहीं होता है जितना आम तौर से समझा जाता है। यदि किसी कम्पनी की आर्थिक स्थिति ठीक ठाक रहे, तो उसकी साथ में भी स्थायित्व बना रहता है। इसलिए मेरा यह कहना बेजा नहीं था कि इस शासन कार्य के बहुत दिनों तक चलते रहने की संभावना है। यदि हम स्वयं ही इसे भंग करने पर उतारू हो जाए, तब तो बात दूसरी है। पर हमारा वैसे कोई इरादा नहीं है इसलिए कोई बड़ी अडचन पदा हागी ऐसा मुझे नहीं लगता। न अंग्रेज लोग ही दबता बनेंगे, न मंत्री लोग ही उनके आगे घुटने टेकेंगे। पर शत यह है कि मंत्री लोग शासन कार्य के संचालन में इस भावना से काम करें कि शिथिलता को फटकते तब नहीं दिया जाएगा। मुझे तो यही सिखाइ देता है कि दोनों पक्ष एक-दूसरे की त्रुटियों को समझें और आदान प्रदान की भावना से काम लेने लगेंगे। जहाँ ऐसा हुआ कि दोनों को यह प्रतीत हान लगना कि विपक्षी में भी अच्छाईया हैं और ऐसी अच्छाईया हैं जिनकी अब तक उपेक्षा की जाती रही है। अंग्रेज लोग हृदय के कार्यकुशल होते हैं। जहाँ उन्होंने उदार दृष्टिकोण अपनाया जसी कि मुझे आशा है, वे हमें अपनी लक्ष्य सिद्धि में प्रचुर महायता प्रदान करेंगे। फिर एक कार्यकुशल व्यक्ति के लिए उदार दृष्टिकोण अपनाना अस्वाभाविक क्या नहीं है। अंग्रेजों न दक्षिण अफ्रीका और आयरलैंड में बसा रख अपनाया था नहीं? तो फिर भारत के मामले में वे इतिहास की पुनरावृत्ति करने से क्यों कतराएंगे? मुझे इस बात में लेश-मात्र संशय नहीं है। तुम्हारे इस कथन से मुझे बड़ी खुशी हुई कि सभी प्रांतों में मंत्री लोग और गवर्नर लोग मिल जुलकर कार्य सम्पादन कर रहे हैं।

गवर्नर के सामाजिक निमन्त्रणों को मंत्री लोग अंगीकार करें या न करें इस बारे में बापू न जो निष्पत्ति लिया है उसका मैंने पहले ही अनुमान लगा लिया था

इमलिए मैं सर रोजर लमल को वापू के दृष्टिकोण से अवगत कराने में भूल नहीं की। पर यदि प्रातो के मुख्य मंत्रियों को ऐसे सामाजिक आयोजना में भागलेने की छूट रहती तो शायद ज्यादा अच्छा रहता। गलतफहमी की कोई गुजाइश ही न रहती। मुरय मंत्रिया का ऐसी स्वतंत्रता प्रदान करना वाछनीय है।

चर्चिल के वार्ड में तुमने जो कुछ कहा भी समया पर तुमने मेरे इस सवाल का जवाब नहीं दिया कि वापू उसका भारत आना पसंद करेंगे या नहीं। वह जो कहता है उसकी जोर ध्यान मत दो। वह राजनीति का घिनाडी है बाहर कुछ कहता है जापस में कुछ और ही। पर मैं यह कहे बिना नहीं रहूंगा कि एक मानव की हैसियत से उसमें सहृदयता कूट कूटकर भरी है। उसमें मिथ्या गव नाम को भी नहीं है और उसमें शिशु सुलभ मरलता प्रचुर मात्रा में है। उसने मुझे पूरी इमान दारी के साथ यह बताया कि जब उसने भूतपूर्व राजा (एडवर्ड अष्टम) का पक्ष लिया था तो उसे यह पता नहीं था कि लोकमत राजा के विरुद्ध है। मैंने उसके साथ इंग्लैंड के राजतंत्र की भी चर्चा की और उसने मुझे यह बताया कि वह वर्तमान कबिनेट का सदस्य क्या नहीं है। मरी धारणा है कि इंग्लैंड का शासन करनेवाले आधा दर्जन व्यक्तियों में एक वह भी है। आपसी बातचीत में उसने जिस स्पष्ट वादिता का परिचय दिया उसका मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उसने मुझमें साफ-साफ कह दिया कि उससे भारत के पक्ष में लखनी उठाने की अपेक्षा करना व्यर्थ है। राजनीति क्या चीज है इसका स्मरण मुझे उसके साथ बातचीत करते ही हो गया।

तुम्हारे तिल्लीवाते पत्र में मुझे कोई खास बात मालूम नहीं हुई पर शायद तुम मतक रहना चाहत थे। तुमने कहा है कि तुमने मेरे पत्र की नकल देवदास के पास दे रखी थी। वास्तव में मैं तुम्हें जितने पत्र भेजता हूँ उनकी नकल देवदास के पास जरूर भेज देता हूँ। अपने पत्रों की एक नकल राजाजी के पास भेजता हूँ और एक नकल अपने भाई रामेश्वरजी के पास। रामेश्वरजी इन्हे सरदार पटेल का दिग्ग दते हैं।

मुझे पहली बार तुम्हारे पत्र से ही मालूम हुआ कि सीमा प्रात के मन्त्रिमंडल ने इम्नीफा दे दिया है तो अब सात प्रातों में हमारे ही मन्त्रिमंडल होंगे।

वापू के स्वास्थ्य के बारे में तुम्हें तार देने का कारण यह था कि मैंने तुम्हारे पत्र के जलावा अखबार में पढ़ा था कि जय वह दिल्ली स्टेशन पर उतरे तो बड़ थके हुए दिखाई दिये। आशा है जब उनकी थकान दूर हो गई होगी। मैं वापू को इस बारे में कुछ नहीं लिख रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि अपने स्वास्थ्य की देखभाल वह खुद जितनी कर सकते हैं दूसरा कोई नहीं कर सकता। वमर इतनी

ही है कि कभी कभी वह बूते स अधिक काम करने लगते हैं। इस विषय पर जब लोटूंगा तो वापू से बात करूंगा।

मैं तुम्हारे इस कथन से सोलह आने सहमत हू कि सरदार पटेल और राजेन्द्र बाबू ने बाहर रहकर भारी भूल की। सम्भव है एक वष के अबाध काय के बाद इस भूल का परिमाज हो जाए।

मैं मधुमक्षिका पालन और कबिनेट सरकार पर पुस्तकें साथ लेता आऊंगा। तुमने अपन पत्र के साथ मधुमक्षिका पालन के विषय पर पुस्तका की सूची भेजने की बात कही ह, पर वह सूची मुझे नहीं मिली। पर इस विषय पर बहुत सी अच्छी-अच्छी पुस्तकें ढूढ निकालने की कोशिश करूंगा।

सप्रेम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

२८

गवर्नर का शिधिर,
उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत,
एवटावाद
१७ अगस्त १९३७

प्रिय मिस्टर गांधी,

मुझे महामहिम वाइसराय का एक पत्र मिला है जिसमें उन्होंने आपके सा-ज हूँ अपनी ४ अगस्त की बातचीत का सारांश दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने आपसे कहा था कि यदि आप उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत में जाना चाहे, तो ऐसा करने में कोई कठिनाई नहीं है। मैं इस विषय पर अपने मतिया स विचार-विनिमय किया ह और उनका मतलब व आधार पर आपका सूचना दे रहा हू कि इस प्रांत में आने के लिए आप पर कोई रोक नहीं है। वाइसराय ने आपसे यह अनुरोध करना आवश्यक समझा कि आप अपने सीमा प्रांत के प्रवास में कबीला के मामल का हाथ नहीं लगायेंगे, और मुझे यह भी पता हुआ है कि आपने उनके

अनुरोध की रक्षा करने का वचन दिया है। मैं जानता हूँ कि आप अपने इस आपवासन का जशरणा पालन करेंगे।

यदि मिलने का अवसर मिला, तो आपका साथ अपने पुराने परिचय का, जब मैं लाडल हैलिफवम के साथ था, ताजा करके मर्ये प्रमनता होगी।

आपने बाइसराय स प्यान अब्दुल गफार या के विषय म भी यात्र की थी। इस विषय म दा एव दिन म निणय ल लिया जायेगा।

भवदीय

जी० वनिधम

मिस्टर मो० व० गाधी

सेगाव वर्धा

२६

मगनवाडी,

वर्धा मध्य प्रांत

१८ अगस्त, १९३७

प्रिय धनश्यामदासजी

आपका ३० जुलाई और ६ अगस्त के ज्यूरिग स लिख पत्र मिल गये। रामेश्वर दासजी ने भी इस प्रस्तावित व्यापारिक समझौते का सत्रध म पत्र भजा था जिस मैंने बापू तक पहुँचाने म जरा भी दर नहीं की। मुझे उनका उत्तर भी मिल गया था जिस मैंने एन सदेशवाहक के हाथ रामेश्वरदासजी के पास भेज दिया था, ताकि वे उस आपके पास भिजवा सकें। आपका बापू का उत्तर कसा लगेगा, सो तो मैं नहीं जानता पर बापू का जसा मानस ह उस ध्यान म रखते हुए उनसे थ य किसी प्रकार का उत्तर की अपक्षा नहीं की जा सकती थी। इस मामल स निपटन का आपका तौर तरीका बापू के तौर-तरीक स भिन्न है। आप चीज के अच्छे बुर होन का निणय उमक गुण दोष क आधार पर करत है पर जतिम निणय बाग्रस क हाथ म है क्यारि जनता जनानन की एवमात्र वही प्रतिनिधि सस्था है। आपके लिए भी यही रुख अपना निरापद रहेगा कि जब तक कांग्रेस की सहमति न हो जाय तब तक कोई भी समझौता जतिम समझौता न समझा जाये। बापू के उत्तर की एक प्रति इस पत्र के साथ नत्थी कर रहा हूँ। आपने यह तो लिखा नहं था कि

में पत्र जिस पत्र पर भजू इसलिए मैं लन्दन और ज्यूरिख दोनों जगह एक एक प्रतिलिपि भेज रहा हूँ।

आपका ३० जुलाई का पत्र मुझे बहुत अच्छा लगा। आपन लाड लोदियन से जो कुछ कहा ठीक ही था। पर जब तक हम इस शासन विधान को अमल में लाकर राष्ट्र निर्माण के काम में उसकी त्रुटियों को खुल्लमखुल्ला प्रमाणित न कर दें, तब तक हमारे लिए सत्कार से यह कहना कि इसका अंत करके इसके स्थान पर राष्ट्र द्वारा रचित एक नय शासन विधान को प्रतिष्ठित किया जाये, कस युक्तिसंगत होगा? आपने जिस प्रतिनिधि मंडल का सुझाव दिया है हमारे उद्देश्य की सफलता उसके द्वारा होगी जबवा कोई अन्य साधन अपनाने से होगी सो मैं नहीं जानता। अधिकतर कांग्रेसी प्रतिनिधि मंडलवाने विचार के विपक्ष में जायेंगे ऐसी मुझे आशंका है। पर आग चलकर क्या उचित होगा इस बारे में अभी से परेधान होने की क्या जरूरत है?

‘यत्किंगत सम्पर्कों’ के प्रति बापू का क्या खूब है सो मैं आपको अपने एक निजी पत्र में बता ही चुका हूँ। वह निजी तौर से भी अन्य किसी को भारत आन का निमंत्रण देने के विचार मात्र के खिलाफ हैं।

यह खुशी की बात है कि आपने लाड लोदियन को बता दिया कि एक उदार दलीय नता की हैसियत से उनके लिए हमारे अपने ढंग की सीधी कारवाई की समझ पाना सम्भव नहीं है, पर अंत में तो उसे अमल में लाने से ही उसकी प्रभावत्पादकता प्रमाणित हो सकती है, दलाला के द्वारा नहीं। यदि बापू हमारे मध्य कुछ दिन और बन रहे, तो हम दिखा देंगे कि अहिंसात्मक सीधी कारवाई कितनी कारगर है।

मन्त्रिमंडल ठीक ही चल रहे हैं। सरकारी अमला काफी सहयोग दे रहा है। मुझे तो ऐसा लगता है कि अधिकारियों को लन्दन से आदेश मिला है कि ठीक ढंग से रहो और यह मानना पड़ेगा कि य लाग हमसे अनेक लोगों की अपेक्षा अधिक अनुशासन का परिचय दे रहे हैं। जरा सोचिए तो कहा जहमदावाद के कमिश्नर गरेट ने १९३० में मोरारजी देसाइ का यह धमकी दी थी कि यदि उन्होंने इस्तीफा दिया तो उन पर धरो बीतेगो, और कहा जब वह मंत्री मोरारजी देसाई की अग वानी करन स्टेशन पर मौजूद था। वह तो कुछ दूर तक उनक साथ तीसरे दर्जे के डिब्बे में भी गया। वारंटोनी और खेडा की नीलाम पर चली जमीनी को लेकर जो विवाद उठ खड़ा हुआ था आपको मालूम ही है। अब गरेट कहता है कि जमीनें पुरान स्वत्वाधिकारियों को वापस लौटाने में कोई कठिनाई नहीं होगी। एक पुनितम दारोगा ज्यान्टिया के लिए बदनाम था। मंत्री की हैसियत में मोरारजी के

बारडोली जाने के अवसर पर उसने खुद पर गोली चलाकर आत्महत्या कर ली। यह सब तो मैं प्रसंगवश लिख गया। राजाजी का अधिकारिया से पूरा सहयोग मिल रहा है। उड़ीसा म कुछ कठिनाइया है, पर उनका भी शीघ्र ही निवारण हो जायेगा।

हम सचमुच की जिन कठिनाइया का सामना करना है वे तो वास्तव में हमने ही पदा की हैं। हम एक समुक्त परिवार जमा आचरण विलुप्त नहीं कर रहे हैं। ऐसे भी दोस्त हैं जो नयी परिस्थितिया से लाभ उठा रहे हैं। जगह जगह हड़तालें कराकर स्थिति से निपटन में मंत्रिया की अयोग्यता साबित करने में ही उन्हें सुख मिलता है। राजाजी ने अपन प्राप्त में सभी राजवदिया का रिहा कर दिया—अहिंसावादी, हिंसावादी आदि सबका। अंतिम मोपला बंदी का भी उसी दिन रिहा किया था। यूसुफ मेहरअली को राजाजी के पद ग्रहण करने से पहले ही छह मास का कारावास दण्ड मिला था। उ होने जिस दिन पद ग्रहण किया, उसी दिन उसे रिहा कर दिया था। मैं आपको लिख ही चुका हूँ कि इस मामले को लेकर कुछ अडचनें पदा हा गई थी क्योंकि तबीजा तो अच्छा नहीं निकला। अपनी रिहाई के ४८ घंटे के भीतर इस भले आदमी ने अगर उगलनेवाली स्पीचें बाड़ी। उसने खुल्लमखुल्ला लोगो को हिंसा के लिए उबसाया। बेचारे राजाजी किबत्त बहिमूल रह गए। बम्बई में ऐसे आधा दर्जन आदमी अभी भी जेना में हैं। उनकी रिहाई के प्रश्न पर कठिनाइया उठ खड़ी हुई है। मंत्रियो ने उनकी रिहाई की हठ पत्नी पर सब ध्यध। क्या वे इसी बात पर सरकार भग कर दें? यदि अहिंसा के बार में हम लोगो में मतकय हाता, तो स्थिति से निपटा जा सकता था। पर अहिंसा की परिभाषा का लेकर जवाहरलाल जोर बापू के दृष्टिकाणा में आकाश पाताल का अंतर है। मैं जिन समस्याओं की जोर इंगित किया है उन्हें लेकर वायकारिणी की अंतिम दृष्टक में काफी समझती रही पर अंत में सब कुछ ठीक हो गया।

पता नहीं हरिजन आपके पास पहुंच रहा है या नहीं। वस मैं सवाधिक महत्त्व के लिये आपसे पास अलग से भेजता ही रहा हूँ। इस पत्र के साथ भी बसा ही एक लख नत्थी कर रहा हूँ। यह आगामी अक में निकलगा। बापू का जाग्रह है कि आगामी तीन वर्षों में मादक द्रव्य निषेध पूर्णतया सफल हो जाय और इस मामले में उहांन वायकारिणा का सहयोग प्राप्त कर लिया है। बापू कहते हैं 'शिक्षा सबधी गुत्थी कस सुलझाई जाय इस सबध में हम परशान होने की जरूरत नहीं है। यदि हम शिक्षा की बंदी पर मादन द्रव्य निषेध की बलि दते रहने में बचें तो शिक्षा अपनी देखभाल खुद कर लेगी।' हम लोग बिना समय में से गुजर रहे हैं। इस महान काय के लिए जितने साधना की आवश्यकता है

उनका हमारे पास अभाव है। पर भगवान उनकी रक्षा करता है, जो अपने आप का उसके हवाले कर देता है। वस, बापू की यही श्रद्धा है।

और भी कठिनाइयाँ हैं। मुझे लगता है कि अंत में विपदा लगभग पूर्णतः समाप्त हो जायेगी। जवाहरलाल को लेकर जो कठिनाइयाँ पदा हो जाती हैं, उनसे भी पार पाया जा सकता है। वह उबल पड़ते हैं बरस पड़ते हैं गुस्सा हो जाते हैं, पर फिर भी उनमें खिलाड़ी की भावना है। इसलिए जल्दी ही अपने ऊपर काबू पा जाते हैं, धमाका माग लेते हैं और जब तक उन्हें यह यकीन नहीं हो जाता कि अब कोई बड़बोटाट बाबा नहीं रही है तब से नहीं बचते हैं।

पल लम्बा होता जा रहा है और काम की बात अभी तक नहीं लिख पाया। आपको याद होगा कि गत परवरी मास में आपने माल डोनेवाले जहाज में दो महिलाओं की निःशुल्क समुद्र यात्रा का प्रबन्ध किया था। ये महिलाएँ यहाँ भारत में हमारे काम में लगी हुई हैं। जब उन्होंने लंदन में आपके एजेंट से यह जानने के लिए संपर्क स्थापित किया है कि क्या आपके जहाज में भारत वापस जाना संभव होगा? एक तीसरी महिला है जो एक जर्मन मित्र की भावी पत्नी है और यहाँ हमारा काम कर रही है। मालूम होता है कि इस महिला को जर्मनी से निकाल लिया गया था क्योंकि वह शांति की उपासिका है। इस कम्पनीवाले अपने जहाज में उसे कौन स्थान देंगे? क्या इस कम्पनी के माल डोनेवाले जहाज के अलावा अन्य किसी मालवाहक जहाज में इन तीनों महिलाओं की निःशुल्क समुद्र यात्रा का बन्दोबस्त हो सकता है? ये इंग्लैंड के किसी बन्दरगाह से अथवा किसी इटालियन बन्दरगाह से जहाज में सवार हो सकती हैं।

अपने स्वास्थ्य के विषय में आप खामोश हैं। आपने आपरेशन करा डाला या अपना अवकाश ज्यूरिख में या ही बिता रहे हैं? बापू यह जानने के लिए उत्सुक हैं। मैंने श्री रामश्वरदासजी का भी चिट्ठी लिखी है कि हो सकता है आपने अपने स्वास्थ्य का व्योरा उन्हें भी भेजा हो। आशा है, आपको बापू के बारे में मरा तार मिल गया होगा। उनके रक्तचाप में विशेष वृद्धि नहीं हुई है पर कामभार का प्रभाव पड़ रहा है और वह थकान महसूस कर रहे हैं। उन्होंने यह देखा लिया था कि सावधानी से काम नहीं लिया गया, ता खतरा पैदा हो सकता है। अंततः तुरंत ही उन्होंने अपने दैनिक कार्यक्रम में काफी काट छाट कर डाली और जब पहले में अधिक विधाम ले रहे हैं। सध्या की प्रार्थना के बाद वह नियमित रूप से मौन धारण कर लेते हैं। इससे उन्हें अगले दिन के प्रातः चार बजे तक पूरा आराम

मिल जाता है। यकीन मानिय, चिंता की कोई बात नहीं है।

सप्रेम,
महादेव

३०

सेगाव

१८ ८ ३७

भाई धनश्यामदास

आपका पत्र मिला। मैं ध्यान से पढ़ गया हूँ। मुझे प्रतीत होता है कि इस बार म कांग्रेस की तरफ से या मेरी तरफ से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है अर्थात् मरी पसंदगी अथवा नापसंदगी पर आप लोगो को कोई कदम नहीं उठाना चाहिये, क्योंकि आप लोगो की दृष्टि एक है मेरी दूसरी है। ऐसा कोई भी जायिक समझौता को मैं राज्य प्रकरण से भिन्न नहीं समझ सकता हूँ। जस मैंने राउड टेबल का फ़ॉस व समय लेंकशीयर में किया था। आप लोग पकट कमेटी में हैं, इसका अर्थ यह है कि राज्य प्रकरण का प्रश्न उठाने का आप लोगो को कुछ भी अधिकार नहीं रहा है, इसलिये आप इस चीज को प्रयत्न समझकर गुण-दोष पर ही विचार करें। उस बार में जो आपका पयाल होगा वही शामद मेरा होगा। इसी तरह से करने का आप लोगो का धरम भी हो जाता है। यदि हो सकता है तो आप इतना आपके अभिप्राय में कहे कि जगरवे गुण दोष पर आपका अभिप्राय अमुक होते हुए भी उसकी ज्यादाही कीमत न मानी जाय क्योंकि लोकप्रिय सत्त्या कांग्रेस ही है इसलिये जो-कुछ भी समझौता किया जाय उस पर कांग्रेस की मोहर होनी ही चाहिये और वही समझौता कायम माना जाय। इसमें आप लोगो की प्रामाणिकता और याय बुद्धि होगी।

यह पत्र प्रातः काल की प्राथना के बाद लिखवा रहा हूँ। ज़रूरिक म फायदा हुआ होगा।

वापू के जाशीवाँद

प्रिय घनश्यामदासजी,

मुख्य समाचार इस पत्र में भेज रहा हूँ। शिमला में गतिरोध का अंत होने के बाद कोई नयी बात नहीं हुई। केवल इतना ही हुआ कि अब बापू का वाइसराय को पत्र लिखने में कोई दुविधा नहीं है। उन्होंने वाइसराय को एक पत्र लिखा भी है जिसमें उड़ीसा में बाढ़ की भयंकर क्षति के निवारणार्थ एक होशियार इंजीनियर भेजने का आग्रह किया है। खान साहब इस आशा में कि सीमा प्रांत में प्रवेश पर उन पर से प्रतिबंध शीघ्र उठा लिया जायेगा सिंध और पंजाब के दौर के लिए चल पड़े हैं। मुझे कुछ न कुछ होने की आशा है क्योंकि वाइसराय जबान के पक्के हैं। अण्डमान में कानिया की भूख हड़ताल की बाबत मोहनलाल सक्सेना के पत्र का उन्होंने जो उत्तर दिया है बढ़िया है। उन्होंने जो दलीलें पेश की हैं, उनकी विवेक बुद्धि की परिचायक है, लहजा मत्तीपूर्ण है और मैनू मिलान की भावना प्रकट करता है। काश, हमारे अतिवादी बापू की सलाह मानते। तब उनके लिए सरकार से निपटन में इतनी कठिनाईयाँ उपस्थित नहीं रहती। अभी तो ऐसा लगता है, मानो सरकारवाले शिष्टता-सौजन्य के मामले में हमसे बाजी मार ले गये हैं। हो सकता है यह शिष्टता-सौजन्य हमारे सागलपन के कार्यों करते ही मक्की से ब्राम्हणों का पूर्वाभास मात्र हो। पर हम पहले से ही किसी नतीजे पर क्या पहुँचें? हम तो उनसे सीखना चाहिए।

आपने सेगाव के 'लेथवट' का मजान उड़ाया है। उडा भी सकत है। बोलकर लिखवाये गये पत्र की टाइप की हुई नकल का नमूना देखिये। अब एक सुदक्ष बहन टाइप के काम में हाथ बटा रही है पर हिज्जे की गलतियाँ तो रहेंगी ही, और पत्र-व्यवहार में रद्दी किस्म के कागज का उपयोग हो रहा है। सारी समस्याएँ सक्स निपटा जाये? किसी दिन इन सारी चीजों का कायाकल्प करने में मेरी सहायता करिये। आपने एटलस का आडर नहीं दिया हो तो अब मत दीजिये। मेरे पास जसा कुछ है उसी से काम चल जायेगा। मुझे फिलहाल सदभ ग्रंथों की सज्ज जरूरत है। स्टेटसमन ईयर बुक की बात लिख ही चुका हूँ। और भी सदभ पुस्तकें मिलें ता ले लीजिये। आपके सक्नेटरी ने लिखा है कि रासायनिक प्रयोग में जानेवाले यन्त्रों के बक्स तथा मकानों का आडर सफ़िज को दे दिया गया है। मकानों तथा खिलौनों का बक्स है। मैंने ता बड्ड के औजारों के बक्स के लिए लिखा

था। आप उसे बर्दई के ओजारा के बस का भाडर देने को बह दीजिय। इस तरह
 प्रिय बच्चे को पिलीना का बकसा सध-मत म मिल जायगा।

सप्रेम,
 महादेव

वर्धा,
 १६ अगस्त, १९३७

३२

ज्यूरिख
 २० अगस्त १९३७

प्रिय महादेवभाई

मैंने अपने पिछले पत्रों में जो जो बातें उठाई थीं उनका तुमने उत्तर दे दिया है और अब मुझे व्यक्तिगत सपकों के बारे में बापू की अभिलाषा की भी जानकारी हो गई है, तो भविष्य में उसी के अनुसार चलूंगा।

तुम्हें मालूम ही है कि पिछले चार वर्षों में पारस्परिक सपक की उपादेयता का बार में बापू मुझे इतना बढ़ावा देते आये हैं कि अब यह मेरे लिए एक मानसिक रोग बनकर रह गया है। पर यदि यह मानसिक रोग है तो कम से कम मुझे इस का ज्ञान नहीं है। इसलिए इसके द्वारा कोई क्षति होनेवाली नहीं है। मैं इसकी उपादेयता का अब भी कायल हूँ। पर यदि बापू ने इतनी मजिल तय होने के बाद इस सिलसिले को खत्म करने का आदेश दिया है, तो इसका भी कोई बंध बरण रहा होगा। शायद बापू से जवाहरलालजी के रख की उपेक्षा करते नहाने बनी होगी, और ही सकता है कि उनके दृष्टिकोण में जो परिवर्तन दिखाई पड़ रहा है उसका एक कारण यह रहा हो कि वह स्वयं भी जवाहरलालजी के दृष्टिकोण से प्रभावित हो गये हों।

मैंने परसो अस्पताल छोड़ दिया था पर अभी हफ्ता दस दिन यात्रा करना लायक नहीं हो पाऊंगा।

सप्रेम
 धनश्यामदास

श्री महादेवभाइ देसाई,
 वर्धा

प्रिय मित्र,

आपके १७ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद। यह स्पष्ट है कि महामहिम वाइसराय ने सीमा प्रांत के बारे में जो बात कही, वह मैं ठीक से समझ नहीं पाया। मैंने यह समझा कि वे मुझे वाइसराय की अनुमति देने की बात सोच भी नहीं सकते। मैंने इसी को वाइसराय का निष्पक्ष समझकर स्वीकार कर लिया पर साथ ही यह भी कह दिया था कि जब मेरी नेकनीयती और सामर्थ्य के बारे में आपको समाधान हो जायेगा, तो शायद मुझे सीमा लाघने की अनुमति मिल जायेगी। पर उन सारी बातों का इस पत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं यह जानना चाहूंगा कि आपके पत्र में इस वाक्य से कि 'अपनी सीमा प्रांत की यात्रा के दौरान मैं कबीला से सम्बद्ध सारी बातों से कोई वास्ता नहीं रखूंगा' आपका क्या अभिप्राय है। मैं यह तो कह ही चुका कि सीमा प्रांत के मामले में दखल देने का मेरा कोई इरादा नहीं है। मेरा इरादा तो वही है जो लाड इविन (अर्थात् वर्तमान में लाड हैलिफैक्स) के कान में था, जब मैंने उनसे इस विषय की चर्चा करते हुए बताया था कि मैं सीमा प्रदेश के पठानों को उसके घर में देखना चाहता हूँ, खुदाई खिदमतगारों का सम्झना चाहता हूँ और खुद यह पता लगाना चाहता हूँ कि उनका अहिंसा व्रत का पालन करने के दावे में कितना सार है और पठानों के कल्याणार्थ जा-कुछ मुझमें हो सके करना चाहता हूँ क्योंकि खान अब्दुल गफ्फार खा की भी यही कामना है। उन्हें मरी यायतुद्धि पर और उनकी नकदिली और सच्चाई पर भरोसा है। पर मेरी यात्रा के दौरान वहाँ के लोगों का मुझसे सीमा-सम्बन्धी बातों की चर्चा करना अनिवाय होगा। यदि वे लोग मुझे कुछ बताने लगे और उस पर मरी सम्मति जानना चाहें तो क्या मैं उनकी बातों को सुनने से इंकार कर दूँ और यदि मैंने अपनी कोई राय कायम की तो क्या वह उन्हें बताने से पीछे हट जाऊँ ?

यदि मेरा सीमा प्रांत जाना सम्भव हुआ तो जब आप दिल्ली में थे उस समय की पुरानी जान पहचान को ताजा अवश्य करना चाहूंगा। आपसे भेंट किये बिना ही सीमा प्रांत से लौटूंगा तो मुझे दुःख होगा।

अब मैं ध्यान साहब के प्रश्न पर आपका ताजे पत्र की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

भवदीय,
मो० क० गांधी

पुनरुत्थ

मैंने अभी अभी पत्रा में पढ़ा कि प्रतिबन्ध उठा लिया गया है। मैं आभारी हूँ।

महामहिम गवर्नर

सीमा प्रात

३४

मगनवाड़ी,
वर्धा (मध्य प्रात)
२६ अगस्त १९३७

प्रिय धनश्यामदासजी

इस हफ्ते लिखने की कुछ विशेष नहा है। आपका आपरेशन की खबर रामेश्वरदासजी से मिल गयी थी। जब आपका सविस्तार पत्र भी आया है। आशा है आपने जा इतना कष्ट उठाया वह व्यर्थ नहीं जायेगा। मैं आपको बापू के स्वास्थ्य की सतोपजनक रिपोर्ट नहीं दे पा रहा हूँ। जब से एक महीना पहले रक्तचाप के चाट ने अच्छी सूचना दी थी पर मेरा सशय बना रहा क्योंकि मैं देख रहा था कि वह जल्दी ही थक जाते हैं और मामूली-सी बात पर जिसकी ओर वह साधारणतया ध्यान नहीं दत्त चिढ़ जाते हैं। इधर कायकारिणी की वठक में जो कुछ गुजरा वह सबथा सुखद हो रहा हो ऐसी बात नहीं थी। वह अपना भ तो चिढ़चिड़ापन दिखा देते हैं और कभी कभी कडवा भी बोल जाते हैं। पर कायकारिणी की वठक जैसे जवसरा पर ता वह बिलकुल दूसरे ढंग से पेश आते हैं। ऐसे अवसरा पर बहुधा ऐसी बातें हो जाती हैं जो उन्हें रुष्ट करने के लिए काफी हैं पर वह अपने आपका कावू में रखते हैं। यह अपने आपको कावू में रखने का प्रयत्न ही उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है। अपने लोगो में वह अपनी चिढ़चिड़ाहट को प्रकट करके राहत खोज पा जाते हैं। कई एक ऐसी अ म

न गुलजारीलाल नंदा का अपना सेनेटरी चुनकर बड़ी ज्वलमदो वा वाम किया। नन्दा यत्र तत्र सबत दिग्दर्श देत हैं। उन्होंने एक हडताल का बड़ी ही वायकुशलता के साथ खात्मा कर दिया। सब कुछ बात की बात म हो गया और जो हुआ उसमें दोनों पक्षों को तसल्ली हुई। पर उनकी दक्षता की भी सीमा ता है ही।

वस, बहुत लिख डाला। मैं इस चिट्ठी की नकल ज्यूरिख नहीं भेज रहा हूँ। हरिजन के आगामी अंक के लिए तयार किये गये एक लेख की नकल भेज रहा हूँ। पढ़ने से पता चलेगा कि बापू मादक द्रव्य निषेध को लेकर कितने कृतसक्त्प हैं और इमका जारदार आदालन उठाने के लिए किस प्रकार कम्भर कम रहे हैं।

आप वहा से क्या खाना हो रहे है ?

सप्रेम,
महादेव

३५

वर्धा

२७ ८ ३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

साथ का खत तो रात में लिखवाया था। बापू का स्वास्थ्य कुछ चिंता पदा करता है। आप भी उनको कुछ लिखें और आप जल्दी जावें। मधुमकयी पालन के वार में पुस्तकों की यान्ती तो भेजी थी शायद वही गुम हा गई होगी।

नारायण जो मरी देखरेख में पता है और जा जानता है कि आप उसके लिए जीजारा का पिटारा और दूसरी चीजें लानेवाले हैं मर पास आकर बिनाद म म्म शान गुनाता है

स्वयं मत्त श्वशुरा नगश मित्त घनश तनया गणेश ।

तथापि भिभात्नमन शभी यतीयसी केचनमीश्वरच्छा ॥

(यह दवा का देव है उग्र श्वशुर पहाडा का राजा है कुवेर से उसकी मित्रता है पुत्र गणेश है सति तब भा वह ता पयीर ही है क्याकि ईश्वर की दृष्टि ही बनवती है।)

मना आत्मी जोर दम बान पर देना है कि कुवेर में मित्रता है। उनके

म भी बिनो वत्ति है—यह जानता है कि औजारा का पिटारा आदि चीजें उसी के लिए आ रही हैं।

स्टेटसमन इयर बुक के बारे में लिखा ही चुका हू। यदि मिल जाय तो 'लीग आफ नेशनस की इयर बुक' भी कृपया लाइए। हिंदुस्तान टाइम्स' में सीमा प्रात के मन्त्रिमंडल के इस्तीफे की जो खबर थी वह जघक्चरी ही बाहर आ गई। लेकिन यह बात होकर रहेगी, क्योंकि खान साहब उसी जोर जगसर हैं।

सप्रेम,
महादेव

३६

वर्धा

३० = ३७

प्रिय घनश्यामदासजी

पिछले सप्ताह एक महती घटना घटित हुई। जण्डमान के अधिकारिया तथा वाइसराय और वापू के बीच तारों का जो जादान प्रदान हुआ उनकी नकल भेज रहा हू। सारा मामला स्वयं ही स्पष्ट हो जायगा। मार्को की बात यह है कि आतंकवादिया न भी उस ज्वेल यक्ति की बात मानने की तत्परता दिखाई, जो उनकी रिहाई सम्भव कर सकता है। जनशन स्थगित कर दिया गया है इसका अर्थ मैं यही लगाता हू कि व लोग वापू के प्रस्ताव पर विचार कर रहे हैं। यदि वे वापू के प्रस्ताव पर विचार करने का तत्पर नहीं होते तो जनशन स्थगित नहीं करते। यहाँ यह भी कह दू कि जिन तारों की नकल भजा जा रही है, उनमें 'जण्डमान' से जाया वह तार नहीं है जो बल वापू के पास जाया था और जिसमें यह कहा गया था कि कहीं वापू के से देश पर विचार कर रहे हैं और कुछ समय मागा गया था। (मैं उस तार की नकल भजने में असमर्थ हू क्योंकि मूल तार वापू के पास है) इसके बाद आज सुबह अंतिम तार जा पहुँचा।

जवाहरलाल और उनके सगी साथियों को यह विचार बिलकुल अच्छा नहीं लगा कि किसी प्रकार का वचन लिया जाए—सावजनिक वचन नहीं क्योंकि वापू यही कोई चीज नहीं चाहते—पर वापू जैसे किसी व्यक्ति द्वारा इस बात के

आश्वामन की जरूरत थी कि जातकवादियों ने शिवायतों रफा कराने के निमित्त हिंसा का माग छाड़ दिया है। यह जाहिर है कि जिन लोगों का इस मामले से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है उनकी राय भिन्न है।

यदि बापू के हस्तक्षेप के फलस्वरूप यह बंदी रिहा हुए तो अहिंसा की यह एक यशस्वी विजय होगी और स्वतंत्रता के माग पर एक कदम के चिह्न और अंकित होगा।

बापू विश्राम लेने के कारण अब पहले से कुछ अच्छे हैं, पर पूरा विश्राम का तो सवाल ही नहीं उठता। मंत्री लोग अपनी अपनी कठिनाइयाँ लेकर आते रहते हैं और उन्हें टाला भी नहीं जा सकता। कल मुशी (कन्हैयालाल मा० मुशी) बम्बई के साम्यवादियों की समस्या लाये और जब लौटे तो बापू का एक ऐसा फार्मूला लेकर लौटे, जिससे वह भी चकित हुए और सरकार तो चकित हागी ही।

हम भगवान से यही विनती करते रहना चाहिए कि प्रकाश कुछ अधिन वर्षों तक जगमगाता रहे।

सप्रेम

महादेव

पुनश्च

साय की सामग्री की और अधिक नकलें कराना समभव नहीं हुआ। अतएव यह सामग्री जगाया को भी दिखा दी जाए। मेरा डाक खच भी बचेगा। आत्मकथा इसी सप्ताह साधारण समुद्री डाक से भेज दी जायगी।

दाइसराय को भेजे गये तार की नकल

२७ अगस्त, १९३७

यदि अण्मान के बंदियों की भूख हड़ताल जारी है, तो क्या आप यह संदेश उनका पाम तार द्वारा पहुंचाने की कृपा करेंगे ? 'गुरुदेव टगार तथा पायवारिणी के साथ ही-माय मेरी भी अनशन समाप्त करने की सलाह है। राहत के लिए हमारा यथासम्भव प्रयत्न पर भरोसा रखिये। समूचे राष्ट्र के इस अनुरोध की रक्षा में आपकी भर्त्सना है। यदि मैं आश्वामन प्राप्त कर सकूँ कि जो लोग हिंसा का नाम आस्था रखते थे उनमें विचार परिवर्तन हुआ है और अब वे अहिंसा की उपादेयता में आस्था रखने लगे हैं तो इससे मेरे हाथ मजबूत होंगे। मैं यह अनुरोध समझता हूँ कि कुछ नेताओं का कहना है कि अखंडता के लिए

८० बापू की प्रेम प्रसादी

माग त्याग दिया है पर साथ ही इसके विपरीत मत भी व्यक्त किए गए हैं।' तार द्वारा उत्तर पान का आग्रह रहेगा।

—गाधी

अण्डमान से आये तार की नकल

पोटब्लेयर,

२६ अगस्त, १९३७

मा० क० गाधी

वर्धा

२२६/मी, मेरे २२५/सी अगस्त के तार के सदभ म। भारी बहुमत से गत रात अनशन समाप्त कर दिया गया। केवल सात लोग का अनशन जारी है।

—अण्डमान

३७

तार

शिमला

२ सितम्बर

श्री मा० क० गाधी

वर्धा

वाचत एफ ५ बंदी गह।

अण्डमान के जिन सात बन्दियों ने भूख हड़ताल जारी रखी है व आपक पाम यह सदश भज रहे हैं आतकवात् व वार म आपन तार व लिए धन्यवाद। हम धापणा वरत हैं कि इसस दश का अपवार ही हागा उपवार नहीं। हम आपक माध्यम स जेतधाना और नजरबंद शिबिरा म बंद राजननिक पीडिता स तथा मभी सस्याभा म जा आतकवाद क माध्यम से दम को स्वतंत्र करन म विश्वास रखते हैं अपील वरत हैं कि व यह माग त्याग दें। अनुराघ है कि राहत स आपका वग अभिप्राय है दम स्पष्ट वीजिय। प्रातीय स्वराज्य की प्राप्ति व बान राहत

का एकमात्र अर्थ यही हो सकता है कि सारे राजप्रदिया का नजरबदा को तथा राजनतिक अपराधा के लिए दण्डित कदिया को रिहा कर दिया जाय निर्वासिता पर से निवेधाना उठा ली जाये, और दमनकारी धाराजा का समाप्त कर दिया जायेगा। यदि हमें इस अवध में आपका आश्वासन मिले, तो हम भूख हड़ताल स्थगित कर सकते हैं।” इस संदेश में आपको जिस तार का हुवाला दिया गया है वह २७ अगस्तवाला तार है। तब तक आपका ३० अगस्तवाला तार उठ नहीं दिया गया था। ✓

—गह विभाग

३८

तार

बधा, ३ सितम्बर

गह विभाग

शिमला

आपका तार कल २॥ बज मध्याह्न चलकर आज प्रातः काल ७ बज के बाद यहाँ पहुँचा। धन्यवाद। कृपया उन सात बन्धियों को यह तार भेजिये, 'संदेश अत्यन्त सराहनीय है। वह संदेश हम सभी के एकसमान उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त भर प्रयत्न में बहुत सहायक होगा। आपने 'राहत' शब्द का जो अर्थ लगाया है उसमें व्यक्तिगत रूप से स्वीकार करता हूँ और बचन देता हूँ कि अपने बन्दी मित्रों के सहयोग से इसकी निश्चिन्ता के लिए प्रयत्नशील रहूँगा। जतएव आप अनशन त्याग दाजिये और इस आनन्ददायी बदम की सूचना दीजिये।”

—गांधी

तार

वर्धा ३० सितम्बर १९३७

अण्डमान

पोट नेयर

तार के लिए धन्यवाद। मात के अलावा मरने जनशन छोड दिया। क्या उन सात ने कारण बताया है? मैं आग्रह नहीं अतुरोध कर रहा हू कि नेश का राहत की माग करने का मौका दिया जाए। क्या वही नोग मेरे हिमा सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर नहीं दमे?

—गाधी

परिस

३१ अगस्त

पूज्य बापू

मविनय अभिवान्न। आपका पत्र मिला। पर इसस मुझे कां मदद नहीं मिली। परिस्थिति यह है—असेम्बली न ओटावा करार रह कर लिया और स थ ही यह आदेश भी दिया कि एक नया करार बने। इस जादेशम कांग्रेस भी शामिल है। उसी जादेश का रु स हम लोगो की परामशदायिनी पचायत बनी। अतिम निणय तो सरकार ही करगी। पर मैं यह मानता हू कि वह हमारी सनाह स बाहर नहीं जायगी। खर

अब जा कुछ परामश हम दे और सरकार उसपर जमल कर और बरतानिया को भी हमारा प्रस्ताव पसद जाय तो करार बन जाता है। पर वह करार स्वी कृति क लिए असेम्बली के मामले जायेगा। असेम्बली की मजूरी या नामजूरी पर करार माय या अमाय होगा। असेम्बली क मानी हैं पट्टी काग्रम दूमरी जिना

पार्टी। मैं यह बताने जाऊँ कि करार पर कांग्रेस की मोहर लगाने का शायद मैं जवेली ही ऐसा कह सकूँगा। इस पर आपत्ति करनेवाला की दलीला मैं भी तो कुछ दूँगा ही। कांग्रेस लोकप्रिय तो है पर हिन्दुआम ही, मुसलमाना मैं नहीं। हमारे मुसलमान साथी जाहम सहायता दते हैं वे ऐसा नहीं मानते कि कांग्रेस में हिन्दू मुसलमान दोनों का प्रतिबिम्ब है। इसलिए वायव्यवत् यह है कि हम सब सम्मति से यह कहें कि करार पर केवल असम्बन्धी की ही नहीं, पर लोकप्रिय प्रांतीय सरकारों की भी छाप है। इसमें कांग्रेस और मुसलमान दोनों जा जाते हैं और मरा भरसा है कि इस पर केन्द्रीय सरकार जमल भी कर सकती है, पर इसमें भी मरी गुत्थी नहीं सुलभती।

प्रांतीय कांग्रेस सरकारों और असेम्बली का कांग्रेसी दल हमारी राय के बाद अपनी सम्मति दे इसके बजाय क्या उसके नेता यह नहीं बता सकते कि हमारी राय अच्छी है या बुरी? हमने कोई परामर्श दे दिया और वह कांग्रेस को पसन्द नहीं आया, तब तो हमारी फजीहत ही होगी न?

आपने लकाशायर के प्रति जो खूब दशाया वह तो एक निराली बात है। वहाँ लकाशायर को विशेष अधिकार देने का प्रश्न है, और यहाँ तो गुण दोष की भित्ति पर करार करने की बात है। कांग्रेस भी इस सिद्धांत को मानती है कि ऐसा करार, जो आर्थिक दृष्टि से भारत के हित में हो, कर लिया जाय। जब उसी के आदेश से जब करार बनने का प्रयत्न हो रहा है तो हम लोग राय देने के पहले पूछना चाहते हैं कि हमारी अमुक राय आपको पसन्द है या नापसन्द। कांग्रेस बाद में तो राय देगी ही। पहले देता हम अपयश के बन्धन से मुक्त हो जाय। वस इतनी कहानी है। इस पर आपकी राय बदले तो रामेश्वरदास को निख दें। वह टेलिफोन से मुझे बता देगा और यदि पहली राय ही कायम है तो सीधा मुझे ही निख दें। उस हालत में सारी स्थिति अव्यवस्थित रहेगी यह तो जाहिर ही है। पर बुद्धि जसा बहूँ बता करण। आपने भी एक वाक्य आश्वासन का लिखा है कि 'जो आप साया का ख्याल बनगा, वही शायद भरा बनगा।' पर इसका डरावना नहीं मिलती। यह तो आप जानते ही हैं कि सुन्दररायन भी हममें से एक पक्ष है, जो इस समय मद्रास में शायद अध्यक्ष हैं। इस दृष्टि से कांग्रेस करार के सिद्धांत के बाहर नहीं है। जाहम, मुझे भगवान जसी बुद्धि देगा वस करण। पर हाँ गये तो मुझे सहायता देने की वाशिष्ठा करें।

मरना के छेदन भवन से क्या नाम होगा सा तो पीछे पता लगगा। पर आपकी दया मैं शारारिक और मानसिक दाना तरह मैं स्वस्थ हूँ और भविष्य के लिए उत्साहित हूँ यह तो मितन पर बात राजग। आशीष् भोजन रहे।

आपन विग्राम की काई योजना की हागी ।

विनीत

धनश्यामराम

पुनश्च

कल लदन जाने का विचार है ।

४१

ग्रासवेनर हाउस,

पाक लेन, लदन डब्ल्यू० १

४ सितम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई

आपके पत्र केवल रोचक ही नहीं होते मैं तो रेगिस्तान में फसे प्यास को पानी मिल गया हा ऐसा अनुभव कर रहा हू । मेर कहने पर भी देवदास न अभी 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के अक भेजना शुरू नहीं किया है । इस प्रकार मैं भारत से एक प्रकार से अलग थलग पड गया हू । भग लडका कुछ कटिंग भजता रहता है और मैं हरिजन से भी सम्पर्क बनाये हुए हू । पर इन सबसे मुझे बह जानने को नहीं मिलता जा तुम्हार पत्रा से मिलता है । मैं इस सामग्री का जतिशय रचि के साथ देखता हू और जब बापू कुछ लिख भेजत हैं तब तो मैं स्वग जसा आनन्द अनुभव करता हू । कभी कभी मैं तुम्हार पत्रा क उद्धरण लाड हैलिफक्स तथा जय मित्रा क पास भी भेज दता हू । पर इधर मैंने ऐसा करना बन्द कर लिया है क्याकि भारत मेरे लिए जतिशय रचि का विषय हो सकता है इन लागे के लिए नहीं । जबकि शघाई म कम जोर गाली बपा हो रही है फेवा ब्रिटिश जहाजा को टार पीडा मारकर डुबा रहा है ।

बापू न अण्डमान के बंदिया से भूख हडताल छुडवाकर कमाल का काम किया है । यहा मय उनकी भूरि भूरि प्रशसा कर रह हैं । मुझ इसम रचमात्र भी सदेह नहीं है कि जब यहा के और बहा के अधिकारिया ने बापू को इस विषय में सफलता पूर्वक आगे बन्त देखा होगा तो उहाने चिंतामुक्त हाकर राहत महसूस की होगी । ऐसा जगना है कि बापू की वाइमराय से मत्री उत्तरोत्तर घनिष्ठतर हाती जा रही

है। पर सबसे अधिक महत्त्व की बात तो यह है कि वह इस प्रकार हम सहायग का माग दिया रह है। उहान अनेक बार कहा है कि वह सहयोग के लिए लाला यित है तथा असहयोग भी सहयोग की दिशा म उठाया गया एक कदम है। अब अपन काय स वे यह प्रमाणित कर रहे हैं। मुझे इस बात का पक्का यकीन ह कि यदि हम शक्ति का सचय कर पाय तो सहयोग प्रदान करने म कोई जाखिम नही है। जवाहरलालजी यह नहा देख पाय यह खेद का विषय है। क्या वह बाल की खाल निकालने म विश्वास रखते हैं ?

✓लक्ष्मीनिवास मुझे जो कटिंग भेजता रहा है उन पर निगाह दौडान से पता लगता है कि अनियंत्रण की प्रवृत्ति जोर पकड रही है। बिहार म किसानाने विधान-सभा पर घावा बाल दिया जोर सारी सीटो पर जमकर बठ गये। मुख्य मंत्री के कहने का भी कोई असर नही हुआ। मुचे यह घटना बहुत अप्रिय लगी। तिस पर तुरा यह कि उनसे यह कहने के बजाय कि उहाने विधान सभा की सीटा पर आसन जमाकर और उह टाली करने से इकार करके पेजा काम किया है, मुख्य मंत्री उनसे चिकनी चुपडो बातें करते हैं। राघव द्रराव के खिलाफ हुए प्रदर्शन की बापू न ठीक ठीक आलोचना की है। मुझे आशका है कि यदि समय रहते कडी कारवाई न की गई, तो यह प्रवृत्ति और भी जोर पकडेगी। मैं तो मही आशा लगाये बठा हू कि कांग्रेस के अधिकारी इस खतरे का सामना करने की आवश्यकता की ओर से सचेत हैं, और इस दिशा म उचित कारवाई करने स नही चकेंगे। आम लोगो म कुछ एसी धारणा फल गया लगता है कि स्वतंत्रता और निरंकुशता एक दूसर क पर्यायवाची है।

रही उन महिलाओ की समुद्र यात्रा का बंदोबस्त करने की बात, सो इस दिशा म नयी कठिनाइया उठ खडी हुई हैं। हमारा प्रभाव केवल जमन जहाजा पर ही है क्याकि हमारा अधिकतर माल य जहाज डोत हैं और मुझे पता लगा है कि हिटलर अथवा उनकी सरकार न जहाजा के नाम यह आदेश जारी किया है कि नि शुल्क किसी को न लाओ न से जाओ। जतएव इन जहाज कम्पनिया न आना बानी शुर् कर दी है तथा लाचारी जाहिर की है। फिर भी उहाने किसी तरह तीन सवारियो को लेने की रजामदी दी थी। एक ता त्रिवद्रम के श्री जी० राम घट्टन के भाई श्री रघुवेद्रन् क लिए है शय दो बची हैं। इन दो का हम जसा चाह उपयोग कर सकत हैं। यह स्थिति है।

यह जानकर गृभी हुई कि बापू अधिक विश्राम ले रहे हैं। बहुत बडिया।

रही तुम्हारे दपनर की बात, सो मुझे तुम्हारे इस कथन पर आश्चय हुआ कि एक ग्नि दपनर के नाम म फेर-बदल करने म मेरी सहायता चाहेगे। क्या मैंने

कभी सहायता स मुह मोडा है ? यह बताओ कि तुमने मरी सहायता कब मागी ? मैं तुम्हारे दफ्तर की बात का लखर पिछन सात वर्षों म न जान कितनी बार लड झगड चुका हू । पर मेरा कहना सुनना सब व्यग सिद्ध हुआ । बापू को सारी चिट्ठियां खुद लिखनी पडती है—कभी दायें हाथ से कभी बायें हाथ स । रहे तुम्हारे टाइपिस्ट लोग, सा उन्हें जजायबघर क नमूने कहना ठीक हागा । मैंने बापू से दफ्तर की दक्षता की बात की थी और जब वह लदन म थे ता मरी इम बात से सहमत हुए कि एक स्टेनो रखना चाहिए । मैंने इमका प्रबध करने का जिम्मा लिया पर बापू न इस काम के लिए पोलक की बहन का बुला भेजा । जो नी हो, महादेवभाई, मैं तयार हू ।

मैंन अभी एटलस का आडर नही दिया है । रही हवाल की पुस्तका की बात, सो मैं स्टेटसमन इयर बुक के लिए आडर द रहा हू । और जा जो पुस्तकें चाहिए लिख भेजो, मैं आडर दे दूगा । तुम्हारे सुपुत्र क लिए बल्ड के जीजारा का वकमा भी भेज रहा हू ।

क्या यह कित्ताव तुम्हारी नजर स गुजरी है ? मैंन इस शब्द का नाम तो सुना है पर मैं इसकी बाबत कुछ नही जानता । इसने बापू क बार म जा कुछ लिखा है वह घोर अस्चिकर है ।

सप्रेम,
धनश्यामदास

श्री महादेवभाइ दसाई
वर्धा

४२

बापू का लेख

एव ग्रहण करने के बारे मे मेरा अभिप्राय
(४ सितम्बर, १९३७ क हरिजन म प्रकाशित)

श्री शंकरराव देव लिखत है

हरिजन के पिछले अंक म 'यह हिदायतनामा नही है शीषक टिप्पणी म जाप

कहते हैं मर लिए पद ग्रहण कांग्रेस की घोषणा और प्रस्तावा को ध्यान
 भा एक विशय महत्त्व रखता है। पद ग्रहण का मैं जा जथ लगाता हू या १५ १०
 मंत्रियों के सामने न रखू, तो भूल ही करूंगा। मैं आपके कथन का यही अभिप्राय
 ममशा है कि आप पद-ग्रहण को जनता की सेवा का साधन और रचनात्मक कार्यो
 क द्वारा जनता म कांग्रेस की जड मजबूत करन का साधन मानते हैं। पर मेर
 विचार म आपको पद ग्रहण के विषय म अपन अभिप्राय का अधिक खुलासा करना
 चाहिए।”

१९२० स कांग्रेस की विचारधारा स अनुप्राणित लाख लोगो ने ब्रिटिश आधि-
 पत्य का एक अभिशाप मान रखा है। इस आधिपत्य को कायम रखन म ब्रिटिश
 शास्त्रास्त्रा की तो महायता ली ही जाती है साथ ही व्यवस्थापिका सभाआ,
 उपाधि वितरण, अदासता शिक्षण सस्याआ, आर्थिक नीति जादि की भी सहायता
 ली जाती है। कांग्रेस इस नतीज पर पहुची है कि तोपो का डर मानना बंद कर
 रना चाहिए जोर सगठित हिंसा का जिसकी ब्रिटिश तोपें एक प्रतीक है जनता
 की सगठित अहिंसा स तथा व्यवस्थापिका सभाआ आदि का असहयोग से मुकाबला
 करना चाहिए। असहयाग की योजना का एक प्रभावोत्पादक अग उसकी रचनात्मक
 कायविधि के रूप मे व्यक्त हुआ। १९२० मे जो प्रोग्राम निश्चित हुआ जनता की
 मफनता का मापदण उसे कार्यान्वित करने का अनुपात रहा।

इस नीति म कभी कोई रद्दोबदल नहीं हुई है उसके विभिन्न अग भी ज्या
 क त्या मीजुद हैं। १९२० से कांग्रेस जो प्रस्ताव पास करती आ रही है उनसे इस
 नीति का छण्डन नहीं हुआ है उसट उसकी पूति हुई है। शत यही है कि उन
 प्रस्तावा के पीछे जा मनोवक्ति काम कर रही है वह १९२० की मनोवक्ति से
 भिन्न न हा।

१९२० की नीति की आधारशिला सगठित गण्ट्रव्यापी अहिंसा थी। ब्रिटिश
 शासन-व्यवस्था निर्जीव क्या दौरात्म्य की प्रतिमा था पर उसकी पण्टभूमि म
 काम करनेवाल नाग न तो निर्जीव थ न दुरात्मा। हमारी अहिंसा का यही आशय
 था कि जा लाग उस व्यवस्था को अमल म ला रहे हैं उनका कायाकल्प किया
 जाए। यह कायाकरप स्वच्छया भी हो सकता है इच्छा के विपरीत भी। यदि
 अपना इच्छा के विपरीत उहाने यह दखा कि उनकी तोपें और उनका वह सारा
 साज-सामान, जिन उन्हाने अपना आधिपत्य अक्षुण्ण रखन के लिए इक्ठ्ठा किया
 है हमारे उपयोग न करन के कारण निकम्मा साबित हा रहा है तो व या ता महा
 स ह्वसत लेन का बाध्य हो जायेंगे या फिर व हमारी शतों पर चलन का राजी
 हा जायेंगे। वे शतें क्या हैं?—व शतें यही थी कि व हमार साथ मत्री का व्यव

हार करेंगे, हमार ऊपर प्रभुत्व रखन की प्रवृत्ति का परित्याग कर देग। यदि कांग्रेसवादिया ने विधान सभाआम प्रवेश करने और पद ग्रहण करने में इस मनावृत्ति को अपनाए रखा है, और यदि ब्रिटिश शासक कांग्रेसी मन्त्रिमंडला का अस्तित्व अनिश्चित काल तक सहन करने को तत्पर है तो कांग्रेस वतमान शासन विधान की घडिजया उडाने की दिशा में काफी आगे बढ़न और पूर्ण स्वतंत्रता के ध्यय को मूल रूप देने में सफल होगी। मैं जिन शर्तों का ऊपर उल्लेख किया है यदि उनके पालन के फलस्वरूप कांग्रेस के मन्त्रिमंडल अनिश्चित काल तक बने रहें, तो इसका अर्थ यह होगा कि कांग्रेस उत्तरोत्तर बलवती होती जायेगी, और अंत में इतनी शक्ति प्राप्त कर चुकेगी कि वह अपनी इच्छा के अनुरूप ही शासन-कार्य सम्पन्न करने की स्थिति में पहुँच जायेगी। इस उद्देश्य की सफलता के लिए सबसे पहली आवश्यकता इस बात की है कि सारी जनता अहिंसा का स्वेच्छा से पालन करे। इसका अर्थ यह हुआ कि जनता में साम्प्रदायिक सौहार्द और सहयोग की भावना प्राप्त रहे अस्पृश्यता का मूलोच्छेदन हो मादक द्रव्यों के यसनी स्वेच्छा पूर्वक बैसे द्रव्यों के व्यवहार से बर्चें स्त्रियाँ को समाज में पुरुषों के बराबर का दर्जा मिले गावा में बसनेवाले लाखों-करोड़ों प्राणियाँ की दशा सुधरे प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था हो—वतमान में जसी नाम मात्र की है वसी नहीं बल्कि वास्तविक—हातिकर प्रमाणित होनेवाले अधविश्वासों का जनजागरण के द्वारा शन शन निवारण हो उच्चतर शिक्षा प्रणाली में इतनी कार्यापलट हो कि मध्यम वर्ग के इन्ने गिन लोगों का हित-साधन करने के बजाय लाखों करोड़ों दशवासियों का हित साधन करने लग, कानूनी ढाँचे में आमूल परिवर्तन हो जिससे 'याय महगा भी न रहे और विशुद्ध भी हो, हमार जलखाने दण्डगृह रहन के बजाय तथा कथित दण्डिता के मानसिक सुधार के शिविर बन जायें क्योंकि उहाने जो अपराध किया है वे क्षणिक मानसिक उन्माद के बशीभूत होकर किये हैं।

यह कोई लम्बी चौड़ी कार्य-योजना नहीं है जिसे मूल रूप देने में वर्षों की जरूरत होगी। हमारे इच्छा करने भर की दर है मैंने जो बातें सुझाई हैं उन्हें आज कार्यान्वित किया जा सकता है।

जिस समय मैंने पद ग्रहण सम्बन्धी परामर्श दिया था उस समय तक मैंने शासन विधान का अध्ययन नहीं किया था। इधर प्रोफसर के० टी० शाह द्वारा लिखित प्रांतीय स्वराज्य शीपक पुस्तक का अवलोकन करता रहा हूँ। लखन न शासन विधान पर पुरातन दृष्टिकोण से विश्लेषण किया है और उसकी कड़ी और प्रभावशाली शली में आलोचना की है। पर कांग्रेस न इन तीन महीना में जिस स्वायत्त्याग का परिचय दिया है उससे वातावरण में यथेष्ट परिवर्तन

आ है। मैंने जो कायत्रम सुझाया है उसकी पूर्ति में तो शासन विधान में कोई चीज बाधक दिखाई नहीं देती। विशेष अधिवारा तथा सरक्षण के प्रयोग का प्रश्न तो उसी दशा में उठेगा, जब देश में हिंसा फैलगी अथवा अल्पसङ्ख्यक जोर तथा नियत बहुसङ्ख्यको में सघप हागा क्योंकि वह भी हिंसा का ही एक रूप है।

मुझे शासन विधान की सभी धाराओं में राष्ट्र द्वारा स्वयं राज काज सभालन की क्षमता में घोर अविश्वास है और एकमात्र यही अभिलाषा दिखाई देती है कि किसी भी प्रकार त्रिनिश शासन को आचन आए। पर साथ ही मुझे यह भी दिखाई देता है कि जनता का त्रिटेन के पक्ष में करन की चष्टा की गई है, और यदि वसा अमम्भव प्रतीत हा, तो जनता की इच्छा के जाग लाचारी का आचरण करन की तत्परता की व्यवस्था भी रखी गयी है। कांग्रेस ने जनता में विचार परिवर्तन करन के उद्देश्य से पद ग्रहण किया है, और यदि कांग्रेस अहिंसा, असहयाग और आत्मशुद्धि की भावना से इसी प्रकार अनुप्राणित रही तो उसे अपने मिशन में अवश्य सफलता मिलगी।

४३

बापू का लेख

रिहा हुए कदियों से अपील
(हरिजन में प्रकाशित)

कांग्रेसी मतिमडल उन बंदियों को रिहा कर रहे है, जिन्होंने राजनतिक उद्देश्य सिद्ध करन के लिए हिंसापूर्ण काय किय थे और एस कार्यों के लिए उह दण्ड दिया गया था। मैं उहे बधाई देता हू। साथ ही मैं इन बंदियों को भी बधाइ देता हू। साधारणतया मैं यकितगत उद्देश्य सिद्धि के लिए किय गये हिंसा पूर्ण कृत्य और राजनतिक हिंसा में भद नहीं करता हू। जो लोग हिंसापूर्ण कार्यों के शिकार होते है उनके लिए दाना प्रकार की हिंसा एक ही जसी है हिंसा करन वाल किस भावना से प्रेरित होकर ऐसे काय करते हैं इसमें उह कोई सरोकार नहीं है। मैं ठहरा पक्का अहिंसावादी इसलिए ऐसी दण्ड प्रणाली की साथकता में मरी आस्था नहीं है चाहे वह दण्ड यकितगत हिंसा के लिए दिया गया हो अथवा सावजनिक हिन-भाघन के उद्देश्य से प्रेरित होकर की गई हिंसा के लिए दिया गया

हा। अतएव मत्रिया ने जिस सिद्धांत को सामन रखकर इन बन्धिया कं किया है मैं उसे अधिक व्यापक क्षेत्र में लागू हात देखना चाहूंगा, पर मैं ज कि मत्रिया के अहिंसा मन्व घी दण्टिकोण स भरी पराकाष्ठा की का मत नहीं बठना। इसलिए उ हाने हिंसापूण कार्यों के लिए दण्डित द्य को रिहा करने में जिस कारण का आश्रय लिया है उससे मैं सहमत न उहाने इन वी दया की रिहाइ इम अभिलाषा से प्ररित होकर की है कि वस से वे उन लोग के साथ ओ राजनतिक उद्देश्य मिद्धि म हिंसा की उपादे जास्था रखत हैं सम्पक स्थापित करने में समथ हागे। यह भावना अपने पर ठीक है और स्वाभाविक भी है। वे उह हिंसा के माग स हटाकर शक्ति सामथ्य का सदुपयोग कांग्रेस की अहिंसा की पणाली में करने क है। यदि मने कांग्रेस की कायविधि को ठीर समथा है तो मैं यह अवश्य कि काकारी काण्ड के बन्दिया की रिहाइ पर जिम बहद प्रर्यन का अ किया वह राजनतिर दण्टि से एक गत काम था। इन बन्धिया ने जो हि कृत्य किये वताते हैं चाहे उनका उद्देश्य अच्छा ही रहा हा क्या उम प्रव भाग लेनेवाले हजारा व्यक्तिना को उनके कृत्य पमद थे? यदि पस द कहना पडेगा कि उ होन कांग्रेस की कायप्रणाली को बिलकुल नहीं समथा। ही नहीं उहाने ऐसा करक अपने मत्रियो को परेजानी म डाल दिया ओ प्राता के लोग को अधिक से-अधिक स्वतंत्रता प्रदान करने की उनकी जो है उस अमल में लाना उनके लिए कठिन कर दिया। मत्रा लोग जब ऐसा कदम उठावें ता हम लोग को उसे शात सयत मानस क साथ ग्रहण चाहिए मानो वे कोई स्वाभाविक काम कर रह हा। काकोरी क बन्दी मू हैं, बुद्धिमान हैं क याम्य है और देशप्रेम की अटल भावना स आन प्राप्त है व अपनी रिहाइ का सदुपयोग मत्रिया को अपना पूरा सहयाग देकर अपने-सच्चे काग्रसवादी प्रमाणित करेंगे तथा स्वाथरहित सवा-काय स कांग्रेस का वनान में लगे रहेंग ता वसा करके वे इसी प्रकार अ य बंदिया की रिह रास्ता साफ करेंगे। उन्हें समझ रखना चाहिए कि मत्री लोग यह सब क केवल इसलिए सफल हो रहे है कि उहान अपने प्राता क गबनरा का अपनी कायक्षमता तथा बीच बीच में उत्पन हानेवाली स्थितिया स निपटने में सामथ्य का भरोसा दिया है जिससे पुलिस और सना स काम लेने की नी जाय। जिम दिन उनकी यह साख नष्ट हुई और उह भी कानून और व्यव सथाकथित यत्ना की महायता पर निभर करना पडा, तो उनकी प्रतिष्ठा का धक्का पहुंचेगा और उनका दबदबा करीब करीब बिलकुल समाप्त हा जा

ऊपर से लानी गई शक्ति का पुलिमा और राना की सहायता पर निर्भर करने के सिवा और कोई चारा नहीं है, पर जा शक्ति अपने ही भीतर से उभरी हो, उस इन साधना की कोई जरूरत नहीं है।

४४

मगनवाडी,

६ ६ ३७

प्रिय घनश्यामदासजी,

गत बृहस्पतिवार का आपका पत्र निघने का समय बिलकुल नहीं मिला। मैं सगाव गया था और आप जानते ही हैं इस मौमम में बहा जान और बहा से लौटने में चार घण्टे लग जाते हैं। इतना ही नहीं बापू ने बाइसराय जीर बगाल के मुख्य मंत्री को तार भेज कि अब जबकि ब'दिया ने असदिग्ध भाषा में हिंसा में आस्था न रखने की बात ब'वूली है उन्हें रिहा कर देना चाहिए। जो उत्तर मिले है नकारात्मक है (मैं तार की नकल भेजने में जममथ हू ब'याकि मून बापू के पास है)। बगाल के मुख्य मंत्री का उत्तर अशिष्टतापूर्ण है आपने स्थिति का जितना आशा पूर्ण समझा है हम बसा नहीं समझ रहे हैं। प्रात में जसी कुछ स्थिति है उसे दबते हुए ब'दिया को रिहा करने की बात सोचने में भी हम असमर्थ हैं। पर बाइसराय का पत्र ब'लिया रहा। पत्र में युक्तिसंगत दलील में काम लिया गया है। बाइसराय ने बापू के साधु उद्देश्य की दो तीन स्थान पर सराहना की है पर साथ ही यह आधारभूत प्रश्न उठाया है 'ब'दिया ने जातकवाद के तरीके का सशपथ त्याग देने की बात तो कही है, पर क्या उन्होंने हिंसा का परित्याग किया है? क्या वे भविष्य में किसी भी हिंसापूर्ण काय से कोई वास्ता नहीं रखेंगे?' इस बारे में बाइसराय ने अपना सशय व्यक्त किया है। आगे चलकर क्या होगा, कहना मुश्किल है। आप खुद ही देख पायेंगे कि स्थिति गभीर हो उठी है। बाइसराय की चिट्ठी की नकल जगली हवाई डाक से भेज दूंगा यानी अगले बृहस्पतिवार का।

आप बहा लोकमत तयार करने की भरमक चेष्टा करियेगा। बापू ने ब'दिया का उनकी रिहाई के निमित्त प्रयत्न करने का वचन दे रखा है यह आप जानते ही हैं। उन्होंने बाइसराय से भी कह रखा है कि उनका जीवन शांति-स्थापना के

निमित्त अर्पित है। अतएव व इस नकारावित का चुपचाप कस सहन कर सकत है ? अभी उनम इस विषय पर बात करने का मौका नहीं मिला है, क्याकि वह बहुत कमजोर है, थके हुए है, और शय्या पर लेटे है। यह नया मामला एक ताजी झड़त पैदा करेगा। बापू अहिंसा पर कितना जोर देते हैं और उन्होन उसकी क्या परिभाषा की है यह हरिजन के लिए लिखे गये एक सुन्दर लेख की साथ भेजी नकल म भली भांति स्पष्ट होगा। क्या जगाथा इस लेख की नकल म-चेस्टर गाजियन तथा जय पत्रा म निकलवा सकेंगी ? आप यह भी देखेंगे कि उ हान काकोरी के बदिया की आवभगत को धिक्कारा है। जवाहरलाल इसका जरूर बुरा मानेंगे पर मानें तो मानें। वह ता जडमान के बदिया के हिंसा माग त्यागने की घापणा क भी चिन्ताफ थे पर बदियो ने बसी घोपणा की। सुभाय और शरद न बापू की श्रुतपतापूण धयवाद के तार भेजे हैं। इस समस्या से निपटने म बापू ने जो तरीका अपनाया है उसकी सराहना की है।

सीमा प्रात के गवनर ने अपने पत्र मे जो कुछ कहा है उसस कोई निश्चित रूप प्रकट नहीं होता है। उसने बापू के दोरे पर कोई रोक तो नहीं लगाई है, पर साथ ही यह भरोसा जाहिर किया है कि बापू कबोलों क जिगों से न तो खुल्लम खुल्ला मिलेंगे और न ऐसी कोई स्पीच ही देंगे जिससे वहा की शांति भग हो। या रास्ता साफ जसा ही है।

पर इस समय सबसे अधिक महत्त्व का विषय बापू का स्वास्थ्य है। मैं चाहता हू कि आप जगाथा तथा जय मित्र एक तार भेजकर बापू से पूण विश्राम लेन और एक महीने के लिए वायु परिवतनाथ कही जयत्त जाने का अनुरोध करें। केवल इसीम उनका क्षाण हागा अय किसी चीज स नहीं। मैं जानता हू कि आप यह काम सुन्दर ढंग से कर सकेंगे।

यहा घरेलू झड़त भी हैं ही। छोटे लाल ने आत्महत्या कर ली है। मैंने उसके लिए ही मधुमक्खी पालन सबधी पुस्तकें मगवाई थी बडा कमठ कायकत्ता था। मगनलाल गांधी के बाद उसी का नम्बर था। हृद दर्जे का तपस्वी था और काम से कभा नहीं ऊयता था। रात दिन जब किसी काम को कहा जाय करने को कमर बसकर तैयार हो जाता था। उसे मियादी बुखार हो गया था। एक रात नस की निगाह बचाकर मगनवाडी के कुए म छलाग लगा दी। हरिजन-ब धु म बापू न इस विषय पर जो-कुछ लिखा है उसस उनकी मनो-यथा का अदाज लगाया जा सकता है। हरिजन-ब धु की प्रति भेजता हू। बस जाज इतना ही। मरा

स्टेनाग्राफर बीमार भी है, और उसके पास और काम भी पडा है। इसलिए आप पर हाथ में लिखे दस पत्र का पढ़न का भार डाल रहा हूँ।

सप्रेम
महादेव

पुनरुक्त

उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत के गर-बाग्रेसी मन्निमडल को धिक्कारा गया और १० खान माह्व को नया मन्निमडल बनाने को कहा गया है।

४५

वर्धा

७ ६ ३७

प्रिय धनश्यामलामजी,

आज जल्दी जल्दी एक पत्र लिखकर ही सतोष कर लूंगा क्याकि बापू ने सीमा प्रांत के गवनर को तथा वाइसराय का जा उत्तर भेजे हैं उनकी नकल नरथी करन क अतिरिक्त अन्य कोई सामग्री तैयार नहीं है। इन नकलो स आपका पता चनगा कि बापू कितने धय और सत्र स काम स रह है। उन्हाने बापू का जा-कुछ लिखा है उसकी नकल नहीं भेज सकूंगा क्याकि बापू का कहना है कि क इम लायक नहीं हैं। पर मैंने साराण तो भेज ही िया है।

अगली कठिनार्द बापू के स्नास्थ्य की है। जरा सा दिमागी काम करते ही बापू का तबीयत खराब हा जाती है। कुछ मिनट खान करन क बाद ही वह अपन हाथा स मिर दवान लग जात हैं और खवाकट की शिकायत करत है। बात-बात म उत्तेजित हा जात हैं और चिडचिडापन दिखान लगत है। पर स्वयं उनका यह कहना है कि चिन्ता की बाद बात नहीं। "मैं सीमा का उन्नपन करूंगा ता पागपार्द पकड लूंगा। पर प्रश्न यह है कि सीमा कहा है ?

आपका
महादेव

बापू का लेख

अव्यवहाय कदापि नहीं

सरदार जोसे दरसिंह एक महान समाज सुधारक हैं विद्वान है और राज नीतिज्ञ ता हैं ही। इसलिए वह जो कुछ लिखेंगे योग वाग उसे ध्यान से पढ़ेंगे। उन्होंने टाइम्स आफ इंडिया में पूण मादक द्रव्य निषेध पर एक लेख लिखा है। उनकी लेखनी का प्रसाद का आस्वादन करना भरा कत्त य था पर जब मैं लेख पढ़ चुका तो एक लम्बी सास ली। उनके जैसे समाज सुधारक ने हथियार डाल दिये और सा भी एस कारणों से जो दलील की कसौटी पर खर नहीं उतरते यह मरी ममझ में नहीं आता। उनका एकमात्र तर्क यही है कि अग्रध रूप से ताड़ी तमार की जान और पी जान लगेगी। इसलिए मात्रक द्रव्य निषेध लागू करने से बचना होगा। पञ्जाब में एक विकल्प मौजूद था पर किसी ने उसका उपयोग नहीं किया। इसलिए उनका कहना है कि मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि बलात् मादक द्रव्य निषेध लागू किया जायगा तो जसफल होगा। इसके साथ ही, प्रातों को उस जाय से बर्चित होना पड़ेगा जिसकी ग्राम पुनर्गठन के कार्य में जहुरत है। सरदार साहब ने मादक द्रव्य निषेध का जाय के साथ नत्थी करके अपने मुद्द को खुद ही गवा दिया और अपनी दलील का खुद ही खडन कर डाला। अपने लेख के चौथे पर में वे कहते हैं मैंने घासतौर से कह दिया था कि शराब छोरी का काबू में रखन के मामले में मैं करार से मिलनेवाली आमदनी की परवाह नहीं करूँगा। ईश्वर का लाय वाय शुध कि काग्रसी मन्त्रिमन्त्रों ने जावकारी कर में प्राप्त हानवाली आय का उपयोग न करके इस जायवास्त जजाल से छुटकारा पा लिया। छाटा सा छिद्र मिलते ही जावकारी कर से हानवाली अनतिक जाय के उपयोग का लाभ सवरण करना कठिन हो जाता है यथाकि शराबिया से उनकी जायत एक दिन में छुड़ा पाना कितना कठिन है यह सभी जानत हैं। मैं पुराने मन्त्रिय से इस वायवत बात की और उन्होंने मादक द्रव्य निषेध का अव्यवहाय कदापि नहीं माना। उनकी तो एकमात्र यही दलील थी कि उस साधन में जाय प्रचुर मात्रा में हाती है। उन्हें उस जाय की शिक्षा विभाग के लिए आवश्यकता थी। क्या शिक्षा के व्यय के लिए ऐसी अनतिक माधना में प्राप्त जाय उचित है ?

क्या ऐसी शि ॥ वाछनीय है ? क्या उसका अपना कोई मूल्य है ? भारत के स्वल्प और कॉलेज जिस ढंग की शिक्षा देते हैं उनमें लाभ उठानेवाले व्यक्तियों ने अपने पर हुए खर्च के बदले उतने मूल्य की सवाए समाज को लौटायी है ?

शारीर के रक्षा भी प्रलयकाल तक चलता रहेगा । पर क्या इमीलिए उस कानूनी मायना दनी चाहिए ? क्या बुद्धिहरण सम्पत्ति-हरण से किसी भी रूप में कम गंभीर अपराध है ? अवैध रूप से शराब बनाने का काम तो किसी-न किसी हद तक जारी है रहेगा । निषेधान्ता लागू होने पर अवैध रूप से तयार की गई शराब की मात्रा कितनी घटती-बढ़ती है, यह सरकार की काय दक्षता पर निर्भर करेगा । सरकार की काय-दक्षता और साथ ही शराब और अफीम के व्यसनियों के प्रति जागरूक जनता की सहानुभूति पर निर्भर करेगी । नतिक उत्थान के लिए भी उतनी ही कीमत चुकानी पड़ती है जितनी भौतिक अथवा शारीरिक उत्थान के लिए चुकानी पड़ती है । पर मेरा निवेदन तो यही है कि यह रचनात्मक प्रयत्न तो तब असफल रहेगा, जब तक शत प्रतिशत मादक द्रव्य निषेधान्ता लागू न कर दी जायगी । जय तक सरकार व्यसनी को अपने व्यसन की तृप्ति की अनुमति देती रहेगी और उस तृप्ति के साधन जुटाती रहेगी तब तक समाज-सुधारक अपने प्रयत्न में असफल रहेगा । जिप्सी स्मिथ बड़ा जोखस्वी उपदेशक था । उसकी वाणी में कुछ ऐसा जादू था कि जब वह बोलता या गाता था तो अनेक लोग उसके आगे क्षण भर में कि भविष्य में वह शराब का हाथ नहीं लगायेंगे । पर मैं दक्षिण अफ्रीका के अपने व्यक्तिगत अनुभव से कह सकता हूँ कि इन प्रकार के व्यसनियों में से अधिकांश तडक भड़कवाले शराबखानों में जाने से अपने-आपका राखने में असमर्थ हो जाते थे । ऐसे शराबखानों में जिस मांग से गुजरात शहर में या शहर के बाहर उनका मन सुभान के लिए मौजूद ही रहते । मादक द्रव्य निषेधान्ता राज्य लागू मात्र कर सकता है इतना ही नहीं इस प्रकार के सुधार के लिए यह निषेधान्ता अनिवार्य तथा आवश्यक है ।

स्थानिक विरक्त्य के बारे में जितना काम कहा जाय उतना ही ठीक होगा । क्या हम दुर्व्यसन के संपूर्ण निषेध के पिनाफे किन्हीं न जावाज उठाते हैं ? विरक्त्य का प्रश्न तो तभी उठ सकता है, जब समूची आजादी को मात्र द्रव्य के सख्तन का व्यसन है ।

ईश्वर ने चाहा तो यह मात्र द्रव्य निषेध सरासर कायम रहेगा । हम सत्ताय में कायम कितना भी अधिन या कम मागणन कर पाते हैं वह इतिहास में यह बात स्वयंभोरों में निश्चय जायेगी कि १९२० में काँग्रेस ने मात्र द्रव्य निषेध सम्बन्धी माग की थी, और प्रथम अवसर मिलते ही उमने अधिन की परवाह

बिधे बिना उस शपथ को कार्यान्वित किया था। मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि जय प्रात भी कांग्रेसी प्रातों का अनुकरण करेंगे। मैं सरदार जागदरसिंह से अनुरोध करूंगा कि मादक द्रव्य निषेध के खिलाफ कांग्रेस का चेतावनी देने के बजाय वे अपने प्रात में और अपनी धीरे सिख जाति में उसे कार्यान्वित करने में पूरी शक्ति शोक दें।

४७

ग्रासवेनर हाउस,

पाक लेन लदन, डब्ल्यू० १

८ सितम्बर, १९३७

प्रिय महाश्वेवभाई

तुमने अपने २७ तारीख के पत्र में बापू के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है उससे मुझे चिन्ता हो रही है। मैंने तुम्हें तार भेजा पर उसका उत्तर न पाने पर मेरी चिन्ता बढ़ गई। गनीमत्त यही है कि उनके स्वास्थ्य के बारे में समाचार पत्रों में कुछ नहीं निकल रहा है इससे मुझे लगता है कि अब वह पहले से अच्छे हाथों में हैं जो भी हो उनके विश्राम करने की बात अतिम रूप से तय हो जानी चाहिए। तुमने अपने अतिम पत्र में यह बताया है कि बापू इस जोर से सचेत हैं और अब अधिक विश्राम ले रहे हैं। जब एसी बात है तब तो उनके स्वास्थ्य में गिरावट नहीं आनी चाहिए।

तुमने अपने पत्र में लिखा था कि मुझे जल्दी ही लौटना चाहिए। मैंने तुम्हें तार भेजा है कि वस मैं ७ अक्टूबर को यहाँ से चलने का प्रवचन किया है पर यदि तुम चाहा कि मैं जोर भी जल्दी चूँ तो मुझे तार दा मैं सब-कुछ छोड़ छाड़कर भारत के लिए रवाना हो जाऊंगा।

मैं तुम्हारे पत्रों का तथा तुमने जो लख भेजा है उनका फिलहाल कोई उपयोग नहीं कर रहा हूँ क्योंकि यहाँ भूमध्य सागर तथा मुद्गर पूव की राजनतिक स्थिति का लेकर काफी वेचनी फली हुई है। सब कोई बेतरह कायब्यस्त दिखाई पड़त है और मुझे भी आशंका है कि स्थिति जोर भी गभीर होती जायगी। जब १९३५ में इटली ने जयीसीनिया पर आक्रमण किया तो ब्रिटेन बड़वा घूट पीकर रह गया था पर अब वह पहले की अपक्षा अधिक शक्तिशाली हो गया है और एक सान बाद

उसकी शक्ति में और भी वृद्धि होगी। भूमध्य सागर और सुदूर पूव में उस जिस प्रकार उत्तजित किया जा रहा है, उसके प्रति उसने पहले से अधिक कठोर रव्य अपनाया है। एक साल बाद वह इन उत्तेजनाओं को चुपचाप नहीं सहेगा क्योंकि तब तक वह और अधिक शक्तिशाली बन जायेगा। दूसरी ओर यह प्रतीत होता है कि जापान लडाईं मोल लन पर उतारू है और हिटलर अपने पुराने उपनिवेश वापस चाहता है। इधर टटली भी तलवार म्यान से बाहर कर रहा है। इन देशों ने ब्रिटेन की शक्ति सामर्थ्य ना ठीक ठीक कूता है। इम बारे में मुझे सन्नेह है। यदि इन्हें लगा कि एक साल बाद ब्रिटेन की शक्ति बहुत बढ़ जायेगी, तो शायद वे उससे जल्दी निपटना चाहेग एक साल तक रुकना पसन्द नहीं करेंगे। इस प्रकार तुम स्वयं ही देखते होगे कि स्थिति कटी विकट है। साथ ही वस्तुस्थिति यह भी है कि ब्रिटेन मैदान में जान को आतुर नहीं है। यदि युद्ध छिना भी तब भी शायद वह उसकी जेब में रखने की भरमब कोशिश करेगा। पर एक ओर फामिस्ट देशों और बोलशेविक रुस के बीच तथा दूसरी ओर जापान और ब्रिटेन के बीच सम्बन्ध बहुत तने टुए हैं।

सप्रम,

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

४८

मेगाव वर्धा

८ सितम्बर, १९२७

प्रिय मित्र

मने अनुभव भरे तार ने उत्तर में आपन जो स्पष्टवादिता दिखलाई थीर जिस प्रकार सम्पूर्ण रूप से विषय की चर्चा की उसके लिए मैं अनुग्रहीत हूँ। आपन जो रव्य अपनाया है उसका सबध में मुझ और अधिक कुछ नहीं बहना है, क्योंकि मैं स्थिति को समझ गया हूँ।

आपने अपने पत्र में बर्निया के अधूण उत्तर की चर्चा की है उस पर मेरा

भी ध्यान गया है पर आतङ्कवाद के तरीके के सबध में उन्होंने जो स्पष्ट और असंदिग्ध बात कही उससे मुझे सतोष हुआ है। अडमान के कदी देश भक्ता के जिस वग का प्रतिनिधित्व करते हैं उनके साथ स्थायी और सम्मानपूर्ण समझौते के निमित्त अपने प्रयत्नों में आपका सहयोग प्राप्त करने की मुझ जब भी आशा है।

भवदीय,
मो० क० गाधी

महामहिम दाइसराय

४६

सगाव बर्धा
८ सितम्बर, १९३७

प्रिय मित्र

आपके पत्र के लिए आभारी हूँ। आप मुझसे क्या अपेक्षा करते हैं मैं समझ गया। मुझे आशा है कि मैं आपको निराश नहीं करूँगा क्योंकि शामक-वग में इस समय मेरी जितनी साख है उसमें मैं वृद्धि करना चाहता हूँ जिससे अधिक अनुकूल शर्तों के साथ उस साख का उपयोग हो सकें।

इस समय डाक्टरों के परामर्श से मैं विश्राम लेने की चेष्टा कर रहा हूँ और मैं अपने मित्र खान साहब से कहा है कि मुझे अपने यहाँ बुलाने में वह जट्टवाजी न करें।

आपका
मो० क० गाधी

महामहिम गवनर

उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत

५०

प्रासवनर हाउस,
पाक लन, लदन, डब्ल्यू० १
१४ सितम्बर १९३७

प्रिय भूलाभाई

आज सुबह के समाचार पत्रों में पता कि दाना सदन के सम्मुख दिय गये वाइसराय के भाषण के अवसर पर कांग्रेसी दल तथा राष्ट्रवादी दल दोनों ही अनुपस्थित थे। भूतकाल में कांग्रेस के लिए यह एक अपना अौचित्यपूर्ण अवश्य था पर भूलाभाई अब जब कि गांधीजी और वाइसराय की मुलाकात हो चुकी है और वाइसराय जय नेताओं से भी मिल बैठ चुके हैं तथा वाइसराय और जवाहरलाल के बीच मुलाकात होनेवाली है क्या कांग्रेस का यह रवया समयाचित है ?

मेरी अपनी धारणा तो यह है कि हमारे इस रवये का केवल एक ही जय निकाला जा सकता है और वह यह कि समझौते की सम्भावना मौजूद होने पर भी हम एक दूसरे की दिशा में अपनी ओर से कोई कदम उठाने की राजी नहीं हैं। मैं जवाहरलाल का रवया तो समझ सकता हूँ क्योंकि वह किसी भी परिस्थिति में ट्रिस्टन के साथ कोई सरोकार नहीं रखना चाहत है पर मुझे पूरा यकीन है कि यह न तो आपका रवया है न बल्लभभाई का ही है। गांधीजी का तो यह रवया बंदापि नहीं है। इसलिए जब मैं पढा कि वाइसराय ने मंत्री का जो हाथ बटायी उसे कांग्रेसी दल ने पकड़ने से इंकार कर दिया तो मुझे कुछ निराशा-सी हुई। मैं नहीं समझता कि इस रास्ते से हम कुछ लाभ होनवाला है।

मैं इस बात का निणय नहीं कर पा रहा हूँ कि मेरा आपको यह लिखना कहा तक युक्तियुक्त है क्योंकि कांग्रेस में मेरी कोई स्थिति नहीं है पर एक मित्र के नाते तो आपका लिख ही सस्ता हूँ। इसलिए आप इसे अयथा न लें।

आपका,
धनश्यामदास बिठना

श्री भूलाभाई नेमाई

मगनवाडी

वर्धा (मध्य प्रात)

१६ मितम्बर १९३७

प्रिय धनश्यामदासजी

अडमान के कदिया के सबध भ ताजा पत्र व्यवहार नत्थी कर रहा हू। ये सात कदी परले सिरे के जिद्दी निकले। हो सकता है और ऐसा अवसर होता भी है कि उनकी उत्तजना का कोई कारण उपस्थित रहा हो। जा भी हो उन्हें समझाना बुझाना फिलहाल बापू के वूत के बाहर मिद्ध हुआ। मुझे ता ऐसा लगता है कि इन ७ कन्वियो का बलात खिलाया जा रहा है अथवा उनक लिए इतने दिना तक चलना जोर ममझोते की वान चलाना सम्भव नहीं होता। कितने दुर्भाग्य की बात है। बापू को उन २२६ कन्वियो स जा जाश्यासन का वचन मिया या उसका सहारा लेकर वह वाइसराय द्वारा उठाई गई बात का ध्यान म रखते हुए उनसे कुछ अधिक प्राप्त करन की जाशा कर रहे थे। बापू ने वाइसराय का जा पत्र लिखा है उसम आपने देखा हा होगा कि बापू वाइसराय की दलील के कायल हैं। पर क्या इन लोगो स अहिंसा का कौल-करार लन की हठ करना और उनस यह कहलाना कि उ होत हिंसा का माग त्याग दिया है औचित्यपूण है ? या समाजवादी पार्टी का ही क्या रख है ? कांग्रेसियो मे भा जो लाग विशुद्ध राजनतिक दष्टिकोण अपनाये हुए हैं उनका भी क्या हाल है ? उनके लिए अहिंसा काई धम नहीं है एक नीति मात्र है।

पर यह सब तक इन पत्र मे आपको लिखन स क्या लाभ है ? मैं जानता ह कि समथोतावादी दल के लोग भी अडमान को समाप्त करने की माग पर चुप्पी साध लेते हैं। आपको समय मिले तो उन लाग मे विशेषकर काल हीय स इस विषय पर बात करके उनक मन की बात जानने की कोशिश करिये। जब जातक वादियो ने आत्मवाद और हिंसा का परित्याग करने का वचन द दिया तो बापू द्वारा उनकी रिहाई की माग करने म जसाधारण लगनवाली क्या बात है ? इस समय सम्पूर्ण कांग्रेस की विशेषकर उन लोगो की जिह्नि रिहाई का माग की है मान मर्यादा का प्रश्न उठ खडा हुआ है। बापू का वचन है ही और वह यह वचन जितनी बार जरूरी हो दुहरा सकते हैं कि वह रिहा हुए कदिया के ठीक आचरण या या कम-से कम उनके साथ दिल खोलकर बात करने की स्वतंत्रता

का जिम्मा लेते हैं। इस दृष्टि से उनकी भारत-वापसी, जो लगता है शीघ्र ही आरंभ हो जायगी एक अच्छी बात होगी। अब बापू उनका साथ दिन खालकर नि सवाच बात करने की अनुमति चाहेगा।

मैंने आपके पास पिछले हफ्ते या एक पखवाड़े पहले हरिजन का वह लेख भजा था, जिसमें बापू ने काकोरी-कांड के बदियों के स्वागत की चर्चा उठाई थी। युक्त प्रांत के कुछ गम मिजागवाल सागो को वह लेख बहुत खला है पर मुझे यह सूचना दते प्रसन्नता हो रही है कि जवाहरलाल को वह बेहद पसंद आया। वस्तुतः उन्होंने यहाँ कुछ दिनों के लिए आकर बापू से खुद कहा कि उन्होंने न तो प्रस्थान में भाग लिया न बदियों के उपलक्ष में किया गया स्वागत-समारोह में ही वह शरीर हुआ। उन्होंने बताया कि समाचार पत्रों में छपी इस रिपोर्ट में तथ्य नहीं है कि यह स्वागत-समारोह स्वयं उनके निवास-स्थान पर हुआ था। उन्होंने कहा कि उन्होंने उनमें कुछ एक का कबल बातचीत के लिए बुलाया था वगैरे। उनका साथ कुछ बिगड़ेदिल लोग भी आ पहुँचे इसलिए इस वार्ता का स्वागत-समारोह का रूप दे दिया गया। उन्होंने यह भी कहा कि इस तथाकथित स्वागत-समारोह में वह स्वयं उपस्थित नहीं थे।

युक्त प्रांत का मजदूर-आंदोलन सबंधी स्थिति चिंता का कारण बनी हुई है। पंच फमल के लिए नियुक्त समिति का सभापतित्व करने के लिए गाँव दवलभ पंत ने राजेन्द्र बाबू को बुला भेजा है। मजदूरों की मांग है कि या तो शंकरलाल आच, या गुलजारीलाल नटा। पर ये दोनों हर जगह तो मौजूद रह नहीं सकते। गुलजारीलाल नटा खर के लिए बेहद उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

जापान ज्यादाती पर उतारू है। हजारों निर्दोष प्राणियों का जान स हाथ धोना पटा है। शघाई से जाये एक जमन यहूदी न बताया है कि उत्तर में तथा शघाई में जा युद्ध हो रहा है, वह अकारण ही छिड़ गया था। जापान धिनीने झूठ का सहारा ले रहा है। जापानी उसी किशनी में सवार हैं, जिसमें जमना और इटली हैं। अंतर केवल इतना ही है कि अधिकांश जापानी जननेताओं का या तो धार अधिकार में रखा जा रहा है या मुलम्मा चना झूठ उन्हें बतलाया जा रहा है। यदि रिपोर्टों की ओर ध्यान दिया जाय तो ऐसा लगता है कि वहाँ देश-घाषा त्राति के लक्षण प्रस्फुटित हो रहे हैं।

अब एक आह्लादकारी वस्तु भी दे दूँ। बापू का स्वास्थ्य ठीक हो रहा है। यूव आराम कर रहे हैं मुलाकात करने से यथासम्भव बचते हैं और इस तरह अपना रक्तचाप लगभग साधारण स्थिति में ले आये हैं। पर जापान उनका शारीरिक स्थिति से परिचित ही है पता नहीं कब तबीयत फिर खराब हो जाय।

कुछ ऐसी बातें या चीजें हुई हैं जिन्हें लेकर उनका रक्तचाप फिर बढ़ सकता है। अनेक बार मैंने उन्हें यह कहते सुना है कि जहां सीमा का उल्लंघन हुआ कि उन्हें चारपाई की शरण लेनी पड़ेगी।

आपने यह ठीक ही कहा है कि आपका संयद हुसैन का बापू के साथ किसी भी रूप में संपर्क असह्य है। मैंने अभी वह पुस्तक नहीं देखी है। मुझे तो ऐसा लगता है कि इस आदमी को पैसे का अभाव है और वह उस महादेश में अपने प्रशंसकों की आंखों में धूल झाड़ने की कोशिश कर रहा है। वहां तो कोई भी पाछण्डी चेल चाटे इकट्ठे कर सकता है जोर तिस पर भी यह आदमी अमेरिका में अहिंसावादी गांधी-आंदोलन का नेता और मिस्टर गांधी का व्यक्तिगत मित्र समझा जा रहा है। भगवान हम ऐसे मित्रों से बचायें।

सप्रेम,
महादेव

५२

ग्रासवैनर हाउस,
पाक लन

लन्दन डब्ल्यू० १

२२ सितम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई

आज सर फाइनडलेटर स्टीवान् स मिला था। भारत-सचिव से भी जल्दी ही मिलूंगा। लाड लोदियन यहां नहा हैं। लाड हैलिफकम हैं। बहुत जरूरी हुआ तो उन्हें कष्ट दूंगा। अन्तर्राष्ट्रीय राजनतिक स्थिति का लेकर वह आजकल बेतरह व्यस्त हैं।

नजरबाना के बारे में मरी धारणा है कि वाइसराय के नाम बापू के पत्र से बड़ी महत्त्वता मिलेगी। मैंने सर फाइनडलेटर का वाइसराय का लिख बापू के पत्र की नकल दिखाई। कनिंघम को लिखे पत्र की नकल भी दिखाई। इन लोगों ने बापू के मानस का समझा है और मुझे इस बारे में सदह नहीं है कि ये लोग उनका समुचित आदर करते हैं।

प्रिय घनश्यामदासजी

सर डेनियल हैमिल्टन न भी मादक द्रव्य निषेध सबधी 'स्काट्समन' की कटिंग भेजी है।

अगर रक्तचाप मशीन का यकीन किया जाय ता बापू का स्वास्थ्य अच्छा खासा मानना चाहिए क्योंकि रक्तचाप लगभग स्वाभाविक दिखाई पड़ता है। पर स्वयं बापू को इसका भरोसा नहीं है। आज सवेर कहने लग, रक्तचाप नीचे आ गया है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि मैं दवाइया ले रहा हू साथ ही मशीन तो मशीन ही है। अभी रक्तचाप नीचे आया लगता है वह फिर उपर जा सकता है क्योंकि दवाइया तो लगातार खाने से रहा। अभी ता मैं य दवाइया वबल यह देखने के लिए ले रहा हू कि इनका इस 'याधि' पर क्या प्रभाव पड़ता है, जिससे इस रोग से पीडित और लोगो को भी फायदा पहुच सक। जहा तक मरा सबध है मर लिए तो आराम ही सबसे अच्छी जापधि है।

उनके इस कथन का ध्यान म रखता हू तो आपका तथा अगाथा और हीथ का तार बहुत ही सामयिक लगता है। आपके तार ने कुछ काम किया अवश्य है, जागे भी करता रहेगा। इस दफा जो विशेष विचारणीय बात रही वह यह है कि जहा पहल रक्तचाप के ऊचे जाने पर बापू उसकी उपेक्षा करते थे, इस बार उन्हान उसकी उपेक्षा नहीं की और वह समथ गये हैं कि थोडे से समय क लिए राहत पाने से काम नहीं चलेगा। पर हम सबके लिए तो यह थोड-स समय की राहत भी चिन्तामुक्त हान के लिए काफी है।

हर जगह से जा समाचार आ रहे हैं सतोपप्रद है। उन सात जिद्दी बन्धिया न भी अनशन त्याग दिया है। उन्हाने यह दया इस शत के साथ दिखाई कि भारत वापसी क तुरत बाद यदि उहे राहत न दी गई तो वे फिर भूष हडतात शुरू कर देंगे। यह बात भारत सरकार न बापू क काना तक गुप्त रूप से पहुचा दी है। यदि बापू का उत्स मिलना हो जाय ता बहुत-कुछ काम सध जाय। पर मुझे इसमें कठिनाइया दिखाई पडती हैं। उधर सरकार कदिया की चुन चुनकर भारत भेज रही है। एमा क्यों ?

मैं ता यही जाशा लगाये घटा हू कि बापू कदिया से और अधिक पत्राचार

करेंगे और उन्हें रास्त पर ल आर्येंगे। भारत गगनार की तारीफ म इतना जम्र क्त्वा कि उसने बापू क हस्तशेप की ठीन रूप म ग्रहण किया और बापू न अत्मान को जा भी सदश भेजना चाहा उम वहा पहुचाने म तत्परता दिग्गई और अत्र भी निष्ठा रही है। (प्रसंगवश इतना और कहू कि जब भूलाभाई न वाइमराय म उनक निमंत्रण पर मुनावात की तो उन्हानि बापू क स्वास्थ्य क बार म पूछा और कहा कि महज शिष्टाचार क नाते नही पूछ रहा बल्कि इसलिए उनक स्वास्थ्य की चिंता है कि बापू सत्य की खोज म अपना मव-बुछ योछावर कर दन का सत्त्व तत्पर रहत हैं'।

वात्सराय क साथ भूलाभाई और सत्यमूर्ति की मुलाकातें स्पष्टाकिन और मित्रता के वातावरण म हुई। दाना का यही कहना है। वार्ता विभिन्न प्रसंगा पर हुई जस सध शासन-व्यवस्था प्राता का क्त्त्र म मिलनधानी जाथिन मन्थयना, प्रजानत्रीय शासन प्रणाली आदि। सत्यमूर्ति न वाइमराय के बापू म मिलन का जोरदार समथन किया और उह दमकी उपात्थता का विश्वास दिलाया।

साम्यवात्निया तथा हिंसावादिया का सक्क बरई म जा थमला उठ खडा हुआ था, उसका सतोपजनक ढग से निपटारा हा गया है। दम मामल म भी बापू का अचूक भागदशन काम आया। मुशी बापू क पास बडी परगानी की हातत म आय थ, वह यह तय नही कर पा रह थ कि क्या करें। बापू न उह एक सत्थाग्रही नुस्था निया जा अचूक साबित हुना। गागट तक न एलान कर दिया कि उसन हिंसा क माग का परित्याग कर निया है। उमन रिहाई क बाद बापू का जा पत्र निष्ठा उसम भी उमन यही कहा है और बापू न उमस यह वचन ल लिया है कि अहिंसा म उसकी आस्था अटूट रहगी। उसन यह भी कहा है कि वह अपन लिए किमी प्रजार के प्रदशन अथवा स्वागत-आयाजन को प्रात्साहन नही दगा। पूना म वह मुगी क यहा अतिथि क रूप म ठहरा और अब वृत्तनतापूवक घर लौटा है।

काकोरी-काण्ड के जिन बन्दिना की रिहाई हुई है, उनम से एक या दा अगन हस्ते बापू क पास आ रहे हैं, अपन भावी काय के बार म उनका मागदशन प्राप्त करन क लिए।

जवाहरलाल न अहमत्तावाद म गावजनित रूप स यह घोपणा की है कि इन बन्दिना क लिए काई प्रश्नन करन तथा उनका स्वागत-समाराह करने स काई फायदा नही है। उन्हानि यह सध नापमद किया है।

आप स्वय ही नेत्रेंगे कि सावजनिक जावन का उत्तप हा रहा है, जनता उत्तरोत्तर अधिकाधिक शक्तिशाली हाती जा रही है बारडाली और खडा के रिमादा का उनकी जमीनें वापस मिल रही हैं और स्थायी मूल्य की चीजें अस्तित्व

म आ रही हैं। यदि इन सबके साथ मादन द्रव्य निषेध भी लागू हो जाय तब बापू का जीवन सायक हा जायगा।

अब यह पत्र समाप्त करूंगा—कुछ ही मिनटों में धूलिया की गाड़ी पकडनी है। जिस काम का हाथ भ सेकर जा रहा हूँ वह कोई बहुत आह्लादकारी नहीं है।

कृपा करके पुरोहित से—आपके सक्टेरी का यही नाम है न—बह दीजिए कि मुझे उसका पत्र मिल गया। घ-यवाद ! जब उसे मधुमक्षिका पालन विषय पर पुस्तक का सग्रह करने की जरूरत नहीं है बयाकि वे पुस्तकें जिस व्यक्ति के काम आती उसने एक पखवाडे पहल आत्महत्या कर ली। मुझे जाशा है कि पुरोहित कैबिनेट सरकार पर जर्निंग की पुस्तक जो अभी हाल में प्रकाशित हुई है और हचिन्सन की नवाग्रा का भारत पुस्तक लेते आयेंगे।

सप्रम,
महादेव

दुहराया नहा गया है।

५४

ग्रासवनर हाउस

पाक लेन

लन्दन डब्ल्यू० १

२८ सितम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई

इम डाक से जो पत्र आय हैं उनमें सबसे अधिक आनंद प्रदान करनेवाला तुम्हारा वह पत्र है जिसमें तुमने बापू के स्वास्थ्य के बारे में खबर दी है।

अब रही नजरब दा की बात। मैं यहा अनक लागो से बात करके इस नतीज पर पहुचा हूँ कि एफ़दम हताश होने का कोई कारण नहीं है। पर फिलहाल यही बहतर होगा कि बन्दियों की भारत-वापसी पर जोर दिया जाय। जब वे लौट आयें तो उनके साथ बापू साक्षात्कार करें। इस सारे मामले में जिन जिनमें निपटना है उनमें बगाल के गवर्नर मुख्य हैं। यह तभी हा सकता है जब बापू की तबीयत ठीक रहे।

बल काल हीय मिलने आ रहा है। उसका कहना है कि इस बात में कोई तथ्य नहीं है कि वह अडमान का अंत किय जाने क सुझाव का ममथन करने को तयार नहीं है। शीघ्र ही भारत सचिव से भी मिलूंगा और यह प्रसंग उठाऊंगा। नतीजा अच्छा ही होगा पर धैर्य की जरूरत है। कुछ समय लगेगा।

मुझे इसमें सदेह नहीं है कि बापू नजरबंदा क भावी जाचरण की जिम्मेदारी लने में समर्थ है, पर क्या तुम्हारा यह खयाल नहीं है कि ऐसा उत्तरदायित्व स्वीकार करने में सतकता से काम लेना ठीक होगा? भारत क समाचार पत्रों में मुझे जो-कुछ पढ़ने को मिला है यदि वह ठीक है तो उससे तो यही लगता है कि काकीरी काण्ड क बर्दियों को लेकर जा प्रदर्शन किय गय उनके खिलाफ बापू की आवाज सुनी-अनसुनी कर दी गयी। उनकी स्थान स्थान पर अगवांनी हो रही है, उहे दावतें दी जा रही हैं। ब्रजमोहन ने भारत के बारे में जो खबरें भेजी हैं, उनसे तो मन बहुत उदास हो गया है। उसका कहना है कि युक्त प्रांत में गुण्डागर्दी का बोलबाला है। यदि कोई अनहोनी बात हो जाय, तो आश्चर्य नहीं। हर कोई यही समझ बैठा है कि वही सरकार है। ब्रजमोहन का कहना है कि पतजी को हर घड़ी मतबाला की भीड़ परेशान करती रहती है। वह अपने-आप का हरबम घिरा हुआ पात है। कोई अमुक अफसर का बर्खास्त करने की मांग करता है किसी की कुछ और फर्माइश हाती है। पुलिस डरी हुई है। जुलूस निकाल जात है जिनमें भगत सिंह जिंदाबाद और 'श्रांति चिरजीवी हा के नार बुलद किय जात हैं। ब्रजमोहन कहता है कि जब पतजी का सारा समय शिकायत सुनने में ही बीत जाता है, तो अधिक महत्त्व क काम की बात माचने का उहे अवसर ही कहा मिलता होगा? तिस पर तुरंत यह कि जो शिकायतें जाती है व या तो बेमिर पैर की हाती हैं, या बला-बडाकर की गई हाती हैं।

बापू अपने एक लेख में कहते हैं कि हम आतंकवाद का मुकाबला जवाबी आतंकवाद से नहीं करेंगे। उनका कहना है कि पुलिस और फौज का निबन्धा साबित करना है। यह एक ऐसा आदर्श है जिसका दुनिया क सभी राष्ट्रों का अपनाना चाहिए। किसी हद तक इंग्लैंड के बारे में यह बात सायक है। वह इस लक्ष्य-स्थान क काफी निकट जा पहुँचा है। अन्य राष्ट्रों के बारे में यह नहीं कहा जा सकता। पर हम स्वयं इस लक्ष्य सिद्धि क लिए क्या कर रहे हैं? जब तक हम इस लक्ष्य तक न पहुँच जायें तब तक क्या हम पुलिस और फौज की उपस्था कर सकेंगे? ब्रजमोहन जो कुछ कहता है यदि वह सही है तो मुझे तो ऐसा लगता है कि किसी दिन स्थिति अत्यंत गम्भीर रूप धारण कर लेगी। कानपुर में जा वातावरण ब्याप्त है उससे राजेन्द्र बाबू ऊब गये हैं। पता नहीं, इसका दाप किसके मरथे

मटना चाहिए। पर मुझे इसमें लेशमात्र भी सदेह नहीं है कि हमारे मंत्रियों का पहला काम अनुशासन लाना है। आशा है जवाहरनालजी इस दिशा में युक्त प्रात क मंत्रियों की किसी न किसी रूप में सहायता कर रहे हैं। यदि हम अनुशासन रख सकें तो अंग्रेजा पर अधिक अनुकूल प्रभाव पड़ेगा—केवल राज-काज चलान की क्षमता का ही नहीं बल्कि नजरबंदों की रिहाई के बाद उनके आचरण का वाबू में रखन की क्षमता का भी। काकोरी काण्ड के बन्दिनों को लेकर जा प्रदर्शन हुए, वे जवाहरलालजी को अच्छे नहीं लगे। यह खुशी की बात है। मैं यही आशा लगाय बठा हू कि समय रहत और स्थिति के विगडन से पहले ही अनुशासन पर जार दिया जायेगा।

बाल की बाबत मरा यह रहना है कि इस जादमी ने बापू के दस्तखता से एक जाली चिट्ठी बनाकर पिताजी से (१००) ऐंठ लिया। जब पिताजी ने मुझे वह चिट्ठी दिखाई तो उस पर निगाह डालते ही मैंने उन्हें बता दिया कि वह ठगाई में जा गये। पर उन्होंने कहा इसका जिक्र बापू से मत करना मामूली सी बात है। पर जब मैंने तुम्हारा लेख पढा तो मुझे लगा कि तुम्हें लिखू।

मैं अपनी मसुद्र-यात्रा ७ तारीख से आरम्भ करनेवाला हू। १६ को बंबई-स्ट पर उतरूंगा। मैं बंबई से सीधे वर्धा जा सकता हू पर वसी हालत में तीन चार दिन से अधिक नहीं ठहर पाऊंगा। पर यदि मैं पहले अपने माता पिता के दर्शना के लिए गया तो कलकत्ते हाकर वर्धा जाऊंगा और अधिक समय तक ठहर सकूंगा। मर बंबई के पत पर पत्र भेजकर बता जा, बापू का मेरा कौन सा प्रोग्राम अधिक जचगा।

सप्रेम,
 अनन्ताम महादेवकार

५५

कलकत्ता

१८ नवम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाइ

बंगाली पत्रकारिता का एक नमूना भेजता हू। तुम खद ही देखोगे कि लेख

वितना विपाक्त है।

वापू के विदा होने के तुरत बाद मैं नलिनी को फोन किया और उन्होंने कहा था कि सरकार द्वारा बक्त-य जारी किये जाने से पहले वह मुझे दिखा दग। आज सबेरे उन्होंने बक्त-य का मसौदा मेरे पास भेजा जो मुझे नहीं रुचा। पर वह मसौदा मेरे पास भेजने के बाद इसकी चर्चा कबिनेट की बैठक में कर रहे हैं। जब कबिनेट की बैठक हो चुकेगी, तो मैं सशोधित मसौदा दखूंगा और मुझे जो-कुछ कहना होगा, कहूंगा। पर नलिनी से यह भी कह दूंगा कि जब तक वापू मसौदा पसंद न करें उस प्रकाशित न किया जाय। इसके लिए मैं नलिनी से कहूंगा कि वह ऐसी व्यवस्था करें कि फोन पर तुमसे निविधन बात हो सके।

यह मैं सुबह के ११ बजकर ४५ मिनट पर लिख रहा हू। आगे जसा कुछ होगा तुम्हें बताऊंगा।

तुम्हारा
धनश्यामश्याम

श्री महानेवभाई वैसाई
बधा

५६

राइटस बिल्डिंग
बलवत्ता
२४ नवम्बर १९३७

प्रिय श्री गांधी

आपके धन के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। आपकी तथीयत ठोक नहीं है यह जानकर चिंता हुई। उम्मीद है, आप जल्दी ही महत हासिल करेंगे।

हम लोग की राय में आपका बयान निहायत मुनासिब है और उसके लिए हम आपके शुक्रगुजार हैं। सरकार ने चार महीने की मियाद रखन की बात जिन तपजों में बयान की है वे शायद उतन अच्छे नहीं हैं जितने होन चाहिए थे। बयान से सरकार का यह इरादा ता जाहिर हाता है कि चार महीने की मुदत के बाद और अधिक नजरबन्दी का रिहाई के मवाल पर गौर किया जायगा। मगर

उमंग अबाम म यह मतपत्र भी पत्रने का भी तर है कि उम मुद्दत के बाप ही आप इम ममने को हाथ लगायेंगे। लेकिन बयान म तेसी को बात नहीं कही गई है किमने यह जाहिर होता हो कि इस मियात व लोगन आपके महा आकर इन लागो म मुताजात करन पर कोर्ट बदिश रहेगी।

आपने अपने खत म दरम्बास्त की है कि आपकी गर मोजदगी म मिस्टर शरत बोम को नजरबन्द से मिनन और बात करने की आजादी र। मैं यह बात माफ तौर म बता नैा चाहता हू कि इम बाबत मेरा ऐतराज किसी जाती सबब म नहीं बल्कि उमूलन है। सरकार मुल्क के बाकी सार सियासी लीडर को बह रतवा नहीं देती है जो आपको देती है। इसलिए अगर किसी और शख्स को इन नजरबन्दी म मुलाकात करन की इजाजत दी जायगी तो उमस न आपका ही मकसद पूरा होगा न सरकार का ही। आपका हिजली व दोरे व बाद सरकार न डा० विधानपट्ट राय और श्रीमती साराजिनी नायडू को सियासी कदिया स मुला कात करनी इजाजत ली मगर डॉ० राय को यह इजाजत इतना दी गई थी कि व तपोत्र हैं और मुम्मात नायडू व माय खास मसूक किया गया, मगर जहा तक मरा ताल्लुब है इन सियासी कशिया स मिलने की और किसी लीडर को इजाजत देना मुमकिन नहीं है।

मेरा यह ख्याल था कि आपने और सियासी कदिया तथा नजरबन्दो के बाहम जाती ताल्लुकात कायम करना उन्हें समझा-बुझाकर तशद्द के रास्ते स हुावर अदमतशद्द के रास्ते पर लाने व मकसद के लिए जरूरी है, ताकि उनके नजरिय म इत्तिलाव पत्र किया जा सक। इस मकसद को उमूलन अच्छा समझा गया उनके इम शिरो इत्तिलाव स जानी या सियासी फायदा क्या होता है इमस सरकार का कोई मरोवार नहीं है। इम चीज का गोदेबाजी का मजमून बनाने का कोई मवान नहीं था। आपका लिए उन्हें अदमतशद्द के रास्ते पर लाने के लिए उन्हें समझाना-बुझाना जरूरी था। पर जहा तक इन कदियो का ताल्लुब है अगर इस समझाने-बुझाने से उनके नजरिय मे इत्तिलाव हुआ है या नहीं हुआ है तो उसके लिए यह सबेत् भर काफी है। इम पहलू से इन लोगो के साथ खत किताबत या मुलाकात करने के मवाल का भी ताल्लुब है। अगर आप इन सियासी कदियो या नजरबन्दो म बद लिफाफे मे खत किताबत करे तो सरकार को कोई ऐतराज नहीं होगा। मगर शत यह है कि इन लोगो के पास से जो खत आपके पास आयें वे किसी गर आदमी को न दिखाये जायें।

जब तक धरेलू मामतान का बजीर मैं हू आप खातिर जमा रखिये कि सरकारी बयान के अल्फाज चाहे जैसे हा, जिन जिन बातो पर हम दोनो के बीच

कौल-करार हुआ है इशा अरलाह उन पर पूरे तौर स अमल किया जायेगा । हा इन दरम्यान कोई नयी सूरत पदा हो जाय, तो बात दूसरी है ।

तोड फाड की कारवाई वाले अल्फाज क आपन जो माने लगाये हैं या जो तशरीह की है मैं उनम, बतई मुत्तफिक हू । लेकिन घत के सिफ उस हिस्स का लेकर इत्तफाक राय नहीं है, जिममे सजायापता सियासी कदिया का जिक्र है । आपको मालूम ही है कि इन सजायापता सियासी कदिया की बावत कुछ खास बल्म उठाने का हम दोनो के दरम्यान करार हो चुका है । मैंने उस करार की ह म काम करने की हिदायत जारी कर दी है मगर सरकार उससे आगे कुछ करने को तयार नहीं है ।

आपने खत के आखीर म जो-कुछ जोडा है उससे मेरा इत्तफाक है ।

आपको बताया मृताबिक कैदिया का वापस लाना शुरू कर दिया जायगा ।

आपका,

ज्वाजा नाजिमुद्दीन

मिस्टर मो० क० गांधी

सेगाव वर्धा

५७

रजनी

२३७ लीअरसकुलर राड,

कलकत्ता

२७ नवम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाइ,

अपन अल्पकालीन दौरे क बाद कलकत्ता नौटने पर मुने आपका कृपा पत्र अभी-अभी मिला । मुने यह जानकर बड़ी चिन्ता हुई कि महात्माजी का स्वास्थ्य काफी गिर गया है। पला म निकला है कि अब वह पहले मे कुछ अच्छे हैं। भगवान् से प्रार्थना है कि वह शीघ्र ही पूण स्वास्थ्य-प्राप्त करें । उनके वगान ने दौर और नजरबंदा के सम्बन्ध म उनके प्रयत्नो तथा तत्सम्बन्धी चिन्ता ने उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाला होगा । पर इन बात का मुगम अधिक कोई नहीं जानता है कि नजरबन्दी के लिए हम जो-कुछ कर सके हैं वह उनके प्रयत्नो और चुम्बक-जैत

आकर्षक व्यक्तित्व के बगैर असम्भव हाता। इस समझौते में मर योगदान के लिए आपने मुझे धन्यवाद देने की तृप्ति की है। मैं नजरबंदी के हित-साधन के निमित्त जो कुछ मुझसे बन पड़ा किया और करता रहा पर महात्माजी के माधुश्य के बिना मेरे प्रयत्न निष्फल सिद्ध होते।

मैंने समाचार पत्रों का जो वक्तव्य किया है उसका बारे में आपके कथन की मैं सराहना करता हूँ। आपका यह कहना ठीक ही है कि यदि मैं यह वक्तव्य न देता तो ज्यादा अच्छा रहता। पर बंगाल की राजनीति जसी कुछ है आप जानते ही हैं। शरत बाबू ने मेरे सावजनिक जीवन पर कीचड़ उछालन की जो अच्छी-बुरी कोशिश की है और अब भी कर रहे हैं सो बंगाल का बच्चा-बच्चा जानता है, और शायद आप भी जानते होंगे। मर यह हार्दिक विश्वास है कि यदि शरत बाबू वतमान मन्त्रिमंडल को मुख्यतया इस कारण बदनाम करने के प्रयत्न में रत न रहते कि मैं उसमें हूँ और इस प्रकार बंगाल के विपाकत वातावरण का सृजन न करते, तो हमारी अनक समस्याओं का सतोपजनक हल निकल आता। यह धारणा अबने मेरी ही नहीं है अब अनक लागू की भी है और उनमें कांग्रेसी-जन भी शामिल हैं। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि शरत बाबू जिस नीति का अनुसरण कर रहे हैं उससे मुझे घोर "यथा हृद" है और अतिशय रोष हुआ है। अतएव जब रिपाटरा न इस सम्बन्ध में मेरे विचार जानने की हठ की तो मैंने अपने मन की बात कह डाली। पर मैं आपके इस कथन से सहमत हूँ कि उत्तेजना के कारण मौजूद रहते हुए भी मुझे अपने-आप का काबू में रखना चाहिए था। मैं कथन देता हूँ कि भविष्य में मैं अपने भावों को काबू में रखने की भरसक कोशिश करूँगा।

मैं यह पत्र लिखने में स्पष्टवादिता से इसलिए भी काम लिया है कि मैं महात्माजी से या आपसे कोई बात छिपाना नहीं चाहता। महात्माजी जब तक यहाँ रहे मैं उन्हें अपनी व्यक्तिगत झगड़ों से व्यस्त करना उचित नहीं समझा और उन्हें यह नहीं बताया कि शरत बाबू और आनंद बाजार की टोली किस प्रकार मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ी हुई है क्योंकि महात्माजी एक जटिल समस्या का हल खोजने में दक्षचित्त थे पर आप फिर कलकत्ता आयेंगे और अवकाश रहेगा तो मैं महात्माजी और आपके सामने वस्तुस्थिति रखूँगा। आपने यह ठीक ही कहा है कि बंगाल में शांति स्थापना सबसे प्रयत्न एक भगीरथ प्रयत्न है। पर भग विश्वास है कि यहाँ सचमुच की शांति लाने की कोशिश करने से पहले यहाँ की स्थिति के चित्र के दोनों पहलुओं की जानकारी हासिल करना आवश्यक है। इतना सब कुछ होत हुए भी मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि मैं न केवल कोई डकानेवाली बात कहने से ही बाज आऊँगा बल्कि ऐसा वातावरण उत्पन्न करने

म लगा रूगा, जिसस शांति स्थापना व काय म सहायता भिन ।
 कुछ मामलो म म आपको विस्तार के साथ लिखूगा ।
 यदि महात्माजी को ऐसा लगे कि मुझ अमुक काय करना चाहिए तो मुझे
 जरूर बताइय मैं यथाशक्ति अपने जिम्मे दिया गया काय पूरा करूंगा ।
 आशा है आप सानद हैं और महात्माजी की तवीयत अब पहले स अच्छी है ।
 सदभावना आ व माय

जापना
 गलिनीरजन सरकार

५८

मगनवाडी
 वर्धा (मध्य प्रांत)
 २८ ११ १९३७

प्रिय सर नाजिमुद्दीन
 आपक २४ तारीख व विस्तृत और कृपापूर्ण पत्र के लिए धन्यवाद ।
 मैं अभी विस्तार पर ही हूँ । यह उत्तर पसिल स लिख रहा हूँ जिसकी महादेव
 देगार्द नकल करेगे और वह नकल आपक पाम भजी जायगी ।
 आपने मुय पर इतना भरोसा किया इसस मुझे सुख मिला पर यदि आपने
 इस भरोसा की भावना स उन लोगो को वचित रखा एकमात्र जिनके माध्यम स
 मैं सफलतापूर्वक काय समापन कर सकता हूँ तो जिस काम म आप और मैं दोना
 ही सवेल् हैं वह ठप्प होकर रह जायेगा । नजरबन्गे पर जयवा बगाल की राजनीति
 पर यदि मेरा कोई प्रभाव समझा जाय तो वह केवल उसके विश्वस्त ननाआ व
 माध्यम स ही सभिय हा सकता है । उमवा बोर्ड पृथक अस्तित्व नहीं है । मैं नजर
 बन्गे पर अथवा बगाल की जनता पर कोई चीज नहीं लाद सकता । मरी एक
 मात्र कायप्रणानी समझाने-बुझाने की प्रणाली है । इस मामल म मैं बराबर पत्र
 ब्यवहार करता रहता हूँ । इन दोना व घुओ के सटपाप के बिना मरे लिए बगाल
 म कुछ भी करना सम्भव नहीं था । आपने डॉ० विधानबन्ध राय और मरोजिनी

दबी को हिजली व मित्रा से भेंट करने की अनुमति देकर ठीक ही किया। यह भेंट सफर होगी।

मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि मैं जो भी सुझाव दूंगा जहाँ तक बंगाल की सरकार का सम्बन्ध है व सुझाव अपने ही उत्तरदायित्व पर दूंगा। अतएव मुझे आशा है कि आप अपने निणय पर नये सिरे से विचार करेंगे और फिनाल श्री शरत बोस को मेरे प्रतिनिधि व रूप में हिजली के बन्दिया से भेंट करने की अनुमति प्रदान करेंगे।

आपका ही
मा० व० गाधी

रवाजा सर नाजिमुद्दीन
गह मन्त्री
राइट्स बिल्डिंग
कलकत्ता

५६

१ बडवन पाक
कलकत्ता
२८ नवम्बर १९४७

प्रिय महादबभाई

मैं आपकी कल जा पत्र लिखा था उसे बी० एन० आर० बम्बई मल कलक्टरवाकम में डाला था। जब इस पत्र के साथ जमत बाजार रत्तिका की एक कटिंग नकी करता हूँ। यह कटिंग सरकारी वक्तव्य के कुछ ही समय बाद मौलवी फजलुन हक द्वारा दिया गया वक्तव्य की है। इस वक्तव्य को पढ़ने के बाद बापू को विश्वास हो जायगा कि मैं अपने कलवाल पत्र में जा सम्मति प्रकट की थी वह ठीक प्रमाणित हुई। इस मामले पर और अधिक विचार करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि वर्धा में जो मद्रणा हानेवाली है उसमें नरिनी बाबू व अतिरिक्त मौलवी फजलुल हक तथा रवाजा सर नाजिमुद्दीन को भी बुनाया जाय। आपको यह याद दिलाना आवश्यक है कि जब गत १७ तारीख को सर नाजिमुद्दीन,

गलिनी बापू जीर सर विजयप्रसाद मिह राय अपना मसौदा लेकर बापू के पास आय थे ता मौलवी फजलुल हक साथ म नही थे। यदि मौलवी फजलुल हक भी साथ म हाते, जीर मसौद के प्रति अपनी महमति व्यक्त करते ता उसे सरकारी वक्तव्य म अवश्य स्थान मिलता। यदि प्रस्तावित बठक वर्धा मे हुई तो किसी एक मंत्री के लिए यह सम्भव नही हागा कि वह आकर अपन सहयोगिया स मशवरा करे और फिर वर्धा जाकर बापू का अपन सहयोगियों की सम्मति स अवगत करे। इमलिए इन तीनों का एक स्थान पर एकत्र होना अत्यावश्यक है। यदि यह तीना किसी एक बात पर सयुक्त रूप से राजी हा जायेंगे तो प्राकी मन्त्रिमंडल भी उनके साथ हो लेगा ऐसी अपेक्षा की जा सकती है।

आज प्रात बाल एक मित्र न बताया कि मंत्रियों के बीच यह चर्चा चली कि मैंने बापू स अनुरोध किया है कि वह सरकार को लिखें कि मुझे हिजली के यदिमा स मिलने की अनुमति दे दी जाय। मेरे लिए यह कहना अनावश्यक है कि बापू जा भी काम मर मुपुद करेंगे मैं उसे खुशी खुशी बरूंगा। क्योंकि इगम बापू का कायभार हनेवा होगा। पर मेरी समझ म यह बात नही आ रही है कि सर नाजिमुद्दीन के नाम बापू क गोपनीय पत्र की सामग्री इस रूप म फैलाने म इन लोगा का क्या अभिप्राय है। इसी मित्र ने मुझ यह भी बताया कि उस यह भी बात हुआ है कि मुम ऐसी अनुमति नहा दी जायगी।

मुझ यकीन है कि बापू का स्वास्थ्य सुधर रहा है। बापू से मेरा प्रणाम बहिर्गमा।

आप सबको मेरा स्नेह

मप्रेम,

शरतचन्द्र बाम

प्रिय महादेवभाई

आज मैंने वादमराय से भेंट की। वीर ४० मिनट तक लम्बी बातचीत चली। उन्होंने बापू क स्वास्थ्य क बारे मे पूछा और मैंने उन्हें बताया कि वस तो कोई शरतवादी बात नही है पर उनकी तथीयत ठीक हान मे देर लग रही है। ३

महीने के निर्विघ्न विश्राम से उनका स्वास्थ्य पूरी तरह सुधर सकता है। पर मैंने उन्हें बताया कि वह लगातार बठोर परिश्रम कर सकेंगे। इस बार मे मुझे भेद है। उह यह सब जानकर दुःख हुआ। बापू का स्वास्थ्य भंग होने के कारणों का मैंने क्रमबद्ध इतिहास दिया। अतः मैंने कहा कि हम लोग ने उन्हें कैदिया से निपटने की परेशानी से बचाने की भ्रमक कोशिश की। इसीलिए यह आवश्यक समझा गया कि शरत बापू कदियों से मिलकर काय प्रारम्भ करें।

मैंने वाइसराय को बताया कि किस प्रकार बापू ने सबद्ध मंत्री को इस बारे में लिखा और उक्त मंत्री ने क्या उत्तर दिया। मैंने यह भी बताया कि बापू ने दुबारा लिखा है। अतः मैंने कहा कि मैं खुद नाजिमुद्दीन से और त्रेवान से भी बात करने का इरादा कर रहा था पर अतः मैंने आपका सारी बात बताने का निश्चय किया जिससे यदि आप ठीक समझें तो इस मामले में सहायता करें। वाइसराय सब-कुछ नोट करन गये। मैंने उह सारी दास्ता कह सुनाई। इसके लिए उहाने मुझे धन्यवाद दिया। उहाने सहायता देने के बारे में कहा कि कुछ नहीं पर मुझे लगता है कि वह कुछ-न कुछ अवश्य करेंगे। खामोश रहना उनकी आदत है।

इसने बाद सध व्यवस्था की चर्चा चली। इस विषय को लेकर वामपथी और दक्षिणपथी दोनों ही आपत्ति कर रहे हैं। उनकी आपत्ति खोखली नहीं गम्भीर है। यदि स्थिति से कुशलतापूर्वक और सहानुभूति के साथ नहीं निपटा गया तो वार्ता एक बार फिर ठप्प हो सकती है। मैंने पूछा, आप क्या करना चाहते हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि उन्हें सध व्यवस्था सतोपप्रत् नहीं लगी है। उन्होंने आलोचना के दृष्टिकोण को सराहा पर बताया कि वे व्यवस्था से लाख असंतुष्ट रहें कानून तो कानून ही है। वे हमारी आलोचना के इस पहलू को नहीं समझ सकते कि हम लोग कोई रचनात्मक विकल्प पाने में समर्थ रह हैं। मैंने कहा कि समय जाने पर बापू वसा विकल्प प्रस्तुत करेंगे। नाथ ही मैंने यह भी कहा कि आपको अभी से यह सोचने में लग जाना चाहिए कि आप समस्या का समाधान किस रूप में चाहेंगे। स्वयं मेरे दृष्टिकोण में व्यवस्था में दो आपत्तिजनक बातें हैं। पहली आपत्तिजनक बात तो यही है कि नरशा क प्रतिनिधि निर्वाचित हारन नहीं जायेंगे दूसरी बात यह है कि विधान के रचयिताओं को यह साबित करना है कि उसमें स्वतः बद्ध विकास के तत्त्व विद्यमान हैं जसा कि अंग्रेजों का दावा है। यदि सेना और विदेश विभाग साकमत द्वारा निर्वाचित मंत्रियों क अधीन नहीं रहेंगे तो हम औपनिवेशिक स्वराज्य के लक्ष्य तक कैसे पहुँच पायेंगे? विधान में जो कुछ कहा गया है वह कोरा जवानी जमा खच न होकर वास्तविकता पर आधारित है। इस बाबत भारतीय जनता का समाधान करना वाइसराय का काम है। वह ऐसा किस

रूप में करें यह भी वाइसराय ही तय करेंगे। वाइसराय ने उत्तर में कहा कि जो कुछ भी कहा गया है, वह जबानी जमा खर्च कदापि नहीं है। उन्होंने कहा कि वह अपनी कबिनेट को विदेश विभाग तथा सेना के मामले में उत्तरदायित्व सौंप कदापि नहीं मानते। यह सत्य है कि बधानिक दृष्टि से कबिनेट की इन मामलों में कोई स्थिति नहीं है। पर वसी परिपाटी स्थापित की जा सकती है। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यह उनकी 'व्यक्तिगत' राय है। पर उन्होंने कहा कि फिलहाल इस विषय को यही रहने दिया जाय जिससे समय आन पर वह इस विषय पर स्वतंत्र बुद्धि से सोच सकें। मैंने बताया कि सघ-व्यवस्था का अस्तित्व में लाने से पहले उन्हें गांधीजी के साथ विचार विनिमय अवश्य करना चाहिए। मैंने यह भी कहा कि यदि वह जवाहरलालजी से जान पहचान बना सकें, तो गांधीजी का काम भार बहुत हलका हो जायगा। उन्होंने जिनासा की कि क्या जवाहरलाल कलकत्ता आ रहे हैं। जब मैं उत्तर में कहा कि शायद वह ८ तारीख तक पहुँचें, तो वह बोले 'ओह इतनी जल्दी। तुम्हें शायद पता होगा कि वाइसराय कलकत्ता १३ या १४ को पहुँच रहे हैं।

बातचीत के दौरान वाइसराय ने कानून और व्यवस्था बनाय रखने की आवश्यकता पर जोर दिया और कहा कि यदि वसा नहीं किया गया तो दुनिया के लोग यह समझेंगे कि यह काम मंत्रियों के बूट के बाहर है अथवा कानून और व्यवस्था किस कायम रखी जा सकेगी? यह कबल अग्रज लोग ही जानते थे। उन्हें युक्त प्रांत के विषय का सखर विशेष चिन्ता है। उन्होंने मुझसे सम्बद्ध क्षेत्रों में उनका यह सन्देश पहुँचाने के लिए कहा कि यदि गवर्नर का कानून और व्यवस्था कायम रखने के लिए अपने विभागाधिकार का प्रयोग करने को बाध्य होना पड़ा तो यह मंत्रियों के हक में बहुत बुरा साबित होगा। वह यह तो नहीं चाहते कि पतजा लागू पर अध्याधुन मुकामे चलाने, पर युक्त प्रांत की स्थिति इतनी गम्भीर है कि पतजी को अराजकता पनपने का अवसर नहीं देना चाहिए। मैंने वाइसराय को बताया कि पतजी अपने उत्तरदायित्व के प्रति काफी मचेत हैं और यह भी कहा कि हान ही में गांधी सेवा-सपन न हिंसा के खिलाफ महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास किया है और सपन के सार-ज-सारे छोटी-ब-नता हिंसा की प्रवृत्ति से साहाजन में लग हुए हैं। उन्हें यह जानकर बड़ी खुशी हुई। वाइसराय के गाय मरी बातचीत का यही माराण है। मरा ख्याल है कि यह जवाहरलालजी से भेंट करने के अवसर की यात्रा करेंगे।

गमाबारा के अवसरों में हमें लगता है कि इस समय चारा-जान-पूजान के काम में लग रहे हैं और अगले कुछ महीने में मंत्रियों के लिए सज्ज महत्त्व

पूण वाय यह रहेगा कि व हिंसा का प्रास्ताहन बनवान तत्वा का डटकर गामना करें। यह मुक्तमे चलाकर भी करना हीगा और लोगो की शिक्षापता का रफा करके भी। इन सारे उपद्रवा की जड म लागी की नवजाप्रत आशाए व अपक्षाए हैं और जब तक कांग्रेस प्रामीणो से स्पष्ट रूप से यह नही कहेगी कि उनकी स्थिति मे सुधार बवल उनके ही बल-वृते पर होगा जाडू ब जार स नही तब तक असताप की भावना शात नही होगी। इस समय स्थिति यह है कि यदि समूची सचित निधि का समाजवादी रूप द दिया जाय और जमींदारी प्रथा का मूलोच्छेदन कर दिया जाय तो भी जनता की बतमान आय म नही के बराबर वद्धि होगी। उनकी जाय म वृद्धि का एकमात्र साधन रचनात्मक काय का बढाना ह। उत्पादन म वृद्धि की जरूरत है। प्रस्तुत पदार्थो की गुणवत्ता म सुधार की जरूरत है। इमक लिए कई वर्षो तक सतत और केंद्रित परिश्रम करना हागा। इस समय रिहा किय गये बन्धियो म जो उत्साह और उमाद दिखाई द रहा है वह कुछ दिना बाद गायब हो जायगा। लोग अधिक रोटिया की माग करेंगे और राटिया जमींदारी क मूलोच्छेदन-मात्र म नसीब होने से रही। अतएव हमारे मत्रियो को इसी क्षण स यह साचन म लग जाना है कि जनता की आर्थिक स्थिति क्योकर सुधारी जाय। यदि वे यह धारणा बनाये बैठे हा कि सम्पत्ति जन्त करने मात्र स योगी की आर्थिक स्थिति सुधर जायगी तो मैं कहूंगा कि व अपन-आपका घोखा द रह हैं। फिसहाल यह असतोप की भावना आर्थिक कारण स पदा हुई है। यदि लोगो को स्पष्ट रूप से यह बतान म दर की गई कि इतना कुछ सम्भव है और बाकी असम्भव है ता यह तूफान इतना भयकर रूप धारण कर लगा कि मत्रियो के लिए स्थिति पर नियंत्रण रखना असभव हो जायगा। जसा कि बापू एक से अधिक बार कह चुके हैं सना का दावत देन का अथ हागा प्रातीय सरकारा को दफन करना। कहना पडता है कि युक्त प्रात और बिहार ने यह अभी तक नही समझा है कि अहिंसा क लिए जो खतरा पदा हो गया है उसके कितने गम्भीर परिणाम हो सकते हैं।

सप्रम

धनश्यामदास

श्री महादवभाइ देसाइ

वर्धा

प्रिय महात्मावभाई

मैं नलिनी बापू और शरत बापू दाना के पत्र पत्रों और मुझे घोर वेदना है। पत्रों में जो कुछ कहा गया है वह बगाल में व्याप्त गंदे वातावरण का प्रतिबिम्ब मात्र है। जब तक हम मूल कारण का निवारण नहीं करेंगे यह स्थिति ऐसी ही बनी रहगी। इसमें सदेह नहीं कि यह अफवाह फलान में कि बापू ने मत्रिमडल से शरत को नजरबन्दा से मिलन की अनुमति देने का अनुरोध किया है नलिनी का हाथ है और इसमें भी शक की गुजाइश नहीं है कि दूसरी जोर से नलिनी के बारे में गलत अफवाहें फलाइ जा रही हैं। इन आरोपों प्रत्यारोपों का सिलसिला इस वातावरण में जारी रहेगा।

शरत बापू ने हक की किस मुलाकात का उल्लेख किया है सो तो मैं नहीं जानता पर मैं तुममें साथ भजी इन दा कटिंगों पर निगाह डालने का कहूंगा। इनमें तुम्हें पता लगगा कि वातावरण में कितनी बटुता व्याप्त है। यदि समय रहने कुछ न किया गया तो एक-एक दिन जवाछनीय घटनाएँ घटित होंगी ही सक्ता है कि साम्प्रदायिक दंग भी हो जायें।

जो कटिंग भेज रहा है उनमें से एक में त्रिला का उल्लेख किया गया है और उनमें से एक दिन हृद दर्जों का प्रतिप्रियावाली है। यह विल म्यूनिसिपल ऐक्ट का सशोधन करनेवाला बिल है। बगाल का तभी उद्धार हो सकता है जब शातिप्रिय राग समर्थित रूप से एक्-डूमर पर कीचड़ उछालने की इस प्रवृत्ति का विरोध करें। मैं यह सोच रहा हूँ कि नलिनी और शरत के बीच इस तिव्रता के शात हान के बाद कबीर रवीन्द्र और समाज के अन्य अग्रगण्य नेता एक समुबन विनिष्पि जारी करके एक्-डूमरे पर कीचड़ उछालने की इस प्रवृत्ति को धिकारें। यह प्रवृत्ति समाचार-पत्रों में विशेष रूप से सिखाई देती है। कनिपय राजनिक दला में भी इस प्रवृत्ति का समावेश है।

तुम्हें लिखने के बाद मुझे एक अन्य अधिकारी ने बताया कि युक्त प्राण की स्थिति भी गतापन्न नही है। दहाता में किमाना के उपद्रवों की आग है। यह समाचार पत्र के बाद मुझे मानुस हुआ कि बल्लभभार्त्त नयनऊ गय हैं। मुझे ता एसा लगता है कि फिनहान हमार मत्रिमडल सरकारी अमन की दया पर निर्भर है बिनापकर अमने के अप्रज तत्वा का दया पर। सारा-बा-सारा अमना

सहानुभूति रहित हो एमी बात नहीं है पर यदि कानून और व्यवस्था कायम नहीं रखी जा सके, तो मन्निमडला की प्रतिष्ठा को गहरी ठेस पहुंचेगी। इसका मुख्य दीप कांग्रेस के वामपथी दल पर होगा।

सप्रेम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाइ
वर्धा

६२

जुहू

१३ १२ ३७

प्रिय धनश्यामदासजी

यह पत्र जापको यह खुशखबरी देने के लिए लिख रहा हू कि वापू अब मच मुच अच्छे हैं। आज सुबह रक्तचाप नीचे गिरकर १७०/१०० पर पहुंच गया जो कि बिलकुल जस्वाभाविक है। यहा की सुन्दर जलवायु ही इसका एकमात्र कारण हो सकती है। पहले तो जी म आया कि तार दू पर फिर रह गया। हप यक्त करने से पहले दो एक दिन ठहरकर देखना ठीक रहेगा।

जीर हा आगा खा ने टेलिफोन करके पूछा कि क्या वे वापू की तबीयत का हाल जानने के लिए आ सकते हैं ? वे कल तीसरे पहर ४ बजे आ रह हैं।

सप्रेम,

महादेव

६३

१३ दिसम्बर १९३७

प्रिय महान्वभाइ

कल शरत से मिला। काफी बातचीत हुई। बच्चा खरा जीर बडा शिष्ट आदमी है। मैं पुरानी अदावत भूलाने के पक्ष में सारी दलीलें पेश कर दी और

उससे कहा कि मर सुझाव को बापू का जाशीवाद प्राप्त है, अब वह बताय कि उसका क्या विचार है। उसने कहा कि यह तो ठीक ही है कि बगाल में शान्ति वापस जानी चाहिए, पर जब तक वतमान मन्त्रिमंडल जसा है वसा ही बना रहगा आन्तरिक शान्ति सम्भव नहीं है। वतमान मन्त्रिमंडल निपट गरबाप्रेसी ही नहीं है वह काप्रेसी विरोधी भी है और जब तक यह परिस्थिति है, ता वतमान मन्त्रिमंडल का विधान-सभाम विरोध करत रहना प्रत्येक काप्रेसी सदस्य का कर्तव्य हो जाता है। इससे पारस्परिक संबंध भी बिगडते हैं और समाचार पत्रों को प्रचार का सामग्री भी मिलती है। उसके नलिनी से हाथ मिलान मात्र स यह समस्या कम हल हो जायगी? मैंने कहा कि वतमान मन्त्रिमंडल का जत करने के लिए भी काप्रेसिया का आपस में मिल-जुलकर रहना आवश्यक है और मैंने नलिनी की भी काप्रेसिया में ही गणना की। मैंने बताया कि कुछ भी कहा जाय विधान-सभाम काप्रेसवादिया की सख्या केवल ८० है, इसलिए वतमान मन्त्रिमंडल का अन्त करन के लिए इससे कहीं बड़ी सख्या की जरूरत होगी, और नलिनी का सहयोग प्राप्त किय बिना यह सम्भव नहीं है। शरत न उत्तर म कहा कि प्रश्न वतमान मन्त्रिमंडल का गिरान का नहीं उमक स्थान पर एक ऐसी मिली-जुली सरकार का प्रतिष्ठान करन का न जिसमें काप्रेसी और गर काप्रेसी दोनों ही हों।

इसके बाद मैंने यह सुझाव पण किया कि एक महत्वाकांक्षी काय याजना बनाई जाय। और ऐसी योजना स ही श्रीगणेश किया जाय। मैंने सुझाया कि गांधीजी न जिस चीज को अपना लक्ष्य मान रखा है उस कार्यान्वित करन के लिए भी तो शरत और नलिनी को बंदम मिनकर चलना होगा। और मैंने बताया कि पिन्हाल गांधीजी का एकमात्र लक्ष्य कर्दिया की रिहाई है। इस निमित्त दाना का एक दूसरे के साथ सम्पक स्थापित करना चाहिए। व एसा करेगे तो पुरानी अदावत भी भुला दी जायेंगी। उसके बाद यदि सम्भव हूँ ता बढी-बढी बातें भी साची जाय। शरत न उत्तर दिया कि नलिनी बडा चालाक आदमी है वह तब तक कोई पोजीशन स्वीकार नहीं करेगा, जब तक उस यह यकीन न हो जाय कि भावी मन्त्रिमंडल में उसने लिए भी स्थान है। मैंने पूछा, आप भावी मन्त्रिमंडल में नलिनी को शामिल हान को खिलाफ क्या है? उसने उत्तर दिया, भावी मन्त्रिमंडल में नलिनी को शामिल हान को खिलाफ हान का सबान नहीं है बान यह है कि वह निश्चित आस्वागत मागगा। शरत न कहा कि उम नलिनी पर बिलकुल भरोसा नहीं है। मैंने उसे याद दिलाया कि व दाना कभी मिन जुनकर काम करत थे। उमने यह बान स्वीकार की। पर कहा कि दाना कभी मिनकर काम तो करते थे पर दोनों एक-दूसरे पर तब भी भरोसा नहीं

रखते थे और दोना म पारस्परिक अधिश्वास की भावना काम करती रहती थी। मैं बताया कि अन्ध देशा म भी मन्निमडला म विभिन्न मनोवृत्तिया के लोगोका समावेश रहता है पर वे भिल जुलकर काम करते है। नलिनी म कुछ सदगुण भी है। उसका सबस बडा दुगुण यही है कि अह महत्वाकाक्षी ह। उसके साथ व्यवहार कुशलता क्या न बरती जाय ? और यन् नलिनी की पीठ पर समथन ह, तो उसकी उपेक्षा क्या की जाय ? पर मैंने कहा कि प्रारभ नलिनी स क्या किया जाय डा० रायस क्या न किया जाय ? डा० राय को किसी प्रकार की राजनतिक महत्वाकाक्षा नहीं ह। और वह ऐसा आदमी ह जिसपर भरोसा किया जा सकता ह। शरत राजी हुआ और वाला वह डा० राय स बात बरगा। कल वह मरे यहा डा० राय स मिलेगा।

इस भेंट न मरे भीतर आशा का सचार नहीं किया। मैं बगाल के वतमान वातावरण का विश्लेषण करता हू तो इस नतीजे पर पहुचता हू कि यदि हि दुओ और चद मुसलमाना मे उद्देश्य का लेकर ऐक्य की भावना का सृजन नहीं हुआ तो बगाल को दुदिनो का सामना करना पडेगा। फजलुन हक तो विक्षिप्तो जसा आचरण कर रहा है और मुझे मालूम हुआ है कि वह किसी को पसद नहीं है यूरोपियना का भी नहा। पर इस मन्निमडल का स्थान कोई और मन्निमडल नहीं ले सकता।

शरत म मेरी मुलाकात के बाद नलिनी खद ही भुवस मिलने आ पहुचा। उसने विश्वविद्यालय त्रिल और कलकत्ता कापॉरेशन बिल की चर्चा उठाई। उसने मुझे बताया कि मन्निमडल म फूट पड गई है और बन् रही है। नलिनी इन सभी प्रतिक्रियावादी बिला व खिलाफ मार्चा सभाल लगा। मैंने पूछा कि इस विपत्ति का निराकरण क्याकर किया जाय ? उसन कहा कि इस व्याधि की एक मात्र औपधि यही है कि सार हिंदू विवेकशील मुसलमान और मारे-के सार अग्रज मिलकर वतमान मन्निमडल को गिरा दें। मैंने पूछा यदि ऐसा सम्भव नहीं हुआ और हक इन नये प्रतिक्रियावादी बिला पर अडा रहा ता क्या आप इस्तीफा दे देंग ? या बसी अवस्था म भी गद्दी से चिपट रहेगे ? नलिनी ने निश्चय की भावना व साथ कहा कि वह इस्तीफा द देगा।

इसक बाद मैंने शरत व कन्या म भेंट करने की बात उठाई। नलिनी इसके कतई खिलाफ है। उसका मुख्य कारण व्यक्तिगत है यद्यपि उसन यह कहा नहीं। यह केवल इतना ही कहकर रह गया कि ऐसी भेंट की कोई जरूरत नहीं। शरत कदिया को प्रिय नहा है। मैं नलिनी को याद दिलाया कि गाधीजी को इतन सारे बदिना, नजरबदा से भेंट करने के कष्ट स बचाना कितना आवश्यक है इसलिए

प्रारम्भिक काम किसी अथ व्यक्ति व सुपुत्र क्यों न किया जाय ? नलिनी ने कहा कि नजरबंद लोग गांधीजी को कष्ट नहीं देना चाहते गांधीजी अपना फामूला दे दें, बस। बदले में उन्हें नजरबंदी का आश्वासन उपलब्ध हो जायेगा। चौथे महीने के अंत में सबको रिहा कर दिया जायगा। मैं पूछा 'पर आप जितना को रिहा कर सकते हैं उन्हें रिहा क्या नहीं कर देते?' उसने उत्तर दिया हा यह हो सकता है। मैं पूछा, 'आप गांधीजी के हस्तक्षेप के बगर भी उनमें में कुछ को रिहा कर देंगे?' उसने कहा कि गांधीजी के हस्तक्षेप व बिना ही अधिकांश को रिहा कर दिया जायगा। मैंने उससे कहा कि अपने सहयोगियों के साथ सलाह मशवरा करके निश्चित रूप से बतायें। वह मुझ से फिर मिलनेवाला है। उसकी धारणा है कि सरकार इन ४०० वदियों व नजरबंदों की रिहाई का काम केवल इस कारण हाथ में लेने से रुकी हुई है कि वह जनता को जताना चाहती है कि उनकी रिहाई गांधीजी के प्रयत्नों के फलस्वरूप हुई है। पर यदि गांधीजी चाहेंगे कि उनमें से जितने अधिक उनके हस्तक्षेप के बगर रिहा किये जा सकते हैं रिहा कर दिए जाए तो मंत्री लोग इस काम का खुशी खुशी हाथ में ले लेंगे। जो भी हो मैं नलिनी से निश्चित रूप से यह बताने का जाग्रह किया कि व लोग गांधीजी के हस्तक्षेप के बगर कितने कदियों को रिहा कर देंगे। वह दो एक दिन में निश्चित रूप से बतायगा।

इसके बाद मैंने जानना चाहा कि रचनात्मक कार्यक्रम के संबंध में कैमा वातावरण है। न कोई नेता है न कोई नयी विचारधारा। कानून का छोड़कर शरत एकात्म कोरा है। नलिनी बीती बातों का मुलान का तैयार प्रतीत हुआ पर बोला कि शरत बद्धमून धारणाओवाला आदमी है। वह इस शली में काफी दूर तक बोलता रहा।

आज सुबह विधान आया था। मैं उस अपने महा शरत से मिलने को बुलाया है। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि विधान का भी मूल मुलाकात के प्रयत्नों की सफलता के बारे में सशय है। उसने कहा कि शरत पिछले तीन वर्षों से लाभा को यह बताता फिर रहा है कि बंगाल की राजनीति में गांधीजी के लिए कोई स्थान नहीं है। क्या वह अपनी बात से मुकर गया है अथवा क्या वह गांधीजी की आवा में धूल झोक रहा है? शरत ने साम्प्रदायिक नियम को लेकर कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा सभाला तिम पर भी उस कांग्रेस पार्टी के भांड म रखा गया है। विधान को ईमानदारी की भावना नहीं मिली है और उसका विश्वास है कि जब तक बुनियादी मतभेद दूर नहीं होगा एक्य स्थापित हान से रहा। यदि गांधीजी तथा साम्प्रदायिक नियम के प्रति शरत के रथ में परिवर्तन हुआ है तो वह इसकी

खुल्लमखुल्ला घोषणा क्या नहीं कर देता ? मैंने कहा कि शरत ने अपने आचरण के द्वारा अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है। पर विधान का समाधान नहीं हुआ कि इस ढांग के पीछे नेकनीयती छिपी हुई है। वह दोटूक बात करने के लिए तयार है और साथ ही साथ यह भी स्वीकार करता है कि यदि ऐक्य स्थापित नहीं हुआ, तो बंगाल को दुर्दिन देखने होंगे।

यही बंगाल की राजनीति है। गवर्नर से मैं परसा मिल रहा हूँ।

सप्रेम,
धनश्यामदास

श्री महादेवभाई दसाइ
बम्बई

६४

कलकत्ता
१५ दिसम्बर, १९३७

प्रिय महादेवभाइ,

तुमने जो शुभ समाचार भेजा है वह मुझे रामश्वरजी ने तुम्हारे पत्र के आने के बहुत पहले दे दिया था। हम दानो टेलिफोन पर रोज बात करते हैं। जिन विषयों की चर्चा होती है उनमें बापू का स्वास्थ्य भी है।

कल शरत और विधान मरे यहाँ मिले। मैं नहीं समझता कि भेंट कुछ अधिक मफन रही। वे लोग फिर मिल रहे हैं। इसलिए मैं यह भी नहीं कहूँगा कि बात चीत असफल रही। प्रारम्भ काफी अप्रियता के साथ हुआ। ऐसा लगता है कि विधान में गम गुस्सा भरा हुआ है, और इसके उचित कारण भी हैं। विधान ने बातचीत का श्रीगणेश इस प्रकार किया मुझे बीती बातों की कोई चिन्ता नहीं है मैंने वह सब भुना लिया है। पर यदि मुझे आपके साथ मिलकर काम करना है तो मैं सबसे पहले यह जानना चाहूँगा कि भविष्य में आपका क्या रवया रहेगा ? यदि मैं यह मानूँ कि बिना कि हम दोनों में किस प्रकार का विचार सामंजस्य है आपके साथ मिलकर काम शुरू करूँ तो जा खाई पड़ी हुई है उस और चौड़ी हो करेगा। फिलहाल मैं अपने पक्ष में लगा हुआ हूँ और अपने-आपको राजनीति

म दूर रखता हूँ। पर यदि मुझे सब-कुछ भुलाकर पुनः प्रकट होना है तो मैं यह जानना चाहूँगा कि हम दोनों की स्थिति क्या है। आपने अपना राजनैतिक मंच चार बातों पर गड़ा किया है। इनमें से एक था साम्प्रदायिक निषेध। इस बावत अपने पुराने विचारों के सदृश मैं आपकी वर्तमान स्थिति क्या है? यदि आपका अभिलाषा वर्तमान मंत्रिमंडल का सुधार करने की है, तो इसके लिए आपको मुसलमानों के वाजिब सहयोग की जरूरत होगी। यदि आपका विचार वही पहले जसा है तो आपको मुसलमानों का सहयोग मिलना पड़ेगा। क्या जब आप कांग्रेस के साथ हैं या उसी पुराने दृष्टिकोण को अपनायें हुए हैं? दूसरी बात आपका पुराना नारा यह भी था कि 'बंगाल से गांधीवाद का खदेड़ देना चाहिए। क्या आपके इस विचार में परिवर्तन हुआ है? तीसरी बात आप उद्योगों के राष्ट्रीयकरण की मांग करते थे और साम्यवादियों को भड़काते थे क्या इस दिशा में भी आपमें परिवर्तन हुआ है? चौथी बात आप नलिनीरजन सरकार का नावर्जितक जीवन से खदेड़ना चाहते थे। अब आपका क्या विचार है? हमने इन चार बातों को लेकर एक-दूसरे से विदा ली थी, और यदि जब आपका विचार में परिवर्तन हुआ है, तो मुझे भविष्य में आपके साथ कंधे से-कंधा मिलाकर काम करने में कोई आपत्ति नहीं है। पर यदि आपके विचार पहले जैसे ही हैं तो बीती बातों में ताल मेल बँटाने से क्या लाभ? भविष्य में भी मतभेद का रास्ता तो स्पष्ट ही है।'

शरत का चेहरा लाल सुख हो गया, मैंने मामला रफा दफा करने की चेष्टा की पर विधान ने शरत की ओर से कफियत देने की मुझे मनाही कर दी। जो कुछ कहना होगा, शरत कहेगा। शरत की तारीफ़ में इतना कहना पड़ेगा कि उसने अपने-आपको काबू में रखा। अंत में दोनों ने पुनः भेंट करने का निश्चय किया।

मप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

वर्धा

प्रिय महादवभाई

मैं वन सध्या समय गवनर से मिला। बातचीत एक घंटे से अधिक देर तक चली। उहान बापू के स्वास्थ्य के सबध में पूछा। मैंने बताया कि उनका रक्तचाप लगभग स्वाभाविक है। उहोन वहा हम इस घोखे में नहीं आना चाहिए। देखना यह है कि काम-बाज शुरू करने पर भी वह स्वाभाविक स्तर पर रहता है या नहीं। यह निहायत जरूरी है कि वह बराबर बिथाम लेत रह। मैंने कहा मैं इसीके लिए आपके पास जाया हू। गाधीजी ने यहा आकर घोर परिश्रम किया जोर वर्धा लौटने पर उह चारपाई पकडनी पडी और इतने पर भी बगाल का मामला उनका दिमाग में चक्कर काट रहा है। वह जब तक यहा आकर जधूरे काम का हाथ नहीं लगायेंगे उहें चैन नहीं मिलेगा। ११०० नजरबन्धो को रिहा कर दिया गया है। गाधीजी को बगाल सरकार क इस काम से बडी खुशी हुई है। पर ४०० आत्मियो को रिहा करना बाकी है। अन्मान क कनियो के बारे में कुछ नहीं किया गया है। यह सारा काम उही को पूरा करना है और उनका स्वास्थ्य इस समय बहुत गिरा हुआ है। क्या उनका शुभचिन्तका के लिए उहें इस कठिन परिश्रम से बचाये रखना सम्भव नहीं है? जो काम दूसरे कर सकते हो वह क्या न कर लिया जाय? उनके लिए तो केवल उतना ही काम छोडा जाय, जितना वह कर सकते हैं। उहान इसी बात को ध्यान में रखकर शरत को बधिया से मिलन दन के लिए लिखा है। अन्तिम उत्तरदायित्व तो उही का रहेगा पर प्रारम्भिक काम शरत के ऊपर छोडने का विचार था। नाजिमुद्दीन ने इन्कार कर दिया पर गाधीजी न नाजिमुद्दीन को दुबारा लिखा है। क्या आप इस दिशा में कुछ सहायता कर सकते हैं? वह बाल कि उनकी भी यही राय है कि गाधीजी को कुछ महीना के लिए पूरा आराम लेने दिया जाय उहें बिलकुल ध्यस्त न किया जाय। एसी जल्दी क्या है? गाधीजी कब जा रहे है?" मैंने कहा शायद हरिपुरा काग्रस क बाद जो फरवरी के अंत में होनवाली है। वह बोले ता फिर तब तक रुके रहने में क्या हानि है? गाधीजी की जो पोजीशन है वह शरत की नहीं है सरकार को गाधीजी की सहायता की जरूरत है वह उनके माध्यम से जानना चाहती है कि हिंसा के बारे में कदिया के क्या विचार हैं। यह काम शरत के बूते क बाहर है केवन गाधीजी ही इस बात को साध सकते हैं। मैंने बताया कि

गाधीजी से मिलने के पहले शरत मिन लेंगे ता उनका ब्रोज हलका हो जायेगा । इसका जनावा यदि कोई बगान का आदमी गाधीजी के साथ लगा रहगा तो गाधीजी को वातावरण में सुधार करने में सहायता मिलेगी । अतः मैं तो बगानी ही बगाल में काम-काज चलायेंगे । इसलिए शरत को साथ लेने से कई प्रकार की सहायता मिलेगी । गवर्नर ने पूछा, 'पर क्या इस काय प्रणाली से बगाल का वातावरण सुधरेगा ? समाचार पत्र हिंसा की भावना से ओतप्रोत हैं । किसी भी दिन मामूलाधिक्य दगा हो सकता है । क्या शरत इस निश्चा में गाधीजी की सहायता कर सकता है ?' मैंने उत्तर दिया "अवश्य, और शरत के लिए अनुमति प्राप्त करने के प्रयत्न में गाधीजी ने सम्भवतः यही उद्देश्य अपने सामने रखा होगा । मुझे तो ऐसा लगता है कि शरत का जो अनुमति नहीं दी जा रही है उसके व्यक्तिगत कारण हैं । यदि कोई और होता तो शायद सरकार को आपत्ति न होती । वह जोने आप शायद ठीक ही कह रहे हैं । शरत के हिजली जाने में बगाल की राजनीति में एक नया दखिबाण आयगा । शरत बगाल का एकमात्र नेता नहीं है अन्य नेताओं की भांति यह भी एक नेता है बगान के मन्त्रिमंडल का वह सबसे बड़ा विरोधी है । इसलिए मंत्री लोग उस प्रसिद्धि देने की बात को सोच सकते हैं ? (गवर्नर से मिलने के लिए आने से पहले मैं नलिनी से बात कर चुका था । उनमें स्वीकार किया था कि शरत को बिना दया से न मिलान देने के पीछे व्यक्तिगत द्वेष भावना काम कर रही है । नलिनी ने कहा था "हा हा, यह सब कुछ व्यक्तिगत है और क्या न हो ? यह आदमी आज दिन हमें अपशब्द कहना रहा है । हम उसे किसी काम का श्रेय क्या दें ?") गवर्नर ने पूछा 'क्या यह गैर भुना सिद्ध है ? मैंने असहमति व्यक्त करते हुए एक विकल्प पेश किया । मैंने कहा 'सरकार गाधीजी के हस्तक्षेप के बगैर खुद ही ज्यादा में ज्यादा कदियों को रिहा क्यों न करे ? ऐसा करने में सबसे भरास की भावना उत्पन्न हो जायगी । कानिया की बेचनी खत्म हो जायगी और जिन कदियों को किसी कारण से रिहा नहीं किया जा सकेगा उनका साथ अतः मैं गाधीजी निपट लेंगे ।' गवर्नर ने पूछा कि क्या ऐसा करने से स्थिति में कोई सुधार होगा, क्या वातावरण में सुधार होने से पहले इतने सारे कदियों को रिहा करना खतरनाक नहीं होगा ? मैंने उत्तर में कहा 'रिहाई और वातावरण में सुधार वास्तव में एक-दूसरे के पूरक हैं । कदियों को रिहाई से वातावरण सुधरेगा और वातावरण सुधरने में कदियों की रिहाई में सहायता मिलेगी । पर यदि रिहाई न हुई तो वातावरण और त्रिगडेगा । उन्होंने कहा 'आपकी बात में मार है पर क्या आपका यह विचार नहीं है कि गाधीजी के माध्यम से रिहाई करने से बगाल का वातावरण में सुधार करने के काम में

गांधीजी के हाथ मजबूत होंगे ? गांधीजी बगाल क्या था रह हैं ? केवल बन्दियों को रिहाई कराने के लिए ही नहीं बल्कि बगाल के वातावरण में सुधार करने के लिए भी । मैं यह सरकार के एक सर्वाच्च व्यक्ति के नाते नहीं कह रहा हूँ, व्यक्तिगत रूप से कह रहा हूँ । यदि गांधीजी के जागमन के बाद रिहाई होगी तो गांधीजी के हाथ बहुत मजबूत होंगे । मैंने कहा ' तलनी न भी यही सुझाव दिया था । (गवर्नर ने कहा कि उहाने तलनी से कभी सम्पर्क नहीं रखा) पर मैं उनके इस सुझाव से अधिक प्रभावित नहीं हुआ । पर मैं यह सुझाव गांधीजी के सामने रखूँगा और उनसे जानना चाहूँगा कि उनके हस्तक्षेप के बगैर कानिया की रिहाई से उनके हाथ मजबूत होंगे या कमजोर होंगे । गांधीजी की जो राय होगी मेरी भी वही राय होगी क्योंकि मनोविज्ञान का उनसे बढकर कोई और विद्वान् नहीं है । उहाने कहा कि सदेह मैं जानता हूँ कि गांधीजी अत्यन्त दृढ़ के वायकुशल व्यक्ति हैं इसलिए अमुक वाय का जनता के मानस पर कसा प्रभाव पड़ेगा यह वह अच्छी तरह जानते हैं । मैंने कहा कि इस विषय का जब यही छोड़ा जाये पर गांधीजी का उत्तर जान पर मैं आपसे फिर मिलन आऊँगा । होसना है गांधीजी खुद ही आपका लिख । ' उहाने कहा कि जब चाहे जा जाइय ।'

इसके बाद हम दोनों ने समाचार पत्रों के विषय बमन की चर्चा की । उहाने पूछा कि आप इस दिशा में कुछ कर सकते हैं क्या ? मैंने उत्तर दिया कि ' मेरी तो यही धारणा है कि जबतक विभिन्न वर्गों में भेद भाव रहेगा तबतक समाचार पत्र जस हैं वैसे ही बने रहेंगे । गवर्नर ने बताया कि हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड और कुछ अन्य पत्र जसा जहर उगल रहे हैं उसे देखते हुए आश्चर्य नहीं कि किसी दिन साम्प्रदायिक युग हो जाय । मैंने उत्तर दिया कि इस समय जो साम्प्रदायिक तनाव बना हुआ है उसके लिए खुद फजलुल हक जिम्मेवार हैं । वह सहमत हुए पर उहाने कहा कि ' तु हक को समाचार पत्रों ने उत्तेजित कर लिया है । मैंने कहा, ' समाचार पत्र तो हिन्दू मत्रियों का भी कासन में गये हुए हैं । मैंने यह स्वीकार किया कि हक को आनन्द बाजार पत्रिका और हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड' जस पत्रों ने उत्तेजित कर रखा है । इसका सबसे बन्धिया इलाज यही है कि अच्छे लोग समाचार पत्रों की इस प्रवृत्ति का खूलमखूला धिक्कारें । गवर्नर ने आशा व्यक्त की कि ऐसा कुछ अवश्य होगा ।

मुलाकात के अन्त में गवर्नर ने यह बात दुहराई कि यह सरकार की नहीं, खुद उनकी राय है कि यदि रिहाई गांधीजी की बगाल के फलस्वरूप हुई तो इससे बगाल का वातावरण सुधारने के काम में उनके हाथ मजबूत होंगे । पर यदि बगाल के चित्र में गांधीजी का कोई स्थान रही रहगा, तो सरकार को क्या कराना

है सो वह जानती है। सरकार ने थोड़े थोड़े बदियो को रिहा करने की नीति अपनाई है। वह इस नीति का अनुसरण करेगी पर अभी सरकार इस मामले में जल्दबाजी से काम लाने को तयार नहीं है। पहले गांधीजी का प्राग्राम तय हो।

नरिनी और शरत का मनमुटाव दूर होने के बारे में गवर्नर को सदेह है। मय कुछ व्यक्तिगत है इसलिए पुराने घाव भरना और भी कठिन है। मैं उनको यह बात स्वीकार नहीं की और कहा कि राजनीति में योग प्राग समझ के तबाने के अनुसार मतभेद उत्पन्न भी करत हैं, दूर भी करत हैं।

सप्रेम

धनश्यामदाग

श्री महादेवभाई देमाई

जानका कुटीर

जुहू, बम्बई

६६

१७ दिसम्बर, १९३७

प्रिय महादेवभाई

सरकारी हतका म नजरब दा की रिहाई के बारे में जो धारणा फनी हुई है उसका वणन मैंने अपन कलवाले पत्र में कर ही दिया था। जसा कि तृम्हें मने पत्र से लगा होगा, गवर्नर ने मुझे प्राय वही बात बताई, जिसकी ग्यर तलिनी मुझे पहले ही द चुका था। मेरी सारी वाशिशें बापू को बदियो की रिहाई से सर्वाधित कष्ट ने बचाने में लगी हुई थी। बातचीत के बाद मुझ पता लगा कि अधिकारी लाग यहा बापू की मौजूदगी बदियो की रिहाई के त्रिण उसनी नहीं, जितनी वातावरण में सुधार करने के उद्देश्य से चाहते हैं। ग्या प्रतीत हाता है कि ये लोग रिहाई का उपयोग वातावरण के सुधार में करना चाहत हैं। बास्तम में इन लागो ने बदियो को रिहा करने का निणय ले लिया है। य लाग रिहाई का महारा बापू के मिर पर बाधने के इच्छुक हैं जिमसे इन रिहाई की कामत वातावरण के सुधार के रूप में बसूली जा सके। समेप में, वस्तुस्थिति यह है कि बापू का जो कष्ट उठाना पडेगा सो रिहाई का निणय करन में नही, बकि बाना

वरण म सुधार करने म उठाना पडेगा। अतएव यदि उह इस वध्ट से बचाना है, तो हम बगाल के वातावरण म सुधार करने के काम म दत्तचित्त हो जाना चाहिए, जिससे यह सुधार इस भीमा तक पहुँच जाय कि बापू के लिए आशीर्वाद देना भर बाकी रहे। आशा है मैं अपने भाव यथेष्ट रूप से व्यक्त करने म सफल हुआ हूँ।

रही अटमान के बँदियों की बात सो यह मामला बिलकुल दूसरी ही कोटि का है। इसम सरकार क दया भाव से काम लने की आवश्यकता है और इस निमित्त बापू को गवनर से मिलना है। मुझे जब मालूम हुआ कि जडमान के कदी नये सिरे से भूख हडताल करने की बात सोच रहे हैं तो मैं घबरा गया और जसा कि तुम्हें इसके साथ भेजी कटिंग से पता होगा मैंने शरत से तुरत यह वक्तव्य दिलवाया। शरत का खबर मिली है कि भूख हडताल की कोई आशका नहीं है। इसलिए बापू का इस बाबत किसी तरह की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। और जिस प्रकार वह अब पूरा आराम ले रह है उसम किसी प्रकार का विघ्न नहीं पडना चाहिए। बापू को इस बात के लिए मन बनाना चाहिए कि बगाल म उनका मुख्य काय बंदियों की रिहाई हासिल करने का नहीं बल्कि वातावरण म सुधार करने का अधिन है।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देमाई

जुह

६७

जुह

१७ १२ ३७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका लम्बा पत्र मिला। बापूजी के आग्रह से इस हिन्दी म लिख रहा हूँ। यह पत्र इतना महत्त्व का था कि मैंने उसे बापूजी का दिखाया। उनको आपने जो कुछ किया बहुत ही पसंद जाया और विस्तार से लिखा सो भी। परंतु वे डाक्टर

विधान का कहना नहीं मानते हैं। व तो कहते हैं कि शरत के एक एक कृत्य देखने से मालूम हाता है कि उसके विचार बदल गये हैं और वे बापू से वफादारी से काम ल रहे हैं। जिम्ने काला कोट छोड़कर सफेद पहन लिया है वह यह थोड़े कहता फिरेगा कि मैं सफेद पहना है वह तो सफेद पहना हुआ ही हरेख जगह जाता रहेगा। हा एक बात सही ह, विधान का विश्वास ही हो कि शरत का मन बदल नहीं हुआ ह तो उनका धम ह कि वे आपके घर पर आपके ही सामने उसे यह स्पष्ट शब्दा मे कह दें। सच्ची एकता (यूनिटी) इस स्पष्टता पर ही निर्भर ह।

गाट साहेब मे क्या क्या बातें हुई ? शायद आज कल मे आपका पत्र आवे।

बापू का स्वास्थ्य अच्छा तो हो रहा ह परतु धीरे धीरे और जब यह ठीक हो रहा है तब ही स व सेगाव की बातें करन लगे है और वहा के लोग का लिख रहे हैं कि 'हम इस महीन की आखिर तक सेगाव पहुच जायेंगे।' जमनालालजी ने इसका बडा विरोध किया तो सही और यह भी कह दिया कि आपकी दो महीना यहा रहना ही पडेगा। परतु देखें क्या होता ह ? लड प्रेशर १७६/१०६ गुवह रहता ह परतु कल शाम को तो १८० से ऊपर था और नीचे म ११७ था। इसका सबब मुझे भी स्पष्ट मालूम होता ह। अडमान, यू० पी० का मामला और ऐसी चीजा व वार म विचार चल रहे है। उसका यह परिणाम हो सकता ह। कल ही फेडरल स्कीम के वार म भी कुछ सोचते थे। क्याकि आज सबेरे ही उठाने तत्सबधी सामग्री की माग की थी।

आपका,
महादेव

६८

जानकी कुटीर

पुह

१८ दिमम्बर १९३७

प्रिय धनश्यामदासजी

आपका मक्षिप्त पत्र मिला जिसम आपन मुझमे यह कहा है कि मैं बापू के यही ठहर रहने का हठ करूँ। मैंने आपसे अपन पिछले पत्र म ही कह दिया था

कि खतरा दूर होने में पहले ही हॉस्पिटल ठीक नहीं है। पिछले दो दिनों में बापू के स्वास्थ्य में गिरावट आई है। कोई प्रत्यक्ष कारण दिखाई नहीं पड़ता डाक्टर साहब तरह-तरह की अटकलें लगा रहे हैं। एक मिला एक यूरोपियन डाक्टर को लाया जो भारतीय विभाग परिषद के यूरोपियन प्रतिनिधि मंडल के सदस्य हैं। संयोगवश वह रक्तचाप के विशेषज्ञ हैं। उन्होंने बताया कि रक्तचाप ऊंचा तो है पर हृदय की गति खासी अच्छी है। उनका कहना है कि बापू की पाचन क्रिया ठीक नहीं है, इसके लिए उनके भोजन का पर्याप्त जावमीजनेशन होना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि बापू का जो दूध दिया जाय उसमें भी जावमीजनेशन बढ़ाया जाय। आज वह बलवत्ते के लिए खाना हो रहे हैं पर जान से पहले वह डाक्टर गिल्डर में आवश्यक बातचीत कर लेंगे।

क्या बापू ने आपसे अधिक भारतीय चरखा सच के लिए किसी बच्चे से श्रद्धा लेने की बात की थी? इस रूप में गांधी-उत्पादन काय में आवश्यकता है। क्या इसका बंदोबस्त हो सकता है और यदि हो सकता है तो किन शर्तों पर?

सप्रेम
महादेव

पुनरुत्तर

उसके बाद आपसे टेलिफोन पर बातें हो गईं। अधिक क्या बहू? युक्त प्रात में तो काफी गड़बड़ हो गई। पहले फूजूल की घमकिया दी और फिर धुक्कर खाटना पड़ा सो अलग। सरकार को भी हमारी शक्ति का पता लग गया होगा। पंडित जवाहरलालजी इमम कोर्ट सीधा नेतृत्व नहीं कर सके शायद उनकी भी गलती तो मालूम हुई होगी परंतु वे उसका कोई उपाय न बता सकें। आपने उनका वक्त य तो अच्छा म देखा होगा। लगता है कुछ ठण्डे तो हुए हैं।

महादेव

प्रिय लाड लोदियन

आशा है आपने कलवत्त के लिए कार्यक्रम बना लिया होगा। मैं कई एक प्रमुख व्यक्तियों को दोपहर के भोजन पर आपसे मिलने के लिए आमंत्रित करने

की बात मान रहा है जिससे प्रत्येक दिन एक ही प्रकार का कार्यक्रम चलाया गया।
 तब ही बरखा पड़ने लगी। तब से मंगली पर विचार संभव होना ही नहीं
 हो पाया। जिससे कि मंगली को भी जानने में बाधा पड़ेगी।

दो-दो दिन के बाद ही मंगली पर भी मंगली कि बात को विचार मंगली-मा
 मंगली विचारों का विचार ही मंगली के लिए ही मंगली का विचार ही मंगली
 मंगली का विचार ही मंगली के लिए ही मंगली का विचार ही मंगली का विचार ही
 मंगली का विचार ही मंगली के लिए ही मंगली का विचार ही मंगली का विचार ही

२५/१३

मंगली मंगली विचार

मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली
 मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली
 मंगली मंगली

७०

२० मंगली १९३३

मंगली मंगली

मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली
 मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली
 मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली

मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली
 मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली
 मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली
 मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली

मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली
 मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली
 मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली
 मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली मंगली

आप अपनी स्थिति स्पष्ट करते जायें जिससे आपके मुसलमान साथी आप पर भरोसा कर सकें। शरत राजी हो गया।

रही गांधीवाद को बंगाल से छेड़ने की बात सो शरत ने स्वीकार किया कि उसकी विचारधारा इसी प्रकार की थी पर उसने यह बात खुल्लमखुल्ला कभी नहीं कही जो कुछ कहा आपस की अंतरंग वार्ता के दौरान। उन दिनों वह बहुत खीया हुआ था पर अब उसके विचारों में सम्पूर्ण परिवर्तन हुआ है। इस अवसर पर विधान ने उसे टोका और कहा कि शरत को अनुकूल अवसर पाकर यह बात खुल्लमखुल्ला कह देनी चाहिए क्योंकि साधारण कोर्ट के कांग्रेसी अब भी उसकी पुरानी सलाह के अनुसार आचरण कर रहे हैं। इसलिए स्थिति को स्पष्ट करना अत्यावश्यक है। शरत राजी तो हुआ पर बोला कि वैसा करने की कोई जरूरत तो है नहीं।

पर सबसे विकट प्रश्न नलिनी का था। मैंने और विधान ने, दोनों ने ही यह स्वीकार किया कि नलिनी में कुछ कमजोरियाँ हैं। वह महत्वाकांक्षी अवश्य है पर क्या बंगाल में ऐसी आदमियों का अभाव है जो अपने आप को कांग्रेसवादी कहते नहीं अघाते पर जिनमें नलिनी के जैसी महत्वाकांक्षा घर किये हुए है? जो भी हो शरत को नलिनी पर एक निश्चित सीमा तक भरोसा करके सतुप करना चाहिए उसके बहिष्कार के आयोजन करने की क्या जरूरत है? क्या कांग्रेसियों को छोड़ जीर किसी के साथ सहयोग करना सम्भव नहीं है? क्या नलिनी बहुता की अपेक्षा अधिक योग्य और सक्रिय आदमी नहीं है? हमने शरत को बताया कि हम यह मानने को तयार नहीं हैं कि नलिनी पर भरोसा नहीं किया जा सकता। यदि नलिनी के साथ ठीक ढंग का व्यवहार किया जाये तो वह अवश्य विश्वासपात्र सिद्ध होगा और देश के भंगल में उसका सदुपयोग करना सम्भव होगा। मैंने नलिनी को कांग्रेसी विचारधारावाला व्यक्ति बताया। शरत प्रभावित हुआ पर बोला कि अभी तुरंत उसके लिए कोई उत्तर देना सम्भव नहीं है। उसने जानना चाहा कि नलिनी का सहयोग प्राप्त करने के लिए उसे कितनी कीमत चुकानी पड़ेगी, क्या उसके लिए भावी मंत्रिमंडल में स्थान रखना होगा? मैंने कहा कि यह बेतुका प्रश्न है। जिस चीज की जरूरत है वह यह है कि शरत को भावी मंत्रिमंडल में नलिनी के लिये जाने की कल्पना मात्र ही बिदकना चाहिए। नलिनी भावी मंत्रिमंडल में स्थान पाने की अवश्य अपेक्षा करेगा और यदि उसमें मंत्री का पद सभालने की योग्यता पाई जाय तो उसे मंत्रिमंडल में क्यों न लिया जाय? शरत ने कहा कि इस मामले में वह पहले बापू के साथ मशवरा करना चाहेगा। मैंने उससे कहा कि जहाँ तक हो सके हमें बापू को इस व्यमेले से

बलग रचना चाहिए। उनकी शक्ति का अपव्यय करना वाछनीय नहीं है। एक अनावा, क्या बापू हमारा पथ प्रदर्शन हमेशा करते रहेंगे? हम अपने मामले का निणय खुद ही करना चाहिए। पर भारत ने यह बात दुहराई कि 'तू बापू से बात किए बिना हाँ या नाँ' में जवाब नहीं दे सकता। बम्बई जान से पहले वह एक बार हमसे फिर बात करना चाहगा। मैं उस बापू का स्वास्थ्य फिर न विगडन की बात बताई और यह व्याकुल हुआ। वह बापू के पत्र में रहकर चलने का आतुर है और मुझे तो ऐसा लगता है कि बापू जमा बहग वह बसा ही करगा। यह शुभ लक्षण है। इन बीच वह मुझसे भी सलाह-मगवरा करना चाहगा। इस लिए मुझे स्थिति काफी आशाजनक प्रतीत होती है।

तुम्हारा १७ तारीख का हिन्दी का पत्र अभी-अभी मिला है। इस पत्र का उत्तर भारत के साथ हुई बातचीत के इस विवरण में आ ही गया है।

लाह ब्रेवान से मरी बातचीत हुई उसका विवरण भी तुम्हें अत्र तब मिल चुका होगा। अब अपनी राय लिखना।

विधान का कहना है कि बापू के स्वास्थ्य में गिरावट आने का यह भी कारण हो सकता है कि वह बहुत चलते हैं।

मप्रेम

घनश्यामदाम

श्री महादेवभाई दसाइ
वर्धा

७१

मगतवाडी

वर्धा (मध्य प्रात)

२१-१२ ३७

प्रिय घनश्यामदामजी,

आपके दोना लम्बे और सुन्दर पत्र मैंने बापू का लिखा दिया। बगान की गरवार बापू के आशवासन और सलाह के पालनस्वरूप बढिया की रिहा करने की तत्पर प्रतीत हा रही है। इस तत्परता के पीछे वह जिस मनोवृत्ति में चल रही है इसे बापू ने दया तथा समझा और सगहा भी। वास्तव में यदि उनके लिए

शक्य होता तो वह बगाल के लिए निकल पड़ते और वहां जमकर बठ जाते तथा अपनी सारी शक्ति बगाल की समस्या का हल तलाश करने में लगा देते और अ य सारे कामों को तिलाजलि दे देते। पर फिलहाल यह सम्भव नहीं है। हा, यदि वह डाक्टरों की अवहलना करने की ठान लें, तो बात अलग है। रक्तचाप घटता है बढ़ता है उसमें स्थिरता नहीं है। सपगंधा के सेवन से सध्या हाते होते १५०/९५ तक नीचे आ जाता है पर सुबह होते होते पारा एक बार फिर चढ़कर १६५/११० तक पहुँच जाता है। डाक्टर लोग चकित हैं और उन्होंने यह स्वीकार किया है कि वे यह स्थिर नहीं कर पा रहे हैं कि क्या करें। यह कितने खेद की बात है कि हमारे डाक्टर आयुर्वेदिक आपधियाँ को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं जो सपगंधा जसी प्रभावोत्पादनी जड़ी बूटियों के कायल नहीं हुए हैं। सपगंधा के सेवन की एक कल्याणकारी प्रतिक्रिया यह है कि इसे थोड़ी मात्रा में लें तो जी नहीं बठता। क्लकत्त और वर्धा में इसका सेवन बड़ी मात्रा में किया गया था, जिससे तबीयत में गिरावट और जवसाद पदा हो जाता था। अतः उन्होंने इसका सेवन करते रहने का निश्चय किया है।

अब रही बगाल सरकार की नीति की बात। बापू तो यह चाहते हैं कि सार वी दियो नजरबंदा को सरकार अपनी ही सूझ बूझ और जिम्मेवारी पर रिहा करे। उन्होंने एण्ड्रूज के हाथों जो लिखित सदश भेजा है उसमें यह बात स्पष्ट रूप से कह दी गयी है। एण्ड्रूज ने वह सदश आपको दिखाया ही होगा। भरे पास उसकी नकल नहीं है नहीं तो नत्थी कर देता। उस सदश में बापू ने बगाल सरकार से नजरबंदा के प्रति दया भाव दिखाने की अपील की है। उन्होंने सरकार से उन्हें रिहा करने के लिए इसलिए भी कहा है कि उन्हें खुद पता नहीं है कि उनका बगाल जाना कब सम्भव हो और वह यह नहीं चाहते कि इन अभागों का भाग्य बापू के स्वास्थ्य के साथ त्रिशकु की तरह लटका रहे। आशा है मैंने बापू का दृष्टिकोण स्पष्ट कर दिया है।

अब रहा युक्त प्रातः मैं नहीं समझता कि इस बाबत यहां से कुछ हो सकेगा। इसमें सदेह नहीं कि जो कमला उठ खड़ा हुआ था वह ऐसा था कि जिस सफर मन्त्रियों और गवर्नर में मतभेद उत्पन्न हो सकता था और मन्त्रिमंडल भंग करने की नौबत आ जाती। दोनों ही पक्ष शांति का वातावरण चाहते हैं और मन्त्रियों ने यह स्वीकार कर लिया है कि यदि लोग न हिंसा को उभारा है तो यह कहने में क्या तुक थी कि उन पर मामला चलाया जाये? गवर्नर ने कहा मैंने इस बार में पसला कर लिया है। पतंजी ने भी बतुका जवाब दिया कि 'मन्त्रियों ने भी कमला कर लिया है। और यदि उन्होंने वास्तव में यह कहा तो इस्तीफे के बिना

और कोई चारा नहीं रह जाता है। पर उन लोग न इस्तीफा न दण्ड का निणय लिया है। यह निणय किस कारण स लिया गया यह समझ मे नहीं आ रहा है। पणित जवाहरलाल का दष्टिकोण समथ पाना मेरे लिए सम्भव नहीं है। उनका कहना है कि इस मामले को विधान सभा म ले जाया जाय और वहा से वाट हासिल करन क बाद उस ताज बनाम पार्लियामट का रूप देकर देश के समक्ष रखा जाय। जो हो, अभी यह कहना कठिन है कि वहा कुछ किया जाना सम्भव है अथवा असम्भव। पतजी न अब बल्लभभाई को लिखा है कि विपत्ति टल गई है चिंता की काई बात नहा है।

आपकी समझ म यह सारा मामला जा गया हागा ऐसा मानना भर त्रिए कठिन प्रतीत हा रहा ह और यदि आपकी समझ म नहीं आया हो ता इसका दाप मने अज्ञान को या इस गूढ विषय की तह म पठन की मेरी अक्षमता को या वस्तु स्थिति का यथावत वणन करने मे समथ भाषा की अनभिन्नता का—जिसे देना हो दीजिए। जल्दी म,

आपका,
महान्व

७२

२५ दिसम्बर, १९३७

प्रिय महादेवभाई

ज्यो ही मुझे दिल्ली म वाइसराय स पता चला कि युक्त प्रात म स्थिति ठीक नहीं है मैंने पतजी को चिट्ठा लिखी और देवदास को लखनऊ भेजा। बल्लभभाई वहा पहले से ही मौजूद थे। देवदास ने ता अभी मुझे कुछ नहीं लिखा है पर पतजी के पास स चिट्ठी आई है जिसम उहान मुझे आश्वासन दिया है कि चिंता की कोई बात नहीं है और उनका हाथ नब्ज पर है। मैंने इस आश्वासन की सूचना वाइसराय के पास भेजी और वह बहुत खुश हुए। पर गवर्नर और मंत्रिया के मत-भेद क वारे म मेरा अज्ञान ज्यो का-र्यों रहा। नेशनल काल म कुछ निकला था उस देखते ही मुझे शक हुआ कि कुछ गड़बड़ है। बाद म टेलिफोन पर तुम्हारे सकेत ने मुझ और भी सतक कर दिया। तब से मुझे विभिन्न क्षेत्रा से मालूम हा रहा है कि स्थिति शांतिपूर्ण नहीं है पर मुझे अभी तक यह पता नहीं लग सका कि

वास्तव म बात क्या थी आज आधर मूर स बात हुई तो उसने कहा कि यदि गवनर और मत्रियो का मनमुटाव दूर हो जाय तो हम सबकी चिंता का निवारण हो। मूर ने पूछा कि क्या हेगस मेरा परिचय है। मैंन हा की। उसने कहा आप का क्या प्ययाल है वह भला जादमी तो है न ?' मैंने कहा 'पतजी भी बुर नहीं हैं।' आज सुबह वाइसराय की स्पीच निकली उससे लगता है कि उनके दिमाग म भी किसी प्रकार की चिंता काम कर रही है। पर मुझे अभी तक यह मालूम नहीं हो सबा है कि यह चिंता किस बात को लेकर है। मैं यह पत्र तुमसे यह जानने का लिख रहा हू कि इस विषय पर यदि तुम अधिक प्रकाश डाल सका, तो डाला। वाइसराय यही हैं। और मूर भी भरसक सहायता करेगा। अगर मर मूर के या उसके जस किसी आदमी व किय कुछ हो सके ता हम सब अवश्य काम आन का तयार हैं। पर वास्तव म बात क्या है पहले मैं यह जानना चाहूंगा और तब तक मैं कोई कदम नहीं उठाऊंगा। यदि तुम्हे जग कि तुम कुछ बता सकोग, तो बताओ और अपना पत्र मेरे भाइ को दे दा। मैं भी यह पत्र अपने आफिस के भारपत भेज रहा हू।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बम्बई

७३

जुहू,
बम्बई

२२ दिमम्बर, १९३७

प्रिय घनश्यामदासजी

बानपुर के समन का म्यान अब कारारी-वाण्ड व रिहा हुए कदिया म स एव पर मुकदमा चलाय जान व वाद विवाद न ले लिया है। अब तक इग मामले का गुप्त रखा गया था। इन बन्दियों न अपनी रिहाई के तुरत वाद स ही मत्रिमटल तथा काप्रेम का व्यस्त कर रखा था। जुलूम और प्रदगन एव आम बात हा गई थी। बापू की सामयिक भरसना के बावजूद प्रमुख काप्रेमियो न अपन-अपन जिला

व इन प्रदर्शना में सम्मिलित होना शुरू कर दिया था। कई स्थानों पर प्रमुख
 कांग्रेसियों ने ऐसी सभाओं का सभापनित्व भी किया जिनमें इन की दया ने अगर
 उगलनेवाले व्याख्यान दिए। जब मन्निमडल को इसका पता चला तो उसने जिला
 घोषणा की गश्ती पत्र भेजकर आदेश दिया कि ऐसी सभाओं में रिपोटर भेज जायें।
 यह आदेश गवर्नर के कहने पर दिया गया अथवा स्वतः ही यह तो मैं नहीं
 जानता पर जब पुरमान दीक्षित दहरादूनवाले व्याख्यान की आरंभ गवर्नर का ध्यान
 गया, तो उसने तुरंत इस मामले को मन्त्रियों के सामने उठाया और इस बात का
 हठ की कि उस पर ताजौरात हिंद की धारा १२४-अ के अंतर्गत मामला
चलाया जाय। मन्त्रियों ने गवर्नर को यह बताया कि वह आदमी २० वर्ष तक जेल
 में रहा है इसलिए उसका उद्धारो में तिकतता अनिवाय थी और इन कारण इस
 व्याख्यान का इतना तूल नहीं देना चाहिए। वे लोग इस बात का पक्ष में थे कि उस
 मात्र चेतावनी दे दी जाय फिरहाल उसके खिलाफ कोई वानूनी कारवाई न की
जाय। पर गवर्नर अपनी बात पर अटल रहा। ऐसा कहा जाता है कि उसे दिल्ली से
निर्देश मिला था। पतजी ने गवर्नर से कई बार दरतक बातचीत की। इस कथन
कथन ७ दिन लग गये, पर इस दौरान मन्त्रियों ने पंडित जवाहरलाल अथवा किसी
और में कोई सलाह मशवरा भी नहीं किया। क्विंट की एक औपचारिक बैठक
के दौरान गवर्नर ने यह स्पष्ट कर दिया कि यदि मन्निमडल मामला चलाने में
क्षमता ता उसे जो विशेषाधिकार प्राप्त हैं उनके अंतर्गत वह इस विषय में स्वयं
आदेश जारी करेगा। मन्निमडल अपने पुराने नियम पर अटल रहा। जो वारंट
जारी किया गया, वह गवर्नर के आदेश से और उसकी तामील दिल्ली में
हुई जहां इसी व्यक्ति पर एक और मामला चल रहा था। जब यहां तक नीचे
आए ता पतजी ने प० जवाहरलाल को तार देकर युक्त प्रांत बुलाया। उस समय
प० जवाहरलाल आसाम के दौरे पर थे। उन्होंने कहा कि यह सुझाव भेजा कि
वल्लभभाई का बुला लिया जाय वह खुद अपना दौरा पूरा किये वगैरे लौटना नहीं
चाहेंगे। तब सरदार पटेल को बुलाया गया। सरदार पटेल और कृपलानी दोनों
ने यही कहा कि जब उस आदमी का उद्धार इतने उत्तेजनावद्धक था, तो मन्निमडल
को उस पर मामला चलाने में आनाकानी नहीं करनी चाहिए थी। वास्तव में
पुरमानदी की स्पीच की तुलना में बान्सीवाला की स्पीच राज भक्ति से परिपूर्ण
लगती थी (मैंने उस स्पीच की सी० आई० डी० की रिपोर्ट देखी है और मरा भी
यही मत है)। पतजी जानना चाहते थे कि अब क्या किया जाय, पर इस बारे में
वल्लभभाई ने कोई निश्चित मत नहीं दिया और कहा कि जवाहरलालजी से मश
वरा किया जाय। जवाहरलालजी भी एक दो दिन में मखनऊ पहुंचनेवाले थे।

वल्लभभाई ने यह अवश्य कहा कि जब मामला यहा तक बढ गया है ता गवनर क आगे चुपचाप घुटने टेकना कठिन है । पतजी की धारणा थी कि यदि उस आदमी का दिल्लीवाले मामल मे दण मिले ता गवनर का मामला वापस लेने का राजी करना सम्भव होगा । पर ऐसा लगा कि वसी स्थिति म भी गवनर नही मानंगा (क्योकि उसके हाथ यह अच्छा मौका लगा है) । वह मामला वापस लेगा भी ता कुछ शर्तों क साथ ही वापस लेगा । उनम से एक शत शायद यह हागी कि मामला चलान के निणय के प्रति मन्त्रिमडल सहमति यक्त करे । इस बाबत वल्लभभाई ने कोई निश्चित मत प्रकट नही किया और मामले का निणय जवाहरलालजी पर ही छोडना उचित समझा गया । क्योकि युक्त प्रात स्वय उनका प्रात है और वह अपने प्रात क विषय म मशवरा जरूर देना चाहये ।

इस मामल से मन्त्रिमडल की कुछ अजीब-सी भीतरी काय पद्धति जुडी हुई है । यह तूफान खडा हाने के कोई २० दिन पहल मन्त्रिमडल न यह निणय लिया था कि काकारी बाण्ड क रिहा हुए कदियो को चेतावनी दी जाय कि भविष्य म वे जो करे, सोच विचारकर करे । इस निणय पर अमल नही किया गया । पतजी का कहना है कि इस निणय पर अमल करने का काम चीफ सेक्रेटरी के जिम्म था, पर उमने अमल नही किया । पर वल्लभभाई को लगा कि इतना महत्त्वपूण निणय चीफ सेक्रेटरी पर छोडना ठीक नही था ।

भाज सवेरे पतजी को फोन किया । भाग्य अच्छे थे, वह मिल गय । उहाने स्थिति पर प्रकाश डाला और कहा कि जब पहले-जसी बात नहा है दो-तीन दिन म सारी बात जनता क सामन आ जायेगी (इसका मैंने यह मम ग्रहण किया कि उस आदमी पर से मामला उठा लिया जायगा) । जब मैंन उनस पूछा कि वह निश्चित रूप सबताये कि यह बला टलगीया नही, तो उहोने कहा 'हा अवश्य' पर उनक लहजे म मुझे कुछ शिंशक लगी । मैंने भी और अधिक बताने का आग्रह नही किया । विशेषकर इस कारण कि उहोने कहा कि थोडा-बहुत आदान प्रदान जरूरी था । मुझे लगा कि मुख्य मंत्री से इतनी ही बातचीत काफी है । इसलिए मैंन उनसे यह कहन के वाद कि ३० तारीख को प्रातीय काफरेंस क अवसर पर भेंट होगी टेलिफान रख दिया ।

कानपुर क बार म यह बात विलकुल सही है कि उपद्रवियो के खिलाफ समुचित कारवाई के निए गवनर न अपनी आर स कई कदम उठाये है और इसस भी अप्रियता उत्पन हुई है । पर इस मामले का लकर कोई गम्भीर मतभेद नही हुआ है यत फिलहाल कानपुर शांति के दौर स गुजर रहा है ।

बिहार के बार म बतान योग्य एकमात्र बात यहा है कि जब हम वहा पहुचे,

ता स्थिति में निश्चित सुधार हो चुका था। राजेन्द्र बाबू काश्तकारी सबधी ऐसे सुझाव तयार करने में मग्न हुए हैं जो जमींदारों और किसानों के समझदार प्रतिनिधियों को समान रूप से मान्य रहे हैं। वह बड़े आशावान हैं और अनुग्रह बाबू में आत्मविश्वास कूट कूटकर भरा है। इस मुख्य मंत्री ने कहा है कि यदि काय-कारिणों न पग पग पर उनकी आलोचना करने के बजाय उनका समर्थन किया, तो वे विहार का काम मुचाक रूप से चला लेंगे।

सप्रेम
महादेव

पुनश्च

आज इस आत्मी को दिल्लीवाले मामले में ६ मप्ताह का कारावास दण्ड मिला है।

७४

२३ नवम्बर १९३७

प्रिय महात्माभाई

तुम्हारा २१ तारीख का लम्बा पत्र मिला। उसमें तुमने जो कुछ कहा सो समझा। एण्ड्रूज ने तुम्हारे हाथ का लिखा पत्रा दिखाया पर उसमें केवल अडमान के कठिनाई की ही बात है क्योंकि द्रुया शब्द का प्रयोग किया गया है। मुझे यकीन है कि गवर्नर ने भी यही भाव ग्रहण किया होगा। इसका उद्देश्य चाहे जो रहा हो इसमें सदेह करने की गुंजाइश नहीं है कि पत्रों में केवल दण्डित कदियों का ही हवाला है नजरबन्दा का नहीं। मैं नहीं समझता कि फिलहाल गवर्नर के साथ दुबारा बात करने से कोई अर्थ निकलेगा। हा बापू चाहें तो बात दूमरी है। शायद सबसे उत्तम काय यही होगा कि अभी हम यह देखें कि बापू क स्वस्थ हैं कितना सुधार हो रहा है। गवर्नर के पास दुबारा कुछ समय वाद जाना ठीक रहेगा।

मुक्त प्रात के बारे में तुमने जो कहा सो समझा। मेरी पतनी के साथ जरा भी गम्बेदना नहीं है। मैं स्थिति को अच्छी तरह समझ गया हूँ। इसलिये तुम्हारे

लिए अपन अनान अथवा विचार व्यक्त करने के लिए आवश्यक शब्दा की दरिद्रता को दोष देना अनावश्यक है।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

जानकी कुटीर

जुह

७५

२५ दिसम्बर, १९३७

प्रिय महादेवभाई

मैं कवीन्द्र रवीन्द्र से अपील जारी करान में सफल हुआ हूँ। अब जसा तुमने वचन दिया था इस अपील के अनुरूप सामग्री 'हरिजन म भा दा। यदि जवाहर लालजी को कुछ कहने के लिए राजी किया जा सके तो उनके कथन का अतिशय प्रभाव पड़ेगा। जब वह बम्बई-पहुँचें तो क्या उनसे तुम मेरी आर में यह अनुरोध करोगे? मैं समझता हूँ उन्हें यह तो मालूम होगा ही कि इस समय बंगाल के पत्रों में कसा जहर उगना जा रहा है। आनंद बाजार पत्रिका 'हिन्दुस्तान स्टण्डर्ड तथा स्टार आफ इटिया में तो भद्रता छोड़ ही दी है। अमृत बाजार पत्रिका फिर भी उतना बुरा नहीं है पर एक भी ऐसा पत्र टूट न मिलेगा जिसके बारे में कुछ अच्छी बात कही जा सके। यदि इस मामले को तुम जीर जवाहर लालजी हाथ में लो तो इनका बड़ा प्रभाव पड़ेगा। इसके अतिरिक्त यदि तुम शरत बाबू का भी कुछ कहने को राजी कर सको, तो बड़ी बात हो। मैंने उनसे बात करके देखा उन्हें विचार तो अच्छा लगा पर वह कुछ हिचकिचा गये।

अखिल भारतीय चरखा सभ के लिए ऋणके विषय में तुम्हें निश्चयना भूत गया था। मैंने वापू से कहा था कि सार मम्बई कागज पत्र एवम् किये जायें सभ की जगम सपत्तिका अनुमान तयार करायें और जा लोग गारटी दें, उनके नाम भेजें। मैं इम्पोरियन बक के डाइरेक्टरों से बात चना सतिता हूँ पर जमनालालजी तो बहा हैं ही वह बक के डाइरेक्टरों और सर पुण्योत्तमनाम ठाकुरदाम में बात चना

सकते हैं। जहा तक मैं समझ सका हूँ जमनालालजी और बापू गारटो देना चाहेंगे, वही अवस्था मे कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

सप्रेम

धनश्यामदास

७६

२८ दिसम्बर १९३७

प्रिय महादेवभाई

कुछ कटिंग साथ भेजता हूँ। उनमे से दा स्टेटसमेंन और 'हिंदुस्तान स्टण्डड' की हैं। यह कवी द्र रवी द्र की अपील पर टिप्पणिया है। हिंदुस्तान स्टण्डड की टिप्पणी से तुम अदाज लगा सकोगे कि किस प्रकार चोर की दान्ती मे तिनका वाली कहावत चरिताथ हुई है। हक की स्पीच कुछ बेचनी पदा करती है। मुसल माना को आये दिन यही बताया जाता है कि बंगाल मे हिंदू लोग इस्लाम के विरुद्ध पढ्यत रच रहे है। ऐसी स्पीचें आम चलकर सकट की स्थिति उत्पन्न करेंगी। मैं तो यही कहूंगा कि जवाहरलालजी का बंगाल का दौरा करना चाहिए। इसस स्थिति मे सुधार अवश्य होगा। मुझे यह भी आवश्यक प्रतीत हाता है कि बंगाल के पत्रा मे जो गाली गलौज चल रही है उसके बारेत जवाहरलालजी कुछ पढ़ें और 'हरिजन' मे भी लिखा जाये। इसका प्रभाव पड़ेगा।

सप्रेम,

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देमाई

प्रिय महादेवभाई

कवीन्द्र रवीन्द्र की अपील का जरा भी असर नहीं हुआ। वातावरण में जो थोड़ा-बहुत सुधार होता उसकी सम्भावना को फजलुल हक के विस्फोट ने विलकुल नष्ट कर दिया। मैंने गवर्नर से कहा था कि वह अपने प्रभाव को काम में लेकर हक को अपनी जवान पर काबू रखने को कहे। उनके सप्रेटरी ने मुझे बुलाकर बताया कि दोना ओर से जो बीचड़ उछाली जा रही है उससे गवर्नर नितन क्षुब्ध हैं। गवर्नर बहुत चाहते हैं कि कुछ खुल्लमखुल्ला कह पर उन्हें आशंका है कि यदि वह कुछ कहेंगे तो उमका यही अर्थ लगाया जायेगा कि वह अपने मुख्य मंत्री के खिलाफ बोल रहे हैं। हो सकता है वह थोड़े दिना बाद कुछ कहें। इस बीच मैं कवीन्द्र रवीन्द्र की अपील के बारे में तुम्हारी टिप्पणी की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। यह भी जानना चाहता हूँ कि अब मुझे क्या करना चाहिए। शरत के दम्बई रवाना होने से पहले मैं उससे मिला था और उसे भी यह सुझाव अच्छा लगा कि कलकत्ते के कोई जाधा दजन प्रमुख व्यक्ति एक सावजनिक अपील जारी करें। इस समय जिस बात की सबसे अधिक आवश्यकता है वह यह है कि यह दोनों जोर से चल रहा वाक्प्रहार बन्द हो। दुर्भाग्य की बात यह है कि जा लोग वर्तमान सरकार के खिलाफ हैं और उसके स्थान पर किसी नयी सरकार की प्रतिष्ठित करना चाहते हैं वे वर्तमान सरकार के कार्य की आलोचना करने के बजाय झूठ मूठ की अपवाहें फनाने में व्यस्त हैं। व्यक्तिगत और सिद्धांतों में भेद नहीं किया जा रहा है। इसका एकमात्र परिणाम यह हुआ है कि हक को ऐसा लगने लगा है कि हिन्दू उसकी सरकार के खिलाफ साजिश कर रहे हैं इसलिए वह जनता में अपील करने में साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से काम ले रहा है। इस जटिल स्थिति में धीरज के साथ विवेक-बुद्धि से काम लेने की जरूरत है। मैंने आशा तो नहीं छोड़ी है पर सारी कठिनाई इस बात की है कि सब इस समस्या का निदान अपने अपने विचार के अनुरूप स्थिर करने में लगे हुए हैं। यदि शरत विधान और अन्य लोग हिन्दू पक्षों की इस मनोवृत्ति के खिलाफ मोर्चा समालन की ठान लें तो मरी धारणा

है कि हक भा ऊन जतूल बातें करना बन्द कर दगा। मैं तुम्हारी सलाह की बात जोर रहा हूँ।

सप्रेम,
धनश्यामदाम

श्री महात्मावभाई देसाई
बम्बई

७८

३१ दिसम्बर, १९३७

प्रिय महात्मावभाई

कन लखवेट मुझसे मिलने आया था। कोई दो घण्टे तक विस्तार से बात होती रही। नजरबंदा, दण्डित बंदियों और सभ व्यवस्था आदि विषयों पर मुख्य रूप से चर्चा हुई। जो बातचीत हुई, उसका निचोड़ वह वाइसराय को बताया और उन्होंने जरूरत समझी तो मुझे बुला भेजेंगे। नजरबंदा और दण्डित बंदियों की बाबत मैंने उससेवही सब-कुछ कहा जो मैं और एण्ड्रूज गवर्नर को बता चुके थे। इधर तुम्हारा पत्र भी लखवेट को पढ़ सुनाया। कहा कि बापू के बगाल धान के पहल ही रिहाई का सिलसिला शुरू होना और जारी रहना चाहिए। यदि ऐसी नीति नहीं अपनाई गई तो जनता और बंदियों में बेचनी फल जायगी और यदि वही बंदियों ने नय सिर से भूख हड़ताल शुरू कर दी तो सबके लिए परेशानी पदा हो जायगी और उसका बापू के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा, जबकि उनकी स्वास्थ्य बहुत ज्यादा राजनतिक महत्त्व रखता है। लखवेट मेरी दलील से कायल हुआ। उसने यह बात स्वीकार कर ली कि बापू का स्वास्थ्य राजनतिक महत्त्व रखता है। उसने पूछा कि क्या मैं यह चाहता हूँ कि इनका दुक्का करने कदिया को रिहा करना शुरू कर दिया जाय जिससे लोगों की इस धारणा का बल न मिले कि इस मामले को खटाई में डाल दिया गया है। मैंने कहा हा मही बात है। उसने बताया कि जहाँ तक अडमान के कदिया का ताल्लुक है, उह भारत वापस लाया जा रहा है। बापू ने अनशन के अवसर पर वाइसराय का जो तार भेजा था लखवेट ने उसका जिक्र करते हुए बताया कि बापू का इस बात की खबर द दी गई है कि बंदियों की भारत वापसी का निणय ले लिया गया

है। वे चार से छह सप्ताह के बीच यहाँ वापस आ जायेंगे उसके बाद उनकी रिहाई का प्रश्न पर विचार किया जायेगा। मैंने उसे बताया कि नजरबंदी की रिहाई का प्रश्न भी मरे दिमाग में घर बिय हुए है, उनकी रिहाई अविलम्ब हो जानी चाहिए। उसने वाइसराय को यह बताने का वचन दिया। मेरी धारणा है कि वाइसराय इस दिशा में सहायक सिद्ध होगा। वाइसराय से मिलने के बाद मैं गवर्नर से फिर मिलूँगा।

सब व्यवस्था की चर्चा चली तो मैंने कहा कि बापू की तबीयत ठीक होते ही वाइसराय को उनसे इस बार में वानचीत आरम्भ कर देनी चाहिए। यदि समझौते बिना व्यवस्था लाद दी गई तो उसका परिणाम घातक होगा। मैंने कहा कि मैं यह नहीं चाहता कि इस मामले में देर की जाय, साथ ही मैं यह आशा भी व्यक्त की कि बापू कोई हल अवश्य तलाश कर लेंगे। लेथवेट ने कहा कि वाइसराय से यह बात कहेंगे।

इसके बाद हम तागा ने युक्त प्रांत की स्थिति की चर्चा की। मैंने कहा कि जब काग्रम इस प्रांत में शांति और अहिंसा के लिए काम कर रही है तो गवर्नर को बीच में टांग अडाने की क्या जरूरत थी? गवर्नर ने बेजा काम किया। लेथवेट का कहना था कि अकेले इस मामले का छोड़ अन्य किसी प्रांत में गवर्नर ने हस्तक्षेप नहीं किया पर परमानंद हिंसा को बटावा दे रहे था और देहरादून-अस-सैनिक केंद्र पर इसका बुरा प्रभाव पड़ रहा था। पतसे बार बार कहा गया पर पता नहीं वे क्यों टालमटोल करते रहे। क्या मंत्रियों को इतनी छूट देना वाञ्छनीय होता कि जिससे स्थिति इतनी बिगड़ जाय कि कानून और व्यवस्था बनाय रखने के लिए सना की सहायता लेनी पड़ जाय? लेथवेट ने कहा कि बिदवई की स्पीच उस अच्छी नहीं लगी जिसमें उन्होंने कहा था कि यदि जनता ने अहिंसा का आचरण नहीं किया तो मंत्रियों को इस्तीफा देने को बाध्य होना पड़ेगा। यदि मंत्री लोग ऐसा रुख अपनाये रहेगे तो गवर्नर को उनकी शांति बनाय रखने की सामर्थ्य के बारे में शक होने लगगा। क्या स्थिति को एकदम बिगाड़कर मंत्रियों का इस्तीफा देना गवर्नर के प्रति 'मायपूण आचरण होगा? ऐसी परिस्थिति में क्या गवर्नर का यह कृत्य नहीं है कि वह चौकना रहे और स्थिति का बिगड़ना में रोक? मैंने बिदवई की स्पीच का अपेक्षाकृत अधिक अच्छा जथ बताया। मंत्रियों को जा शक्ति सामर्थ्य प्राप्त है निर्वाचकों की वदोनात और यदि सारी जनता बिद्रोह कर बैठ तो मंत्रियों के लिए कबल यही करना बाकी रह जाता है कि वे लोग स कह दें जब आप तागो का हम पर विश्वास नगने रहा है तो हम इस्तीफा देते हैं पर ऐसा हम इसलिए नहीं कर रहे हैं कि हम गवर्नर के खिलाफ कोई शिकायत है।

वर्कि इमनिए कि आपक आचरण म अनुशामन वा अभाव है। मैंने लेखकेट को बताया कि मैं किन्वई की स्पीच का मन्त्रिया की हैमियत का मोलह आना ठीक वणन मानता हू उम स्पीच का गतत अथ लगाना उनके साथ अयाय है। उसन मरी बात स्वीकार की। पर साथ ही यह भी कहा कि यदि मन्त्री लोग निर्वाचक। स भयभीत हाकर कानन और व्यवस्था बनाये रखने के मामले म अपना कत्तव्य-पालन करन म कोताही करने लगे तो एव स्थिति ऐसी अवश्य आएगी जब गवनर दखल देने को बाध्य हा जाएगा। लेखकेट ने यह ता नही माना कि स० प्रा० का गवनर हल् स बाहर चला गया पर साथ ही उसने यह स्वीकार किया कि मन्त्रियो को गलती करने की भी स्वतंत्रता रहनी चाहिए। अकेले स० प्रा० म ही हिंसात्मक तत्वों के साथ ढिलाई बरती जा रही है। अय प्रातो की वह भूरि भूरि प्रशसा करता रहा।

सप्रेम

पनश्यामदाम

श्री महान्देवभाई देमाई

वम्बई

तार

मो० क० गांधी

वर्धा

१२०-जी आपके सदन के लिए धन्यवाद । सदेश अनशन करनेवाला को भेज रहा हूँ और तार द्वारा उत्तर देने का जाग्रह कर रहा हूँ ।

—वाइसराय

अण्डमान के कदियों से सम्बन्धित तारों का आदान प्रदान

स्मरण रहे कि जब गांधीजी को गृह विभाग का ३१ अगस्त का यह तार मिला कि अण्डमान के कदियों ने अनशन स्थगित कर दिया तो उसमें उन सात कदियों का उल्लेख नहीं था जिन्होंने अण्डमान से जाये तार के अनुसार अनशन स्थगित नहीं किया था। गांधीजी ने इस मामले को आगे बढ़ाया। उन्हें गृह विभाग का तार द्वारा उत्तर मिला जिसमें गांधीजी के नाम उन सात कदियों का सदेश दर्ज था। इसके बाद उन सात कदियों का एक और तार मिला जिसमें उन्होंने अनशन तोड़ने से इंकार किया था। इस निणय से गांधीजी को बड़ी प्या हुई है। उन्होंने समाचार पत्रों को समूचा तार विनिमय प्रकाशित करने की अनुमति देते हुए यह वक्तव्य दिया है मैंने इन तारों का प्रकाशन अब तक इस आशा से रोक रखा था कि मैं यह आनन्ददायक समाचार देने में समर्थ होऊँगा कि उन सात कदियों ने राहत शब्द की मरी परिभाषा को स्वीकार करके अनशन तोड़ दिया है। मुझे इसका दुःख है कि मैं अपने प्रयत्न में असफल रहा। मुझे अब तो यही आशा है कि उन सात कदियों के खास मित्र उन्हें समझा-बुझाकर अनशन तोड़ने को राजी कर लेंगे क्योंकि केवल इसी के द्वारा जनता अपने उन प्रयत्नों को सामूहिक रूप देने में समर्थ होगी जो उमन राहत प्राप्त करने के लिए जारी रखे हैं।

तथा जिनके कर्तव्य इन कर्तव्यों ने अपने प्राण सक्कट में डाल रखे हैं। मैं सम्बद्ध अधि कारिया स भी दया भाव दिखाकर इन कर्तव्यों को उनके जनशन जारी करने पर भी रिहा करने की अपील करता हूँ जिसमें वे अपनी दय्यभाल खुल कर सकें। १६३३ में जब मैंने अपने उपवास का अंत करी से इत्वार कर दिया था, तो मुझे भी अपनी देखभाल खुद करने के निमित्त रिहा कर दिया गया था।

गत २ सितम्बर को गृह विभाग के सनेटरी का शिमला से गाधीजी को जा तार मिला वह यहा उठन किया जाता है नम्बर एफ-५ जेलें। —अण्डमान के जिन सात कर्तव्यों ने अनशन जारी रखा है उहान आपक लिए निम्नलिखित सदेश भजा है "आतक्वा" के वार में आपके तार के लिए धन्यवाद। हम धोपणा करते हैं कि इस देश का अपकार ही होगा उपकार नहीं। हम आपक माध्यम से जेनरानो और नजरबंद शिबिरा में पड़े राजनतिक पीडितो स तथा एमा सभी सस्थाआ स, जिनका अब भी अस्तित्व हो जो देश को आतक्वा" क द्वारा स्वतन्त्र करन में विश्वास रखते हैं अपील करते हैं कि व यह माग त्याग देंगे। हमारा आपसे अनुरोध है कि राहत शब्द से आपका क्या अभिप्राय है सो स्पष्ट कीजिए। अब प्रांतीय स्वराज्य की प्राप्ति के बाद राहत का एकमात्र अर्थ यही हो सकता है कि सारे राजकर्तव्यों का तथा राजनतिक अपराधा क लिए दण्डित कर्तव्यों का रिहा कर दिया जायेगा निर्वासिता पर से देश में प्रवेश करने की निषेधाज्ञा उठा ली जायगी जोर सारी दमनकारी धाराआ को रद्द कर दिया जायगा। यदि हमें इस वार में आपका आश्वासन मिले तो हम भूख हड़ताल स्थगित कर सकते हैं।' इस सदेश में आपक जिस तार का हवाला दिया गया है, वह २७ अगस्तवाला तार है। तब तक आपका ३० अगस्तवाला तार उहें नहीं निया गया था। —गृह विभाग।

गाधीजी ने ३ सितम्बर का शिमला स्थित गृह विभाग के सनेटरी का यह तार भजा 'आपका तार कल मध्याह्न के समय चलकर आज प्रात काल ७ वज के बाद यहा पहुँचा। धन्यवाद' कृपया उन सात कर्तव्यों को यह तार भेजिए सदश अत्यन्त सराहनीय है। यह सदेश हम सभी के एकसमान उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त मरे प्रयत्ना में बहुत सहायक होगा। आपने 'राहत शब्द का जो अर्थ लगाया है उसमें ध्यनितगत रूप से स्वीकार करता हूँ जोर बचन देता हूँ कि मैं अपने कर्तव्यों के सहयोग से उसकी सफलता के लिए सचेष्ट रहूँगा। अतएव आप अनशन त्याग कीजिए और इस आह्वादनकारी वृत्त को सूचना दीजिए। —गाधी।

गाधीजी ने ५ सितम्बर को पाट ब्लयर अण्डमान को निम्नलिखित तार भजा 'उन सात कर्तव्यों के नाम अपने सदेश के उनके उत्तर की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा हूँ। क्या अनशन अभी जारी है? यदि जारी है, तो उनसे कह दीजिए

कि जय तक वे अनशन समाप्त नहीं करेंगे, मेरी कोशिश बेकार रहेगी।—गांधी।'

१० सितम्बर का अण्डमान से यह तार आया "६११८। आपका तार बंदियों को कल दे दिया गया था। राहत शब्द की उनकी परिभाषा को आपने स्वीकार किया इसकी वे सराहना करते हैं, पर अनशन स्थगित करने से इन्कार करते हैं।—अण्डमान।' गांधीजी ने ११ सितम्बर को पोट ब्लयर अण्डमान को यह तार भेजा, तार के लिए धन्यवाद। कृपा करके बंदियों से बहिए अनशन स्थगित करने से इन्कार करके आपने मुझे मर्मांतक वेदना पहुँचाई है। आपका तार से मैंने समझा था कि यदि मैं राहत शब्द की आपकी परिभाषा स्वीकार कर लू तो आप अनशन स्थगित कर देंगे। कृपया अनशन स्थगित करके राष्ट्रव्यापी चिन्ता का निवारण कीजिए और भर जस कायकर्त्ताओं को 'राहत' हासिल करने का अवसर दीजिए।—गांधी।

१४ सितम्बर को अण्डमान से यह उत्तर आया ६२१४। आपका ११ सितम्बर का तार १२ को पहुँचा, और भूख-हडतालियाँ को १३ को दिया गया। सूचित करते दुःख होता है कि उन्होंने अनशन स्थगित करने की आपकी सलाह को मानने से इन्कार कर दिया है।—अण्डमान।

१९३८ के पत्र

३ जनवरी, १९३८

प्रिय महादेवभाई,

सध व्यवस्थाके बारेमे जवाहरलालजीने लाड लादियन को यह बताया है कि इसे लेकर कांग्रेस मे ऊपर से नीचे तक फूट पड जायगी। वह पूरी तरह कास्टि-ट्यूएट असेम्बली बुलाये जाने के पक्ष मे है और फिन्हाल इस मामले मे कोई रियायत बरतन को तयार नहीं है। यह केवल बापू की सूचनाय है।

जो एक जोर महत्वपूर्ण बात भरे वाना तक पहुँची वह यह है कि यद्यपि भारत शासन विधान मे सना को मन्त्री के अधिकारो की परिधि के बाहर रखा गया है, परिपाटी के द्वारा कोई ऐसी व्यवस्था की जा सकती है जिसके अंतगत मन्त्री को एक प्रकार का उत्तरदायित्व सौपा जाना सम्भव हो। ऐसी आशा की जा रही है कि ब्रिटिश जनमत इसे स्वीकार करने का राजी हो जायेगा क्याकि अंतर्राष्ट्रीय स्थिति त्रिगुण रही है जोर विशेषकर चीन मे जापान की आक्रामक कारवाई के परिणामस्वरूप ब्रिटिश साम्राज्य का अंतर की स्थिति का सामना करना पड रहा है। फलत यह वाछनीय नहीं समझा जा रहा है कि भारत की रक्षा के मामले मे मन्त्री को उत्तरदायित्व से पूणतया बचिन रखा जाये। पता नहीं बापू को इस वस्तुस्थिति की जानकारी है या नहीं कि सध-व्यवस्था विषयक आर्डिनेंस अभी पार्लियामेंट द्वारा पारित नहीं हुआ है इसलिए यदि समझौता हुआ तो शासन विधान की यह कमी आर्डिनेंस द्वारा पूरी की जा सकती है।

सप्रेम

घनश्यामदाम

श्री महादेवभाई दसाई

बम्बई

मगनवाडी,
वर्धा (मध्य प्रात)
६ जनवरी, १९३८

प्रिय घनश्यामदासजी

मरे पास आपके कई पत्र उत्तर देन को रम हुए हैं पर मैं बापूजी से बात करने से पहले आपका निग्रहना नहीं चाहता था। यह आज सध्या समय यहा पहुचने पर ही सम्भव हुआ। जुहू म अतिम दो दिन बहुत चहल पहल रही। एक ओर तो कायकारिणी के सदस्या के साथ बातचीत का सिलमिला जारी था और दूसरी ओर मुलाकातियो का ताता बधा रहा क्यकि हमने जमानत ही बहास चलन का निश्चय किया था। इसलिए मैंने बापू का और अधिक यस्त करना उचित नहीं समझा।

सबसे पहल मैं गर जिम्मेदार समाचार पत्रों द्वारा विपान्न किये गये गद वातावरण व परिवार का प्रश्न उठाता हू। जिस समय मैंने कबीर रबीन्द्र की समाचार पत्रों से अपील पत्ती थी उस समय मरे सामने मन्निया का अनगल प्रलाप नहीं था अ यथा मैं एक लेख के द्वारा समाचार पत्रों और मन्निया दोनों का ही लताडता। बापू को आपका यह सुवाव पसद जाया कि कुछ हिंदू व मुसलमान नेता मिलकर एक विज्ञप्ति जारी करें। यदि कोई और मुसलमान न मिल, तो मौलाना (अबुल कलाम) आजाद के हस्ताक्षर काफी होंगे। शायद विज्ञप्ति जारी करने से भी अच्छा यह रहेगा कि आप मौलाना आजाद से मिलें और कहें कि वे फजलुल हक से मिलकर उहोन जा कुछ कहा है, उसे वापस लेने तथा खेद प्रकाश करने का आग्रह करें। हो सकता है विधान बापू भी इस दिशा में सहायक हों।

लाड ब्रेवान के लिए प्रकाश में तो कुछ बहना सम्भव नहीं है पर वह फजलुल हक को बुलाकर उनसे जवाब तलब कर सकते हैं। यह काम जरूरी है। लाड ब्रेवान फजलुल हक को बता सकते हैं कि सरकार अपराधी समाचार पत्रों पर तो मामला चला सकती है पर अपराधी मंत्री के खिलाफ कारवाई करना उससे लिए उचित नहीं होगा। लाड ब्रेवान को उन्हें यह साफ बता देना चाहिए कि यदि जिम्मेदार मंत्री गैर जिम्मेदारी का आचरण करता रहेगा, तो एक गवर्नर की हैसियत से विशेषाधिकारों का प्रयोग करने का व विवश होंगे। क्योंकि शासन विधान के अंतगत किसी भी आत्मी को वर्गों में सघप करने और साम्प्रदायिक

विष फ़तान से रोकना एक गवर्नर का कर्तव्य हो जाता है।

गवर्नर एक और काम कर सकता है। या वह सावजनिक रूप से न ता समाचार पत्रों के लेखों की ही आलोचना कर सकता है न मत्रिया के जाचरण की ही पर वह जनप्रिय नताजा से वातावरण को सुधारने की अपील इस आधार पर कर ही सकता है कि चूकि कानून और व्यवस्था कायम रखने की जिम्मदारी मत्रियों की है इसलिए स्वयं उसके लिए समाचार पत्रों की आलोचना करना उचित नहीं होगा। गवर्नर सम्पादकों को बुलाकर उनसे कीचड़ उछालने से बचे रहने का नहीं वह सकता पर वह शरत बोस-जैसे सावजनिक नताजा में वातावरण का सुधारण की बात तो कह ही सकता है। गवर्नर आम तौर से यह भी कह सकता है कि स्वस्थ जनमन का गठन के लिए क्या कुछ करण की जरूरत है।

बापू ने शरत बाबू से दो बार देर तक सतापजनक ढंग से बात की। आशा है शरत बाबू न आपकी बताया होगा कि क्या क्या बातें हुई। बापू का कहना है कि इस वार्तालाप का ब्यारा मैं लिख भजू। इससे कही अच्छा यह हागा कि आप शरत बाबू के मुह से सुनें कि बापू ने उनसे क्या-क्या कहा और बापू की बात उनका मन में कितनी उतरी। शरत बाबू से हुई बातचीत का बापू पर अनुकूल प्रभाव पडा है और उनकी धारणा है कि वह शांति स्थापना कायम पूरा याग दान करेंगे। यदि आप उनके साथ घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित करें, जिसमें उनका सहयोग पूण मात्रा में उपलब्ध हो सके तो उन्हें अच्छा लगगा। बापू विद्यान राय अथवा नलिनी बाबू का महा बुलाय जान से पहल यह चाहेंगे कि आप यहा आ जायें। १८ और २२ के बीच का समय सबसे अधिक उपयुक्त रहेगा। लाड लोदियन १५ को पहुच रहे हैं और बापू तब तक पूरा आराम लेना चाहते हैं जिसमें उनका साथ खुलकर बातें कर सकें। उनके साथ बातचीत में दो तिन से अधिक लगने की संभावना नहीं है। लाड लोदियन के साथ बातचीत के बाद बापू दो एक दिन की विरामिता चाहेंगे और तब आपका आना पसन्द करेंगे। इससे अधिक निश्चित रूप से कुछ कहना मेरे लिए सम्भव नहीं है।

डाक्टर साग बहुत चाहते थे कि बापू इस महीने के अंत तक जुहू में ही आराम करत रहे, पर बापू की बचना बढने लगी। उनका कहना था कि वह लाड लोदियन से मिलेंगे तो यही के स्वाभाविक वातावरण में मिलना भयत्र नहीं। इसका कोई माकूल जवाब नहीं था हा ही नहीं सकता था।

आपने लखवेट के साथ अपनी बातचीत के दौरान विद्वर्द्ध की निमायत की, सो ठीक ही किया और विद्वर्द्ध के भाषण का आपने जो अर्थ लगाया वह भी ठीक था। लखवेट ने जो कहा वह भी गलत नहीं था। एक जिम्मदार व्यक्ति का अपना

उत्तरदायित्व स इस प्रकार नहीं भागना चाहिए। मंत्री का इस्तीफा देना का पूरा अधिकार है पर ऐसा करने से पहले उसे यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि वह जो इस्तीफा दे रहा है सो गवर्नर के कारण नहीं, बल्कि अपने निर्वाचकों के कारण क्योंकि वजाय इसके कि वह निर्वाचकों का नेतृत्व करे, उल्टे निर्वाचक उसका नेतृत्व करने की कुचेष्टा कर रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में उसके लिए उनके काम आना सम्भव नहीं है।

आपन आर्डिनमेंस के बारे में जो कहा वह बड़ा रोचक है पर बापू का आशंका है कि अभी समझौते के कोई लक्षण प्रतीत नहीं हो रहे हैं। बापू अपना अधिकांश समय विस्तर पर पड़े रहकर भल ही प्रितायें उनका दिमाग बराबर काम करता रहता है। वह अच्छी तरह से जानते हैं कि लाड लोदियन से क्या बात करनी है। इस संध-यवस्थावाले आर्डिनमेंस के बारे में बापू का अभी तक व्यस्त नहीं किया गया है और लाड लोदियन के साथ बातचीत हो चुकने से पहले वरुंगा भी नहीं।

सपगंधा लाजवाब भाषिणी है उससे फायदा ही हुआ है। पर बापू का मिजाज इतना नाजुक बन गया है कि जहां थोड़ी सी भी दिमागी परशानी हुई कि रक्तचाप पर असर होने लगता है भल ही वह सपगंधा का सेवन करते रहे हैं। इस दफा कायकारिणी के सदस्यों ने उन्हें यथासंभव बखशा। वास्तव में मौलाना (जबुल कलाम जाजाद) का छोड़कर अन्य किसी ने उनके साथ गभीर वार्ता नहीं की। हा, मौलाना जाजाद ने हिन्दू मुस्लिम एकरता के बारे में काफी देर तक बातें की। एक दिन सदस्यगण एक घण्टे तक बठ बठे इधर उधर की बातें व हसी मजाक करके ही सतुष्ट हो गये। बापू ने बातचीत में हिस्सा नहीं लिया पर वह मुन तो रहे ही थे और एकरमात्र इम प्रयास के कारण उनका रक्तचाप ३० तक जा चडा। बापू को सोचने विचारने में अधिक प्रयास नहीं करना पडता पर वह बात करन और मुनने का बोझ भी नहीं बरदाश्त कर पाते।

बम्बई से वर्धा तक का सफर निर्विघ्न रहा। वर्धा उतरने के कुछ ही पहल रक्तचाप लिया गया तो १८६/१०६ निकला। बापू काई ४ घंटे साये हागे जिसस तीसरे पहर रक्तचाप घटकर १५०/९० पर आ गया था जो ठीक ही था।

सप्रम,
महादेव

११ जनवरी १९३८

प्रिय महादेवभाई

आखिर तुम्हारा पत्र मिल ही गया। तुमने पार्टीवालों की बात इतनी खुलामा लिखी कि मन प्रसन्न हो गया।

यहाँ तक्षण अच्छे प्रतीत नहीं हो रहे हैं। आजकल समाचार-पत्र कुछ ठण्ड हैं। मन्त्रिगण भी चुप्पी माधे हुए हैं। पर मन्त्रियाँ की खामाशी का कारण यह नहीं है कि उन्होंने जवान पर काबू रखना सीख लिया है बल्कि इस कारण कि ऊपर में तबाव पडा है। तुमने सुझाव दिया था कि गवर्नर फ़ज़लुन हक से बात करें। ऐसा किया जा चुका है। मुझे खबर लगी है कि वाइमराय और गवर्नर दाना न ही उनसे बात की थी और उनका कहना व्यर्थ नहीं गया है। यह बारी किस्मतों नहीं है पर समाचार पत्रों के बारे में मैं आशावादी नहीं हूँ। मैं एक बार कहा था कि यदि नेता लोग अपने प्रभाव में काम लें तो दण्डवदी तथा समाचार पत्रों का विप्लवमन गेना ही बन हो सकते हैं। पर इधर मैं स्थिति का अधिक बारीकी से अध्ययन किया है और मुझे स्वीकार करना पडता है कि "याधि गम्भीर है। बापू अपने प्रयत्न में सफल हो भी सकते हैं नहीं भी हो सकते पर अर्थ किसी के बश की तो यह बात है नहीं। शरत बाबू के बम्बई के लिए रवाना होने से पहले बापू ने उन्हें समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो रही सामग्री की बात लिखी थी। मुझे पता चलता है कि जब समाचार पत्रों के मन्त्रिकों का यह बात मालूम हुई तो वे बापू पर बहुत विगडे, और उनके बाल ही आर्क कवीन्द्र रवीन्द्र की जपील। वह अपील जारी करने का रवीन्द्र बाबू से मैंने कहा था। इस बात को लेकर उन क्षेत्रों में काफी रायगुण चर्चा हुई यहाँ तक कहा गया कि मैंने कवीन्द्र रवीन्द्र को मोटी-सी रकम देकर यह अपील जारी कराई है। तुम खुद ही साच सकते हो कि ऐसे गन्दे वातावरण में क्या-कुछ नहीं हो सकता। तुमने अपने पत्र में लिखा है कि यदि हिन्दू और मुसलमान दोनों मिलकर एक सयुक्त अपील जारी करें तो अत्युत्तम हो। शरत बाबू को यह सुझाव मैंने लगेगा सा मैं नहीं जानता। बम्बई के लिए रवाना हान से पहले मैंने उनसे ठीक यही बात कही थी पर उन्हें मरा सुझाव विशेष नहीं रुचा। उन्होंने सीधे समाचार-पत्रवालों से बात करना अधिक अच्छा समझा। अगले शनिवार का वह एक प्रेम-वाफरेंस बुला रहे हैं। मैं नहीं सकता कि इसका क्या परिणाम निकलेगा पर हम अच्छे परिणाम की ही आशा

इस प्रकार नहीं भागना चाहिए। मंत्री को इस्तीफा देना का
पर ऐसा करने से पहले उसे यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि वह
है सो गवर्नर के कारण नहीं, बल्कि अपने निर्वाचकों के कारण,
सके कि वह निर्वाचकों का नेतृत्व कर उलट निर्वाचक उसका
कुचेष्टा कर रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में उसके लिए उनका काम
ही है।

उन्नेस के बारे में जो कहा वह बड़ा रोचक है पर बापू का आशय
प्रतीत के कोई लक्षण प्रतीत नहीं हो रहा है। बापू अपना अधिकांश
र पड़े रहकर भले ही द्वितीयें उनका दिमाग बराबर काम करता
रखी तरह से जानते हैं कि लाड लोदियन से क्या बात करनी है।
गवाने जाडिनेम के बारे में बापू का अभी तक व्यस्त नहीं किया
ड लादियन के साथ बातचीत हो चुकने से पहले करूंगा भी नहीं।
जवाब आपधि है उससे फायदा ही हुआ है। पर बापू का मिजाज
न गया है कि जहां थोड़ी सी भी दिमागी परेशानी हुई कि रक्तचाप
गता है भल ही वह सपगधा का सेवन करते रहे हा। इस दफा
सन्स्यो न उह यथासभव बचना। वास्तव में मौलाना (जबुल
का छाडकर जय किसी ने उनके साथ गभीर वार्ता नहीं की।
जाद ने हिंदू मुस्लिम एकता के बारे में काफी देर तक बातें की।
गण एक घण्टे तक बठे बठे इधर उधर की बातें व हसी मजाक
हो गये। बापू ने बातचीत में हिस्सा नहीं लिया पर वह सुन तो
एकमात्र इम प्रयास के कारण उनका रक्तचाप ३० तक जा चला।
विचारने में अधिक प्रयास नहीं करना पड़ता पर वह बात करने
रीक्ष भी नहीं बरदाश्त कर पाते।

वर्षा तक का सफर निविघ्न रहा। वर्षा उत्तरन के कुछ ही पहर
गया, तो १८६/१०६ निकला। बापू काई ४ घण्टे साथ होग, जिससे
चाप घटकर १५०/६० पर आ गया था जा ठीक ही था।

सप्रम,
महान्व

११ जनवरी, १९३८

प्रिय महादेवभाई

आखिर तुम्हारा पत्र मिल ही गया। तुमने पार्टीवाला की बात इतनी खुलामा लिखा कि मन प्रमत्त हो गया।

यहा नक्षण अच्छे प्रतीत नहीं हो रहे हैं। आजकल समाचार-पत्र कुछ ठण्ड हैं। मन्निगण भी चुप्पी माघे टूट हैं। पर मन्निगण की खामोशी का कारण यह नहा है कि उन्होंने जवान पर बाबू रखना भीख लिया है बल्कि इस कारण कि ऊपर मन्नाब पत्रा है। तुमने सुझाव दिया था कि गवर्नर फजलुन हक से बात करें। ऐसा किया जा चुका है। मुझे खबर नगी है कि वाइमराय और गवर्नर दोनों न ही उनम बात की थी और उनका कटना व्यथ नहीं गया है। यह कारी किराती नहा है पर समाचार-पत्रा के बारे म मैं आशावान् नही हू। मैंन एन बार कहा था कि यदि नना लाभ अपन प्रभाव म काम लें, ता एनवनी तथा समाचार पत्रो का विप-वमन एनों ही वन् ह। मकते हैं। पर इधर मैंन स्पर्ति का अधिक वारीकी से अध्ययन किया है, और मुझे स्वीकार करना पन्ता है कि व्याधि गम्भीर है। बापू अपने प्रयत्न म सफल हो भी मकते हैं नहीं भी हो सकत, पर अय किसी क वग की ता यह वान है नहीं। शरत बाबू क बम्बई क लिए खाना होन मे पहले बापू न उन्हें समाचार-पत्रा म प्रकाशित हा रही सामग्री की बात लिखी थी। मुझे पता चना है कि जब समाचार पत्रों के मानिका को यह बात मालम हुई तो वे बापू पर बहुत विगडे और उमक वान ही आर् कवीट्र ग्वीट्र की अगीन। वह अपीन जागी बरने क। रवीट्र बाबू म मैंन कहा था। इस रात को लकर उन शेरों म कानी गपपूण चर्चा हुई यहा तक कहा गया कि मैंन कवीट्र ग्वीट्र को मोटी-सी रकम देकर यह अपान जागी करादे है। तुम खूनी मास मकते ए कि ऐसे गदे बातावरण में क्या-कुछ नगी हा मकना। तुमन अपन पत्र म लिखा है कि यदि हिन्दू और मुसलमान एनों मिलकर एक मशुक्त अगीन जारी करें तो अत्युत्तम हो। शरत बाबू का एन् सुवाच कमा लगगा मा मैं नहीं जानता। बम्बई क निग खाना हान म पहन मैंन उनन टोक यनी रात कनी थी पर एह मरा सुझाव विपद नहीं रचा। एदुनि मीघे समाचार-पत्रवाना म वान करगा अधिक अच्छा समझा। अगत मनिकाव का वह एन् प्रेम-वाफरेंग बुना गृह है। कन् नहीं मकता कि इसका क्या परिणाम निकरगा पर हम अच्छ परिणाम की हा आशा

करनी चाहिए। प्रेसवाला को कोई खफा नहीं करना चाहता, इसीलिए यह स्थिति ज्यादा ही बनी हुई है। पर मैं वसी अपील जारी किय जाने के विचार का हृदय से समर्थन करता हूँ। शरत बापू से बात करके देखूंगा मान जायें तो अच्छा ही है।

शरत बापू पिछले चार पांच दिन से यही हैं। उनसे सपका स्थापित करन की कोशिश कर रहा हूँ पर अभी तक सफल नहीं हुआ हूँ। ऐसा लगता है कि वह मुझे पत्र द्वारा सूचना देंगे कि हम दोनों का मिलना कब हो सकता है। वह जब चाहेंगे मैं अपने आपकी उनके सुपुद कर दूंगा। तुमने यह नहीं बताया कि जुहूँ में उनकी बापू से क्या क्या बातें हुई। शायद वह खुद ही बताएँ। उनके बात हम दोनों अगले कदम के बारे में बात करेंगे।

मेरे बर्धा आने के बारे में तुमने जो कुछ कहा था समझा। अभी तो मेरा यही इरादा है कि २२ के बाद और इस महीने के अंत तक किसी भी दिन रवाना हो सकता हूँ। नलिनी जायिन परिपक्व को लेकर २२ तारीख तक दिल्ली में उलझे रहेंगे। उनके बाद वह भी आ सकते हैं। मेरा सुझाव है कि हमारा एक एक करके आना ठीक नहीं रहेगा हम एकसाथ ही आवें तो अच्छा रहेगा। पहले मैं बात करूंगा उसके बाद डाक्टर राय और नलिनी भी बातचीत में शरीक हो जायेंगे। पर यदि मैं पहले से यह न बताऊँ कि स्थिति को देखते हुए मुझे कितनी उम्मीद है तो मैं गलती करूंगा। मेरे कानों तक यह बात पहुंची है कि लोगो में इस बात को लेकर गम और गुस्सा भरा हुआ है कि मैं उनके घरेलू मामले में टांग अड़ा रहा हूँ। इससे तो यही साबित होता है कि हम सबने वातावरण को जितना बुरा समझा था वह उमसे कहीं अधिक विपाक्त हो चुका है। जो हो, पर मुझे आशा है कि हम लोग जिन तारीखों को जान का विचार कर रहे हैं वे तुम्हें सुविधाजनक रहेंगी। यदि तुम चाहें कि इस प्रायाम में थोड़ा बहुत हेर फेर हो तो मुझे लिख देना।

अपने पत्र के एक परे में तुमने सघ-व्यवस्था के बारे में लिखा है कि बापू को ऐसा नहीं लगता कि इस मामले को लेकर अभी कोई समझौता हो पायेगा। मैं नहीं जानता कि बापू की ऐसी धारणा क्या है। अंतर्राष्ट्रीय स्थिति दिनों दिन इतनी जटिल होती जा रही है और इतनी तेजी से बदल रही है कि मुझे लगता है कि यदि समझौता का कोई मवसे अच्छा अवसर है तो वह यही है। पर सबसे बड़ी कठिनाई हिन्दू मुस्लिम समस्या को लेकर है। वास्तव में यह समस्या उत्तरात्तर अधिक विकट होती जा रही है। मेरी राय में जवाहरलालजी की प्रेस मुताबात का जिना ने जो उत्तर दिया है वह कटुता से ओत प्रोत है। शायद सबसे अच्छा यही

रहेगा कि खामोशी अख्तियार की जाए और कुछ न किया जाए। दा सघ क्या न हो? एक हिन्दुआ का दूसरा मुसलमानो का? मुस्लिम सघ मे वे प्रात और अबल रहे, जहा मुमलमान आवादी दा तिहाई से अधिक हो। दसमे कश्मीर-जसी रियासतें भी शामिल रहें जहा मुमलमाना की बहुतायत है। अवशिष्ट भाग म हिन्दू सघ रहे जिसम रियासतें भी शामिल रहे। ऐमा करन स हम कम-स कम यह युद्ध से तो बच जायेंगे। हमारे रास्ते मे जो सबसे बड़ी रुकावट है वह हिन्दू मुस्लिम-समस्या ही है। हमारी प्रगति म अत्रेज बाधा नहीं डाल रहे हैं हमारी आपस की कलह ही बाधक बन रही है।

शरत बाबू से बात करने के बाद तुम्हे एक और पत्र लिखूंगा।

तुम्हारा

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

जुह

४

कनकता

१२ जनवरी १९३८

प्रिय महादेवभाई

शरत बाबू मुझसे मिलने आए थे। उनसे अच्छी खासी बातचीत हुई पर मैं यह पता नहीं लगा सका कि बापू ने उनसे क्या क्या कहा। उन्होंने बताया कि बापू उनकी इस बात पर राजी नहीं हुए कि ननिनी को किसी तरह की शर्तों में बाधा जाय। जो भी हो, उनमें कांग्रेस में वापस आने को कहा जाय और यदि वह आने को तयार न हों, तो अपने-आपको गलत स्थिति में ले जाएंगे। इतना कह चुकने के बाद उन्होंने मुझसे सलाह मागी कि क्या वह इस तरीके से बातचीत शुरू करें? मैंने कहा कि 'न० राय और नलिनी बाबू दोनों ही बापू से मिलने वाले हैं। इसलिए बापू इस ढंग की बात करना उचित समझेंगे तो करेंगे ही। यह

वात शरत वापू को भी पसन्द आता है। जब मब-बुछ वापू के व्यक्तित्वगत विचार विमर्श पर निभर है।

तुम्हारा,
पनश्यामनाम

श्री महादेवभाई देसाई
मा० महात्मा गांधी
जातकी कुटीर
जुहू बम्बई

५

मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रात)

केवल साइ लोदियन और अग्रगण्य राजनेताओं के लिए

मेरी आकांक्षा है कि कांग्रेस को ही एकमात्र ऐसी संस्था माना जाये जो सरकार का सफलतापूर्वक प्रतिरोध कर सकती है और अपने उद्देश्य को सिद्ध कर सकती है। एकमात्र यही एक गंभीर संस्था है जिसने आरम्भ से ही अल्पसंख्यक जातियाँ और वर्गों का प्रतिनिधित्व किया है।

यदि ब्रिटिश सरकार कांग्रेस की इस अद्वितीय स्थिति को मान ले तो वह जब तक संघ-यवस्था के बारे में कांग्रेस का समाधान नहीं करती तब तक इस विषय को स्थगित रखे। यदि ब्रिटिश सरकार भारतीय नरेशों को संघ में सम्मिलित करने से पहले उनकी रियासतों की जनता का निर्वाचन के द्वारा प्रतिनिधित्व देने के सिद्धांत का मान ले तो कांग्रेस का समाधान करना उनके लिए कठिन नहीं होगा। यदि संघ-यवस्था को बलात् लादा गया तो मेरी मसला में हद दर्जे की विकृत स्थिति उत्पन्न होने की आशंका है।

यदि इसको मानकर वर्तमान बठिनाई का निवारण कर दिया गया तो भी विधान का प्रतिरोध बना रहेगा। सच्ची शांति तभी स्थापित हो सकती है जब वर्तमान विधान का स्थान विधान-सभा द्वारा रचित नये शासन विधान को दिया

जाय। हर हालत में यदि काग्रस के वास्तविक दर्जे को पूरी तरह स्वीकार कर लिया जाएगा तो बाकी सारे काम आसान हो जाएंगे।

मेरी यह अपनी सम्मति है जिसकी चचा मैंने अपने किसी भी सहयोगी के साथ नहीं की है।

मो० व० गांधी

सेगाव

२० १ ३८

६

२६ जनवरी, १९३८

प्रिय महादेवभाई

नलिनी की वधा यात्रा के विषय में हि दुस्तान स्टड्ड ने जो कहा है वह भेजना हूँ। आज सध्या-समय सुभाष और शरत से मिल रहा हूँ वल फिर पत्र लिखूंगा।

काग्रेस मन्त्रिमन्त्राला की स्थिति के सदर्भ में वापू का ध्यान एक बात की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ। यद्यपि मन्त्रिया ने तो यह नहीं कहा है तथापि काग्रेसिया ने अनेक स्थाना पर अपन वक्त्र या मे इस बात का खाम तोर से जिक्र किया है कि काग्रेस मन्त्रिया का कॅम्पिया की रिहाई के मामले में पूरी स्वतंत्रता नहीं है। डा० गोपाचंद भागवत से पजाव के मुख्य मंत्री ने यह कहा कि काग्रेसी मन्त्रिया तर न यह बात स्वीकार की है कि कदियो की रिहाई के मामले में उह पूरी जाजाती नहीं है तो डा गोपाचंद ने उत्तर में कहा कि पजाव के मुख्य मंत्री ने अपना बेवसी की बात स्वीकार नहीं की है इसलिए उह कदियो को रिहा करने में कोई अउचन नहीं होनी चाहिए। इस दलील के खोखलेपन की बात छोड भी दी जाय तो भी ऐसी स्वीकाराक्ति के द्वारा हम स्वय अपनी प्रतिष्ठा का ठेस पहुचाते हैं और लोग-व्याग समझते हैं कि हम लोग गवर्नर के हाथों में कठपुतली मात्र हैं और स्वय कुछ अधिक करने में असमथ हैं कपानि हम वमा करन का अधिरार नहीं है। एसी स्थिति में यह प्रश्न उठता है कि यदि हम अधिक कुछ नहीं कर सक्त तो कुर्सी से क्या चिपके हुए हैं? अभी तर मन्त्रियो ने यह बात

स्वीकार नहीं की। पर यदि हम कठपुतली होने की बात बार-बार दोहरायेंगे तो कठपुतलीपन की परम्परा बन जाएगी। भरे विचार में हमारी प्रतिष्ठा के लिए इससे अधिक सापातिक और कोई बात नहीं हो सकती। जब राजाजी ने दिल्ली में कहा कि गवर्नर हस्तश्रेय नहीं कर रहा है और सरकारी अमला पूरा सहयोग दे रहा है तो उन्होंने मर्यादा का परिचय दिया। हम एकमात्र ऐसे ही रथ के द्वारा इच्छित परिपाटी को जन्म दे सकते हैं।

तुम्हारा

घनश्यामताम

श्री महादेवभाई देमाई
मारफत महात्मा गांधी
सेगाव वर्धा (मध्य प्रांत)

७

कलकत्ता

२८ जनवरी १९३८

प्रिय महादेवभाई

हम लोगो ने कई बार बातें की। पहली बार जो बातचीत हुई उसमें शरत बाबू सुभाष बाबू नलिनी बाबू डा० राय और मैं खुद शरीक थे। दोनों ओर से काफी गरमा गरमी रही। सुभाष बाबू ने जो-कुछ कहा उसका निचोड़ यह है नलिनी के साथ सहयोग सम्भव नहीं है। उन्होंने कांग्रेस के साथ विश्वासघात किया है। मैं अपनी बात मूल ही भुला दूँ पर जब तक वह मन्त्रिमंडल में रहेंगे मेरा उनका कोई सामाजिक सरोकार नहीं रहेगा। नलिनी बाबू ने भी घमकी दी। इसके बाद बठक स्थगित कर दी गई और यह तय हुआ कि सबसे पहले नलिनी बाबू सुभाष बाबू से शांतिपूर्वक बातचीत करें और उसके बाद नलिनी बाबू अकेले में कवल सुभाष बाबू से बात करें। इस बीच मैंने कई एक मित्रों को सुभाष बाबू में अकेले में बात करने को राजी कर लिया। परिणामस्वरूप तनाव में शिथिलता आ गई और मन का भल धुनने लगा। आज प्रातः काल सुभाष बाबू से बात करके मैंने देखा कि स्थिति बदल गई है। सुभाष बाबू बोले 'जब नलिनी

वापू अतः म काग्रेस में आन को तयार हैं तो मैं पुरानी बातें भुला दूंगा। उन्हें एक मौका दूंगा उनके साथ अच्छे संबंध स्थापित करने की चेष्टा करूंगा और उनका भक्तिवत् वाय म भरमक सहायता करूंगा। 'तुम्हें इससे अधिक की आशा नहीं करनी चाहिए। अब तुम्हारा पाम पत्रा का ताता लग जाएगा। इस बारे में सब कोई रिखेंगे—क्या नलिनी वापू, क्या डा० राय और क्या सुभाष जानू। सुभाष वापू शायद तार भेजकर ही रह जायेंगे। पर जो कुछ हुआ, बड़ा आनन्ददायी रहा। या इस कलहप्रिय लोग में खलपत्नी मच गई है। यहां कई एक एस सागा का दल है, जिसे लडाईं झगड़े का अंत होना प्रिय नहीं है। पर मुझ यकीनी है कि य लोग अपनी कुचेष्टा में सफल नहीं होंगे और जब वापू यहां आयेंगे और इस मेल मिलाप की नवजाग्रत भावना का मूर्तरूप देंगे तो जगल कर्म की बात सोचना सम्भव होगा। वह अगला कदम यही है कि हिन्दू मुस्लिम एकता कैसे हो, इस दिशा में भी मैंने आशा नहीं छोड़ी है।

तुम्हारा
धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
भा० महात्मा गांधी
सगाव वर्धा

८

७ फरवरी १९३८

प्रिय महादेवभाई

आशा है कायकारिणी की चहल पहल का वापू के स्वास्थ्य पर कोई हानिकर प्रभाव नहीं पड़ा होगा।

आज सुनह वादसराम से मिला था। उन्हें लाड लोदियत ने सध-व्यवस्था पर वापू का फामला दे दिया था। वादसराम का फामूल के उद्देश्य के प्रति पूर्ण सहानुभूति है पर वह यह नहीं समझ पा रहे हैं कि वह नरेशो को निर्वाचन प्रणाली जमाने के लिए वौन से अधिकार से काम लेकर राजी कर सकते हैं। विघ्न म कवन नामजन्गी की व्यवस्था है और नरेशो को निर्वाचन प्रणाली अपनाते के लिए राजी करनेवाली कोई चीज नहीं है। मैंने वादसराम का ध्यान सर सा० पी०

रामास्वामी अय्यर के उस भाषण की ओर आनर्पित किया जिममें उन्होंने सारा उत्तरदायित्व सर्वोपरि सत्ता के ऊपर रखा है। वाइसराय उनके इस बयान में सहमत नहीं हुए। ब्रिटिश अधिकारी देशी रियासतों में प्रजातन्त्रीय व्यवस्था लागू किये जाने के विपक्ष में बदायि नहीं हैं पर सर्वोपरि सत्ता नरेशों को कोई प्रगतिशील कदम उठाने को बाध नहीं कर सकती। भारतीय नरेशों ने तो सध-व्यवस्था में शरीक होने में अभी सही ना हुवाला शुरू कर लिया है। वाइसराय ने अभी इस विषय पर नरेशों से बातचीत नहीं की है क्योंकि बसा करने का यह अर्थ लगाया जा सकता है कि उन पर दबाव डाला जा रहा है। पर यदि उन्होंने नरेशों से निर्वाचनों के माध्यम से प्रतिनिधित्व की बात चलाई तो उनमें यह धारणा बन जायगी कि वाइसराय अनुचित प्रभाव डाल रहे हैं। फलतः उन्हें वापू के सुझाव से असमजस हुआ। उन्होंने कहा कि जैसे भी सध व्यवस्था को मूल रूप देना दु माध्य हो रहा है। यदि उनमें केवल प्रजातन्त्रीय ढांचे को स्वीकार करनेवाली दशो रियासतों को ही लेन का निणय हुआ, तो उसके लिए अधिक नहीं तो कम से-कम २० वर्ष तक रचना पड़ेगा। केवल वावणकोर ममूर और वाकोन पर ही दृष्टि जमाये रखने से काम नहीं चलेगा। पिछड़ी हुई रियासतों की बहुतायत है। क्या वे प्रजातन्त्रीय व्यवस्था लागू किये जान पर सहमत होंगी? वाइसराय को लग रहा है कि इस समस्या का हल तलाश करना उनके बूते के बाहर है। बस, अभी तो यही प्रतिश्रिया है।

तुम्हारा
धनश्यामदास

महान्वेवभार्द्देमाई
मेगाव वर्धा

६

गोपनीय

२० फरवरी १९३८

पूज्य वापू

जब मैंने वाइसराय से सध व्यवस्था के बारे में बात की तो साथ ही-साथ राजनतिक बलिया का भी प्रश्न उठाया। वास्तव में तिल्ली के लिए रवाना होकर मैं लखनऊ में उतर पड़ा था जहां मैंने पतजी से विस्तारपूर्वक बातचीत की।

दिल्ली पहुंचकर वाइसराय स भटकरत ही मैंने उनके सामने इम विषय पर पतजी का दृष्टिकोण रखा। पतजी ने अपने वक्तव्य में जो दलीलें पेश की थीं मैंने वाइसराय के सम्मुख पेश कीं। मैंने उन्हें बताया कि पतजी जानते हैं कि वाइसराय का हस्तक्षेप किस रूप में आयेगा। पतजी मोठे पर मौजूद आत्मभी व साथ बहस कर सकते हैं पर इतनी दूर बैठे वाइसराय को विश्वास दिलाना क्योकर सम्भव होगा? मैंने अपनी ओर से यह भी कहा कि उह सी० आई० डी० तथा सनिक सूत्रों से जो अतिशयांकितपूण खबरें मिलती हैं उनकी ओर ध्यान देकर हस्तक्षेप पर उतार होने के बजाय पतजी की सहायता करना श्रयस्कर होगा। पतजी ने मुझसे जो बातचीत की उसके दौरान उन्होंने इस आशय भी सकेत किया था। वाइसराय सारी बातें नोट करत गये, और यद्यपि उन्होंने सघ व्यक्तस्था तथा अन्य प्रसंगा पर दिल खोलकर और सौहार्द के साथ बात की, तथापि राजनतिक बदिया के बार में उनका कहना सिर्फ इतना ही था आपन पतजी का दृष्टिकोण मुझे पूरे तौर से और ज्या का-रयो बता दिया। अब आप पतजी को लिख दीजिए कि वह यह मामला मुझ पर छाड़ दें। यह जाहिर था कि वह इस विषय को चचा करना नहीं चाहते थे इसलिए मैंने भी बात आगे नहीं बढ़ाई। उका विचार सहायक है या विपरीत है यह कहना कठिन है। उस दिन उहे जुगाम था। उसक बाद मैं पिलानी के लिए रवाना हो गया। जब मैं सुना कि दानो सरकारा न इस्तीफा द दिया है मैं तुरत दिल्ली लौटकर लेखवेट में बात की।

मैंने लेखवेट को बड़ा उदास पाया। सारे वाइसराय भवन पर उन्मासी व बादल छाये हुए थे। उसने आश्वासन दिया कि वाइसराय की सकट पना करन की रच मात्र भी इच्छा नहीं है। विरोध की भावना का सबदा जभाव है। वाइसराय ववल इतना ही चाहत है कि प्रत्येक कदो व मामल पर उमक गुण जवगुण के आधार पर गौर किया जाय वह एक्साय सबकी रिहाई व खिलाफ है। पतजी ने इस मुद्द का अपने वक्तव्य में समुचित उत्तर दे दिया है पर वाइसराय के रख में परिवर्तन नहीं हुआ है। मैं स्पष्ट देख रहा था कि गलती हुई है मैं यह भी दख रहा था कि इस पकट का न तो किसी ने योता दिया है न उसकी इन लोगों को जाशका ही थी। हमने इस प्रसंग की चर्चा के दौरान इस गतिराध का अत दूढ़ निवालने का प्रयत्न किया जो फामूला ग्राह्य लगा वह इस प्रकार था

- १) रिहाई प्रत्येक मामले व गुण दोष का निणय करने के बाद की जाय।
- २) बदला लेने की भावना से काम न लिया जाय बल्कि हरएक मामल पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जाय।
- ३) कदियों का अतीत चाह जो रहा हा, उनकी रिहाई के बार में निणय

२५ फरवरी १९३८

पूज्य बापू

जब मुझे पिलानी म आपका तार मिला कि तुरत दिल्ली लौट आऊ तो मैं चिंता मे पड गया। मुच लगा कि ममझोते की बातचीत के सदभ म मैं जो-कुछ करता आ रहा हू उसमे म कोई विशेष बात शायद आपकी रुचि के अनुकूल नहीं हुई हागी।

देवदास गाडी नहीं पकड सक थे व परसो के बजाय कल पहुचे। तब तब मैं आपके सदेने के बारे मे विलकुल अघकार मे रहा। इसलिए मैंने वसी परिस्थिति म स्वतंत्र रूप से जो-कुछ करना ठीक समया सो किया। अब मैं कुछ विस्तार के साथ बताता हू कि मैंने क्या-क्या किया।

दिल्ली आते समय माग म हिन्दुस्तान टाइम्स की एक प्रति घरीण और तब कही मुझे पहली बार पता लगा कि वाइसराय का वक्तव्य प्रकाशित हा चुका है। मैं वक्तव्य दो बार पढ गया। पढकर मुझे बडी निराशा हुई। मैं उससे कहा अधिक अच्छी चीज की आशा लगाये बठा था पर मैं वाइसराय के स्वभाव से परिचित हू। इसलिए मुझे लगा कि वक्तव्य म जो कुछ कहन स रह गया है वह जान-बूचकर नहीं छोडा गया है। वक्तव्य की भुक्ष पर क्या प्रतिक्रिया हुई, सो मैंने तुरत लेखनीबद्ध कर डाला और उसे वाइसराय के पास भेज लिया। उसकी नकल आपके पास भेज रहा हू। यह सब मैंने आपके सदेश मिलने तथा आपकी प्रस मुलाकात का ब्योरा जानने क पहले ही किया था। इससे आपका जाहिर हा जायगा कि मैंने अपने विचार अपने ही ढग मे प्रस्तुत किये। कदिया की ब्यक्तिगत जाच-पडताल के बारे म मेर विचारो को लेकर आपकी आशका गलतफहमी से उत्तन हुई दीखती है।

कल सुबह पतजी का टेलिफान भी आया। उन्होंने वाइसराय क वक्तव्य पर मेरी ही तरह निराशा ब्यक्त की। पर मैंने उनस कहा कि स्थिति से निपटन के लिए सबसे अच्छा तरीका यही है कि वह स्वय अपने गवनर क साथ बातचीत करें। वाइसराय का वक्तव्य अच्छा रहा या बुरा रहा अब वह वस्तुस्थिति बन चुका है इसलिए उसम जा कमी रह गई है उसे पूरा करना गवनर के हाथ म है। मैंने उह यह भी वचन दिया कि मैं वाइसराय से गवनर को सहायतापूण निर्देश भिजवा दूगा। पतजी ने कल दोपहर क बारह बजे गवनर से भेंट की और १ ६८

यह कहते प्रमत्तता होती है कि यह आशवा करन का कोई कारण नहीं है कि मंत्रिया के उत्तरदायित्वपूर्ण बंध काय म हस्तक्षेप किया जायगा। वास्तव म हम दाना ही स्वस्थ परिपाटी चलाना चाहते है और हम दाना का ही आशा है कि दाना पन्ना की सदभावना से हम इस लक्ष्य सिद्धि म सफल हगि।

मैंन आज सुबह फोन पर लेखवेट को यह मसौदा पढ सुनाया। उस यह ठीक जचा और मेर सुझाव पर उसने इसे गवनर क पास भेज दिया। उसने मुझे यह भी बताया कि गवनर का रुख सहानुभूतिपूर्ण रहगा कहा कि बल रात ही उसकी गवनर स फोन पर बात हुई थी।

आज प्रात काल ११। बजे पतजी न गवनर स भेट की और १२ बजे वापस आकर मुझे फिर फान किया। उहाने मुझे बताया कि बदिया का लवर अथवा उनकी व्यक्तिगत जाच-पडताल को लवर कोई कठिनाइ उपस्थित नहीं हागी। साथ ही पतजी ने गवनर स यह आश्वासन मागा कि भविष्य म किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं हागा। इसका हेग ने यह उत्तर लिया कि एसा करने से पद-ग्रहण से पहल की स्थिति हो जायगी। पतजी न निश्चित आश्वासन तलब किया कि विशेषाधिकारा का कभी भी प्रयोग नहीं किया जायगा। पतजी ने मुझे फोन पर बताया कि उनकी यह निजी धारणा है कि इस समय जा मामला मामन मौजूद है उम लेकर कोई कठिनाई उपस्थित नहीं होगी पर शासन विधान-सम्बन्धी मामले पर वह गवनर स काइ आश्वासन प्राप्त नहीं कर पाय। पतजी न भरी सलाह मागी। मैंन उनस कहा कि उहोन बापू का वक्तव्य जिस रूप म ग्रहण किया है उस रूप म मैंने नहीं किया। कांग्रेस ने यह अच्छी तरह जानत हुए पद ग्रहण किया था कि विशेषाधिकार मूतरूप म विद्यमान है। पर कांग्रेस को गवनर जनरल तथा भारत सचिव दाना ने ही एस आश्वासन लिय थे कि दनिक शासन प्रबध को लेकर किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जायगा। मैंन पतजी को बताया कि मेरी राय म वाइसराम अथवा गवनर अपने वचनो से कदापि पीछे नहीं हटेंगे। मैंन पतजी स कहा कि वह गवनर से दोटूक बात करें, पूछ कि क्या वह दिग्गय वचन स मुकरन का विचार कर रह है। साथ ही मैंने पतजी स यह भी कह दिया कि यदि वह ऐसा कोई आश्वासन प्राप्त करने की हठ पकड़ेंगे, तो वैसा आश्वासन उहें मिलगा नहीं। तब सकट की नौबत आ जायगी और उसका दोष हमारे माथ मढा जायेगा। यह कहा जाने लगेगा कि कांग्रेस सकट पैदा करन पर तुली हुई है। वास्तव म कुछ क्षेत्रा मे ता यह अभी स कहा जा रहा है कि वतमान सकट कांग्रेस के नये सभापति ने पदा किया है, कदिया की रिहाई की बात तो एक बहाना मात्र है। मैंन उह यह भी बताया कि इसके विपरीत यदि

पतजी मर मसौद के आधार पर गवर्नर की सहमति सहित एक वक्तव्य जारी कर दें और यदि उसका तत्काल बाद बंदी लोग रिहा कर दिये जाएं तो कांग्रेस की स्थिति मजबूत हो जायेगी। यह सकट बढ़िया की रिहाई के प्रश्न का लेकर आया और मंत्रियों की व्यक्तिगत जाच पड़ताल का लेकर मंत्रियों के परामर्श को गवर्नर द्वारा मायता देने के कारण टला ऐसा सबको लगेगा। हमारा पक्ष में एक स्वस्थ परिपाटी की स्थापना होगी। पर यह बात असदिग्ध है कि यदि फिर कभी मंत्रियों के वधानिक कायम हस्तक्षेप हुआ तो मंत्रियों का त्यागपत्र देने का वधानिक अधिकार रहेगा। यह बात कि यह वक्तव्य गवर्नर की सहमति से दिया जा रहा है बजा हस्तक्षेप के खिलाफ एक प्रकार का समझौता बन जायगा। पतजी बोले कि वह भरे कथन से सहमत हैं पर यह नहीं जानते कि यदि उन्होंने वसा वक्तव्य दे डाला, तो बापू को उनका यह कायम कसा लगगा। मैंने कहा कि जहां तक मैं समझता हूँ उनका यह कायम बापू का नापसंद नहीं होगा पर साथ ही मैंने यह भी कह दिया कि उन्हें इसका स्वयं ही निणय करना चाहिए। यदि उन्हें ऐसा करना ठीक लगे, तो वह तदनुसार कायम करें। मैंने पतजी को यह भी सुझाया कि यदि उन्हें किसी तरह की शका है तो महादेवभाई को फोन करके उनसे बातचीत कर लें। पतजी बोले कि बात और तूल पकड़ेगी और वह इस मारामामने से ऊबने लगे हैं। फलतः मैंने पतजी को अपनी जिम्मेदारी पर यह सलाह दी कि वह मर मसौदे का समझौता का आधार बनाकर गवर्नर की सहमति से वक्तव्य जारी कर दें। मरी समझ में यह यथेष्ट लगा और देवदास ने भी सहमति जाहिर की। इसके बाद मैं लेखक से मिला। उस भी हेतु का सन्देश मिल चुका था। हंग का यह देखकर आश्चर्य हुआ कि पतजी उही प्रश्न पर उसके साथ बात कर रहे हैं जो पद ग्रहण करने का निणय लेने से पहले निपटार्य जा चुके थे। लेखक ने कहा कि मैंने उसे जो मसौदा दिया था उस बातचीत का आधार बनाकर गवर्नर तथा उसके मंत्री उसमें इंगित तर्कों पर एक संयुक्त वक्तव्य जारी कर दें।

पर नोटवर मैंने पतजी को फिर फोन किया और उनसे कहा कि गवर्नर से मिलकर पहले उस नपा-तुला आश्वासन तलब करें कि क्या वह मंत्रियों का उनका कायम भरमक स्वतंत्रता देने को प्रस्तुत है और उसके बाद उस न गामन वह मसौदा रखें। उन्होंने वैसा ही करने का वादा किया।

मुझे मालूम हुआ है कि इसके बाद पतजी ने बल्लभभाद से बात की। उन्हें भी यह बात लगी। परिणामस्वरूप मुझे सध्या के ४ बजे पतजी का सन्देश मिला कि सारा मामला तय हो गया है और वह वक्तव्य जारी करने जा रहे हैं। इसके बाद

वक्तव्य प्रकाशित हुआ जो आप देख ही चुके हैं। मर विचार में मन इस मामले में जो कुछ किया उसकी ठीक ठीक जानकारी इस पत्र के द्वारा मिल जायगी।

जब आपके पत्र के बारे में दो बातों को लेकर आपका मुझसे मतभेद है। पहली बात यक्षितगत जाच पडताल की है। मुझे कहना पड़ता है कि आपको भ्रम हो गया। मैं वाइसराय को जो नोट भेजा तथा बाद में जो जाच कदम उठाये गये उनसे स्पष्ट हो जायेगा कि मैं बराबर यही कहता जा रहा हूँ कि स्वयं मंत्री ही मामला की जाच पडताल करेगा। रही दूसरी बात, अर्थात् कोई अडचन पदा हान की स्थिति में सारा मामला आपको ऊपर छाड़न की बात, सा जब तो इन प्रश्न का निपटारा हो ही चुका है क्योंकि सभी विदिया का रिहा कर दिया जायेगा। पर जब मैं यह सुझाव दिया था तो मुझे लगा था कि मैं एक स्वस्थ परिपाटी को जन्म दे रहा हूँ। यदि युक्त प्रात और बिहार के दण्डित कदिया का मामला आप पर छाड़ा जा सकता था, तो बंगाल और पंजाब के कदिया का मामला भी आप पर छाड़ा जा सकता था। पर जब यह प्रश्न असम्बद्ध बनकर रह गया है। महादेवभार्द्वा के पत्र का उत्तर मैं पिलानी पहुँचकर दूँगा।

इस पत्र के साथ भजी एक कटिंग की आर आपका ध्यान जाबृष्ट करना चाहता हूँ। यदि सुभाष बाबू अपेक्षाकृत अधिक समय से काम नहीं लेंगे तो वह बंगाल में आपका कार्य दूभर कर देंगे।

स्नेहभाजन,

घनश्यामदास

महात्मा मा० क० गांधी

वर्धा

वर्धा

१४ ३ ३८

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका लम्बा पत्र यथासमय मिल गया था पर आपने उम्मीद कहा था कि आप मेरे पत्र का जवाब देनेवाले हैं इसलिए मैं आपको लिखने में पटल आपके पत्र का

इतजार कर रहा था। आपका पत्र बहुत सुन्दर रहा उसम आपने अपनी स्थिति अच्छी तरह स्पष्ट कर दी। पर उससे पहले के आपके पत्र न बापू की धारणा को उचित सिद्ध कर दिया था, इसलिए उन्होंने तुरत आपका ध्यान आकर्षित करना अपना कर्तव्य समझा। वह तार मैंने नहीं भेजा था वह तो खुद आपके सदश-वाहक की सूझ थी। उमने मुझसे पूछा, "क्या तार भेजू ?" मैंने जवाब दिया, "यानी कि आप बापू का जरूरी पत्र लेकर दिल्ली जा रहे हैं। वह मेरी बात गलत कसे समझा, सो मेरी समय मे नहीं आ रहा है। पर आपका अपनी जोर बापू की सम्मति मे जो अंतर प्रतीत होता है, उससे आपको व्यस्त नहीं होना चाहिए। ऐसा अंतर ता रहेगा ही (वास्तव मे वाइसराय के कर्तव्य स आपके ग्य के बारे मे बापू की धारणा की पुष्टि हुई)। पर अत भला सो सब भला।

पता नहीं बापू कलकत्ते मे आपकी उपस्थिति चाहेंगे या नहीं। यदि चाहेंगे तो मैं आपको कल तार भेज दूंगा। आज बापू से नहीं मिल रहा हू।

जमनालालजी क तार जोर आपके पत्र मे मनाविनाद की सामग्री जुटाई। मैंने आपका पत्र बापू को पढकर सुनाया तो वह खिलखिलाकर हस पडे। ब्याह शाण तो उत्सव का अवसर प्रस्तुत करता है और जमनालालजी ने आपके लिए कौतुक का साधन जुटाया इसके लिए आपको उनका कृतज्ञ होना चाहिए। पर इसकी बजाय आपने बेचारे की भत्सना की और उसे कांग्रेस कबिनेट मे स्थान पान के अयोग्य ठहराया। अगले वष वह कांग्रेस का सभापति होगा और आपको खबर भी न होगी। तब ऐसी नौबत भी आ सकती है जन आप प्रतिनिधि मंडल लेकर सभापति महोदय की हाजरी बजायें।

दामोदर का कहना है कि मठजी न वह तार भेजने को कहा था (मैं उस दुनहन के नाम से पुकारना ही पसंद करता हू)। इम महान सेक्रेटरी न अपनी ड्यूटी अपने मातहत की मौप दी और इम मातहत को यह तब पता नहीं था कि 'दुनहन' दुलहे मे कुछ अंतर है। मैंने तार और आपकी चिट्ठी सभालकर रख छोटी है। जब डेनाग मे जमनालालजी मे भेंट होगी तो उन्हें दिखाऊंगा। सयोग की बात है कि जिस समय मैंने आपकी चिट्ठा बापू को दिखाई उम समय दामोदर अपनी पत्नी के साथ सेगाव मे ही था। बापू ने मुझमे पना लगान का कहा कि यह सब कैसे हुआ। मैंने कहा दामोदर अपने दुलह के साथ यानी मौजूद है। उमसे गारी बान मानुम हो जायगी।

सप्रेम,
महादेव

१२

१७ मार्च, १९३८

प्रिय महादेवभाई

पत्रा में प्रकाशित इस सवाल से बि यात्रा के परिणामस्वरूप बापू का खत पाप ऊचा हो गया है मुझे कुछ बेरानी अवश्य हुई है पर मुझे आशा है कि यह जरूरी ही ठीक हो जायगा।

मैं तुम्हें बहुत-बहुत लिखना चाहता था पर फिर मैं यह तय किया कि इन मामला में व्यक्तिगत रूप में विचार विमर्श की जरूरत है। अगर तुम मुझे यह बता दो कि बापू का क्या समय है तो मैं तय करूंगा कि उनसे मिलना किस तरह सम्भव होगा। हरिजा-संघ की वार्षिक बैठक के अवसर पर बहुत गाने बाना की चर्चा हुई थी और जो निणय लिये गये थे उन पर बापू की स्वीकृति जरूरी है।

आशा है बापू अपने मिशन में प्रगति कर रहे हैं। पर मुझे लगता है कि इस बार उनकी यात्रा इतनी सफल नहीं होगी जितनी पहले हुई थी। वातावरण अधिक अच्छा नहीं है और जो कुछ हो रहा है उसके लिए मैं मित्रों को ही अधिक दोषी मानता हूँ। कांग्रेसी नेताओं ने बंगाल का वातावरण सुधारन के निमित्त कुछ नहीं किया।

सप्रम,

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

१३

कलकत्ता

२० अप्रैल १९३८

पूज्य बापू

मर सिकन्दर हयात का आज महा मुझसे मिलने आये थे। शायद वह कभी आपसे भी मिलें। गद्दीदगज के मामले को लेकर उन्हें बड़ी चिंता है वह

साम्प्रदायिक समझौते व निग भी आतुर हैं, पर वह खुद कुछ कर सकेंगे ऐसा मुझे नहीं लगता ।

उन्हें जिना की स्पीच अच्छी नहीं लगी । स्वयं मेरी धारणा है कि जिना न बसी स्पीच अपने अनुयायियों पर और भी अधिक प्रभाव डालने के लिए दी थी । उमें आपमें मिलना है इसलिए वह और भी शान गाठ रहा है । मेरी अपनी राय तो यह है कि उससे भेंट करके स्थिति में कोई सुधार होनेवाला नहीं है । कुछ भी कहिए मुझे यह आदमी कभी पसंद नहीं आया । वह मिथ्या गव से भरा हुआ है और कूटनीति में तो वह माहिर है । मेरी यह भी धारणा है कि जब उसका प्रभाव घटने लगा है । मुसलमानों में समझन का अभाव है पर हमारी भी तो यही कमजोरी है । यदि मुसलमान एवमत होते, तो आपका उनसे बात करना कुछ फलप्रद भी होता, पर इस समय तो जिना के लिए भी कुछ करना बठिन प्रतीत होता है ।

मैं आपसे यह इम्तिनान निग रहा हू कि आपमें वह मितनवाला है ।

स्नेहभाजन
घनश्यामदास

पूज्य महात्माजी
सेवाव

१४

भाई घनश्यामदास

तुमारी बान समझा हू । ठीक भी । सिर्फ आर्थिक दृष्टि को ही देखते हुए अवश्य अपनी सम्मति दो । मैंने तो इस दृष्टि से कहा कि यदि वाद में कांग्रेस की सम्मति की आशा की जाय तो वह नहीं मिल सकती है । अतः मैं तो आर्थिक और राज्यप्रकरण में विरोध होना ही नहीं चाहिये । दाना में अभेद है । राज्यकर्त्ताने हमको यह नीति का पाठ दिया है । ग्राम शिक्षण के बार में मुझे ५००० की दरकार होगी । शायद दत्तने ही उद्योग सघ के लिये । हरिजन सेवक सघ का तो है ही । इस बार में और बातें करना होगा । वृजमोहन अच्छे हंगे । कृष्ण की खबर भी अच्छी होगी ।

बापु के जाशीर्वाद

बापू का गस्ती पत्र

आत्म निरीक्षण

पिछली ७ अप्रैल से मैं बहुत व्यथित हूँ। उस रात मुझे एक गंदा स्वप्न आया था। साब हाने से पहले ही मैं जगकर उठ तो गया परन्तु उससे मैं बहुत शर्मिन्दा हुआ। वस अनुभव के बाद उस रात नीद तो शायद ही आई हो। अघात अवश्य हुआ। छत पर जाकर टहनने के बाद कुछ शांति मिली। मन में लगा कि सुशीला जीर प्रभावती जो मेरी घाट के पास ही सा रही थी उनमें सेवा कराने कायक मैं नहीं हूँ। जत प्रायना के बाद या पहले दाना को आपरीती वतानर उनस अपनी सेवा बन्द करने के लिए भी वहा। परन्तु सेवा बन्द करने की बात सुनकर दोना को अच्छा नहीं लगा और बारह घंटे बीतने से पहले ही मैंने अपना विचार बदल लिया जीर सेवा लेना चालू रखा। लकिन मेरी यथा का अंत नहीं हुआ। चादनी रात में लज्जित करनेवाला एक अय प्रकार का अनुभव भी मुझे हुआ, जिसमें मेरी यथा जीर भी बन्द गई। अपने आचरण में कोई बाह्य परिवर्तन तो मैंने नहीं किया पर मन अपनी तयारी मानो अब भी कर ही रहा था।

जिस समय मेरा मन इस भवर में पडा हुआ था मुझे थोड़ा जिना से मिलना था। अतः इस प्रसंग को लेकर कुछ लिखना मुझे आवश्यक प्रतीत हुआ, और मैंने जो कुछ लिखा उसमें भारी शर्मिन्गी का इजहार किया। मैं जात्म विश्वास खो बैठा था। मेरा ब्रह्मचय लज्जित हुआ।

बहुत मथन के बाद कल इस निश्चय पर पहुँचा हूँ कि फिलहाल जब तक दूसरा के ऐसे स्पष्ट दर्शाएत करने को तयार न होऊँ तब तक मेरे लिए ऐसे स्पष्ट की आवश्यकता पड़े ऐसी मात्रा अनिवाय हुए बिना लेना ठीक नहीं। जाहिर है कि विनोद या स्नेह में तो स्पष्ट नहीं ही करना चाहिए। यह परिवर्तन मेरे लिए बहुत महत्व का है क्योंकि मेरा जीवन निर्माण का दारमदार इसी मायता पर है कि निर्दोष स्पष्ट में कोई टाप है ही नहीं। मैंने ब्रह्मचय का व्रत लिया उससे पहले से जीर उनके बाद भी अनेक स्त्रियाँ का स्पष्ट विनोद या स्नेह में किया है। उसका कोई तुरा असर हुआ हा ऐसा मैंने अनुभव नहीं किया, न किसी स्त्री का उससे विकारवश होते ही देखा।

परन्तु ७ अप्रैल के अनुभव के बाद एक शका पदा हो गई—ब्रह्मचय पालन

का सनत प्रयत्न करते हुए भी मैं निर्विकार क्या नहीं हुआ ? मेरी विचार शुद्धि और मन शुद्धि उत्तरोत्तर क्यों नहीं बढ़ी ? दक्षिण अफ्रीका में जितनी निर्विकारता का अनुभव करता था, मैं कह सकता हूँ, उतनी निर्विकारता भारत में अनुभव नहीं कर सका। इसका जवाब कौन दे ?

फिर कब मुझे दीये की तरह स्पष्ट प्रतीत हुआ कि जा छूट मैंने ली उसका अपने साधियों के लिए निषेध करना भी दोषपूर्ण था। इतने वर्षों तक ऐसा मैंने किम तरह किया, यह मैं अभी समझ नहीं पाया हूँ। मुझे लगता है कि इस निषेध में मेरा अभिमान था द्वेष था। यदि मेरा प्रयोग अत्यंत भयानक था तो मुझे उसको नहीं करना चाहिए था, और यदि वह करने योग्य था तो उन्हीं शर्तों पर सभी साधकों को बसा करने का मुझे प्रोत्साहन देना चाहिए था। मेरा प्रयोग वस्तुतः ब्रह्मचर्य के लिए लगाई गई बदिशों का उल्लंघन ही था। ऐसे उल्लंघन का अधिकार तो शुक्रदेव-जैसे मन वचन-कर्म से निर्विकार मुनियों को ही हो सकता है। ऐसी विचारधारा ने ही बल उपयुक्त निणय के लिए प्रेरित किया।

राध्याभार्त्त आदि के जो कट्ट अनुभव सावरमती (आश्रम) में हुए उनके मूल में मेरा प्रयाग ही था ऐसी मेरी मायता है। ऐसे कितने अनाधारा के लिए मेरा व्यवहार जिम्मेदार होगा यह कौन कह सकता है ?

अहिंसा का पाठ पूरणरूप से वही सीख सकता है जो ब्रह्मचर्य का पूरी तरह पालन कर सके। मैं अहिंसा का स्वयं निर्मित सेनापति, अगर ऊपर बताई कसौटी पर खराब न उतरूँ तो फिर अहिंसा पगु चान चले तो उत्तम नयी बात क्या है ? मगर मेरे अपूर्ण ब्रह्मचर्य ने भी अहिंसा की ठीक आधार प्रदान किया है। जब तक मैं ऐसा मानता हूँ तब तक अहिंसा का प्रयोग तो जारी रखूँगा ही। अथ आचरण या व्यवहार भी पिताहाल तो जसा चल रहा है वसा ही जारी रखूँगा। भविष्य मुझे कहा ले जाएगा यह कौन कह सकता है ? मेरी प्रबल इच्छा तो ईश्वर का हाथ में मृत क बच्चे घाग की तरह रहने की ही है कि वह जस चाहे मोड़ दे।

साधियों का यह सब स्पष्ट कर देना मेरा धर्म था। किसी भी साधी को इस पर कुछ कहना हो उसे इसमें कोई विचार दोष प्रतीत हो, तो वह मुझे अवश्य बतायगा ऐसा मैं मान लेता हूँ।

(गुजराती में)

प्रिय महात्माजी

जब मैंने अमृत की रिट्टी मानी और उमम आपकी फिर परिचित विद्यावट की यात्री मिली तो आप स्वयं सात्र मयत हैं कि मैं उम कितनी आतुरता के साथ पटना आरम्भ कर दिया होगा क्योंकि आपकी लिग्राफ्ट मम श्रेष्ठ मित्र वार्डगत महीना गुजर गये थे और आपका छोटे छोटे पुत्रों का दर्शन करन का अप्य तरम रही थी। जत जब मैं विषय वस्तु पर दृष्टि मानी ता मुग रिनाग मनस्ताप हुआ हागा क्मकी आप ही वपना कीजिए (मरी मनाशा जमी थी उमका वणन दम शत्रु के द्वारा वगना शक्य नगी है)। मैं उमस कुछ ही देर पहले टाइम म देखा था कि आप सीमा प्रात की यात्रा पर हे। थधर भारत स जो वागन पत्र आप थ उम आपका वगाल के लीरे का रिस्तृत वणन था, साथ ही वादमराय के साथ आपकी मेट का ब्योरा भी था। दूर रहन पर भी मैं आपकी गति विधि का अधपया करती रहती हू इसलिये मेरे लिए आप जो भार बहन कर रह हैं उसका बोझ पडना स्वाभाविक है। और तिम पर आपका मेरे निजी पचड को लेकर माथा पचचो ररनी पडी। दिन पठ रहा है।

मैं आपसे पत्र का उत्तर देने की चप्या वरगी। वणन कुछ लमरा हो नाय ता धमा वरियगा क्क्याकि मुझे लगना है कि विस्तार क साथ लिखना जरूरी है।

मैं जिस ढग के काम म लगी हुई हू उसका अनूठापन मेरे मित्रो की गहरी रनि का विषय रहा है। इनम स अधिराज जाराम के काम के अभ्यस्त हैं। इसका जय मनी है कि व लिग्रा पनी करन अपने काम को स्थायी रूप देन म विश्वास रखते है इधर व वृत्ते होने नगत हैं उधर उनके शुल्क म भी वद्धि हाती रहती है जिमके पनस्वरूप के कुछ पसा यत्रा मवते हैं कि गहरत के वक्त काम जायेगा भविष्य क वार म चि ना नही ररनी पडगी। शाही श्रम कमीशन क साथ भारत जाने म पहन तत्र मैं भी इस रग के काम काज की अभ्यस्त थी और मेगी ही विचारधारा अपनाए हए थी। तब थी एण्ट्रूज के सम्पर्क म आई और उसके वाट जत्र आप लदन पधारे तो आपके साथ साभात्कार हुआ। तभी से मरी मूल्यकन की प्रणाली बटन गई है। आपको याद होगा कि जब आप लरन स विना हाने लग ये तो आपन कहा था कि 'यहां किसी ऐसे व्यक्ति के मौजूद रहने की जरूरत है जो शोरो शेशो के बीच सौहाट का सम्बन्ध स्थापित करन के

निरा काम करता रहे।' पिछले ६ वर्षों में मैं यही करती जा रही हूँ। मैं समझती हूँ कि यदि मैं यह कहूँ कि जय किसी पुरुष या स्त्री को इस विस्मय का काम करने का अवसर नहीं मिला होगा तो यह वस्तुस्थिति का वर्णन होगा। जब मैं लोगो का वक्तान चगती हूँ कि यह काम मेरे जिम्मे कितने सहज भाव से आया तो वे विमाहित और चकित हो जाते हैं। बहुधा मुझसे इस प्रकार के प्रश्न किये जाते हैं 'आप किस सभ्यता के प्रति उत्तरदायी हैं?' मैं उत्तर देती हूँ, 'किसी भी सभ्यता के प्रति नहीं। मैं तो एनमात्र मिस्टर गांधी के प्रति उत्तरदायी हूँ।' फिर यह सबाल पूछा जाता है 'इस काम का क्या नाम है?' 'यह भारत के लिए किया जाता है?' 'मैं उन्हें बताती हूँ कि आपने जब कभी काम करना होता है तो आप अपने मित्रों से खूब उठाने को कह देते हैं। भरवारे में भी यही बात है। फिर यह जिनामा होती है। आपने यह कैसे मालूम है कि इस काम का सिलसिला जारी रहेगा? फज करिए यदि आप कोई ऐसा काम करवठी, जिसमें भारत की सभ्यता न टूटती तब फिर क्या होगा?' यह प्रश्न भी किया जाता है 'आपकी आयु प्रति पर प्रति बढ़ती जा रही है काम का भार आपने स्वास्थ्य पर प्रभाव पाने रहा है। भविष्य के बारे में कुछ सोचा है?' जादि।

मुझमें जय कभी इस तरह की बातों की जाती है और इन कई वर्षों में अनेक बार की गद है तो मैं अपना दायित्व दृष्टिकोण पेश करती हूँ जो उम्र के साथ साथ दन्तर होता जा रहा है। पहली बात तो यह है कि यह स्थिति जितनी कठिन लगती है उतनी व्यवहार में कभी नहीं रही। वास्तव में, जिस किसी को आपके साथ काम करने का सुयोग मिलेगा, वही इस कथन की पुष्टि करेगा। मुझे आपने एनमात्र यही हितायत दी थी 'भगवान तुम्हारा पथ प्रदर्शन करेंगे' और यद्यपि मैं अनेक समितियों के साथ मिल जुनकर काम करती हूँ मैं स्वतंत्र हूँ और केवल आप ही के प्रति उत्तरदायी हूँ। रहीं रूपय पैसे की बात सा मैं इन लोगों से कहती रहती हूँ कि मैं उतना ही लनी हूँ जितने की मुझ जरूरत है जयवा जितना काम काज जारी रखने के लिए जरूरी है। भारत एक दरिद्र देश है उसके अधिकांश लोग दुर्भिक्ष के शिकार हैं मैं इस देश में इससे अधिक लेने की बात सोच भी नहीं सकती। रही मेरे भविष्य की बात सा उमे लेकर मुझ काइ चिंता नहीं है। आपका जर कभी ऐसा लग कि इस काम की जरूरत नहीं है तो फौरन वना गीजिए और मैं अपना सेवा-काम जारी रखने के लिए कोई और क्षत्र ढूँढ लूगी।

मैं इन लोगों को बताती हूँ कि मैं जिस तरह के काम में लगी हुई हूँ वह मुझे इस विषय में पेशान होने का समय तक नहीं देता।

आप स्वयं ही देखेंगे कि मेरा यह रख मेरे प्रकृतित्ताना के रूप से कितना

भिन है। मेरा खयाल है कि मरे इष्ट मित्र मेरे इस रुख को देखकर मुझे इस स्थिति स त्राण दिलाने की बात सोच रहे हैं। मेरी तो भगवान स यही प्रार्थना है 'हे भगवन ! मरे हितपिया स मेरी रक्षा करो।' आप कहते हैं कि मुचे उनकी भ्रात कायशली का बुरा नही मानना चाहिए। पर अभी तो मैं सचमुच बुरा मान रही हूँ। आपन यह भी कहा है कि मुझ 'जटकल लगाने की वाशिश नही करनी चाहिए कि आपको मरे बारे म किसने क्या लिख मारा है। मैं पता लगाना तो जरूर चाहती हूँ पर आपका आदेश मिर माये। यह सारा विषय घोर अरचिकर और गलत है भले ही यह सब सदाशय से प्रेरित होकर किया गया हो। मैं आपसे सदा स सीधा सम्पक बनाये रखा है यदि मैं किसी विपत्ति मे पडूंगी तो आपको साफ-साफ लिख भेजूंगी। मरा विश्वास है कि आप यह बात जानते हैं।

×

×

×

आपने मेरी आर्थिक स्थिति का ठीक ठीक विवरण जानना चाहा है। मेरी माताजी का १९३१ म दहात हुआ था। वह मर लिए जितना छोड गई हैं उमका वार्षिक ब्याज २० पौंड होता है कभी कभी घटकर १८ पौंड या १७ पौंड भी रह जाना है यह ब्याज की दर पर निभर करता है। बस, इस रकम को छोडकर बाकी के लिए मुझे स्वय परिश्रम करना पडता है। आपने १९३१ म मुझमे पूछा था कि मुझे जीवन निर्वाह क लिए कितने की जरूरत होगी। मैं उत्तर दिया था ५ पौंड प्रति सप्ताह की। आपका यह रकम अधिक लगी होगी पर जिसे लदन जसे नगर म रहना और भाति भाति क प्रभावशाली क्षता म घूमना पडता है उसके लिए यह रकम अधिक नही है। आपने कहा था कि इतनी रकम मर लिए बक म पढूचती रहेगी। एमा ही होता रहा है।

जब मैं आपसे बात की थी उस समय मुचे इस बात का बिलकुल अनुमान नही था कि काम-काज किस रूप म विकसित हागा जयवा उसके सम्पादन के लिए कितने खच की जरूरत होगी। एक बप काम करन के बाद मुझे पता लगा कि कितने की जरूरत पडती है क्योंकि मुझे खच निभाने के लिए १०० पौंड लने पडे थ। १९३२ म जो-कुछ हुआ, आप जानते ही हैं। डेर-की डेर सामग्री जो अय किसी के पास नही आती थी मरे पास जाकर जमा हाती थी और उसका लोका और सस्थाआ म वितरण करना आवश्यक होता था। समुद्री तारो का ताना नगा हुआ था टेलिफोन की घटी बजती रहती थी डाक-खच उत्तरोत्तर बन्ता जा रहा था। मभा-सोसाइटिया म जाना वहा स लौटना भेंट मुलाकात करना— इन सबम काफी खच हा रहा था। ममाचार पत्रा का साप्ताहिक मिल भी बन्द गया था। कोई ऐसा स्थान सुरंगित रखना भी आवश्यक था जहा सामग्री और

चिट्ठी पढ़ी फाइल की जा सके तथा जहा आकर लाग मुझसे मिल जुम सकें। मुझे एक सफेदटरी की बहुत जरूरत थी। मुझे इस बात की विशेष रूप से चिन्ता थी कि कोई सस्था खड़ी न हो जाय। दुनिया सम्प्राथी के भाग से दबी हुई है। मैंने जा सस्थाए विद्यमान थी उन्हीं के माध्यम से काम चलाने का सरल विद्या और अपने-आपको ही सूचना और सम्पर्क का सात बनाए रखना ठीक समझा। मैंने अपने आपको यथासम्भव स्वतन्त्र रखने की चेष्टा की जागरूकता से काम लिया और जरूरत पड़ने पर मौके पर मौजूद रहने की ओर बराबर ध्यान दिया। एक सफेदटरी रखने के बजाय मैंने अपनी बहन रूप का अपना साथ देने के लिए खुशना श्रेयस्कर समझा। माँ के देहांत के बाद रूप खाली हो गई थी जोर मैं जानती थी कि मैं जिम ढग के काम में लगी हुई हूँ उमम उसकी दिलचस्पी होगी साथ ही वह घर का काम काज सभालने में जितनी विफायतशाली बरतगी उतना मेरी जान पहचान की किमी अन्य लडका के लिए सम्भव नहीं हागा साथ ही वह मर सफेदटरी के रूप में भी उपयोगी होगी। पर यदि वह यह सब करेगी तो उसक लिए और कोई काम करना सम्भव नहीं हागा।

आप जेन से थे। उन्हीं निती हेनरी पोलक भारत आनवाल थे। वह मरी असहायवावस्था से परिचित थे। उन्होंने कहा कि यदि मैं अपने मारे खर्च का तख मीना तयार करके उन्हें देता वह भारत पहुँचकर इस सबध में कुछ करेंगे। मैंने कहा, १० पौंड यथेष्ट हाग। मुझ बाद में पता चला कि यह रकम प्रति मास मेरे बक में मेरे खाते में जमा होनी रहेगी। मैंने जो १०० पौंड निकाल रखे थे वे मुझे अदा कर दिये गये। जा-कुछ खर्च हुआ है उसका पाई-पाई का हिमाब सुरक्षित है और मैं स्वयं अपने सतोंप के लिए हेनरी पोलक से इस हिमाब विताव पर बीच-बीच में निगाह डीगने के लिए कहती रहती हूँ।

सारा खर्च कुछ कुछ इस प्रकार किया जाता है

मैंने जो कमरा अपने काम के लिए ले रखा है, उसका वार्षिक भाडा २५ पौंड होता है। अपनी बहन का मैं १ पौंड प्रति मन्ताह देती हूँ। (यदि कोई सफेदटरी रखती तो इसका तिगुना देना पडता।) साहित्य, जिन मस्याआ के माध्यम से मैं काम करती हूँ उनका वार्षिक खर्चा, ग्राक खर्च, टेलिफोन समुद्री तार आदि में बाकी रकम खर्च जाती है। कभी-कभी इन सबमें अधिक खर्च हो जाता है पर मैं काम चला लेती हूँ। उदाहरण के लिए, जब मरी एक सहेली का आस्ट्रेलिया में मरी आर्थिक स्थिति का पता चला तो उसने मेरे छुट्टी जाने के लिए कुछ रकम भेजी। छुट्टी कसे मनाई जाती है, इस बारे में मेरे विचार मेरी इस मडली के विचारों से भिन्न हैं। इसनिष्ठ छुट्टी मनाने के बाद जो रकम वची वह मैंने काम

म ली। इसका अलावा मैं जब कभी किसी काम का आरम्भ करती हूँ मरी यह काशिश रहती है कि वह किसी न किसी सस्था का माध्यम से हो। मैं वसी सस्थाओं को भारत के प्रति उनके उत्तरदायित्व की याद दिलाती हूँ। यह काय शुद्ध म चल रहा है, तफ्तील म जान की जरूरत है क्या ?

आपका पता ही है कि मैं भारत मंत्री गाण्ठी की जनरल सत्रेटरी हूँ। इस प्रकार क काम का सारा खर्च यह गाण्ठी उठाती है। इस गाण्ठी क द्वारा जो काय होता है उसम टाक-व्यय तथा टेलिफोन बाता का एक एक पनी का हिसाब अलग से रखा जाता है। यह गाण्ठी जा पुस्तकें प्रचार-काय क लिए छपवाती है उसक लिए अलबजडर बिल्सन अलग स निधि एकत्र करत हैं। रकम उही स आती है जो इस तरह के काय म आस्था रखत हैं वे इमम सक्रिय रूप स भाग भी लते हैं। यह धन अधिकतर क्वकरा स आता है। इस प्रकार मुझे इस काटि क लोगों के सहयाग स भी लाभ उठाने की सुविधा रहती है। पर मेरा काय इस सस्था की सेक्रेटरी की हैसियत स नहां एक व्यक्ति की हैसियत स होता है। अपन दीघकालीन अनुभव के फनस्वरूप मरे लिए इस हैसियत स काम करना आगान हा गया है।

सर्वेंटस आफ इण्डियावाता न हितवाद के लिए स दिन स्थित सवाददाना का हैसियत से मुयस लख लिपन का वाग्रह किया था और इसक लिए १० पौड वापिक दन का वचन भी दिया था। इस तरह क लखा का सामग्रा एकत्र करन क लिए भिन भिन प्रकार क काय श्रेता की जानकारी हासिल करन का जरूरत होती है इसलिए मैं इस काय का हिसाब भी बिलकुल अलग रखती हूँ।

वस महात्माजी आपन मेरे कार्या और हिसाब किताब का जा ब्यारा चाहता था वह मैंने शत प्रतिशत दे दिया है। मैं इतना ही कह सकती हूँ कि मुझे जो-कुछ मिलता है उस में थाती के रूप म ग्रहण कर एक एक पनी ममझ बूझकर खच करती हूँ। मैं जा डायरी रखती हूँ उसे पढकर तथा टेलिफोन पर जो-जो बातें करती हूँ उम सुनकर और मेरा पत्राचार देखकर मर काय का सहा चित्र उभर आता है कि मैं यहा क्या कुछ कर रही हूँ।

आप पूछते है कि मैं आपसे क्या अपेक्षा रखती हूँ। मरे वार मे जापस क्या कहा गया है इसका मुझे बिलकुल पान नही है इसलिए मैं स्वय नही जानती कि इस प्रश्न का क्या उत्तर दूँ ! मैंने अपने इम पत्र के द्वारा जा बात आप तक पहुंचाने की कोशिश की है उसस आपको पता लगेगा कि अपेक्षा नाम की कोई चीज मेर दिमाग म नही है। मुझे यदि किसी बात की अपेक्षा है तो वह यही है कि निकट भविष्य मे मुझे आपसे बात करने का अवसर मिले। इधर कई महीना से यह

विचार मन में जाता रहा है। जब मिस्टर रिडना महा आये थे तो मैंने उन्हें बताया था कि मैं भारत आने के लिए बहुत उत्सुक हूँ और उस पूछा था कि क्या उनके लिए मेरी समुद्र यात्रा का प्रबंध करना सम्भव होगा। उन्होंने कहा था कि जब भी मेरा भारत जाना सा इरादा है, उसे मूवना दे दूँ। इधर कुछ महीना में स्थिति बहुत-कुछ बदल गई है। मैं चाहती हूँ कि आपके साथ बैठकर सारी बातों का विश्लेषण करूँ ताकि यह पता चले कि मेरा काम का जारी रखने के बारे में आपका क्या विचार है। उसे जानने रखना चाहिए या प्रत्यक्ष कर देना चाहिए। भारत जिन तंत्रों से बदन रहा है उस ध्यान में रखते हुए सम्भव है आपने जो छूट दे रखी है और मुझ पर जितना भारोपा कर रखा है उसे चुनौती मिले। और अन्य किसी परिस्थिति में यह काम जारी रखना सम्भव भी नहीं होगा।

पत्रों का माध्यम तो जड़ माध्यम है। मैं आपसे मात्कार करके बातचीत करने की इच्छा रखती हूँ। मैं जानती हूँ बातचीत से आपको थकान हो जाती है पर यदि मैं बर्षा पहुँच सकूँ तो मैं सीधा आकर आपके कुछ मिनटों का प्रयास करूँगी, जिससे आपसे मन का संतुष्टि जानी जा सके। मैं यह चाहती हूँ कि मेरा काम जल्दी ही आता सम्भव है, जिसमें आपके साथ बात करने का शोध अवसर मिले। उसके बाद मैं कुछ स्थानों का भ्रमण करना चाहूँगी जिससे अपनी आँखों से देख सकूँ कि क्या क्या परिवर्तन हो रहे हैं। आगामा तिमस्तर में अधिन भारतीय महिला-परिपद का अधिवेशन है। मैं उसमें भी भाग लेना चाहूँगी। उसके बाद यहाँ लौट आऊँगी।

वस मर तिमस्तर में यही चीज काम कर रहा है—बहनरी कि जिसकी आपने पत्रों में चर्चा की है और जिसका जिम्मा मेरे मित्रों ने उठा लिया है। क्या मैं अपना अधिप्राय स्पष्ट करने में सफल हुई हूँ? मर तिए यह घोर चिंता का विषय है कि अन्य सबसे छोड़ आपसे मर विषय में कम प्रकार जनावश्या रूप से व्यस्त होना पड़े।

मैं अपना प्रथम भाव भेजती हूँ और आपको उत्तर की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रही हूँ कि मर वहाँ थोड़े समय के लिए आने के बारे में आपका क्या अधिप्राय है ?

स्नेहभाजन

जगाया हरिमन

मगनवाडी,
वर्धा (मध्य प्रात)

४ जून १९३८

प्रिय धनश्यामदासजी

इधर कुछ दिना स आपका लिखना सभव नही हुआ। व्यापार सबधी वार्ता भग हो गई इसका मुचे विलकुल दुःख नही है। हम एक स्वतन्त्र राष्ट्र के नाते ही सम्मानपूण समझौते की बात चला सकते हैं। मालूम पडता है कि शिवराय न लकाशायर प्रतिनिधि मडल के प्रधान से लम्बी मुलाकात की, और उसके दौरान उसे मुझाया कि ऐस समझौते की बात तभी सफल हो सकती है जब बापू जसी हैसियतवाला कोई व्यक्ति उसम शरीक हो। उसन यह भी कहा कि वसी हैसियत वाले व्यक्ति को ब्रिटिश कबिनेट बुलाय। मेरा खयाल है कि शिवराय न यही बात कोई आधा दर्जन लोगो से कही थी। बापू की इंग्लड यात्रा की मनगन्त खबर की जड म यही बात रही होगी। अगाथा ने व्यथ ही यह पूछने के लिए समुद्री तार भेजने म पसा बरवाद किया कि बापू क शीघ्र ही इंग्लड आन की सभावना है क्या?

आप मरे पास नियमित रूप स कर्टिंग भिजवा रहे हैं तदर्थ धन्यवाद। रही बापू की हस्तलिखित सामग्री की बात सो हरिजन के लिए तयार मामग्री 'हरिजन' कार्यालय म सुरक्षित है और मैं उस बाहर निकालना कदापि नही चाहूंगा। आजकल बापू स्याही से बहुत कम लिखते हैं। हा व्यक्तिगत पत्रा की बात दूसरी है। पर मैं इस पत्र के साथ एक तार भज रहा हू जिसका उत्तर बापू न उसकी पीठ पर स्याही से लिखा है। आप चाह ता उस अपन लदन क मित्रा क पास भेज दें।

बापू देखने म तो ठीक ही लगते हैं। इस समय वह अतदृष्टि क लम्ब दौर से गुजर रहे है और गहरे आत्मचिंतन म है। इस जात्मनिरीक्षण का किम रूप मे अत होनेवाला है इसका कुछ आभास उनक पेंसिल से लिखे नोटस और अनक मित्रो को भेजे जा रहे गथी पत्रो स लगगा। हो सकता है देवनास ने आपका यह पहले से ही बताया हो। यदि नही बताया है तो अब दख लीजिए और आपके मानस पर इसकी क्या प्रतित्रिया हुई सो लिखिए।

सप्रेम,
महादेव

१० जून, १९३८

प्रिय महाश्वभाइ

फादर एल्विन ने अपने आश्रम के लिए सहायता मांगी है। मुझे याद पड़ता है कि उनमें और बापू में किसी बात को लेकर थोड़ी गलतफहमी हो गयी थी। उनके बारे में बापू की पहचान जसी ही अच्छी धारणा है या उसमें कुछ परिवर्तन हुआ है यह मैं नहीं जानता। मैंने अभी उनके पत्र का उत्तर नहीं दिया है और जब तक तुम्हारा पत्र न आये उत्तर नहीं भेजूंगा। बापू उनके बारे में क्या विचार रखते हैं सो लिखो।

मेरे कई पत्रों के जवाब में तुम्हारा एक पत्र आज मिला। तुमने यह नहीं बताया कि मैंने मित्र को जो छोटा सा लेख भजा था उसे देखने का बापू को समय मिला या नहीं। यदि बापू बहुत व्यस्त हैं, तो इस बात को लेकर उन्हें परेशान करने की जरूरत नहीं। मैं बापू के विचार स्वयं अपने पथ प्रदर्शन के लिए चाहता था और मुझे लगा था कि ऐसी मामलों में मेरे लिए अपने विचार व्यक्त करना जरूरी है इसलिए मैंने इस चीज को इतना महत्व दिया। भल ही मैं उन्हें घालिस अपने विचार कहकर व्यक्त करूँ, लेकिन बापू का थोड़ा बहुत महत्व तो है ही।

बापू की गुजराती गश्ती चिट्ठी के सम्बन्ध में मैं बापू को अलग से एक पत्र हिन्दी में लिख रहा हूँ।

भारत प्रिंटेड व्यापार समझौते की जो बातचीत चल रही थी उसके भंग होना की बात को लेकर बापू कुछ कहना चाहेंगे या नहीं, यह मैं जानना चाहूँगा। उनका दृष्टिकोण उन कतिपय लोगों के लिए सतर्कता का प्रतीक सिद्ध होगा जो अब भी दोना देशों के बीच समझौते की बात चलाने में लग चुके हैं।

हम लोग जितना कुछ कर सकते थे, किया और समझौता करने के लिए जितनी दूर जा सकते थे गए, फिर भी हम समुचित उत्तर नहीं मिला। या एक प्रकार से मुझे चिन्ता से छुटकारा मिला क्योंकि यदि समझौता हो जाता तो उसका औचित्य सिद्ध करने की जिम्मेदारी मेरे ऊपर आ जाती। लकाशापर के प्रतिनिधि मंडल ने मेरी दलील को मुनासिबता समझा, और उन्होंने मेरी स्पष्टता की दाद भी दी पर उन्होंने बदले में कुछ भी देने की तत्परता नहीं दिखाई।

मैंने शिमला में शिवराव से कई बार बातें की। मुझे मालूम था कि वह लागा

स कहता फिर रहा है कि लदन स अनक लोगा का वापू को बुनावा जाया ह । उसन कोजियर का भी लिया था । उसका सुभाव दुरा नही था, पर उसे स्वीकार किया जायगा एसा मुये कभी नही लगा । अग्नेज मानस हूँ दर्जे का रुत्विवादी होता है और मथर गति स चलता है । उन लोगा के लिए वाछनीय सुझाव भी अग्राह्य हो जाता है ।

सप्रेम

घनश्यामनाम

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१९

मगनवाडी

वर्धा

१७ जून, १९२८

प्रिय घनश्यामदासजी

चरखा सघ के लिए ऋण के बार म आपका पत्र मिला । मुझे कहना पडता है कि इम्पीरियल बक क साथ जो बातचीत चल रही थी वह निष्प्रयाजन सिद्ध हुई । अज इसका बंदावस्त करन के लिए स्वय आपका प्रयत्नशील होना पडेगा । इम्पीरियल बक न जो शर्ते लगाई है उहे स्वीकार करना सभव नही है । वे लाग खान्ती के स्टाक पर मिल के मूल्याकन का ७५ प्रतिशत तो दन क लिए तयार नही हैं बल्कि इसके विपरीत इंडियन बक न हमारी यह शत मान ली है कि हमारे पाम खादी का जितना स्टाक हा उम पर जितनी लागत आई हो, उसका ५० प्रतिशत रुपया हम निकालने का स्वतन्त्र रहगे । इस पत्र के साथ जखिल भारतीय चरखा सघ का पूरा तलपठ भेज रहा हू । इसके आधार पर आप जय बको से बातचीत चला सकते हैं । हम कुल मिलाकर ६ लाख की जरूरत है । हमे बक आप इन्दिया स १॥ लाख मिल चुका है । अब हम ४॥ लाख और चाहिए ।

वापू के गश्ती (गुजराती) पत्र के बार म आपका पत्र मुझे अच्छा नही लगा । हा सकता है कि आप इसका ठीक-ठीक अभिप्राय नही समझ पाए हो । आशा है आप यह बात हृदयगम करेंगे कि वापू न स्त्रियो क सस्पश पर पूरी पाबदी लगाने

की बात कही है—यह निपघाजा जमल में लाइ जा रही है—चाहे यह सस्पेश
सवा शुश्रूषा वं सवध में हा जथवा साधारण दनिक् काय के निमित्त हा । या व
इस सीमा तक मुक्त थ कि स्नान करत समय भी स्त्रिया मौजूद रह सकती थी ।
अब वह इसके विपरीत मिर पर पहुँचे है । पता नहा जापका यह दूसरी कँद ग्राह्य
ह या नही । मुझे तो इस पर धार आपत्ति है और उनके अपने इस अदभुत प्रयोग
का 'हरिजन में प्रकाशित करन पर उमसे भी बढर आपत्ति है । 'छत पर चढ
कर मत्य क प्रयोगा की घापणा करन की भी कोई हद हाती है—फ्रँच भाषा में
एक मुहावरा है । पर यह हमार जस साधारण काटि के व्यक्तिया पर ही लागू
हाना है, बापू जस असाधारण मानवा पर नही ।

सप्रेम,
महादेव

२०

मगनवाडी
वर्धा
२४ ६ ३८

प्रिय धनश्यामदासजी

आपका दोना कृपा पत्र मिल—एक पत्र कटिगो के साथ और दूसरा निजी
वन्ना अनुगहीत हुआ ।

यगाल क हरिजन-मेवक सघ के अध्यक्ष के सम्बन्ध में बापू सतीश बाबू के
निग्या-मदा कर रहे हैं । उनका उत्तर आत ही आपका निग्येगे ।

आपको मरी दशा पर तरस आता है सो ठीक ही है । आप जानत ही हैं कि
मर स्फुरत का कायभार केवल एक आदमी सभानता है—मैं खुद । चौदहवें तु
का दावा था कि वही राय है । उससे किसी ने पूछा कि राय का क्या अर्थ है
उगा उत्तर दिया राय ? मैं ही तो राय हूँ । मैं भी वह मन्ता हूँ दफ्तर
में ही ता दफ्तर हूँ । हा मर इस कथन में न गर्वोक्ति है न शक्ति-गाम्भ्य । दा
का ही गवधा अपाव है । पर अपने साधारण काम-काज के बाग को तकर मैं इ
समय त्रिग दोर में गुजर रहा हूँ उगके ननिक् और भावुक प्रभाव के भार का म

सूस करता हू। मारी कहानी सुनाकर आप म ऊब पदा करना नहीं चाहता। अपना दुखड़ा जपन ही पास रखा बहुत मुदर नीति है पर मैं इस पर अमल करने म कभी कभी पूक जाता हू।

जब आपक निजी पत्र पर आता हू। आपने जो-कुछ कहा है वह मरे जस साधारण कोटि क आदमी क विषय म अवश्य लागू होता है। पर स्त्री पुरुष अस्पृश्यता को हम लोगो न हद तक पहुचा दिया है। हम लोगो ने इम दिशा म जितने कठोर प्रतिबध लगा रखे हैं उनके फनस्वरूप न हमारा नैतिक स्तर कुछ अधिक ऊचा उठा है न पाश्चात्य देशो की इस मामल म अपधाकृत छूट उनक नतिक ह्याम का ही कारण सिद्ध हुई है। समझनारी का तकाजा यही है कि बीच का माग अपनाया जाय। मेरा तो विचार है कि मरे जैसे साधारण कोटि के लोगो को भी स्त्री मात्र क सहज और कभी-कभी आवश्यक खुल्लमखुल्ला सपक क विचार मात्र स बिदकना नहीं चाहिए। हा लुक छिपकर सपक स्थापित करन पर निश्चित रूप स प्रतिबध होना चाहिए इस मामले म मेरी आपके साथ पूण सहमति है। पर स्त्री को अस्पृश्य और अजनबी हम न समझें। क्या आपका पता है कि पुरान समय म स्पार्टा म लिकारगस ने यह नियम बना दिया था कि तरुण तरुणी एक-दूसरे क सपक म—कभी-कभी पूण नग्नावस्था म आयें, जिसस एक दूसरे क प्रति गापनीयता और अज्ञान की भावना को पूरी तरह मिटाया जा सक। क्योंकि गोपनीयता बरतन स ही कुरुचि को प्राप्ताहन मिलता है। पर इन सारी बातो के बावजूद मैं इस बारे म आपसे सहमत हू कि जोध्यात्मिक उद्देश्य की पूर्ति क लिए क्या आवश्यक है इसका निणय एकमात्र बापू पर ही नहीं छोड देना चाहिए। मैं ता यहा तक कहूंगा कि यदि इसके लिए उनका बन म जाकर रहना आवश्यक हो तो उनके वस काय का समथन करने म मैं सकोच नहीं करूंगा। हा, यह भी सभव है कि दूसरे ही क्षण मैं जपने निश्चय पर स्वय ही पछतावा करन लगू क्याकि बसा करने स बापू के महात्माजो-जसे आचरण की महत्ता मे कमी आ जायेगी। वह जन समुदाय क बीच और आधुनिक जीवनचर्या के मध्य शान्ति और सयम का हाथ से नहीं जाने देते हैं यही उनकी विशेषता है। वास्तव मे, उनका यह गुण ससार के लिए एक महान् देन है। मैंने जिस सवरप की कल्पना की है यदि उस कार्याि वक्त किया जाय तो उनकी इस देन का मूल्य बहुत घट जायगा। वतमान प्रश्न के सदभ म भी यही बात लागू होती है। पर इस मामले पर हम दाना अपनी असहमति अक्षुण्ण रखने को सहमत हो गये हैं।

बापू का रक्तचाप पुन ऊचा हा गया है और मुझे लगने लगा है कि हा सक्तता

है वह हमारे मध्य अधिक काल तक न रह पायें। ईश्वरेच्छा बलीयसी। वदियो की समस्या, सभव है, उहे पुन बगाल खीच ले जाय।

सप्रेम
महादेव

२१

२, आनवान फोट
एल्बट ब्रिज कोट
एम० डब्ल्यू० ११
३ जुलाई १९३८

प्रिय महात्माजी

आपका २६ जून का पत्र जिसमे आपन भूलाभाई क साथ अपनी बातचीत की चर्चा की है अभी मिला है। इस बात आप जो कहते हैं उसका जिन एक अलग पत्र म करूंगी। आपके पत्र के अतिम वाक्य से चिन्ता उत्पन्न हुई है मैंने तुम्हें जो निजी चिट्ठी लिखी थी उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। वह चिट्ठी मुझे २ मई को मिली थी और मैं उसका उत्तर तुरत दे दिया था। उस मैंने निजी शब्द स चिह्नित कर दिया था, ठीक जिस प्रकार आपने मेरे नाम लिखे पत्र को चिह्नित किया है। मुझे तो बराबर यही आशय रहा कि उस चिट्ठी की क्या व विषय मे मुझे आपकी ओर मे अभी तक कोई सदेशा क्या नहीं मिला। मैं उस पत्र म जो-बुछ कहा था उसकी नकल साथ भेजती हूँ। यद्यपि उसम कही गई बात दो महीने पुरानी हो गई है तथापि मैं उसम किसी प्रकार का हेर फेर करना नहीं चाहूंगी। यह मैं इसलिए कह रही हूँ कि कही कोई अप्रिय घटना न घट जाय।

समाचार आ रहे हैं कि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। ऐसी स्थिति म आपको इतने लम्बे पत्र को पढन का कष्ट उठाना पडेगा इस बात का विचार मात्र मुझे अशुचिकर लग रहा है।

स्नेहभाजन
अगाथा हैरिमन

पुनश्च

मैं इसकी ताल लाड लादियन के पास सुरत भज रही हूँ। जवाहरलाल को, जा इस समय क'टरवरी क' डीन के साथ हैं उाह तथा बाल हीय को भी लिखा ऊगी। इस सारे विषय क' बार म आपनो सुरत ही फिर लिखूगी।

अभाषा

२२

मगमवाणी

वर्धा (मध्य प्रात)

११ जुलाई १९३८

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके ६ तारीख क' पत्र के लिए धन्यवाद। उमिलानेकी क' पुत्र के लिए जो इतना सब करन की बात आपने कही है उसके लिए मैं आपका जाभारी हूँ। औरा क' लिए आप उताा ही करेंगे जितना बसी स्थिति क' ध्यक्तियों के लिए करना सम्भव है।

यजूर और सूखे मवे की भाजन क' रूप म काम म लेने के बार म भरा रहना यह है कि थोडा बहुत हेर फेर करना आवश्यक हा गया था। बापू दुबल हो रहे थे और उनका बजन घट रहा था। इसलिए उ'हाने अपन भाजन म मौसम्बी को भी शामिल कर लिया है।

बापू को जा अप्रिय अनुभव हुआ था वह उनके दिमाग म अभी तक घर बिय हुए है और वह जब तक उसनी बात हरिजन म नहीं लिखेंगे चन से नहीं बठेंगे। हमारी सारी तलीला का एकमात्र परिणाम यह हुआ कि उनका रख जीर भी कठोर हो गया और अब मैंने उनसे उसकी चर्चा करना ही बंद कर दिया है। आज हरिजन का दिन है। मैं यह पत्र प्रोलकर निषवा रहा हूँ उधर बापू शायद हरिजन क' लिए उस विषय पर लिखने म तल्लीन है। मैंने उनस आपके जगस्त

म आन की बात की थी। आपके साथ बात करने में उह कोई असुविधा नहीं होगी इसलिए आप जब चाहे आ जाए।

सप्रेम
महादेव

श्री घनश्यामदास मिडला,
८, रायन एवमर्सेज पन्स,
बलवत्ता

२३

बर्धा
१६७३८

प्रिय घनश्यामदासजी

इस पत्र के साथ अगाथा की चिट्ठी जीर बापू का उत्तर भेजता हूँ। पत्र अपनी पत्नी गुरु कहेंगे। कृपा करके अगाथा को आश्वस्त कीजिए कि उम्र आन जाने के मुख के लिए चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। वह अच्छा काम कर रही है और अपना सारा समय भारत के काम में ही लगा रही है।

बापू के निमाग पर जो भार आ पडा है, उसे देखते हुए उनका स्वास्थ्य अच्छा ही है। 'हरिजन' के लिए लेख तयार है अगले मासवार का निकलगा। बापू ने अनिश्चित काल तक के लिए मीन-ग्रन धारण कर लिया है। कम-कम तब तक के लिए जब तक १४ अप्रैलवाले दुःखदायी अनुभव के कारणों की गोज न हो जाए और उनका राह का निवारण न हो जाए।

सप्रेम
महादेव

२४

बलवत्ता
२० जुलाई १९३८

प्रिय महाश्वभाई

अगाथा का पत्र और बापू का उत्तर दोनों प्राप्त हुए। तुमने अपने पत्र में कहा है कि वह अपनी बहाना आप कहेंगे। मुझे आश्चर्य है कि जब तक मुझे मांग

पृष्ठ भूमि की जानकारी न हो ये पत्र पुरी दास्तान नहीं बताते। पर तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं। मैं पत्ता से मम ग्रहण कर लूंगा। तुम खुदासा करन मे लगोगे तो तुम्हारे दफ्तर का काय भार और बढ जायेगा।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि बापू न अनिश्चित बाल तक के लिए मौन धारण कर लिया है। यह उनके स्वास्थ्य के लिए कल्याणकारी होगा।

मैं अगस्त में वर्धा आने की सोच रहा हूँ पर अभी तिथि निश्चित नहीं की है। जफरल्ला की बापमी पर अगस्त में ही शिमला जाना भी संभव है और शिमला की तारीखों का पता लगत ही मैं वर्धा की तारीखें भी निश्चित कर लूंगा।

मप्रेम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देमाई

वर्धा

२५

मगतवाडी

वर्धा (मध्य प्रात)

२२ जुनाई १९३८

प्रिय मित्र

बापू को इस पत्र के साथ सलग्न पत्र एक प्रमुग काप्रेसी से मिला है। क्या आप कृपा करके अपनी प्रतिक्रिया विस्तारपूर्वक सूचित करेंगे ?

भवदीय,

महादेव

पुनश्च

आपका पत्र अभी अभी मिला। बापू का स्वास्थ्य मौन के प्रभाव से अच्छा है। अभी तो मौन चाल रहेगा।

महादेव

भरी धारणा है कि यदि मुद्रा विनिमय की दर का प्रश्न कार्याकारिणी की अगली बैठक में पेश हो तो जाव पडताल किये वगर मुद्रा की दर पर अथवा

उसकी बतमान दर में तत्काल हेर फेर करने की आवश्यकता पर कोई निश्चित मत बायकारिणी का व्यक्त नहीं करना चाहिए। यहाँ मैं अपन मित्रों के साथ इस विषय पर विचार विमर्श कर रहा हूँ। उनकी राय है कि जब रुपये की दर १५ पैसे निश्चित करते समय उसके गुणो अक्षुण्णों को सामने रखा गया था अब उसकी दर १६ पैसे रखने में हमारे निर्यात की मात्रा में विशेषकर प्रतिद्विधिता वाले माल के निर्यात में वृद्धि नहीं होगी और साथ ही जय देश भी बसा ही ढग अपनायेंगे। हमारे देश के घरेलू मूल्यों के स्तर में विशेषकर धान गेहूँ तथा तेल हन के मूल्य स्तर में विशेष वृद्धि नहीं हुई है। हमारे आयात किये माल के मूल्य स्तर में विशेषकर जौधोगिक मशीनरी के मूल्य स्तर में वृद्धि होगी। इस समय बसी मशीनरी अधिकांश मात्रा में आयात की जा रही है। आयात मशीनरी के मूल्यों में वृद्धि के परिणामस्वरूप भारत में तयार माल के विशेषकर कपड़े के मूल्य में वृद्धि अनिवाय हो जायगी। जब तक जनता के पहनावे की पूर्ति खान्सी के द्वारा करना सम्भव न हो तब तक के लिए मिला द्वारा तयार कपड़े के मूल्य स्तर में वृद्धि करने से जनता की कोई सेवा नहीं होगी। विनिमय की दर में कमी होने से केवल मुट्टी भर समृद्ध व्यक्ति ही मुनाफा घटोर पायेग देश की साधारण आर्थिक स्थिति ज्या-की त्यो रहेगी।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि इस मामले का सूत्र अध्ययन न किया जाय। वास्तव में मैंने यद्यथापिवा सभा में इस मामले की जाच-पडतात के लिए एक स्थगन प्रस्ताव पेश कर रखा है। इसलिए मेरा सुझाव है कि या तो बाय कारिणी सरकार के द्वारा निष्पक्ष विशेषज्ञों से जाच कराने की व्यवस्था करे और जाच रिपोर्ट को जनमत के लिए प्रकाशित करने का जिम्मा उठाये ताकि यह पता लग सके कि कौन-सी दर ठीक रहेगी अथवा स्वयं ही ऐसे विशेषज्ञों की समिति बनाय जो अपनी रिपोर्ट बायकारिणी के समक्ष रखे। बायकारिणी इस तरह की रिपोर्ट जनमत जानने के लिए प्रकाशित कर, और उसका वाद उम रिपोर्ट का तथा उस पर प्राप्त आलोचना को सामने रखकर जगले कदम के बार में निणय करे।

बलवत्ता

२४ जुलाई १९३८

प्रिय महादेवभाई,

तुमने जो मुद्रा विनिमय की दरवाला पत्र अपन पत्र के साथ भेजा है उससे ऐसा लगता है कि तुम इस बारे में मेरी राय जानना चाहते हो। मैंने बल्लभभाई को अपनी राय पूरी तरह बता दी थी। पत्र-लेखक के कथन से मैं सहमत नहीं हूँ। मुझे तो वह कुछ पक्षपात लिये प्रतीत हुआ कम-से कम उसकी भाषा से तो ऐसा ही लगता है। जो भी हो, मैंने बल्लभभाई से कह दिया है कि वह फिलहाल कोई आक्रामक एज अखिलपार न करें क्योंकि मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि प्रवृत्ति विनिमय का घटाना में हमारी सहायता करेगी।

इस बारे में मुझे कोई सदेह नहीं है कि किंचित नीची दर हमारे लिए लाभ प्रद होगी, पर भरी धारणा है कि बायम के लिए जल्दबाजी में कोई कदम उठाना ठीक नहीं रहेगा। उसे कोई नीति निर्धारित करने से पहले स्थिति का अध्ययन करना चाहिए। इसके अलावा जब तक सच की घोषणा नहीं तो तब तक कांग्रेस प्रचार करने से अधिक क्या कर सकती है इससे अधिक मेरी समझ में नहीं आ रहा है। यदि प्रचार किया जायगा तो निहित हित उसका दुरुपयोग करेंगे, यह निश्चित है। इन सारी बातों का ध्यान में रखकर मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि यद्यपि मुद्रा विनिमय की दर में कमी करनेवाला प्रस्ताव पास करने में नहीं हिकिचिबाऊगा क्योंकि वसा करना देश के हित में होगा यद्यपि फिलहाल मैं जानामक प्रचार का प्रारम्भ करने से बचूँगा।

मुझे इम्पीरियल बैंक से पता चला है कि उन लोगों ने चरखा सच का खाता खोलने का प्रस्ताव पास कर दिया है। पर यदि इससे कुछ अधिक करने की जरूरत हो तो मुझे लिख देना।

सप्रम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

वर्धा

२७

वराकस्ता

२८ जुलाई १९३८

प्रिय महादेवभाई,

वगाल में खरे के बहिष्मन का अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा है जसा कि 'अमृत वाजार पत्रिका' और 'हिन्दुस्तान स्टूड' के सम्पादकीय लेखा से प्रतीत होता है। इन लेखा में वगाल के जनमत का आभास मिलता है क्योंकि इन पत्रों के सम्पादकों की जो विचारधारा है आम जनता की विचारधारा उससे कुछ अधिक स्वयं नहीं है।

खरे को जो नीचा देखना पड़ा, वह तो होना ही था। उसके पक्ष में कोई नहीं बोलेगा। पर मध्य प्रात का शासन चलाने में मिथ्य जसे लोग का मन्त्रिमण्डल खरे के मन्त्रिमण्डल से श्रेष्ठ साबित होगा, इसमें मुझे संदेह है। पर शायद अब कारण भी रहे होंगे। बापू इस मामले में स्वयं दिलचस्पी ले रहे थे इसलिए मैंने सोचा था कि अब जा मन्त्रिमण्डल बनेगा, वह अपेक्षाकृत अधिक टिकाऊ रहेगा।

सप्रेम,

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,

बधा

२८

वराकस्ता

३० जुलाई १९३८

प्रिय महादेवभाई

मध्य प्रात के मन्त्रिमण्डल के बारे में वायनारिणी का निणय मित्रों को भी नहीं भाया। दूसरी ओर शत्रुता की भावना से अनुप्राणित आनाचक जगता मारा

गुस्ता काप्रेस हाई कमाण्ड पर उतार रह है। उनकी दृष्टि में हार्ड कमाण्ड का एकमात्र जय ही बल्लभभाई है। लेकिन वे वस्तुस्थिति से बचकर है।

निणय कुछ कठोर अवश्य रहा पर मुझ उसमें तानाशाही की वृत्ति या लोक तंत्रीय पद्धति का चोट पहचानेवाली कोई बात नहीं दीखती। यद्यपि विरोधिया और मित्रो दोनों का समान आरोप है। लोग का यह पता है कि प्रश्न का निपटारा ससदीय समिति पर छोड़ दिया गया था और उसने घरे के खिलाफ फमला लिया। पर लाग यह बात भुलाने को तयार नहीं हैं कि प्रेरणा तायकारिणी ने दी थी।

बगल के समाचार पत्र और जनमत यास तौर से राजाजी और बल्लभभाई के खिलाफ है। थोड़ा सा बहाना मिलते ही और अगर किसी उचित कारण के इन दानों के खिलाफ जहर उगला जा रहा है। इधर मित्रों की यह शिकायत है कि वस्तु स्थिति को ठीक ढंग से नहीं समझा गया है। हम लोग ब्रिटिश राजनतिक पद्धति के दुरी तरह कायल हो गये हैं और यह मान भी नहीं सकते कि मन्त्रिमन्त्रालय के गठन अथवा विघटन का कार्य विधान-सभाजी की ससदीय समितियों के अलावा किसी और के द्वारा भी सम्पन्न करना सम्भव है।

मध्य प्रात के बखेट का लखर लगता है कि तदविषयक सारा निणय स्वयं बापू का है पर लोगो में बापू की जालोचना करने का ता साहस है नहीं इसलिए वे सारा दोष बल्लभभाई के मत्थे भटकर अपना राय निकालते हैं। लोगो में यह धारणा घर कर गई है कि बल्लभभाई प्रजातंत्र के कायल नहीं है और राजाजी चतुर हैं।

मेरा विश्वास है कि इस धारणा का निराकरण बापू 'हरिजन' के माध्यम से कर सकेंगे। लीडर की कटिंग साथ भेजता हूँ। देखागे कि बापू पर किसी कीचड़ उछाली गई है। लीडर का बापू के प्रति घणा की भावना से जातप्रोत है ही, इस लिए इसका काद राज नहीं है। जाना है यह पत्र बापू को पत्रकर सुना दाग।

सप्रम

धनश्यामदाम

श्री महादेवभाई दसाई
वर्धा

२६

कलकत्ता

३१ जुलाई, १९३८

प्रिय मोरावन

मैंने सुना था कि आप सगाव लौट रही हैं। राजेन्द्र बाबू ने मुझे बताया कि आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। ऐसा लगता है कि हम दोनों को ही अधिक दिवाईवाल स्थान प्रतिकूल हैं। रात्री पहुँचने के दो घण्टे बाद ही मेरी भूख गायब हो जाती है। मैं तो नहीं समझता कि पूर्ण समाप्त होने के बाद भी वह स्थान आपके लिए उपयुक्त होगा। पर हम अच्छे की ही आशा करनी चाहिए। मेरी जमींदारी रात्री से अधिक दूर नहीं है। आप जब दुबारा जायेंगी, तो बता दूँगा कि कहाँ जाना है।

मैं बापू के इस बयान से सहमत नहीं हूँ कि वाइसराय उनसे पीछा छुड़ाना चाहते हैं। शायद वाइसराय का लग रहा है कि फिलहाल उनके किये कुछ न होगा और इस विश्वास के कुछ वैध कारण भी अवश्य रहे होंगे। उनसे निकट भविष्य में मिलने की सम्भावना तो दिवाई नहीं देती पर यदि मिला तो वस्तुस्थिति का पता लग जायगा। आपने सुना होगा कि वाइसराय हाल ही में सैयद महमूद से मिले थे और बापू की भूरि भूरि प्रशंसा कर रहे थे। इसलिए ऐसा लगता है कि कारण कुछ और ही है जिसका हमें पता नहीं है। मेरी तो अब भी यही धारणा है कि वह हमारे मित्र हैं पर वह जो-कुछ करेंगे, स्वतः ही करेंगे और अपने ही ढंग से करेंगे।

सप्रम,

धनश्यामदास

गुप्ती मोरावन,
सगाव

३०

कलकत्ता

३१ जुलाई, १९३८

प्रिय महादेवभाई

बापू की प्रेस मुलाकात के बाद भी कायकारिणी के प्रस्ताव का जान बूझकर गलत जय लगाया जा रहा है। मुझे आशका है कि यह गलतफहमी जारी रहेगी। बापू की मुलाकात के उत्तर में खरे ने जो कुछ कहा है उससे उनके खरेपन का परिचय नहीं मिलता। यदि बापू ने अपने लेखा द्वारा वस्तुस्थिति पर और अधिक प्रकाश डालना जारी नहीं रखा तो कायकारिणी की प्रतिष्ठा को विशेषकर सरदार की प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा। इसके अलावा मुझे इसमें भी शक है कि शुक्ल मन्त्रिमंडल अधिक दिना तक चल पायेगा। एक विगुद्ध नया मन्त्रिमंडल क्या न बनाया जाये। मुझे तो दोना गुटों में कोई विशेष अंतर दिखाई नहीं देता, पर साथ ही मुझे खरे के सम्बन्ध में लिया गया निणय बिल्कुल उचित प्रतीत होता है।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

वर्धा

३१

मगनवाडी

वर्धा (मध्य प्रात)

२ अगस्त, १९३८

प्रिय घनश्यामदासजी

पिछल महीन की २० तारीख का आपका पत्र मिला। हमारे अधिकांश समाचार-पत्र खर के मामले का लेकर बीखला उठे हैं। यह कहना मुश्किल है कि उनमें सबसे अधिक दोषी कौन है। उस प्रस्ताव के लिए अक्ले बापू ही उत्तरदायी

हैं और उनकी तो यही धारणा है कि यह प्रस्ताव और भी अधिक बढा होना चाहिए था। बापू इस सप्ताह के 'हरिजन' में एक लंबा लघु लिखनेवाले हैं, जिससे समाचार पत्र और भी बिगड़ेंगे। मुझे इससे पहले इस बात की प्रतीति इतनी अधिक कभी नहीं हुई थी, कि हमारे अन्दर राजनतिक समझ बूझ का नितांत अभाव है। ये लोग इस व्यंग्य विद्रूप में लगे हुए हैं कि यह हिटलरवाद और तानाशाही है पर उह यह पता नहीं है कि खरे में जसा विश्वासघात किया यदि इटली या जर्मनी में कोई बसा करता तो उस गोली से उडा दिया जाता।

नये मन्त्रिमंडल के जाने में अभी से कुछ कहना कठिन है पर कम-से-कम यह बात तो उनके पक्ष में ही कि वे बापू को सुनगें।

सप्रेम,
महादेव

३२

इडिया हाउस,
एल्डविच,
लंदन, इंग्लैंड सी० २
३ अगस्त, १९३८

प्रिय महोदया,

हाल ही में आपने मुझसे भेंट की थी और बल टेलिफोन भी किया था, इस सम्बन्ध में मुझे आपको यह सूचना देनी है कि ऋण कोष समिति ने बल श्री अंसारी के ऋण सबधी प्रार्थना पत्र पर विचार किया, और प्रारम्भ में ६ पौड के ऋण की स्वीकृति प्रदान कर दी है, जिससे वह तीन सप्ताह तक अपना खर्च चला सकें। इस रकम का चक श्री अंसारी के पास भेज दिया गया है और उह यह भी सूचित कर दिया गया है कि आगामी २२ तारीख सामन्वार का उनके प्रार्थना-पत्र पर विचार करने के बाद समिति यह निणय करेगी कि उनके लिए और अधिक क्या किया जा सकता है। पर मैं इस अवसर का उपयोग करके आपको यह बताना चाहता हूँ कि समिति के साधन बहुत सीमित हैं। उस भारतीय आय में प्रतिवर्ष २०० पौड मिलते हैं विभिन्न दाताओं से ४० या ५० पौड मिलते हैं तथा जिन लोगों ने पहले से ऋण ले रखा है उनसे ऋण की

अदायगी के रूप में प्रतिवर्ष १५० से २०० पौंड मिल जाते हैं। समिति को प्रतिवर्ष पचास से साठ विद्यार्थियों का जो आर्थिक बटिनाइयां मिल फस जाते हैं, सहायता देनी होती है। ऐसी परिस्थिति में समिति के सामने इनके सिवा और कोई चारा नहीं है कि केवल उही विद्यार्थियों की सहायता का जिम्मा वह ले, जिनकी जरूरतें नितांत आवश्यक हैं और ऐसे मामला में भी केवल सीमित अवधि भर के लिए निवाह योग्य ऋण दिया जा सकता है। जिससे वे भारत से उस अवधि में रुपया मंगा सके। इसलिए आप भरो इस कथन से सहमत हानो कि यदि समिति के कोप में अपवादित अधिक मात्रा में धन रहता तो उसका लिए जितने विद्यार्थियों की सहायता करना इस समय सम्भव है उससे कहीं अधिक विद्यार्थियों की वह उदारता के साथ सहायता करती।

मुझे विश्वास है कि समिति श्री अ सारी को कुछ हफ्तों तक आर्थिक सहायता देती रहेगी और व इस बीच भारत से इतना रुपया मगाने की भरसक कोशिश करेंगे जिससे इस देश में उनकी शिक्षा की समाप्ति तक उनका निर्वाह हो जाय।

मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि हमारे पास जो रिपोर्टें पहुँची हैं उनसे लगता है कि श्री अ सारी ने अपने काम का सतोपजनक परिचय दिया है और यदि वह आर्थिक संघनों के अभाव के कारण यहाँ अपनी शिक्षा पूरी न कर सकें तो यह बड़े दुःख की बात होगी। नियमा के अनुसार श्री अ सारी को भारत के किसी मायता प्राप्त मेडिकल स्कूल में चिकित्सा संबंधी प्रशिक्षण काय जारी रखने का अधिकार रहेगा, और यदि वह अन्य नियमा का पालन कर सकें तो वह समय आने पर कम्ब्रिज लौटकर अंतिम मेडिकल परीक्षा में भाग लेने का प्रायः पत्र दाखिल करने के भी हक्दार हाने।

मुझे विश्वास है कि मैंने अपना आशय पूणत स्पष्ट कर दिया है और यदि आप कुछ और अधिक जानना चाहें तो मुझे आपका पत्र पुनः पाकर प्रसन्नता होगी।

भवदीय,
दत्त

कुमारी अमाथा हैरिसन

२, नूनवॉन काट

लन्दन, ए०० ट००० ११

३३

२, कनवान बाट

एलवट ब्रिज रोड, एस० डायू० ११

४ अगस्त १९३८

प्यार महात्माजी,

आपन जो पत्र-व्यवहार भेजा था उस वापस करती हूँ। साथ ही श्री दत्त या पत्र भी रख रही हूँ जो अभी अभी मिला है। आपका पत्र पाते ही मने हेनरी पोलक के साथ मशवरा किया और उहाँ श्री दत्त से बात की पर साथ ही मुझसे कहा कि मैं खुद ही इस मामले से निपटूँ क्योंकि उनकी माँ बीमार है और वह नगर से बाहर गये हुए हैं।

सबसे पहले मैं श्री दत्त के बारे में बताना चाहती हूँ। उन्होंने बड़ी सहायता की। मैंने समुद्री डाकू से दो रिपोर्टें भेजी हैं। उनमें से एक शिक्षा विभाग के कार्य के बारे में है जोर दूसरी विद्यार्थियों की सहायता देने के कोष के संबंध में है। इस सामग्री में आपके उठाए प्रश्नों का उत्तर मिल जायगा।

मैंने उस तरुण अंसारी का मामला समझाया जोर पूछा कि क्या उसके लिए किसी प्रकार की आर्थिक सहायता का प्रबंध हो सकता है। जहाँ तक इस कोष का संबंध है इसमें कुछ ही सप्ताह के निर्वाह की व्यवस्था रखी गई है। श्री दत्त ने तुरंत मुझे प्रार्थना पत्र का फाम पकड़ाया और कहा कि उनका घर सरकारी दफ्तर अंसारी को ऋण देकर अवश्य सहायता करेगा, जोर उनके पत्र से आप देख ही लेंगे कि इसकी तुरंत व्यवस्था हो गई है।

दूसरे दिन मैं कम्ब्रिज गई जहाँ मैं लडके जोर उसकी माँ से मिली। श्रीमती मरे से भी मिली जो दोनों की परम हितपी हैं। उनके पति सखिन बालज के भूतपूर्व प्रधान शिक्षक थे, जहाँ युवक अंसारी शिक्षा पा रहा है। बहुत स्पष्टता के साथ बातचीत हुई। डा० शाह जिस कठिन स्थान पर है, उसका उहाँ पूरा ध्यान है जोर वह उनकी आर्थिक स्थिति से भी अवगत हैं। वह स्वयं भी आर्थिक संकट में पड़े हैं। गत मास से एक पसा भी नहीं जाया है जोर इन कई महीनों से वह तय नहीं कर पा रहे हैं कि क्या करना चाहिए। चिन्ता न अंसारी के स्वास्थ्य को भारी क्षति पहुँचाई है। आश्चर्य है कि वह परीक्षा में सफल हो सका।

बस, यह वस्तुस्थिति है। जब तक इस बात की गारण्टी न मिल जाए कि आगामी तीन वर्षों तक अपनी शिक्षा के दौरान वह आर्थिक चिन्ता से मुक्त रहेगा,

उसके लिए आगामी जक्ववर म किसी अस्पताल म प्रवेश पाना असम्भव रहेगा । कोइ ३०० पौंड वापिक का पच है । यह आकडा भारतीय विद्यार्थियोंके परामश दाता न दिया है । इसका मतलब यह हुआ कि कुल मिलाकर ६०० पौंड की जरूरत रहेगी । उसम श्रीमती मरे की ५० पांड की वह रकम भी शामिल ह, जो वह गत माच से खच चलाने के लिए देती आ रही हैं साथ ही पिछले दो सत्रा की फीस भी इसी रकम मे शामिल है जो अ सारी अदा करन मे असमथ रहा था । निवास स्थान का भाडा भोजनालय डाक्टरो क बिल और जोपधिया—इन सबके लिए आवश्यक रुपया भी इसी रकम से लिया जायेगा ।

आप श्री दत्त के पत्र के अतिम परे म देखेंगे कि उहने अ सारी क भारत वापस लौटन पर अपनी शिक्षा पूरी करने का प्रश्न उठाया है । वसे साधारणतया वह तथा अय लोग यह प्रश्न नहीं उठात है । मेरा यह पूरा विश्वास है कि यह वाई जच्छी याजना नहीं है । मरी धारणा है कि इससे कठिनाइया का निवारण होने के बजाय उनटे कठिनाइया वढ जायेंगा । मैं जत्र इस नतीजे पर पहुची तो मैंने श्रीमती मरे से अक्ले म चर्चा की और वह भी मेरे कथन से पूणतया सहमत हुइ । उनकी निणयात्मक बुद्धि के बारे म सदेह की गुजाइश नहीं है ।

यदि इस प्रश्न को लेकर सहमति हो जाए, तो अगला प्रश्न यह उठेगा कि आगामी तीन वर्षों के लिए रुपय की गारण्टी भारत से मिलेगी या कहीं और स । आपने जानना चाहा है कि क्या ऋण का ब दोबस्त यहा नहीं हो सकता । कहना पडता है कि यहा यह सम्भव नहीं है पर मुझे बताया गया है कि भारत मे कुछ स्यावर सम्पत्ति है जिसे बेचने की बात चल रही है । क्या उस विनी से जो रकम मिलेगी उसस आवश्यक खच की पूर्ति नहीं हो सकगी ?

✓ हरल्ड असारी के मामल के अलावा वेगम असारी का मामला भी विचारणीय है । वह परिस्थितिया का जिस घय और जास्था के साथ सामना कर रही है उसका मुग पर गहरा प्रभाव पटा । वह खुद भी अधिक स्वस्थ नहीं है, और उसे भी प्रति सप्ताह कुछ न-कुछ मिलते रहने की व्यवस्था होनी चाहिए । इन दाना के पास जो छोटा-सा घर है उसका एक कमरा श्रीमती अ सारी ने बिराये पर उठा लिया है । इससे १४ पौंड आ जाते हैं । जत्र हरल्ड अस्पताल म दाखिल हो जाएगा, तो वह एक और कमरा बिराय पर उठा देंगी । वसी अवस्था म यदि उन्हें १ पौंड प्रति सप्ताह मिलता रहे तो उनका काम चल जाएगा । उनकी एक मात्र अभिलापा यही है कि उनका लडका योग्य बनकर भारत वापस लौटे और जनता की सेवा करे ।

इम प्रकार कुल मिलाकर मा-वेट को ११५० पौंड की जरूरत है जिसस तीन

बय तक गुजारा हो जाएगा।

इस मामले में कोई व्यवस्था शीघ्र हानी चाहिए, क्योंकि इस समय दोनों बच्चे के रुपये पर गुजारा कर रहे हैं। आपसे दया ही होगी कि श्री दत्त कहते हैं कि २२ तारीख का मामला पर पुनर्विचार हो सकता है। पर तब भी जा रपया मिलगा, वह ऋण ही होगा और उसका भुगतान जरूरी है। मुख्य बात यह है कि जब तक इस बात को गारण्टी न मिल जाए कि आगामी ३ वर्षों के लिए व्यय की व्यवस्था हो गई है, तब तक हेरल्ड का किसी अस्पताल में दाखिला नहीं हो पाएगा।

आशा है, मैंने स्थिति को स्पष्ट कर दिया है। मैं पत्र में जो कुछ लिखा है उसे मैं हनरी पोलक का फोन पर पढ़ सुनाया और वह मर बचन से सहमत हुए। जब मैं कम्प्लेज में थी, तो श्रीमती मरे ने मुझसे जानना चाहा कि क्या इस बात को लेकर कोई कठिनाई उपस्थित होगी कि दोनों मसीही हैं। मैंने उन्हें बताया कि आपके निकट मत-मतांतर कोई मानी नहीं रखते और १० अमारी के मित्रों में भी इस बात को लेकर कोई समस्या आने में नहीं। लड़का दू-बू है, जब पित्त पर गया है। मैं जब-जब मा और बटे के पास बठी मुझे उस प्यारे मृत व्यक्ति की याद आई और मैंने सोचा कि यदि डा० अमारी को यह मालूम होता कि उनके परिजनों को ऐसी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा तो उन्हें कितना दुःख होता।

श्रीमती मरे की कृपा से हेरल्ड इस समय उनके कुछ इष्ट मित्रों के साथ रहे और छुट्टियाँ का आनंद ले रहा है। इससे उसके स्वास्थ्य में सुधार होगा। और यदि इस पत्र का उत्तर आने में देर न लगे तो उसको किसी अस्पताल में दाखिल कराने के लिए प्रायना पत्र तुरंत दे दिया जाएगा, और मा-बटे को जो चिंता सता रही है उससे उन्हें क्षाण मिल जाएगा। हेरल्ड और उसकी मा, दोनों इसके लिए आपके बड़े कृतज्ञ हैं कि आप उनके मामले में इतनी दिलचस्पी ले रहे हैं।

सप्रेम,
अमाया हैरिसन

पुनरुच

जब मैं बड़ा आऊंगी, तो आपके मामले में इंडिया हाउस द्वारा भारतीय विद्यार्थियों के लिए काम किया जाना की आवश्यकता का भी प्रसंग छेड़ूंगी। मैं जानती हूँ कि इंडिया आराम के बाय के बारे में मुकनाचीनी होती रहती है, पर

यदि भारत सहायता कर तो उसका बाय अधिन उपयोगी हा सक्ता है ।

अगाथा

३४

बलकत्ता

५ अगस्त १९३८

प्रिय महात्मावभाई

बापू 'हरिजन' में लिख रहे हैं यह देखकर प्रसन्नता हुई । इससे समाचार पत्र कुछ खीजगे जरूर पर यदि बापू ने इस मामले में निपटना जारी रखा तो अंत में इसका परिणाम अच्छा ही होगा । तानाशाही देशों में समाचार पत्रों का बाहिमत बात बरन की छूट नहीं रहती और तिस पर भी लोग कहते हैं कि कांग्रेस में तानाशाही का दौर दौरा है ।

चरखा सघ को ऋण देने के बारे में तुमने मेरे पत्र का कोई उत्तर नहीं दिया है । मुझे मालूम हुआ है कि इम्पीरियल बैंक में प्रस्ताव पास करके ऋण की स्वीकृति दी है, और इस प्रकार समस्या का निपटारा कर दिया है ।

सप्रेम,

घनश्यामदास

श्री महादेवभाइ देसाइ

वधा (म० प्रा०)

३५

वधा

८ ८ ३८

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपके सहृदयतापूर्ण नोट के लिए धन्यवाद । हाँ, चरखा सघ ने इम्पीरियल बैंक के साथ काम-काज आरम्भ कर दिया है, और अखिल भारतीय चरखा सघ ने

मुझे आदेश दिया है कि मैं उसकी जार से इस हनु आपका जाभार व्यक्त करूँ।

हा, वायकारिणी और वापू पर दाना हाथा से कीचट उछाली जा रही है पर इसके एकमात्र शिकार वापू ही हैं। मैं वापू के महाराष्ट्र प्रवास का इससे पहले इतना कभी नहीं वासा। वे लाग परल सिरे के झगडालू और कलह प्रिय हैं और एक दुवचन-व्या पारगत मराठी पत्र न ता युवका को वापू का खात्मा करने तक के लिए उकसाया है। वापू पर वम फेंकन का श्रेय पूना का ही तो है। यदि यन् भी कुछ हा जाय तो आश्रय नहीं। दुनिया भर में मराठी समाचार पत्र जस गदे पत्र चिराग लेकर दूने नहीं मिलेंगे। य लोग अपगन्त और दुवचनो के द्वारा स्वराय का पूरा जाद ले रहे हैं।

वापू व्यस्त हैं पर स्वस्थ हैं। कहा जा सकता है कि वह दुवचनो से पापक तत्त्व ग्रहण करते हैं।

मप्रेम,
महादेव

३६

सेमाव
वर्धा

१२ ८ ३८

भाई घतश्यामदास

इन पत्र और अपना अभिप्राय बताओ। जा पसे तुम्हारे माफ्त मिलते हैं उसका उपयोग ऐस कामा के लिए अगर सम्मति के मैं मनी करना चाहता हूँ और आजराज जो खच मैं कर रहा हूँ उस दृष्टि से तनी बड़ी रसम मैं न भी बचा सकूँ। कस भी हा मैं इस बार में तुमारा स्वतंत्र अभिप्राय चाहता हूँ। साकत नाकर के पास आज कुछ नहीं है। वगम अमारी के पास कुछ छोटी सी जायदाद देहांत में है उस पर नाकर के भाई दावा करते हैं किसी की इच्छा हेरल्ट को मन्द करन की नहीं है। साकत और चोहरा अमारी की धटी है। अमारी ता हमशा पसे त ही ये पता नहीं धम क्या कहता है। मुझे खुल्ले दिन से निखा नी।

वापू के जाशीवाद

भाई घनश्यामदास,

तुमने ठीक लिखा है। मैं तो तुमारे मन पर क्या असर होता है जानना चाहता था। लडके के लिये सब पसे भोपाल स मिन जायेंग। मेरे मन पर इसका बडा बोज था।

हा, काग्रेस म अराजकता बढती नजर जाती है। उसे रोकन का मैं भरसक प्रयत्न कर रहा हू—कफ़गा। परिणाम तो भगवान क ही हाया म है। हम शुद्ध प्रयत्न करेंगे ता जत अच्छा ही होनेवाला है।

वियोगी हरि के बारे म सुनकर मुझे बहुत खुशी होती है।

यहा हवा आजकल बहुत खराब है। हरसी होने पर थोडे दिना के लिए आओ और सेगाव मे ही रहना। ज० की कुटीर अच्छी है।

बापु के आशीर्वाद

सेगाव

२६ ८ ३८

मगतवाडी,

वर्धा (म० प्रा०)

२७ ८ ३८

प्रिय घनश्यामदासजी

भापाल के नवाब न हरट्ट असारी का भार ग्रहण करके बापू का एक बडी चिन्ता स मुक्त कर दिया। जब बापू आपको लिख रहे थे तो मने उह बसा करन स रोकने की चेष्टा की पर उहाने नहा घनश्याम अपन दिल की बात कह दगा और यत्न उसन इकार किया तो मैं समझ जाऊगा।

बापू के पूण मौन-व्रत न उनकी बडी मदद की पर महाराष्ट्र ने झूठ और पणा और हिंसा से भरा हुआ निहायत गदा प्रचार चना रखा है जिसमे वह

व्याकुल हो उठे हैं और मुझे आशंका है कि कहा वह दीघवालीन उपवास की घोषणा न कर बैठें। यह उपवास २१ दिन तक चल सकता है। मरी इस आशंका का कोई आधार नहीं है, पर मैं अपने मन का बात कह रहा हूँ, क्योंकि मुझे बड़ी बेचनी हो रही है। परंतु आप मत घबराइये। मरी आशंका विलकुल निमूल भी सिद्ध हो सकती है, पर मैं उसे आप-जस मित्रा से कस छिपा सकता हूँ? प्यारलाल की बीमारी न भी बड़ा बचन रखा पर अब वह खनर से बाहर है।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमटी की बैठक घोषणा के विपरीत बम्बई में न होकर दिल्ली में होगी ऐसा लगता है। यदि ऐसा हुआ तो कई दिन माय गटना हो जाएगा।

मप्रेम
महादेव

३६

३१ = ३८

प्रिय महादेवभाइ,

ममाचार-पत्रा में लगता है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमटी की बैठक दिल्ली में ही होगी। वसी स्थिति में वापू भी दिल्ली आयेंगे। वापू हरिजन-बस्ती में रहेंगे या मरे यहा? मैं समझता हूँ कि सरदार और कई-एक अन्य कांग्रेसी नेता भी मरे पास ही ठहरेंगे। मैं उनसे पूछकर पता लगा लूंगा। बल में दिल्ली के लिए रवाना हो रहा हूँ, उनके बाद फिर कलकत्ता लौट आऊंगा। पर यदि वापू आयें तो मैं २१-२२ सितम्बर तक पुनः दिल्ली चला आऊंगा।

आशा है वापू न भारत ब्रिटिश व्यापार समन्वित के बार में सरकार का भी यहा परामर्श लिया है जा वल हम लोग का धनवाले हैं। समन्वित की अनिम रूप गन्ना कुछ एगी है कि उन स्वीकार करा व बार में बार उल्लाह नहीं रह गया है। पर अनिम ता करन व पहन हमने विभिन्न उद्योग से मलाह-महावरा करन का निश्चय किया है। ऐसा लगता है कि कपडे व उद्योग-मंत्र में कुछ बचनी फन गई है। धारणा है कि यदि हमन शर्तें स्वीकार न की ता दरिफ बाप का महारा तार उहें उद्योग-मंत्र पर थाप दिया जायगा।

हम लोग न कोई अनिमिष निषय नहीं लिया है। हम देश की इच्छा-अभिप्राय व अनुष्ण ही आचरण करना चाहते हैं। उद्योग-शोधक साथ सदाह मशवरा कर लिया गया है। इसलिए अब सारी बात हमारे ऊपर ही आ जाती है। मशवरा व निष्ण जो मुख्य पाठिया रह गई है वह वृषि उत्पादन और बाणसी गता। भूलाभाई स्वीकार करने व तदनुष्ण विचार है। एसी बात नहीं है पर यदि वापू अपना विचार बतायें और सरदार याद के मुताबिक तार द्वारा हम सूचना द दें तो हम भी अपना कृत्य समझ जायेंगे।

डा० अमारी व पुत्र की सहायता भोपाल के नवाब करेगे गो जाना। उन्हें वापू ने निष्ण होना। वापू न अपने पत्र म निष्ण है कि नवाब भोपाल ने उह एत वही चिन्ता से मुक्त कर लिया। वापू से वह देना कि एतय पत्र की बात की लेकर उन्हें चिन्ता करती गहरत नहीं है। अब तक मैं पना दा की स्थिति म हू वह जा कुछ करना-कराना चाह उगव निष्ण मरे ऊपर तिभर रह मरत हैं।

अधिव भेंट हात पर।

सप्रेम

धनश्यामदास

श्री महात्मावभार्त् देगार्
वर्धा

४०

तार

महात्मा गांधीजी

माफत मुष्ण मत्री सीमा प्रात

पशावर

अपना प्रोग्राम सूचित करिय।

—धनश्यामदास

रायल एक्सचेंज प्नेस कनकता

६ १० ३८

४१

शिविर कोहाट

२१ १० ३८

प्रिय बिडलाजी

बापू के आदेशानुसार अपने प्रोग्राम की नकल भेज रहा हूँ। इसका पूरा व्यापार एसोसिएटेड प्रेम का दे दिया था। पना नहीं आपकी नजर से गुजरा या नहीं।

राजनतिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो यहाँ की स्थिति भी अय स्थानों की तरह ही विश्रुत है। बापू उसमें कोई रुचि नहीं ले रहे हैं क्योंकि यहाँ हम कुछ भी करने में असमर्थ हैं। पर यदि खुदाई खिदमतगार अपना नाम साधक करने को उत्सुक हुए तो उस स्थिति से निपटा जा सकता है। उनका गठन जसीम सभावनाओं से परिपूर्ण है। फसल तयार है सहूलता रही है पर बाटनेवाले बहुत कम हैं। मारी कठिनाई यही है। बापू ने रचनात्मक कार्यक्रम में दीक्षा देना का कार्यक्रम बनाया है जिसके द्वारा खुदाई खिदमतगारों और जनता के बीच सम्पर्क स्थापित हो सकता है। बापू चाहते हैं कि खुदाई खिदमतगार जनता के मन्त्रे रक्षक बनें। सयागवश यह भी कहूँ कि बापू सीमा पार के कबीलों की समस्या का हल भी खाज पान की आशा कर रहे हैं।

बापू का स्वास्थ्य आला दर्जे का चल रहा है ठीक वसा ही जसा दिल्ली में था। चार पौंड वजन बढ़ा है।

भवदीय

प्यारेलाल

४२

कोहाट

२२ अक्तूबर १९३८

तार

बिडला,

रायन एकमर्चेंट प्लेस

कलकत्ता

गोमवार तक कोहाट में। प्रोग्राम भेज रहा हूँ। ६ नवम्बर का दौरा समाप्त।

—बापू

सीमा प्रात में गाधीजी के दौरे का कार्यक्रम

तारीख	समय	स्थान	मील
२१ १० शुक्रवार	प्रात काल ८ बजे	उत्तमानजई स पशावर	२०
	६ बजे	पेशावर पहुचना	
	मध्याह्न १ बजे	पेशावर से कोहाट	
	संध्या के ५ ३० बजे	कोहाट पहुचना	६०
	—	कोहाट की ५ तहसीलें	
	—	~	
२२ १० शनिवार	१ बजे मध्याह्न	कोहाट से व नू	८०
२३ १० रविवार	६ बजे संध्या	व नू पहुचना	
२४ १० सोमवार	१ बजे मध्याह्न	जिने में कायक्रम	
	६ बजे संध्या	व नू म डेरा इस्माइल खा	
	—	डेरा इस्माइल खा पहुचना	
	—	डेरा इस्माइल खा में पडाव	६०
	—	डेरा इस्माइल खा में प्रोग्राम (टंक और कुलाची)	
२५ १०	१ बजे मध्याह्न		
२६ १०	६ बजे संध्या		
२७ १०	—		
२८ १० शुक्रवार और	—		
२९ १० शनिवार	—		
३० १० रविवार	—		
३१ १० सोमवार	—		

तारीख	समय	स्थान	मौल
१ ११ मंगलवार	१ बजे मध्याह्न	डेरा इस्माइल खा म मीरालेल को खाना	८५
२ ११	१ बजे मध्याह्न	मीरालेल स पेशावर को खाना	१२५
३ ११ बहुरस्पतिवार	६ बजे संध्या	पेशावर पहुचना	
४ ११ शुक्रवार और		पेशावर खादी प्रदर्शनी ४ बजे मध्या	
५ ११ शनिवार	२ बजे मध्याह्न	पेशावर म पडाव	६०
६ ११ रविवार	६ बजे संध्या	पेशावर स हरिपुर को खाना	
७ ११ सोमवार	२ बजे मध्याह्न	हरिपुर पहुचना	२०
८ ११ मंगलवार	४ बजे अपराह्न	हरिपुर स एवटावाद को खाना	२
	१ बजे मध्याह्न	एवटावाद पहुचना	
	२ बजे मध्याह्न	एवटावाद से म मरा का खाना	२०
	६ बजे संध्या	म तेरा पहुचना	
	७ बजे संध्या	म मरा से एवटावाद वापसी	२०
९ ११ बुधवार	१ बजे मध्याह्न	एवटावाद पहुचना	१२०
	६ बजे संध्या	एवटावाद से पेशावर को खाना	
		पेशावर पहुचना	

बम्बई

७ नवम्बर, १९५८

प्यारे महात्माजी

आज रात को भूलाभाई दिल्ली के लिए रवाना हो रहे हैं तो मैं यह पत्र उनके साथ भेज रही हूँ। मथुरादासभाई मुझे मिले थे। उन्होंने मुझे मीघ आने का आपका सदेश दिया था पर जहाज एक दिन देर से रवाना हुआ और इधर आपका तार पहुँचा जिसमें आपने सुझाया था कि मैं वर्धा पहुँचूँ इसलिए मैं वर्धा के लिए बुधवार को रवाना हो रही हूँ। आपके फिर दर्शन होंगे इसकी कल्पना करके आनन्द होता है। अपने साथ आपके मित्रों के बहुत से सदेश ला रही हूँ।

आपकी स्नेहभाजन
अगाया

पुनश्च

कसा विचित्र संयोग है ! जा स्टूडेंट्स आपकी लदन यात्रा के अवसर पर जहाज में था वही भरी इस यात्रा के दौरान भी साथ रहा उसका नाम है डिसूजा। उसने आपके लिए बहुत सारे सदेश दिये हैं।

सगाव

२२ १२ ३८

प्रिय धनश्यामदामजी

बापू ने आपके हाथों सुभाष बाबू का जा पत्र भेजा था उसकी नकल इस पत्र के साथ रखता हूँ।

सुभाष बाबू ने बापू को लिखा है कि उनका नोट से उन्हें गहरा धक्का लगा

है। बापू न उनका पत्र का सविम्वार उत्तर दिया है। पर यहाँ उनका विवरण देने को जरूरत नहीं है।

बापू न सीमा प्रातः मं जा स्वाम्भ्य-सचय किया या अब वह उस दोना हाया स लुटा रहे हैं और लेन के देने पड रहे हैं। गुजरात के एक महीन के प्रोग्राम की परशानी सिर पर है ही। बापू यह स्वीकार करते हैं कि यह प्रोग्राम यातना दगा, पर उनका कहना है कि वह वहा आराम करने तो जा नही रहे हैं और उसक वाप कापस, और फिर गाधा मवा सध की धठक यह सारा बडा महंगा पडेगा।

मरी इादिक अभिलाषा है कि गुजरात का दोग वाप म रघा जाय। मैंन सरदार को लिखा भी है, पर यह सब अब आसमान के तारे तोडने का वाशिश करने जसा है।

मन्वा गत ता यह है कि मुय पर चिन्ता सवार हा गई है।

आपका

प्यारेलाल

सलग्न १

अपगत गोपनीय

सगाव

वर्धा

१८ १२ १९३८

प्रिय सुभाष,

मैं यह पत्र बालसर लिखवा रहा हूँ क्योंकि मैं स्वच्छा स अघा बन गया हूँ। मैं बोल रहा हूँ और मौनता साहब, नलिनी बापू और धनश्यामदास ती सुन रहे हैं। बगाल के मन्त्रिमडल के धार म हमने विचार विमग्न किया। मुझ पढ़न से भी अधिक विग्राम हो गया है कि हमे मन्त्रिमडल का भग करने की कोशिश नही करनी चाहिए। मन्त्रिमडल म हर फेर करन से हम कुछ हासिल नही हागा। सम्भव है उसम किमी काग्रसी के लिये जाने स हम ही घाटे मे रहें। इसलिये मरी धारणा है कि शासन क दाब का परिष्कार करने और निश्चित प्रोग्राम और नीति को बरकरार रखन का सबसे अच्छा तरीका यही है कि हम जो का सुधार चाहते हैं व बतमान मन्त्रिमडल के माध्यम म करायें। नलिनी बापू को मन्त्रिमडल तभी छाडना चाहिए और वह छाडन को तयार भी हो जायेंगे जब मन्त्रिमडल देश हित के विघट्ट कोई काम करने पर उतारू हो जायेगा। वसी स्थिति म उनका मन्त्रिमडल से हटना एक पापसगन भयादापूण कदम होगा। मैं समझता

है कि जहाँ तक म्युनिमिपल कानून का सम्बन्ध है परिगणित जानिया के लिए पथक निर्वाचन की व्यवस्था का परित्याग कर दिया गया है। पर मुसलमानों के लिए पथक निर्वाचन की व्यवस्था ज्यों-की-रहती रहेगी। इस बात का लक्ष्य विरोधी पक्ष को मन्त्रिमंडल के भंग होने की नीजत तक पहुँचाना वाछनीय है या नहीं सो मैं नहीं जानता। यदि मुसलमान पथक निर्वाचन पर अडे रहें, तो मरी सभ में उनकी बात मान लेना उचित रहेगा। मैं यह कदापि नहीं चाहूँगा कि वे काश्मिर के विरोध के बावजूद अपनी बात मनवायें। वसा हुआ तो उसमें काश्मिर काहित नहीं होगा।

यदि तुम मेरी बात मानने योग्य समझो तो बर्दिया की रिहाई का प्रश्न एक साधारण सा प्रश्न बनकर रह जायगा। यदि यह राय तुम्हें श्रेयस्कर जच, तो नयी नीति के वार में स्पष्ट घोषणा होनी चाहिए। ऐसा होने से बंगाल का बतमान तनाव कम हो जायगा और उसकी त्रिशकु-जसी स्थिति का अंत हो जायेगा। मौलाना साहब की इस राय के साथ पूर्ण सहमति है। नलिनी बाबू और घनश्याम दास भी सोचते हैं।

सन्नेह

बापू

४५

२५ दिसम्बर, १९३५

बाल

‘व और ससम्नव के लिए धन्यवाद। तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे बिलकुल
‘कि जब मैं वहाँ से चला था तो बापू का स्वास्थ्य बिलकुल खराब था।

घनश्यामदासजी वार में तुमने जो कहा उससे मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ।
बापू ने आपके हाथों सुभाष की कि वह मुझे पर खीज उठे हैं। उनकी धारणा है कि
य रखता हूँ। वह मरी प्रेरणा से लिखा है। जरा सोचो तो बापू को
भाष बाबू ने बापू को लिखा ही मे है। “ “ “ बेतुकी है।

Love

छपी हैं उह तुमने दखा ही हागा । मुझ लगता है कि अब बापू को 'हरिजन' म उन प्राणा के विषय को छटना चाहिए, जहा बापू का बहुमत नही है । इससे बहुत-कुछ गलतफहमी भी दूर हो जायगी । याद पडता है जय में वर्धा म था तो बापू न हरिजन म दस विषय को उठाने की बात कही ता थी ।

बापू को बता देना कि मैं नलिनी के जाग्रह पर उह सुभाष के नाम बापू के पत्र की नकल द दी थी । साथ ही मैं यह भी ताकीत कर दी थी कि उसे बिलकुल गायनीय रखा जाय । नलिनी न बचन दिया था । हा उहने यह अवश्य कहा था कि व उस गवर्नर का दिग्माना चाहेंगे कयाकि तरह-तरह की अपवाह फल रही हैं । मैं मामला स्वयं नलिनी की समझ बूझ पर छोड दिया था । पर मुझे इस बात का पूरा यकीन है कि वह उस पत्र को गायनीय ही रखेंगे ।

नलिनी इस बात से बडे खुश हैं कि उह बापू का माग-दशन मिल मरा । मरा विश्वास है कि वह शन शन बापू के प्रभाव मे आ रहे हैं । तुम जानते ही हा कि नलिनी दूध क घोष रहे हा एसी बात नही ह । पर बापू के प्रभाव म आकर वह सुधर जायेंगे एसा लगता है । यदि एसा हुआ ता यह एक बडी उप लब्धि होगी ।

आशा है तुम इस पत्र की बाता की जानकारी बापू का दे दाग ।

तुम्हारा

धनश्यामदास

श्री प्यारलाल,
सेगाव

हू कि जहा तक म्यूनिसिपल कानून का सम्बन्ध है, परिगणित जातियो क लिए पथक निर्वाचन की व्यवस्था का परित्याग कर दिया गया है। पर मुसलमानो क लिए पथक निर्वाचन की व्यवस्था ज्यो की-र्या रहगी। इस बात को लेकर विरोधी पक्ष को मन्त्रिमण्डल के भंग होने की नौयत तक पहचाना बाछनीय है या नही, सो में नही जानता। यदि मुसलमान पथक निर्वाचन पर अड रहे ता मरी समय म उनकी बात मान लेना उचित रहेगा। में यह कदापि नही चाहूगा कि वे काग्रम के विरोध के बावजूद अपनी बात मनवायें। बसा हुआ तो उसम कांग्रेस का हित नही होगा।

यदि तुम मेरी बात मानन योग्य समझो तो बिंद्या की रिहाई का प्रश्न एक माघारण सा प्रश्न बनकर रह जायगा। यदि यह राय तुम्हे श्रयस्कर जच, तो नयी नीति के बारे म स्पष्ट घोषणा हानी चाहिए। ऐसा हान से बगाल का वतमान तनाव कम हो जायगा और उसकी त्रिशकु जसी स्थिति का अंत हो जायेगा। मौजाना साहब की इस राय के साथ पूर्ण सहमति है। नलिनी बाबू और घनश्याम दास भी सोलह जान सहमत हैं।

सस्नह
बापू

४५

२२ दिसम्बर १९३६

प्रिय प्यारेलाल

तुम्हार पत्र और सलगनव क लिए धन्यवाद। तुम्हारा पत्र पढकर मुझे चिन्ता हान लगी है क्या, कि जब मैं बहा स चला था ता बापू का स्वास्थ्य आला दों का लगता था।

सुभाष क पत्र के बारे म तुमन जा कहा उसस मुझे का आश्चय नही हुआ। मुझे मित्रा स पता चला, है कि वह मुझ पर खीज उठे हैं। उनकी धारणा है कि बापू न उह जा पत्र लिखो, वह मरी प्रेरणा स लिखा है। जरा साबो तो बापू का प्रेरित करन की सामग्य कि, सो म है इसनी कल्पना तक कितनी बेतुकी है।

पत्रा म मरी बर्धा यात्रा, तत्पश्चात् बम्बई-यात्रा के बारे म जा अटवले

छपी है उहे तुमने दखा ही होगा। मुझे लगता है कि जब बापू का 'हरिजन' में उन प्रातो के विषय को छेड़ना चाहिए जहा कांग्रेस का बहुमत नहीं है। इससे बहुत-कुछ गलतफहमी भा दूर हो जायेगी। याद पड़ता है जब मैं वर्धा में था तो बापू ने 'हरिजन' में इस विषय को उठाने की बात कही थी।

बापू को बताना कि मैंने नलिनी के आग्रह पर उहे सुभाष के नाम बापू के पत्र की नकल दे दी थी। साथ ही मैंने यह भी ताकीद कर दी थी कि उस बिलकुल 'गोपनीय' रखा जाय। नलिनी ने बचन दिया था। हा उहोने यह अवश्य कहा था कि वे उस गवर्नर को दिखाना चाहेंगे क्योंकि तरह तरह की अफवाह फैल रही है। मैंने मामला स्वयं नलिनी की समझ बूझ पर छोड़ दिया था। पर मुझे इस बात का पूरा यकीन है कि वह उस पत्र को गोपनीय ही रखेंगे।

नलिनी इस बात से बडे खुश हैं कि उहे बापू का भाग दशन मिल गया। मरा विश्वास है कि वह शन शन बापू के प्रभाव में आ रहे हैं। तुम जानते ही हा कि नलिनी दूध के धोये रहे हा एसी बात नहीं है। पर बापू के प्रभाव में आकर वह सुधर आयेंगे एसा लगता है। यदि ऐसा हुआ ता यह एक बडी उपलब्धि होगी।

आशा है, तुम इस पत्र की बाना की जानकारी बापू का द दाग।

सुम्हारा

घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेगाव

४६

संगाव

३० १२ ३८

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका दोना पत्र मिल गये थे।

आपने जो कतरनें भेजी थी व मैंने बापू का दे दी है।

सुभाष ने वापू से बातचीत का श्रीगणेश किया ही था कि बीमार पड़ गये। अब उंहाने चारपाई पकड़ ली है, नासिका के भीतरी भाग में सूजन है। उनकी अच्छी तरह देखभाल की जा रही है। आशा है उंहें वापू के दृष्टिकोण का औचित्य दिखाई पड़ेगा।

सरदार ने एक बार फिर अपनी स्वाभाविक दक्षता के कारण वाजी मीती। पर अभी इस विजय ने स्पष्ट रूप धारण नहीं किया है और यदि वसा करण में देर लगी तो बना-बनाया काम बिगड़ जायेगा। परन्तु मामले में ढील नहीं दी जा रही है। आपने देखा ही होगा कि राजकाट के उस गौर दीवान का निकाल देने के माग पत्र पर ४००० स्त्री-मुरपो ने हस्ताक्षर किये हैं। यदि वह वहा से टला और उसक स्थान पर कोई अच्छा-सा जादमी आया तो सब-कुछ ठीक हो जायगा।

कल हम वारडोली के लिए रवाना हो रहे हैं। काफी बड़ा दल हो जायगा। दूसरे हफ्ते में देवदास भी बम्बई जाते समय कुछ मित्रों के लिए साथ हो लेंगे।

नागपुर के बिशप ने अपना जाल सेगाव में भी फलाया है। वापू ने इसका कठोर विरोध किया जिससे बिशप आग-बबूला हो गया। यदि बिशप को कोई आपत्ति न हुई तो पत्र-व्यवहार प्रकाशित कर दिया जायगा। आपको नकल तो भेजूंगा ही। राजकोट के इस गौरे दीवान ने वहा पुराने दीवान पर अपना सिक्का बैठान की जा जा कोशिशें की उनकी कहानी बड़ी रोचक है। सारा मामला पत्रों में दर्ज है। प्रकाशित होगा तो लोग पढ़कर दंग रह जायेंगे।

भवदीय
प्यारलाल

बापू का लेख

एक महान्तम काय

१९२० के सत्याग्रह-आन्दोलन के आरम्भ काल से ही मादक द्रव्य निषेध कांग्रेस का एक मुख्य ध्येय रहा है। इस ध्येय की सफलता के हेतु हजारों स्त्री-पुरुषों को जेल जाना पड़ा, तथा बल प्रयोग का शिकार होना पड़ा है। इसको ध्यान में रखते हुए कायकारिणी की यह राय है कि कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल इस उद्देश्य की सिद्धि के निमित्त कायरेत हो। कायकारिणी उनसे यह अपेक्षा करती है कि वे अपने-अपने प्रांतों में अगले तीन वर्षों में मादक द्रव्य निषेधाज्ञा पूरी तरह लागू कर दें। कायकारिणी अगले प्रांतों के मन्त्रिमण्डलों तथा देशी रियासतों से भी अपील करती है कि वे जनता के नैतिक और सामाजिक उत्थान के हेतु इस काय-योजना को अपनायें।

अपने अत्यधिक व्यस्त कायक्रम के दौरान कायकारिणी का यह प्रस्ताव उसके महान्तम काय का एक अंग है। मादक द्रव्य निषेध की माग बराबर बनी रही है। १९२० में इसका कांग्रेस का अंग रचनात्मक कार्यों में प्रमुख स्थान ग्रहण किया। पन्त जिन जिन प्रांतों में कांग्रेस ने शासन की बागडार अपने हाथ में ली, उनमें यह निषेधाज्ञा अविनाशकारी करने के लिए अनिवार्य हो गया। मद्रास का यह प्रांत में ११ कराड की आय का बलिदान करने का साहस दिखलाना था। कायकारिणी अपने वचन का पालन करने तथा उन लागू करे जा इस दुर्व्यसन का गिकार है नैतिक और आर्थिक उत्थान के निमित्त यह जायिम उठाने का बाध्य थी मरी तीव्र अभिलाषा है कि जिन पांच प्रांतों में कांग्रेस का बहुमत नहीं है, वे इन छह प्रांतों का अनुकरण करने में पीछे नहीं हटेंगे। उनके लिए इन छह प्रांतों का मुकाबले यह निषेधाज्ञा जारी करना अधिक सुगम है। और देशी रियासतों से ब्रिटिश भारत का अनुकरण करने की अपेक्षा करना क्या एक असंभव कल्पना है?

मुझ मालूम है कि अनेक लोगों को निषेधाज्ञा के सफल हान का बारे में शका है। उनकी धारणा है कि आर्थिक प्रलोभन का संवरण करना उनके लिए संभव नहीं होगा। उनकी दलील है कि व्ययमनी लोगों में मद्यपान करने और अपीम खाने

की आदत छुड़ाना सहज नहीं है व अपने व्यसन की वृत्ति के लिए नाजायज ढंग से मादक वस्तुएं जुटायेगे जोर जब मंत्री लाग यह दर्सेंगे कि इस आर्थिक बलिदान के बावजूद लोग का व्यसन नहीं छूटा है तो वे पुन आय क इस दूषित साधन को अपना लगे तब दशा पहल से भी गई बीती हो जायेगी ।

मुझे ऐसी कोई आशंका नहीं है । मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस साधु उद्देश्य की सफलता के लिए आवश्यक नैतिक प्रेरणा राष्ट्र में प्रचुर मात्रा में विद्यमान है । यदि निषेधाना का कारगर होना होगा, तो इसके लिए तीन वष की प्रतीक्षा की जरूरत भी नहीं है छह महीने के भीतर ही पता लगने लगेगा कि यह उद्देश्य सिद्धि सम्भव है । जब भारत को वास्तविकता दीखने लगी तो जो प्रात और रजवाडे इस मामले में पिछड़ गये हैं वे भी उस अनिवाय स्थिति क आगे सिर झुकाने का बाध्य हो जायेगे ।

यह मादक द्रव्य निषेध सम्बन्धी आदातन इस शताब्दी का महानतम नैतिक प्रयाग है इसलिए हम यह अधिकार है कि हम न केवल अपने ही देश में बस यूरोपियना तथा अन्य राजनैतिक दलों की सहानुभूति और सहायता की आशा रख बल्कि विश्व भर के छोटी के विद्वानों से भी वसी ही सहानुभूति और सहायता की अपेक्षा करें ।

फलत यदि हम मद्य निषेधाना आदि का भारत की नैतिक जागृति का चिह्न मानें तो शराखाना की बंदी महज एक पहला अनिवाय कदम होगा । यह आदतन तभी पूणतया सफ़्त माना जायेगा जब मादक द्रव्या क व्यसनी, जिनमें इस कुरी लतवाले गरीब लोग और भुट्टी भर पैसवाले लोग सभी आते हैं इस दुःखसंन का परित्याग कर देंगे जो शरीर और मन दाना को समान रूप से क्षति पहुँचाता है । यह लक्ष्य सरकारी कारवाई मात्र से सफल नहीं हो सकता । इस सदन में मैं वही बात दुहराऊंगा जो महादेव देसाई न हरिजन की एक टिप्पणी के दौरान कही थी । उन्होंने अपनी टिप्पणिया में जिस काय-न्यायना का इंगित किया था उस में यहा संक्षेप में देता हू ।

१ प्रत्येक प्रात की शराब और अफीम गाज की दूकानों का नकशा तयार किया जाये कि किस स्थान पर ऐसी कितनी दूकानें है ।

२ ऐसी दूकाना क लाइसेंस की अवधि पूरी हान पर उन्हें बन्द कर दिया जाए ।

३ जब तक इस साधन से आय हाती रहे तब तक इस आय का एकमात्र उपयोग निषेधाना का अमल में लाने के लिए किया जाए ।

४ जहा कहीं सम्भव हो वहा शराबखानों का जलपान गहो का रूप दे दिया

जाए जिनसे आनेवाले पुराने ग्राहक वहा आते रहें। शराबखानो के पुरान मालिक ही उन्हें जलपान गहो के रूप मे चलायें तो ठीक रहगा।

५ आबकारी क महकमे म काम करनेवाला अमला निपेधाना के लागू होने के बाद नाजायज ढग से शराब चुआनेवाले स्थानो की खोज खबर देना शुरू करे।

६ शिक्षण सस्थाओ स अपील की जाए कि वे अपने शिक्षका और विद्या यियो से मद्यपान विरोधी प्रचार काय म घोडा समय लगान वो कहें।

७ महिलाओ स अपील की जाए कि वे ब्यसनियो क घरो मे जाकर उनके जाश्रिता की दशा का निरीक्षण करें।

८ पडोसी रियामता म वसी ही निपेधाना लागू करने के बारे म बातचीत की जाए।

९ मद्यरहित पेय पदार्थों की खोज करने के लिए स्वयंसबक जथवा चिकित्सको की सहायता ली जाए। वे यह भी सुझायेंगे कि ब्यसनियो स यह लत कसे छुडाई जाए।

१० मद्यपान विरोधी प्रचार काय उन सभा सोसाइटिया म पुनर्जीवित किया जाए जो इस काय म सलग्न थी।

११ उद्योगवाला से कहा जाए कि वे अपन कल-कारखाना म जलपान गह खल-कूट आमोद प्रमाद और शिक्षण-वक्षाए प्रवीण ब्यक्तिया की दख रख मे ही चलायें।

१२ ताडी तयार करनेवाला का उपयोग कवल नीरा तयार करने म किया जाए। वे उस तरल पत्थाय को गुठ क रूप म बदलने म धवित लगा दें। मुझ पता लगा है कि ताडा तयार करने म जिस प्रणाली स काम लिया जाता है, नीरा या गुड तयार करने की प्रणाली उसस भिन होगी।

शराब तथा अय मादक द्रव्या के विरुद्ध प्रचार-काय इसी तरीक स किया जा सकता है।

अब रही यह बात कि आबकारी स प्राप्त होनेवाली आय की क्षति की पूर्ति कस हा। कुछ प्रातो म आबकारी महकम की जाय सरकार की सारी आय का एक तिहाई है। मैंने बराबर यही कहा है कि इस जाय का उपयोग शिक्षण सस्थाओ के सचालन म दाखिल न किया जाय। मैं अब भी यही कहता हू कि शिक्षा को स्वावलंबी बनाया जा सकता ह। मैं इस विषय की चर्चा अयल करूगा। ऐसा एक दिन म सम्भव नही है। पहले तो शिक्षा को स्वावलंबी बनाने की बात सिद्धात क रूप म स्वीकार करनी होगी। जो जिम्मेदारिया मौजूद हैं, उन्हें तो

निभाता ही होगा। इसलिए आद्य व साधना की तलाश करनी होगी। मृतक द्वारा छोड़ी गई वसीयत पर कर लगाने तथा तम्बाकू और बीड़ी पर कर लगाने के सुझाव दिये जा चुके हैं। यदि फिजहाल इनकी सफलता तत्काल सम्भव प्रतीत न हो तो बजट व घाटे की पूर्ति के लिए ऋण लिया जा सकता है। यदि उससे भी पूरा न पड़े तो केंद्रीय सरकार से सना व व्यय में कटौती करने का कहा जा सकता है। उससे जा बचत हो वह प्रातों को अनुदान के रूप में मिले। यदि प्रात यह साबित कर सकें कि उन्हें आंतरिक शांति बनाये रखने के लिए सेना की जरूरत नहीं है तो इस मांग की उपक्षा करना असम्भव हो जायेगा।

४८

माधीजी के साथ प्रेम मुलाकात

हम लोग ने उनके साथ त्रिज्य लोलकर विस्तारपूर्वक बातचीत की। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि यह उपवास सालह आन पथक निर्वाचन के विरुद्ध आरम्भ किया गया है। जब पथक निर्वाचन का व्यवस्था उठा ली जायगी, तो इस उपवास का भी अंत हो जायेगा। पथक निर्वाचन की व्यवस्था का स्थान कौन सी व्यवस्था ग्रहण करे इस बाबत कई फामूला पर विचार हुआ, पर उन्होंने कहा कि इन फामूला पर हम लोग अपने मित्रों के साथ सलाह मशवरा करें। उपवास की शत का इतने स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया था यह हमारे लिए बड़े सतोप की बात है। उन्होंने हमसे इस बात पर जोर देने को कहा कि इस उपवास का उद्देश्य डरा धमकाकर जबरन दृष्टिकोण में परिवर्तन कराने का नहीं है। उन्होंने कहा है कि चार दिन पहले सरकार के पास अपना वक्तव्य प्रकाशनाथ भेज दिया था, जिसमें उन्होंने अपने विचारों को पूर्णतया स्पष्ट कर दिया था। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें रावबहादुर एम० सी० राजा के पास से कोई खबर मिली है, तो उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया। पर जब हम उनसे वातालाप कर रहे थे, उन्हीं अवसर पर उन्हें श्री पी० एन० राजभाज का एक पत्र दिया गया। उन्होंने कहा कि वह उस पत्र का शीघ्रातिशीघ्र उत्तर देंगे।

एक अध्ययन

सहकारी योजना के अतगत नारियल के तेल का उत्पादन

हम लोग नारियल का तेल सहकारी प्रणाली के द्वारा उत्पादन करने के परीक्षण में लगे हुए हैं जिससे भटियलपुर क्षेत्र के चारों ओर जो दगाग्रस्त गाव हैं उनके निम्न स्त्री-पुरुषों को राहत मिल सके। यह उद्योग उस सस्था के माध्यम से किया जा रहा है जिसका विचार बहुदेशीय उद्योग महकारी सस्थान के रूप में विकसित करने का है। इस सस्थान के सदस्यों को ४) सेर के हिमाव से मूल्य चुकाया जाता है। जो लोग मदस्य नहीं हैं उन्हें ५) सेर के हिमाव में दिया जायगा। सदस्यगण के लिए एक बात यह है कि अपना और परिजनों का तन ढकन के मामले में स्वावलंबी बनें। हम खर्चों में हाथा में पसा नहीं रखना चाहते क्योंकि बसा करने से कपड़े की चोरबाजारी को बल मिलेगा। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए प्रत्येक सदस्य को खुद सूत कातना और बुना साँखना और अपने घर के सभी स्त्री पुरुषों को सिखाना जरूरी होगा। उसे सहकारी सोसाइटी से लेय रकम के एवज में कपास के चार पीछे उगाने होंगे जिनकी कपास वह स्वयं सूत कातना वाला को मुफ्त देगा। जब तक तेल उत्पादन करनेवाले इस प्रकार स्वयं उगाई गई कपास देने की योग्यता प्राप्त नहीं कर लेंगे उसे दिख जानेवाले तेल के मूल्य में से १) सेर के हिमाव में सोसाइटी अपने पास उसके शेयर की पूंजी के बतौर जमा रखेगी।

तेल उत्पादन के इस प्रस्ताव के द्वारा उन लोगों को सुरत कुछ आर्थिक लाभ होने लगगा जो काम करने को राजी पाय जायेंगे। जो लोग सबके कल्याण के दा घट नि शुल्क परिश्रम करने का तैयार होंगे उन्हें १ सेर चावल कट्टाल की दर से दिया जायेगा। यह नि शुल्क परिश्रम यह होगा कि वे अपने अपने गाव की मडकों तयार करेंगे उन्हें अच्छी दशा में रखेंगे, पुल बनायेंगे और तालाब साफ करेंगे, और जो काम वह विशेष रूप में करेंगे वह यह होगा कि वे जल कचू उगायेंगे तालाबों में सिंचाई उगायेंगे और इस प्रकार अपने तथा अन्य लोगों के लिए खाद्य-सामग्री जुटायेंगे (इस समय तालाब किसी काम में नहीं आ रहे हैं क्योंकि उनमें कोई और पानी की घाम छाई हुई है)।

इस योजना का दूसरा अंग यह रहेगा कि नारियल के खोपर का सत्प्रयोग

किया जायेगा। नारियल के घोबे और मस्के अकाल की स्थिति में भोजन की सामग्री के रूप में काम देने के उद्देश्य से सुरक्षित रखे जायेंगे। उसके बड़े छिन्ने सं चाय के सुन्दर प्याले तयार किये जायेंगे बटन बनाये जायेंगे। चीनी रखने के भांड तयार किये जायेंगे। उसके रेशे से रम्मिया तयार की जायेंगी। काजिरखिल शिद्विर में मह प्रयोग इस समय भी हो रहा है। रेशे की डोरी आजवान २॥) सेर विवती है। उसका इस्तेमाल मकान बनाने के काम में किया जाता है और इस अचल में इसकी काफी मांग है। खोपरे सं चाबे और मस्क में चीनी अथवा गुड या नमक मिलाकर बड़ा पौष्टिक घाद्य पदार्थ तयार किया जा सकता है। तेल तयार करने के लिए नारियल के केवल उसी अंश को व्यवहार में लाया जाता है जो छाने पीने के काम में नहीं आता है। योजना के इस अंश को अमली रूप देने के लिए हाथ से चलाई जानेवाली मशीना की जरूरत होगी। उनका व्यवहार सुदक्ष लागू गाववाला का सिखायेंगे जिससे नाना प्रकार की वस्तुएं तयार की जा सकें।

अभी योजना के केवल पहले अंश को तथा दूसरे अंश के थोड़े-म भाग को अमली रूप दिया जा रहा है। नारियल के तेल का उत्पादन इस वर्ष १७ अप्रैल से आरंभ किया गया। पहले पखवाड़े में केवल चार सेर तेल तयार हो सका। १२ जून को यह प्रयोग स्थगित कर दिया गया। उस समय तक १६ १६ सेरवाले १६ और १४ कनस्तर तेल तयार होने लगे थे जिसका मूल्य क्रमशः (१२१६) और (१०६४) था। अब तक जितना तेल तयार हुआ है उसका मूल्य ३८००) था। कुल मिलाकर ५० कनस्तर तेल तयार हुआ। इस कार्य के द्वारा १३० परिवारों को काम मिला जिनमें ६७ हिन्दू और ३३ मुसलमान थे। वास्तव में ये लोग इस उद्योग के द्वारा ही दुर्मिक्ष से बच पायें। इसका द्वारा प्रत्येक स्त्री को दो रुपये का आने प्रतिदिन की आय हुई। इस प्रकार डेढ़ महीने में कुल मिलाकर उन्हें (१६००) की आय हुई और शेररा की पूजा के रूप में सोसाइटी के पास (६००) जमा हुए। कुछ स्त्रियाँ के पास २०) ३०) की पूजा इकट्ठी हो गई। इतनी रकम के अपने जीवनकाल में कभी संचित नहीं कर पाई थी।

योजना के स्वावलंबी और आत्मनिर्भरता वाले अंग के अंतर्गत ६५८१ जल कच्चा ४२० तान कच्चा ६५० कपास के पीछे उगाये गये। इनके अलावा, ३५० मन जमीन की प्राप्ति भी हुई। १६५० मन खादी की पट्टी की उपलब्धि हुई जिनसे ८७०० गज कपडा प्राप्त हुआ।

तेल का उत्पादन करनेवाले तेल की डिलिवरी लगभग पूरे सप्ताह करते रहते हैं। सोमवार को हाट लगती है उस दिन डिलिवरी विशेष मात्रा में होती है। मूल्य तत्काल चुका दिया जाता है जिससे तेल तयार करनेवाले हाट से अपने

जपन अपने घरा म आवश्यक चीजें खरीदकर ले जा सकें और तेल उत्पादन के लिए नारियल ले जा सकें। पहन नारियल का भाव प्रति रुपये ८ १० नारियल या अब चत्कर ५ तक हो गया जिसके परिणामस्वरूप तेल का उत्पादन आर्थिक दृष्टि से बहुत खर्चीला हो गया है। यदि तेल का उत्पादन फिर म जारी करना है तो इसके लिए यह आवश्यक है कि हमारे कदम में जो तेल आता है उसका सिलसिला बनाय रखने के लिए हाथ में रूपा रहे जिमसे तेल तयार करनेवाला को पेशगी रूपा दिया जा सके। नकद रुपय की इमलिए भी जरूरत है कि उससे नारियल प्रचुर मात्रा में तयार रखा जा सके ताकि हफ्त में दो बार लगनेवाली हाट के घटते-बढते भावा म उत्पन्न होनेवाली स्थिति का सामना किया जा सके और तेल बनानेवाले लक्ष्मीपुर तथा अन्य स्थानों पर सस्त दाम में नारियल खरीदने में समर्थ हो सकें। हमारे पास नकद रुपय का रहना इमलिए भी जरूरी है कि टीन अधिक सख्या में खरीदे जा सकें और उनमें तेल भर जाने के तुरत बाद ढक्कन लगाने की व्यवस्था हा सके। इन टीना का बरालखिन स कुमिल्ला चादपुर तथा अन्य स्थानों पर भेजन की समुचित व्यवस्था रखने के लिए भी नकद रुपय की जरूरत है। एक पखवाडे म खरीदे जानेवाले तेल की कीमत चुकाने के लिए कितना रुपया रखना जरूरी है इसका तखमीना निम्नलिखित है

एक बनस्तर पीछे १६ सेर प्रति बनस्तर ५ हिसाब से एक	
पखवाड म खरीदे जानेवाले तेल की ४) प्रति सर की दर स	३००० ० ०
सगहीत नारियल का मूल्य	५००-० ०
बनस्तरा की कीमत और ढक्कन लगातवाने का शुल्क	२०० ० ०
बपा ऋतु में चाये और मस्के को तयान के लिए जरूरी इधन	
तथा कटाइया और भट्टिया का खच	१०० ०-०
	<hr/>
योग	८००० ० ०
	<hr/>

कुमिल्ला म ४) सर की दर से खरीदे जानेवाले तेल की कीमत बनस्तरा और ढक्कना की कीमत तथा माल ढोने के खच और ढक्कन लगानेवाले की मजदूरी से अलग है।

नारियल का तेल तयार करने की लागत

३) म १८ से २४ तक नारियल खरीदे जा सकते हैं। उहे गुडगुडिया का रूपा देने पर उनकी बिक्री प्रति गुडगुडी १ =) से ४।।) तक हो सकती है। यदि

२२४ बापू की प्रेम प्रसादी

उहे कुटीर-उद्योग के रूप में अच्छे ढंग में तयार किया जाय तो ये और भी ऊँची कीमत पर बिक सकती हैं। इस समय नारियल की रस्सी का दाम २॥) सेर है। १८ नारियल में एक मेर रस्सी तयार हो सकती है। इसकी तयारी में दो दिन लगेंगे।

नारियल के तेल की बाजार दर ३॥) प्रति सेर है। ३ दिन में इन सार पदार्थों की तयारी में ३ =) की खानिस आम होगी।

विभिन्न कीमतों पर उत्पादन का प्रतिशत अनुपात

कीमत प्रति गज	प्रतिशत
१ =)	१
१)	२
३ =)॥	४
३ =)	१०
=)॥	१५
=)।	२३
=)	४५
<hr/>	<hr/>
औसत २ ३७ आन प्रति गज (कमीशन अलग)	१०० प्रतिशत

५०

नाजिमुद्दीन के साथ हुई बातचीत पर नोट

१) महात्मा गांधी को सदेश

मात्र के अंत तक जेल में कोई नहीं रहेगा। या तो रिहा कर लिया जायेगा या घर अथवा गांव में नजरबंद कर दिया जायगा। पर गांधीजी को यह नहीं समझ रखना चाहिए कि इतने मात्र से ही सारा काम पूरा हो गया, यहाँ उनका आना अत्यावश्यक है।

२) वातावरण

यदि हिंदू समाचार पत्रों पर नियंत्रण रखा जा सके तो वह मुस्लिम समाचार पत्रों की बात से डरते या डराने से डरेंगे। निष्पक्षतापूर्वक में समाज के

फूल और 'श्री श' स चिड है ।

३) हिन्दू मुस्लिम प्रश्न पर विचार विमश

पृथक पथक सस्थाआ का अस्तित्व अनिवाय है । उह काग्रेस म मिलाने से मुसलमानो की स्थिति कमजोर हो जायगी । क्या इस पाथक्य का एतमात्र परिणाम आपस की कटुता नही होगा ? वह असहमत हुए ।

४) वाद विवाद किस बात का लेकर है ?

साम्प्रदायिक निणय की बात निपटा दी गई है । उनका कहना था कि यह सब कुछ हिं दुआ की मनीवत्ति के कारण है । उदाहरण के लिए ढाका विश्व-विद्यालय मे हिंदुओ और मुसलमाना का समान अनुपात है, यद्यपि विद्याधियो अध्यापको जोर मभी अय क्षेत्रा मे हिंदुओ की बहुतायत है । प्राथमिक शिक्षा का विरोध कलकत्ता कांफेरिशन म हिं दुआ ने कुछ नही किया काग्रेसी मन्निमडलो म सच्चे मुसलमाना का नही लिया गया । इसके उत्तर म मैंन पूछा कि क्या बंगाल के मन्निमडल म सच्चे हिंदुआ को लिया गया है ? उ हे शिकायत है कि रिआयत बरतन की मनीवत्ति का सबधा अभाव है ।

५) समझौते का आधार क्या हो ?

वह विस्तार के साथ नही बतता सके पर शिक्षा और नौकरिया के क्षेत्र को परमावश्यक माना गया । मुसलमान पिछडे हुए है उह आगे बगाना ह । हिंदुआ को मेल मिलाप ही भावना से काम लेना चाहिए । उ ह उदारतापूर्वक रिआयतें देनी चाहिए ।

६) मैंन पूछा कि सच्चे हिं दुआ को मन्निमडल म लेने से क्या बंगाल की स्थिति म सुधार नही होगा ? उन्हनि ब्रहा कि मिनी जुली सरकार का तब तक गठन सम्भव नही है जब तक मुसलमाना और काग्रेस म समझौता नही होगा । मैंन ब्रहा इसका प्रारम्भ बंगाल म ही क्या न किया जाय ? उनरी राय म यह माग सबम अच्छा रहेगा ।

१९३९ के पत्र

पूज्य बापू

जमनालालजी सवाई माधोपुर से यहाँ वापस जा गये हैं। जयपुर से भी कुछ मित्रों का सलाह मशवरे के लिए बुलाया गया था। सबकी बात सुनने के बाद मैंने निश्चय किया कि ग्लेसी से मिलना ठीक रहेगा। वह मेरे लिए अपरिचित था फिर भी उसने मेरे अनुरोध का स्वीकार किया। वह दो एक दिन मेरी दौरे पर खाना होनवाला था। मैंने उसे सारी स्थिति बताई। उसने जमनालालजी के बारे में कुछ सवाल पूछे। मुझे यह जानकर बड़ा अचरज हुआ कि उसे जमनालालजी के खिलाफ कोई शिकायत नहीं थी फिर भी उसने उनके ऊपर प्रतिबन्ध लगवा दिया। वास्तव में उसने मुझसे यह जानना चाहा कि जमनालालजी के खिलाफ क्या बात है। मैंने उससे कहा कि सबसे पहले की बात तो यह है कि उनके खिलाफ न जयपुर की कोई शिकायत है न दिल्ली की ही, फिर भी उन्होंने उन पर यह रोक लगा दी है। मैंने उससे कहा कि जमनालालजी इस प्रतिबन्ध के आगे इसी प्रकार मिर झुकाये रहेंगे, ऐसा वह कदापि मानकर न चले। उसने स्थिति पर नये सिरे से विचार करने का वचन दिया। ऐसा वह करेगा यह उसने नहीं बताया। उसने कहा कि जमनालालजी ने प्रतिबन्ध मानकर बड़ी बुद्धिमानी दिखाई। यदि उनका इस बयान को इस बात के साथ संबद्ध किया जाए कि उसे जमनालालजी के खिलाफ कोई शिकायत नहीं है, तो यह निष्पक्ष निकलता है कि प्रतिबन्ध उठा लेगा। मैंने बाइसराय को भी लिखा है। आशा है, सब कुछ अच्छा ही होगा।

जमनालालजी ने मेरी सलाह मानी। मैंने उन्हें यह सलाह दी

प्रतिबन्ध के बारे में उन्हें जयपुर के अधिकारियों का लिखना चाहिए और प्रतिबन्ध हटाने के लिए पर्याप्त समय देना चाहिए। यदि उनके सुझाव का वह अस्वीकार कर दें तो कुछ दिन और रुकने के बाद उस प्रतिबन्ध का उल्लंघन करना चाहिए।'

पर मैंने उन्हें यह भी सुझाव दिया कि प्रतिबन्ध के उल्लंघन को सामूहिक सत्याग्रह का श्रीगणेश नहीं मानना चाहिए। मैं जयपुर की स्थिति से अनभिज्ञ हूँ। मैं जानता हूँ कि सत्याग्रह में भाग लेने का तो सक्का जादमी तयार हो जायेंगे पर उनमें से मुश्किल से आधा दर्जन ऐसे निकलेंगे, जिन्होंने सत्याग्रह के मर्म का हृदयगम किया हो। यहाँ लोग-बाग कानून भंग करने की बबल इसलिए आतुर

हैं कि इस धार उह समान मत दो का जादालन उठान का मौका मिलेगा। जयपुर म जकाल है देहाती प्रजा त्नाहि-त्नाहि कर रही है। जसी स्थिति है उसे देखते हुए यदि कुछ न किया जाय, तो भी जो न हो जाय सो धाडा है। पर यदि वहा उह कोई उक्सानेवाला पहुच गया, तो उपद्रव निश्चित है। वहा के लोगो की धारणा है कि यह बात उनक पक्ष म ह। मरा कहना है कि यही बात उनक विपक्ष म है। इसलिए मैंन जमनालालजी को यही सलाह दी कि यदि सत्याग्रह करन की नीबत जा जाये ता भी गिने बने आदमिया को ही उसम भाग लेना चाहिए। पर सत्याग्रह के तीर तरीका म आप मुझम बन्नी अधिक वाकिफ हैं इसलिए उनके लिए क्या करना ठीक रहगा यह आप ही तय करग। जयपुर क अधिकारी हम लागा स समझौता की बात जारी रखन को अब भी उत्सुक हैं। यग न जमनालालजी पर प्रतिबन्ध लगाने के बाद मुने फोन किया जोर मुने एसा लगा मानो वह अपनी सफा पेश कर रहा हो। मैंन उमी के सुभाव पर ग्वसी म भट करने का फमला किया था यद्यपि मेरी ग्लेंसी स पहले की जान पहचान नही थी। मुने पता चला है कि बीकम जल्दी ही जयपुर स रुकसत होगा। उसके स्थान पर तोदियन अथवा कोई अन्य अधिक अच्छा अग्रेज आयेगा। यग की धारणा है कि बीकम के स्थान पर जा भी कोई आयेगा उसस वह अच्छा ही होगा। मेरी राय म बीकम मूय अधिक है दुष्टबुद्धि कम। मैंने यह भा दखा कि ग्लेंसी का एकदम ध्रामक खबरें मिलती हैं। शासक काय के मामल म जयपुर रियासत सबसे अधिक पिछडी हुई है इस वार म सदेह की धार्ई गुजाइश नही है। जनता ने करवट बदलनी शुरू तो की है, पर जनमत को सगठित जोर रचनात्मक रूप देनेवाला बहा कोई नही है अत वहा अब तक काइ रचनात्मक काय हुआ भी नही ह। हीरालाल शास्त्री बडे ही लगनवाल और साहसी जादमी है पर उतावली म आ जाते हैं जोर अपनी ही बात का ठीक समझत है। आपके पास ये सार मित्र जायेंगे जोर आपकी सलाह मागग। आप भी उहे नि सदेह अच्छी सं-अच्छी सलाह देंगे। जमनालालजी ने मुझस जाग्रह किया था कि मैं आपका अपन विचार लिख भेजू इसीलिए यह पत्र लिखा है।

एक बात और भी है। मुझे लगता है कि आप 'हरिजन' म जयपुर क वार म कुछ न-कुछ लिखेग। यदि आपका एसा विचार हो तो क्या आप मर कालेज क वारे म भी कुछ लिखेंगे? यह ज याय बहुत दिना से हाता आ रहा है।

२

गांधीजी का लघ

जयपुर

पाठ का जयपुर व जादोलन और राजकोट व जादोलन म जा भेद है उसे समझ लेना चाहिए ।

राजकाट का जादोलन राज्य के भीतर उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की माग को लेकर है और वहा के नरुण ने जनताको जो वचन निया है उसकी पूर्ति कीवह अपक्षा करती है । वहा के ब्रिटिश रेजिडेंट के घोर मयादा रहित जाचरण का प्रतिराध करने म राजकोट के लोग अपने जापकी धूल म मिलाने व लिए कटिवद्ध है ।

पर जयपुर का मामला अपेक्षाकृत साधारण सा ह और एक मामूली-सी बात का लेकर उठ खडा हुआ ह । जयपुर म से देकर एक ही राजनैतिक सस्था थी, जो उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की माग कर रही थी । जब उसे लगभग गर-बानूनी करार दे दिया गया ह और उसके अध्यक्ष पर जो जयपुर नगर का ही नागरिक ह, प्रतिबध लगा दिया गया है । इन बदिशा के हटाय जान भर की देर ह कि वहा का मत्याग्रह आदोलन तुरत समाप्त हो जायगा । वहा व लोग केवल इतना ही चाहते है कि उनके मिलने जुलने पर कोई पाबंदी न लगाइ जाय और उह सभाए करने की स्वतंत्रता रहे । पर यहा भी ब्रिटिश मिह ने अपना पजा फेला रया ह । जयपुर के अग्रेज प्रधान मत्री न सीकर के रावराजा के बानूनी सलाहकार धरिस्टर चुडगर से बातचीत के दौरान जो-कुछ कहा थी चुटगर न उसका ब्योरा जमना सालजा को इस प्रकार दिया

जापका यह सूचना दना मेरा क्तव्य हो जाता ह कि आज सुवह ११ बजे मैंने जयपुर के प्रधान मत्री सर वीकम सेंट जान व साथ उनके नटनी का वाग स्थिन बगले पर जयपुर की स्थिति के वार म बातचीत की । उसका साराश यह था

मैंने सर वीकम का बताया कि आपक ऊपर जयपुर की सीमा म प्रवेश करने पर जा प्रतिबध लगाया गया ह, उससे भारत के लाया स्त्री-पुरुषा को बडा धाम हुआ है, क्याकि जापको सभी लोग शातिप्रिय मानते हैं और जापका जयपुर राज्य म जाने का एकमात्र उद्देश्य यही था कि वहा के अकालग्रस्त अचला का दौरा करके अकाल-पीडितो के कष्ट निवारण सम्बन्धी कार्यों की देखभाल करें ।

सर बीकम ने यह बात स्वीकार की कि जाप शांतिप्रिय हैं। पर उनका कहना है कि जाप और आपके सगी साथी दुर्भिक्ष पीड़ित लोगों के सम्पर्क में आयेंगे, जो राजनतिक दृष्टिसे वाछनीय नहीं होगा। मैंने सर बीकम को बताया कि प्रतिबन्ध के आदेश की तामील होने के बाद जापका जा वक्तव्य पत्रा में प्रकाशित हुआ है, उससे यह जाहिर है कि जाप इस प्रतिबन्ध को अनिश्चित काल तक कदापि नहीं स्वीकारेंगे इसलिए जनता और रियासत के हितों का ध्यान में रखकर यही अच्छा होगा कि प्रतिबन्ध हटा लिया जाए नहीं तो गडबडी की जाशका है। वह अपनी बात पर जड़े रह और बाले कि यदि आपने आदेश का उल्लंघन करने की ठानी तो वह किसी भी स्थिति का सामना करने को तयार है। उनका कहना था कि कांग्रेसी लोग अहिंसा का आश्रय लेकर शांति पर उताए हैं पर अहिंसा भी हिंसा जसी ही है, बल्कि उनसे भी अधिक शक्तिशाली है। उन्होंने यह भी कहा कि भारतवासी अंग्रेज जाति की मानवीय भावनाओं का फायदा उठाना चाहते हैं पर यदि अंग्रेजों के स्थान पर जापानी होते अथवा हिटलर होता तो हमारी अहिंसा उतनी सफल कदापि सिद्ध न होती।”

इसके पश्चात् उन्होंने कहा कि भल ही अहिंसा का पूरणरूप से पालन किया जाए उसका सामना हिंसा से ही किया जा सकता है और जयपुर में अहिंसापूण जादोनन का उसने पास केवल एक ही उत्तर है 'मशीनमन'। मैंने कहा कि सभी अंग्रेजों के विचार उनके जैसे नहीं हैं और अंग्रेज जाति उनके साथ कदापि सहमत नहीं होगी। इस पर वह बाले 'ऐसा हो भी सकता है नहीं भी हो सकता है', पर उनकी व्यक्तिगत सम्मति यही थी कि अहिंसा और हिंसा में कोई भेद नहीं है और अहिंसा का मुकाबला हिंसा से करने में कोई बुराई नहीं है।

'यदि आप अथवा महात्माजी इस वक्तव्य का उपयोग करना चाहें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

मुझे यह बात इतनी चौंका देनेवाली लगी कि मैंने जयपुर के प्रधान मंत्री को पत्र लिखकर उसमें इस वक्तव्य का हवाला दिया। पत्र जाग दिये जा रहे हैं।

उसकी पुष्टि करान से पहले आपन उस प्रकाशित नहीं किया, सा ठीक ही किया, और मैं यह कह सकता हूँ कि उसमें भर विचारा का जिस रूप में पथ लिया गया है, वह नितांत भ्रामक है। मरी समय में नहीं आता कि श्री चूडगर न मुझे इतना गलत किस समझा ? एमी मुलाजाता की अनुमति देने का मामल में मुझे जा सकाच रटा है, अब इस घटना में उसकी पुष्टि हो गई है।

अब वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त करन का बाद श्री चूडगर का पत्र प्रकाशित करन में आपका सहोच की पुष्टि हो गई होगी। पर यदि आपका विचार कुछ दूसरा हाता आप मुझे यथामुम्व शीघ्र ही सूचना दे दें जिससे मैं उचित कारवाई कर सकूँ।

आपन इतना जयान रखा इमक लिए पुन धन्यवाद।

भवदीय,
वीकम सेंट जान

५

बारडानी
२२ जनवरी १९३६

प्रिय मित्र

आपन मर १८ तारीख का पत्र का उत्तर इन में इतनी तत्परता दियाई इसका लिए धन्यवाद। मैं यह जानना चाहता था कि उस मुलाजात का दौरान क्या क्या बातें हुई, इस संबंध में आपका क्या बयान है। क्या आप श्री चूडगर का कथन का घडन करत है ? यह मामला इतना गम्भीर है कि मैं इस या ही नहीं छाड सकता। आप चाहें तो श्री चूडगर के बयान का साथ साथ मैं आपका बयान भी प्रकाशित कर दूंगा।

भवदीय
मो० व० गाधी

श्री वीकम सेंट जान
प्रधान मंत्री,
जयपुर रियासत

६

जयपुर

२५ जनवरी, १९३८

प्रिय मिस्टर गांधी

आपके २२ तारीख के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद ।

जा मुलाकात हुई थी वह निजी और गौपनीय थी । दूमर सबन उसका भ्रामक वणन प्रकाशित करने की धमकी दी है । ऐसी स्थिति में आप उस मुलाकात की कफियत पश करने में मेरे सकोच के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करेंगे इसका मुझे विश्वास है । वसा करने से कटुता बढेगी जिससे कोई लाभ होता दिखाई नहीं देता है ।

पर यदि श्री चुडगर अपन गलत बयान को प्रकाशित करना उचित समझे तो मुझे यकीन है कि आप मुझे समय रहते चेनावनी दे देंगे जिससे मैं मुनासिब कारवाइ कर सकूँ जमा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ ।

भवरीय,

वीकम सेंट जान

७

वारडोली

२७ जनवरी, १९३६

प्रिय मित्र

आपके २७ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद ।

मैं यह कहने का प्रियश हूँ कि मैं आपके सकाच के प्रति सहानुभूति विद्यमान में असमर्थ हूँ । श्री चुडगर ने जा रिपाट भेजी है, वह इतनी महत्त्वपूर्ण है कि उस प्रकाशित करना ही होगा । मैं तो यही चाहता था कि कोई ऐसी रिपाट प्रकाशित न हो, जिसकी सत्यता का चुनौती दी जा सके ।

मैं श्री चुडगर से निर्या पत्रों कर रहा हूँ । उ होन सठ जमनानालजी का जा रिपाट दी ह, यदि वह उस पर कायम रहे तो मर लिए उस जयपुर के हित का

२३६ बापू की प्रेम प्रसादी

ध्यान न रखकर प्रशिक्षित करना अनिवाय हा जाएगा ।

श्री चूडगर के वयान क प्रशिक्षण पर मुनासिब कारवाई करन की बात जापन कही है वह समझ न नही आई ।

भवदीय

मा० व० गांधी

श्री वीकम सेंट जान

प्रधान मंत्री

जयपुर रियासत

८

वारडाली

२८ जनवरी १९३६

प्रिय जमनालालजी

महात्माजी जीर सर वीकम सेंट जान क बीच जा पत्र यवहार हुआ, उस मैन पढा है अतिम पत्र महात्माजी का है जो २७ तारीख का है । मैन आपना १५ तारीख को जो पत्र लिखा था उस पुन ध्यानपूर्वक पठ गया । मरा कहना यह ह कि उसम जो कुछ बताया गया है वह सर वीकम जीर मरे बीच हुई वार्ता का यथाथ वर्णन है ।

भवदीय

पी० एन० चूडगर

गांधीजी की टिप्पणी

प्रधान मंत्री का पत्र जजीव-सा है । मन रोटी मांगी थी उ हान पत्थर भेज दिया । यदि वह अपनावाला वयान पेश न करे ता मुझे श्री चूडगर क वयान का ही ठीक मानना पड़ेगा । प्रधान मंत्री इसके लिए मुझे गमा कर । उ होन केवल

खण्ण किया ह साथ ही धमकी दी है इतना काफी नहीं है।

जब कांग्रेस के हाथ में शक्ति है तो वह जयपुर का जनता का दिमागी और नतिक दुर्भिक्ष से मरते वदापि नहीं देख सकती है, विशेषकर जबकि इस दुर्भिक्ष की स्थिति व पीछे ब्रिटेन की भौतिक शक्ति है। प्रधान मंत्री जो कुछ कर रहे हैं, यदि उन्हें वह मंत्र करने का अधिकार नहीं है तो कम से कम उन्हें वहां से हटा तो देना ही चाहिए।

मो० क० गांधी

३० १ ३९

वारडाली

६

२१ जनवरी १९३९

प्रिय महादेवभाइ

मर डेनियल हैमिल्टन ने मुझे पत्र लिखा है कि फरवरी का मध्य उनके लिए अच्छा रहगा। मैं भी यदि सम्भव हुआ तो वाइसराय के लौटने पर जयपुर के मामले को लेकर मुनाकाल करने का विचार कर रहा हूँ। इस प्रकार फरवरी का मध्य सत्र डेनियल और मर लिए ठीक रहेगा। उनका कहना है कि वह जनवरी के अंत में गोमावा^१ में नहीं हागे।

तुम्हें याद ही होगा कि बापू ने तुम्हें बताया था कि मर लिए जनवरी के अंत में गोमावा जाना पायद सम्भव न हो, क्योंकि मुझे वाइसराय में मिलना होगा। उनकी भविष्यवाणी कितनी सही तुली होती है क्या यह प्रेरणा थी ?

कल मैंने सपना देखा कि मैं बापू के पास हूँ और उन्हें एक मिनट के लिए गवा जा गया है। तब उन्होंने तुम्हें बुला भोजन को बटा और तुम जा पढ़ो। उसके बाद बापू चग हा गए। मुझे सपना अच्छा नहीं लगा पर मैं बहमी नहीं हूँ और सपना में कतई विश्वास नहीं करता। आशा है, बापू स्वस्थ होंगे।

सप्रेम

धनश्यामदाम

श्री महादेवभाई देसाई

१ गोमावा गन्धर्वन का एक स्थान है जहाँ डनियल काम करते थे।

रहा हूँ, आपके यहाँ नयी दिल्ली में यह प्रयोग कब तो कसा रहूँ ? आपका वहाँ मौजूद रहना जरूरी नहीं है पर आपकी अनुपस्थिति में वहाँ मुझे ये मारी चीजें मिलती रहेगी न ? प्रयोग चालीस दिन चलेगा ।

सप्रेम,
महादेव

११

नयी दिल्ली
२५ जनवरी १९३६

प्रिय महादेवभाई,

बापू को यहाँ क लक्ष्मीनारायण मंदिर के उदघाटन की तिथि निश्चित करने की याद दिला देना । उन्होंने कांग्रेस के तुरंत बाद आने का वचन दिया था और अब तिथि निश्चित करनी है ।

जयपुर के बारे में राजनतिक विभाग के सफ्टरी से फिर मिला था । उस जमनालालजी के खिलाफ कोई शिकायत नहीं थी । इसलिए उसने एकमात्र इस दलील का सहारा लिया कि जित्तम निणय केवल दरवार ही ले सकता है । मैंने उम वता दिया कि सारा दोष दरवार के मत्वे मढ़ना व्यर्थ है क्योंकि वहाँ तो नाम मात्र का सर्वोच्च है । जत में उसने दरवार को लिखन का वचन दिया, पर इसका कुछ भी अर्थ निकाला जा सकता है । मुझे लगता है कि बापू न इस मामले का जिस ढंग से अपने हाथ में लिया है उसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहेगा । अब मैं बाइसराय से मिलन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ ।

सप्रेम
धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बारगोली

प्रिय महादेवभाई

मुस्लिम लीग व महामंत्री नवाबजादा लियाकत जसी खाँ मर प्रिय मित्र हैं। उनके बारे में मेरी बहुत अच्छी धारणा है। जहाँ तक मुझे मालूम है वह स्पष्टवादी हैं और उनकी विचारधारा प्रगतिशील है। हम दोनों जब कभी मिलते हैं, साम्प्रदायिक चर्चा होती है। उन्होंने मुझसे शिमला में भी कहा था और यहाँ भेंट होने के अवसर पर भी कि साम्प्रदायिक समस्या का हल तलाश करना मुश्किल नहीं है आवश्यकता केवल इस बात की है कि जो मुमकिन मान मंत्री लिय जाए वे ऐसे हों गिन पर मुसलमानों और मुस्लिम लीग का विश्वास हो। मुस्लिम लीग ने यह बात औपचारिक रूप से तो नहीं कही है पर उनका कहना है कि यदि आपस में समझौते की बात चलाई जाती तो केवल इसी एक बात पर जोर दिया जाता कि जहाँ-जहाँ सत्ता की बागडोर कांग्रेस के हाथ में है वहाँ मिली जुली सरकार का गठन हो। मैंने कहा कि मुझे तो मामला इतना महज नहीं दिखाई देता। मैंने कहा कि मेरी अपनी धारणा तो यही है कि दाना पार्टी का बीच किसी तरह का समझौता कभी भी सम्भव नहीं होगा। पर मैंने उन्हें सलाह दी कि यदि वह बापू से औपचारिक ढंग से और अगर ढिंढोरा पीटे मिलें तो अच्छा रहेगा। उन्हें यह विचार पसंद आया पर इस बात पर कि समाचार पत्रों को काना कान खबर न हो। यह वित्तकुल शक्य है। उन्होंने कहा कि जब बापू दिल्ली में होंगे, तो वह उनसे मिलने का अपने इरादे की बात गिना का भी बता देंगे।

अब तुम यह निखो कि क्या बापू के लिए उनसे मिलना सम्भव होगा। मुझे पक्का यकीन है कि बापू को यह आदमी अच्छा लगेगा और यदि वह लियाकत जसी खाँ से मिलने के लिए समय निकाल पायें तो कम-से कम एक घंटे का समय गिनायें जिससे सारी बातों पर दित खोलकर चर्चा हो सके।

सप्रेम

घनश्यामदाम

श्री महादेवभाई देसाई

वारडोली

१३

२६ जनवरी १९३६

प्रिय महादेवभाई

यह धिनीना पत्र गत ३० दिसम्बर के स्पक्टेटर में छपा था। इसका लेखक वही आदमी लगता है जिसका बत्तलभभाई ने कुछ महीने पहले पर्दा फाश किया था। क्यों है न वही आदमी? जी में आया कि इस पत्र का मुहताब जवाब दू।

वर्धा में जिस आदमी की मृत्यु हुई थी, उसके बारे में पराजय को अवश्य ही मालूम रहा होगा कि जा लाछन लगाया गया था उसका तुमने 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में पूणतया खण्डन कर दिया था। पर एक अविवाहित युवती उपासिका के नाम लिखे गए पत्रों के प्रकाशन के पीछे क्या रहस्य है सो मैं नहीं जानता। मैं समझता हूँ कि इसका उत्तर न देना ही ठीक रहेगा। पता नहीं तुम इस बारे में क्या कहना चाहोगे?

सप्रेम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

वारडोली

१४

नयी दिल्ली

२६ जनवरी, १९३६

प्रिय महादेवभाई

तुम अपनी सुराक का जो प्रयाग करना चाहते हो वह मुझे कुछ जवाब नहीं। यदि तुम गाय के दूध पी शहद और थोड़े बहूत आवणों तक ही अपना प्रयोग सीमित रखो तो वह ठीक रहेगा क्या? जब तक ठाम भोजन न लने लगे, तब तक ईश्वर के वास्ते पी से बचे रहना। वस तो शहद में भी थोड़ी-बहूत चर्बी रहती ही है। इस प्रयोग का क्या नतीजा होगा इसके विचार मात्र से व्याकुलता होती

है। आशा है, तुम इस बारे में बापू से मलाह मशवरा अवश्य कर लोग जायद तुमने कर भी लिया होगा।

पर यदि मेरी मलाह के बावजूद तुमने प्रयोग करने का निश्चय किया तो नयी दिल्ली के बिडला हाउस में खुशी-खुशी कर सकत हो सारी चीजों का ठीक ठीक प्रवध हो जायेगा, मैं वहा रहू या न रहू। कृपया लिखो कब से श्रीगणेश करन का विचार है जिससे आवश्यक प्रवध किया जा सके। पर मेरी मलाह मानकर एक बार फिर सोचकर देखो तो अच्छा रहेगा। स्वास्थ्य के लिए दूध और फल ही सबसे अधिक लाभदायक है। यदि तुम आवला और दूध पर ही रह सको तो और भी अच्छा होगा। पर उनके साथ शर्द और घी का सम्मिश्रण मुझे ठीक नहीं लगता।

३१ तक तो यही हू। उस दिन जमनालालजी जानवाले है यहा रुके रहने का एक कारण यह भी है। इससे पहले भी चल पडता पर हो सके तो एक बार वाइसराय से मिलने की इच्छा है। रियासता की समस्या विवट रूप धारण करती जा रही है। जहा तक मुझ मालूम है यह नीति वाइसराय की नहीं है। उन्होंने यह कहा बताते है कि उनके बल पुर्जे ठीक ढग से नहीं चल रहे हैं। इसका एक मात्र अर्थ यही हो सकता है कि अधिकारी लाग उनकी नीति का अनुसरण नहीं कर रहे हैं। जसा-कुछ हागा दो एक दिन में स्पष्ट हो जायेगा। मैं उनका साथ दोटूक बात करना चाहता हू। मुझे इस बात तनिक भी सदेह नहीं है कि वाइसराय नीयत के साफ हैं। पर उन्होंने मुझसे बापू का बताने के लिए जो कुछ कहा राजनतिक विभाग के अधिकारी लोगो का आचरण उसके सवथा विपरीत दिखाई दे रहा है।

रही डनियल हैमिल्टन के स्थान पर मर जान की बात सो तुमने जो कुछ कहा है उससे मारे उत्साह पर तुफार पात हो गया है। जब तुम वहा से निराश होकर लौटे हो तो मेरा स्वतंत्र रूप से जाच पडताल करने का कोई इरादा नहीं है।

सप्रेम

धनश्यामदास

१५

स्वराज्य आश्रम

बारडाली

२७ १ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका २५ तारीख का पत्र मिला। आज तो निश्चित तिथि बताना कठिन है विशेषकर इसलिए कि त्रिपुरी को लेकर सब-कुछ अघवार म है। सारी बात हम पर निर्भर करगी कि सभापति कौन होगा? यदि सुभाष सफल हुए तो शायद बापू त्रिपुरी जायें भी नहीं। यदि पट्टाभि हुए तो बापू अवश्य जायेंगे। इसलिए मैं निश्चित तिथि २६ तारीख को सभापति के निर्वाचन के परिणाम की घोषणा के बाद ही बता सकूंगा। आप चाहेंगे तो तार भेज लूंगा। मेरा भाई अब ठीक है। बापू यहा से पहली तारीख को रवाना हो रहे हैं पर शायद उह अघूने प्रोग्राम को पूरा करने के लिए दुबारा यहा लौटना पड़े।

सप्रेम,

महादेव

१६

बारडाली

२८ १ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

मैं इसके साथ श्रीमती चदावीबी का पत्र और आपका नाम उनके पत्र की नकल भेज रहा हूँ। आप इस विषय में कुछ कहना पसंद करें तो दी एक पत्तिया अवश्य लिख भेजें।

बापू के स्वास्थ्य रूपी दीपक की बत्ती दोना छोर में जल रही है। रक्तचाप गेज १८६/१०८ तक जा पहुँचता है दोपहर को १६६/१०० तक जा जाता है पर सध्या हाते होते प्रातःकाल की भाँति ही पुन ऊपर चढ़ जाता है। आपने देख ही लिया होगा कि इस प्रकार रक्तचाप स्थायी रूप से कुछ बढ़ा है। डा० जीवराज

का कहना है कि हृदय का फलाव किंचित बढ़ा है। पर यह सब होना ही था और जमा कुछ है उस ग्रहण करने के सिवा कोई चारा नहीं है।

सदभावनाओं के साथ

आपका
प्यारलान

१७

बारडोली
२६ १ ३६

प्रिय धनश्यामदासजी

हरिभाऊ सार कागज-पत्र लेकर चल रवाना हो गये हैं। टेलिफोन पर जो बातें हुई उसका सारांश बापू को बताया तो उन्होंने यह टिप्पणी की अगर उनके खयाल में समस्या इतनी विकट हो गई है कि वातावरण को शांत रखना आवश्यक है और तिस पर भी वह लोग वस्तुस्थिति से इतने बेखबर हैं तो क्या उन्हें मेरे सम्पर्क में आने में जल्दी नहीं करनी चाहिए? धनश्यामदास को उन्हें यह बात साफ-साफ बताने चाहिए। मैंने कल रात टेलिफोन पर आपको यह बात बतानी चाही पर आप नहीं मिले।

आप तो मेरे खुराक-सम्बन्धी प्रयोग की बात से व्यथित ही घबरा गये। प्रयोग इतना कुछ विज्ञान सिद्ध है कि उसे बापू को आशीर्वाद प्राप्त हो गया है। प्रयोग के निमित्त चार स्थान उपयुक्त समझे गये—साबरमती आश्रम नासिक (बालचंद की जमींदारी) सेगाव और आपका स्थान। बापू ने आपके स्थान का पसंद किया कारण ये थे

(१) इस प्रयोग के लिए ठण्ठी आबोहवा की जरूरत है

(२) दूध और घी शुद्ध होने चाहिए

(३) काम घघा भी होता रहेगा। यह अंतिम कारण सबसे बढ़कर निर्णायक रहा। पर आपके यहां अच्छी गायें मिल सकेंगी इस बारे में बापू को संदेह था। मैंने बताया कि आपके पास बटिया किस्म की गायें हैं और मैंने कहा कि मुझे आपके यहां का दूध हमेशा अच्छा लगा। उन्होंने कहा कि तब फिर कोई कठिनाई नहीं है। मैं पहली को चलकर दूसरी को पढ़ रहा हूँ। आशा है भरा कायनाम आपको

पसद जायेगा। मरी स्त्री और मरा लडका मेरे साथ रहेंगे। क्या तार द्वारा सूचित करने की कृपा करेंगे कि यह सब कुछ आपको पसद है ?

आपका
महादेव

१८

मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रात)
३० १ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

घटनाएँ कुछ इतनी तेजी से घट रही हैं कि बापू के लिए खामोश रहना कठिन हो गया है। जयपुर की लेकर बापू ने हाल ही में जो लेख लिखा है वह हरिजन में प्रकाशनाथ आज भेजा जा रहा है। आप शायद इस लेख का लेथवेट को दिखाना चाहेंगे।

नवाबजादा लियाकत अली के द्वार में बापू का कहना है कि जब वह ग्लिनी जायेंगे तो उनसे खुशी-खुशी मिलेंगे।

कांग्रेस-अध्यक्ष के निर्वाचन के परिणाम पर अचम्भा भी हुआ और विपाद भी। पहले तो जमा कि मैं आपको लिखा ही था बापू ने कहा था कि वह अधि वेशन में भाग लेने नहीं जायेंगे, फिर उन्होंने सोचा कि सब समझेंगे कि बीज के कारण नहीं गया इसलिए जाना ही ठीक रहेगा। जा फूट पडी है उसका सामना करना होगा और यदि गांधीवादियों की विदा लेनी है तो ऐसा वे पूरे कानून कायदे के साथ करेंगे। फलतः मन्दिर का उद्घाटन १६ या १७ दोनों में से किसी भी दिन हो सकता है जो दिन आपको हचे और आपके शास्त्रिया को जब। बापू त्रिपुरी में १५ तारीख के बाद नहीं रहेंगे।

हा जेन्किन वहा पूनावाला दुष्ट है उसके पास खोन का प्रनिष्ठा नाम की चीज है ही कहा ? हि दुस्तान भर में उसका नाम रोगन है। यह परिताप का विषय है कि स्पक्टेटर ने इस बदनाम आदमी का पत्र छापना उचित समझा। सरदार और जवाहरलाल दोनों ने ही उम अच्छी तरह बेनबाब कर दिया है और बापू का कहना है कि उसके मुह लगने में अपनी ही हठी है।

द्विदास दिल्ली कब लौट रहे हैं ?

अगर मैंने आपके यहाँ दूध पर रहना शुरू किया तो जसा कि मेरा विचार है तो मैं वहाँ ७ या १० माच तक टिका रहूँगा। पत्नी और लडका दाना भर साथ रहेंगे।

सभ्रम,
महादेव

१६

नयी दिल्ली
३० जनवरी १९३६

प्रिय महादेवभाई

मैंने लेथवेट स पिछले शनिवार का भेंट की थी। उसका बाद मैंने जयपुर जोर राजकोट से सम्बद्ध सारे कागज पत्र तथा इस बारे में वाइसराय के साथ बापू क पत्र व्यवहार की नकल भेजने के लिए तुमसे कहा था। आज लेथवेट से फिर मिला और काफी देर तक बात की।

गत शनिवार को लेथवेट ने पहले से एक नोट तैयार कर रखा था। शायद वह नोट वाइसराय ने वालकर लिखाया होगा। नोट जितना मेरे लिए था उतना ही बापू के लिए भी था। वाइसराय का बापू का जाखिरी खत मिल गया था उसका उन्होंने उत्तर नहीं दिया था, जोर शायद वह नोट बापू क पत्र क उत्तर के रूप में था। नाट कुछ इस प्रकार था

मुझे महात्मा का एक अत्यन्त सौहादपूर्ण पत्र मिला है जोर उन्होंने उसमें जो-जो बातें कही हैं उनमें स अधिवास में मैं पृणतमा सहमत हूँ। पर मुझे कहना पड़ता है कि उन्होंने मेरी कठिनाइयों की जोर ध्यान नहीं दिया। देशी रियासतों के बारे में मैं बिडला के साथ खुलकर बातचीत कर चुका हूँ जोर उनमें प्रजातन्त्रीय ढाँचा लाने के विचार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करने में मैंने कोई बरकसर नहीं छोड़ी है। वास्तव में पिछले बारह महीना में इस दिशा में काफी कुछ किया जा चुका है पर उसे नजरअंदाज कर दिया गया है। इस अवधि में जो कुछ विचारों गया मैं उसका ब्योरा इकट्ठा कर रहा हूँ जिससे यह बताया जा सके कि देशी रियासतों में इस दिशा में कितनी प्रगति हुई है।

यत्किन्मत शासन जीर उत्तरदायित्वपूर्ण शासन-व्यवस्था मे जमीन-आसमान का जन्तर है। भारतीय प्राता को अपन अभीष्ट की सफलता क लिए कितनी प्रतीक्षा करनी पडी यह गाधीजी जानते ही हैं। रियामतो म व्यक्तिगत शासन अभी तक जारी है। उसम परिवर्तन करना एर दिन म सभव नही है। इसनिए गाधीजी को इस बात को ध्यान म रखना चाहिए कि इम नाजुक मामले म मुझे किस प्रकार पूरक पूरकर बन्दम रखना है। अन्तिम लक्ष्य क प्रति मेरी पूरी सहानुभूति है पर मुझे गाधीजी के खिलाफ एक बडी शिकायत यह है कि वह इम मामले म मेरी सहायता नही कर रहे है। वास्तव म एर प्रकार स मुय कुछ-न-कुछ करन को विवश किया जा रहा है।

देशो रियासता की समस्या के दो पहलू हैं। एक पहलू बधानिक ह दूसरा प्रशासनिक है। जहा तक प्रशासनिक पहलू का सम्बन्ध है सर्वोपरि सत्ता का रियासता मे राज काय का अच्छा बनाने या उनकी वाय-व्यवस्था का अधिक सतापजनक रूप देने के निमित्त हस्तक्षेप करने का अधिकार है। एस ही अय मामला म हस्तक्षेप करने के लिए मैं तयार हू।

रहा बधानिक पहलू सो सावभौम सत्ता क लिए इम दिशा म कुछ करना सम्भव नही है। यह बात मोलह आन नरेशो की इच्छा क ऊपर निर्भर है। नरशा का भी भय है। जिन रियासता को प्रगतिशील समझा जाता है व भी उपद्रवो स घाली नही है। मसूर, छावणकार तथा बडोदा के उदाहरण पण किये जा सकते हैं।

रही जयपुर जीर राजकाट की बात सा मैं बहा की बस्तुस्थिति स पूणतया जवगत नही हू। मुझे ता कवल उतना ही ज्ञात है जिनना पत्रा म प्रकाशित हुआ है। पर राजकोट क बारे म मेरी यह धारणा अवश्य है कि बहा जो-कुछ हा रहा है वह बहा की जनता के हिताथ उतना नही, जितना उस रियासत पर बाग्रस का दबदबा बढाने के उद्देश्य से हा रहा है।

'जयपुर के बारे म मेरा कहना यह है कि बहा परामशदायिनी समिति की स्थापना क रूप म जा-कुछ किया जा चुका है उस अलग रखकर इस प्रयाग की उपयोगिता को परखकर देखना अच्छा रहता।

बस, लथवेट ने मुझे जो नाट पत्रकर सुनाया उसका निचाड यही था।

मैंने बताया कि म जयपुर की स्थिति म पूणतया परिचित हू एसनिए मैं तुरत कह सकता हू कि महामहिम का एकदम ग्रामक सूचना ग गई है। मैंने लथवेट को सारी दास्तान कह सुनाई और यह भी बताया कि बहा जा समझीला हा पाया उसम मेरा कितना हाथ था। इमक वात् मैंने गन्तर की बला का गाने

के उद्देश्य से निम्नलिखित सुझाव अपनी आर म पत्र क्रिये और कहा कि यदि दरबार इन सुझावों को स्वीकार कर तो य सुझाव में जमनालालजी का भी दूगा ।

मैंने कहा कि सबके तीन बातों को लेकर पैदा हो सकता है (१) जमनालालजी पर प्रतिबन्ध (२) प्रजामण्डल का मायता तथा (३) भीकर व बर्तिया की रिहाई ।

प्रतिबन्ध का तुरत उठा लेना आवश्यक है । लखवटन कहा कि अब समय बहुत थोड़ा रह गया है और मामला इतना आगे बढ़ चुका है कि पीछे कदम उठाना सम्भव नहीं प्रतीत होता । इस पर मैंने यह सुझाव दिया कि जमनालालजी का गिरफ्तार करके रियासत की सीमा व बाहर ले जाकर मुक्त कर दिया जाय । मैं जमनालालजी से कह-सुनकर शीघ्र ही दोबारा कहा जाकर अपनी गिरफ्तारी कराने से रोकूंगा पर शत यह है कि इसके बाद प्रतिबन्ध उठा लिया जाय प्रजामण्डल को मायता प्रदान करने तथा सीकर व बर्दिया को रिहा करने के प्रश्न पर भर साथ बातचीत चलाई जाए । लखवट ने यह सुझाव वाइसराय के सामने पेश करने का वचन दिया । उसने यह भी स्वीकार किया कि जयपुर का मामला उतना जटिल नहीं है । मैंने कहा कि जयपुर की समस्या का समाधान हान के बाद सारा ध्यान राजकोट पर केन्द्रित किया जा सकता है ।

कल सध्या व समय तुम्हारे भेजे सागे वागज जा पहुँचे । मैंने उह बडे गौर से पडा जोर आज सुबह लेखवेट से फिर मिला । वाइ एव घटा बातचीत हाती रही । उसने बताया कि मामला वाइसराय के सम्मुख रखा गया था उसका बाद जयपुर दरबार के साथ सम्पर्क स्थापित किया गया । उस रियासत की स्थिति के प्रति दरबार का दृष्टिकोण बड़ा कठोर लगा । यदि समाचार पत्रों में कीचड़ न उछाली जाती तो उसका (अर्थात् लेखवेट के) लिए सहायता करना कठिन न होता, पर अब मामला बहुत आगे बढ़ गया है । पर दरबार एक काम अवश्य कर सकते हैं वह जमनालालजी की बड़ी शिष्टता के साथ हिरासत में लेने के बाद रियासत की सीमा पर ले जाकर छोड़ सकते हैं । साथ ही लेखवेट ने कहा आपको एक भेद की बात बता दू बीकानेर व स्थान पर एक नया दीवान आ रहा है । कौन आ रहा है यह तो नहीं बताऊंगा पर जो आदमी आ रहा है वह 'यवहारकुशल भी है और सौहार्द सहानुभूति से भी काम लगा । आगामी माच के पहले सप्ताह में वाइसराय भी जयपुर जायेंगे । यदि जमनालालजी को नये आदमी के आने तक जयपुर से दूर रखा जा सके तो स्थिति अवश्य सुधरेगी और तनाव अवश्य दूर होगा । मैं जानता हूँ कि आपकी माय मामूली-सी है पर स्थिति ने इतना जटिल

रूप धारण कर लिया है कि फिलहाल मैं इससे अधिक कुछ करने में अपने-आपको असमर्थ पाता हूँ।”

मैंने उत्तर दिया, ‘जमनालालजी इतने से कदापि सतुष्ट होनेवाले नहीं हैं। क्योंकि मुख्य बात वाक स्वातन्त्र्य और सभा सोसाइटी का गठन करन में किमी प्रकार की रोक न रहने की है। जब तक इसकी गारण्टी नहीं मिलेगी समस्या ज्या की ल्यो बनी रहेगी। सीकर के बंदियों की रिहाई के मामले का कुछ दिनों तक भल ही स्थगित रखा जाये पर वाक स्वातन्त्र्य के बारे में जमनालालजी का समाधान करना तथा उन्हें जयपुर जाने से रोकना मेरे लिए बयोकर सम्भव होगा?’

लेथवेट बाला पर प्रजा मण्डल को अवध घोषित तो किया नहीं गया है।

मैंने उत्तर में कहा, यह ठीक है कि उसे अवध घोषित नहीं किया गया है पर जो आर्डिनेंस जारी किया गया है उसका तो यही मर्म है कि एक वध सस्था के रूप में उसका अस्तित्व सम्भव नहीं है। क्या आप मुझ यह आश्वासन देने के लिए तयार हैं कि जब तक नया दीवान न आ जाय प्रजा मंडल को अपना वाय एक वध सस्था के रूप में जारी रखने की स्वतंत्रता रहेगी भल ही उस औपचारिक मायता प्रदान न की जाए? यदि इतना हुआ तो भी समझा जायेगा कि कुछ-न कुछ तो हुआ ही है।”

लेथवेट ने एक बार फिर पूछा ‘प्रजा मंडल को मायता से वंचित रखने से उस क्या क्षति उठानी पड रही है? मैंने कहा यदि उस एक वध सस्था के रूप में चलने दिया जाय तो मायता न मिलन पर भी उसकी कोई क्षति नहीं होगी। पर यदि ताजा आर्डिनेंस का आशय यह है कि प्रजा मंडल को गर-कानूनी भले ही घोषित न किया गया हो उसे चलन नहीं दिया जा सकता, तो उसकी क्षति एक स्वयंसिद्ध विषय है।

लेथवेट ने कहा कि वह अभी नहीं कह सकता कि प्रजा मंडल की वास्तविक स्थिति क्या रहेगी पर कल बतायगा।

इसके बाद मैंने राजकोट का प्रसंग छेड़ा। लेथवेट ने कहा राजकोट का मामला कुछ अधिक पचीसा है। सरकार और राजकोट के ठाकुर के बीच एक करार हुआ था। हम उस करार के बारे में कोई जानकारी नहीं है। पर ठाकुर ने सरदार का जो पत्र लिखा है यदि उस आधारस्वरूप माना जाय तो उसका यही अर्थ निश्चलता है कि सरदार को नोगा के नाम सुझाने का अधिकार रहेगा पर किम किम को नामजद किया जाय, इसका अन्तिम निणय ठाकुर खुद करेंगे। सम्भव है दानो के बीच जा समझौता हुआ उसका अभिप्राय भिन्न है पर जा

कुछ मूत रूप में हमारे सामने है हम तो उसी को आधारस्वरूप मानेंगे। मुस्लिम लीग की मांग गर मुनासिब नहीं लगती और चूकि समझौते में हमारा कोई हाथ नहीं था, इसलिए हम ठाकुर पर तबाव कम डाल सकते हैं ?

मैंने उत्तर दिया जा आरोप लगाया जा रहा है वह यह है कि जो वार्ता भंग हुई है उसका दापी गिम्सन है। लेथवेट ने कहा हम इस आरोप का स्वीकार करने का तयार नहीं हैं। मैंने कहा कि इसके प्रमाण मौजूद हैं। गिम्सन और ठाकुर के बीच क्या क्या बातें हुई उनके नोट का प्रामाणिक वदापि नहीं माना जा सकता।

हम दोनों ने उड़ीसा की भी चर्चा की पर कोई खाम बात नहीं हुई।

इस पूरे मामले में वात्सराय की क्या स्थिति है यह उनके ऊपर लिखे नोट से प्रकट ही है।

लेथवेट ने कहा कि गांधीजी ने आज के हरिजन में उड़ीसा की समस्या की जिस ढंग से चर्चा की है महामहिम का उसके खिलाफ शिकायत है। लेथवेट बोला कि वस्तुस्थिति का वर्णन करने में वे क्षोभजनक भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। इससे वात्सराय को कोई सहायता नहीं मिल रही है।

वह मुझमें इस बात पर महमत हुआ कि सबके टालने का सबसे अच्छा उपाय यही होता कि पहले राजकोट और जयपुर जैसे कुछ विवादग्रस्त मामलों से निपट लिया जाता। पर उसने बताया कि वे लाग असहाय हैं और उनकी असहायता वस्था को ध्यान में नहीं रखा जा रहा है।

सप्रम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बारडाली

की बात लिखी है वह नहीं मिली। मैं आज बनारस जा रहा हूँ। उस सामग्री के मिलने पर बताऊंगा कि मुझे क्या कहना है। मरा बनारस का ठिकाना यह है बिडला हाउस लाल घाट।

भवदीय

धनश्यामदाम

श्री प्यारलाल
बारडाली

२१

नकल

प्रिय लाड लिनलियगा

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मशी सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास और अब श्री धनश्यामदास बिडला भी यह कह रहे हैं कि मैं हरिजन में रियासता की वावत जान्बुछ लिख रहा हूँ उसमें विशेषकर मेरे जयपुर-सम्बन्धी लखा से आपको परेशानी हो रही है। इसलिए मैं एक लेख इस पत्र के साथ रख रहा हूँ जिसमें प्रकाशनाथ 'हरिजन' के मनेजर को पूना भेज दिया था पर अब इसका छपना रोक लिया है।

मेरे लिए यह कहना अनावश्यक है कि ऐसा कोई काम करने की सामर्थ्य रखत हुए भी करने की इच्छा नहीं है जिससे आपको परेशानी हो। मेरा एकमात्र लक्ष्य यही है कि सम्बद्ध जनता के साथ 'याय' होना चाहिए।

मैंने अपने पहले पत्र में जिन तीन मामला की चर्चा की थी यदि उनके बारे में आप प्रभावोत्पादक बदम उठा सकें तो कितना अच्छा है।

क्या आप एक पत्र लिखन की कृपा करेंगे कि मैंने जिस लेख को प्रकाशित होने से रोक दिया है, उसके बारे में मुझे क्या करना है ?

आपका,

मो० क० गांधी

बारडाली

३१ १ २६

प्रिय प्यारलाल

बीकम के साथ चुडगर की मुलाकात वाला जो लेख 'हरिजन' में प्रकाशनाय भेजा गया था वह मैंने पढा है। उसे पढने के बाद मुझ ता उसमें चिढानेवाली कोई बात नहीं लगी। इधर बापू रियासता पर जा लेख लिखते रहे हैं उनमें मुझे चिढचिढाहट की गंध आई थी। दो वाक्य मुझे विशेष रूप से पसन्द नहीं आयें। एक वाक्य यह था जिसमें बापू ने कहा था कि सेना निर्दोष स्त्री-पुरुषों के धन पर गुलछरें उडा रही है। दूसरा वाक्य था सगठित गुडागर्दी। ऐसी भाषा के प्रयोग के कारण रह होंगे पर कोई ठोस दृष्टांत पेश नहीं किया गया था और मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा था कि यह भाषा बापू की कदापि नहीं हो सकती।

जब महादेवभाई न मुझे बताया कि बापू बीकम पत्र व्यवहार का प्रकाशित करन जा रह है ता मैं भयातुर हो उठा। पर उस पत्र-व्यवहार को देखने के बाद मुझे लगा कि वह पत्र व्यवहार उनक लेखा की अपेक्षा अधिक कठोर नहीं था।

मरे लिए यहा बढे-बढे सारी स्थिति पर प्रकाश डालना सम्भव नहीं है पर यदि बापू की यह धारणा हो कि गिम्सन और बीकम वाइसराय के निर्देश के अनुसार आचरण कर रहे हैं ता मैं उनसे सहमत नहीं हूँ। सच ता यह है कि वाइसराय न बीकम को उसक अविवेकपूर्ण आचरण पर बुरी तरह लताडा था। उन्होंने गिम्सन को भी कुछ कहा हा पर मैं कह नहीं सकता। गिम्सन की करतूत वाइसराय को तभी मालूम हुई जब सारा मामला समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ।

रियासता की प्रगति क मामला में वाइसराय का रुख सहानुभूतिशून्य रहा हा ऐसी कोई बात नहीं है पर वह परिस्थितियाँ के बधन में जकड हुए हैं। रजवाडों ने एकाकर रखा है और राजनतिक विभाग के अधिकारी लाग भडकानवाली कारवाई करते रहते हैं। वाइसराय इन पर एक हद तक ही नियंत्रण रख सकत है। उन्हें यह सारा मामला तब मालूम हुआ जब शरारत हो चुकी थी। अब वाइसराय का शिवायत है कि बापू उनकी सहायता नहीं कर रहे हैं। मैंने वाइसराय को ओरदार शब्दा में बताया कि बापू क साथ सम्पर्क रखना कितना जरूरी है। वह मेरे सुझाव पर विचार कर रह हैं। पर इस प्रसंग में भी वाइसराय को आशका है कि रजवाडे क्या साचेंगे। यदि वह कोई कदम उठाते हैं तो राजा महाराजा में

प्रतिरिया की लहर दौड़ जाना निश्चित है। वाइसराय स्वच्छ मानस के आदमी हैं उनमें सहानुभूति की भावना प्रचुर मात्रा में मौजूद है उनके विचार भी निमल हैं पर उनमें सूझ बूझ का अभाव है। मेरी धारणा है कि साम्राज्यार हा जाए तो वापू समस्या का हल अवश्य खोज निकालेंगे।

महादेवभाई यहाँ कल सध्या का आ रहे हैं। यदि मुझे ऐसा लगा कि मेरे द्वारा कोई ठोस काम होना सम्भव है, तो मैं यही हवा रूहगा अथवा परसो कलकत्ते के लिए रवाना हो जाऊंगा।

पर मुझे जिस बात की सबसे अधिक चिन्ता है वह है वापू का स्वास्थ्य। तुम्हारे पत्रों को मैंने गम्भीरतापूर्वक ग्रहण नहीं किया था और महादेवभाई ने भी अभी उस दिन लिखा था कि वापू खासे अच्छे हैं। जब देखता हूँ कि तुमने जो कुछ कहा वह ठीक था महादेव ने जो कहा वह गलत साबित हुआ। मैं व्याकुल हूँ। मुझे पूरी पूरी खबर देते रहना करो। साथ ही वापू पर पूरा आराम लेने के लिए जोर डालो। पर जब राजकाट और जयपुर में यह सब हो रहा है तो क्या उनके लिए चैन से बैठना सम्भव होगा? जयपुर के बारे में मैं अब भी सुफल की आशा लगाये हुए हूँ। यदि कोई अनपक्षित घटना न घटे तो इस दीवान का जाना ही है। माच के आरम्भ में वाइसराय बड़ा स्वयं जानवाले हैं।

पर राजकाट के मामले में मुझे कोई आशा नहीं है। यहाँ का राजनतिक विभाग शुद्ध औपचारिक रवया अपनाए हुए है। हम क्या कर सकते हैं? समझौते का अर्थ लगानेवाले हम कौन होते हैं? और यदि ठाकुर साहब न उस भग करने का फसला ही कर लिया हो तो हम उन पर वसत न करने के लिए दबाव कैसे डाल सकते हैं? यदि गिब्सन कोई नासमझी का काम कर बैठे, तो उस अवश्य डाट बतलाई जा सकती है उससे कहा जा सकता है कि भविष्य में सावधानी से काम लो। पर हम ठाकुर साहब को समझौता बरकरार रखने के लिए विवश कैसे कर सकते हैं?’

पर यह सब जबानी जमा-खच है। हम सब अच्छी तरह जानते हैं कि यदि राजनतिक विभाग कुछ कर गुजरन की ठान ले तो उसके लिए कोई चीज असम्भव नहीं है। पर य लीग यदि कुछ कर गुजरन की ठान लें तो वह बुरी चीज ही हाती है यदि य कोई अच्छी चीज करने पर उतारू हो जाए तो उन्हें राजा महाराजा के तथा विभाग के निचले अमले के प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। वाइसराय का रुच्य सहानुभूतिपूर्ण है पर वह लाचार है। यदि कुछ करने लगे तो ऊपर से डाट फटकार मिलेगी। इसलिए वह रजवाड़ा पर दबाव डालने में बचे रहना चाहते हैं। इस तरह वाइसराय की स्थिति कटकाकीण है। मैं तो

२५४ बापू की प्रेम प्रसानी

अब भी यही आशा लगाए बटा हूँ कि सदब की भांति इस अवसर पर भी समस्या का कोई-न-कोई सतापप्रद हल बापू तजारा कर सकेंगे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

२३

तार

दिल्ली
१२१६२६

प्यारेलान

भारत महात्मा गांधी
वारडोनी एव वर्धा

बापू जब तक पूरा स्वास्थ्य लाभ न कर लें उनकी कुशल मंगल तार द्वारा नियमित प्रति भेजते रहो। आशा है अब वह पूरा विश्राम लेंगे और मीन रहेंगे। सशक्त हूँ। ३ तारीख तक यही हूँ।

—घनश्यामदास

२४

तार

वारडोनी
१ फरवरी १६३६

घनश्यामदास बिडला
अल्बूकक रोड
नयी दिल्ली

जयपुर विपयक लख रोक लिया गया है। कल फटियर मल से पहुँच रहा हूँ। बापू दुबल हैं। जीवराज का सलाह है कि बापू एक पारवाड तक पूरा विश्राम लें।

—महादेव

२५

तार

वधगिज

२ फरवरी १९३६

धनश्यामदास विडला

नयी दिल्ली

स्वस्थ हूँ। जितने विश्राम की जरूरत है ले रहा हूँ। फिक् मत करो।

—बापू

२६

तार

वधा

३ फरवरी १९३६

धनश्यामदास विडला,

विडला हाउस

अल्ब्रूक्क राड

नयी दिल्ली

सूजन कम हो गई है। लगभग पूरा विश्राम ले रहा हूँ। कल रात रक्तचाप १५४/९८ था। अधिकारिया का लिखित अनुरोध न मिलने तक जमनालालजी प्रतीक्षा न करते रहे। जयपुर-भरकार की विनप्ति नितांत असतापप्रद है। वक्त-य दिया है।

—बापू

२७

तार

विडला हाउस
नयी दिल्ली
३२३६

महात्मा गांधी
सगाव
वर्धा

जयपुर का मामला सुलटने की आशा है। जमनालालजी को सुझाव दिया है कि जयपुर एक पखवाडे तक लौटन में रूके रहें। प्रतिवध उठवाने की कोशिश कर रहा हूँ। कृपा करके आप भी उन्हें यही सलाह दीजिए। इस अवसर पर आपके वक्तव्य से सहायता मिलेगी।

—धनश्यामदास

२८

तार

नयी दिल्ली
४२३६

महात्मा गांधी
मारफत जमनालाल बजाज
वर्धा

जमनालालजी के साथ जा पुलिस अफसर हैं उन्होंने उनसे जवानी अनुरोध किया है कि वह अधिकारिया को पुनर्विचार करने का समय दें। क्या मैं जमनालालजी से कह सकता हूँ कि वह रियासत के अधिकारिया को पत्र लिखकर पुलिस के अनुरोध का उल्लेख करें विज्ञप्ति को निरर्थक बतावें और ८ तारीख तक का समय दें? पत्र का मसौदा भेज रहा हूँ। आप उस ठीक समझें तो उन्हें पत्र लिखने का कहें।

—महादेव

२६

सेगाव, वर्धा

४२ १९३६

प्रिय धान्यामदामजी,

आपका १ तारीख का पत्र मिला, जो मैंने बापू को भी दिखाया। बापू आपको खुद लिखत, पर वह खब व्यस्त हैं। आपने यह अदाज ठीक ही लगाया कि बापू न 'हरिजन' में जो इतनी बटोर भाषा का व्यवहार किया उसका कोई बंध कारण अवश्य रहा होगा। जब मैं आपका बताता हूँ कि नम भाषा कितनी अनुपयुक्त ठहरती।

आपने पहला हवाला इस वाक्य का दिया है कि 'सना निर्दोष लोगो के घन पर गुलछरें उडा रही है।' इस वाक्य का सम्बन्ध उडीसा की तालचर और डेवानल रियासता में हुई घटनाओं से है। तालचर के गावों में फौजपुरा गश्त लगानी है, और उससे बहा के विपदग्रस्त स्त्री पुरुषों को सास मिलता है। यह बहा के "निर्दोष स्त्री पुरुषों के घन पर सेना का गुलछरें उडाना नहीं तो क्या है? एक अग्रज अपसर की मृत्यु का रावर पूर देहात में आतक का दौर-दौरा रहा। आधिर इन बेचारे ग्रामीणों में ऐसा क्या अपराध किया है कि उन पर आतक जमाने के लिए सैनिक प्रदर्शन की जरूरत हुई? सैनिकों ने मजे में गश्त नगाई। उन्हें किसी प्रकार के सफट का सामना नहीं करना पडा।

रही 'संगठित गुण्ठागर्दी' की बात सा राजकोट से खबरें आई हैं कि वहा जादमिया का दूर ले जाकर नगा किया जाता है और भारा पीटा जाता है। वेंत लगान का आदेश जारी कर दिया गया है। इसकी कोई जरूरत नहीं थी। जनता न हिंसा का आचरण नहीं किया था। फिर यह संगठित गुण्ठागर्दी नहीं तो क्या है? और यह कोई नयी तरकीब नहीं है जिम्मा एकमात्र इमी जवसर के लिए आविष्कार किया गया है। यदि आप १९१६ २२ की मग इंडिया की फाइल देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि इसका पहली बार किस सदस्य में प्रयाग किया गया था।

बापू का समर्थन के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें जा चुनींती दी गई है सबसे पहल उस समझा जाय। पहले तो ब्रिटिश सरकार के एजेंट न बहा के नरेश को अपनी प्रजा को दिये गये बचन का उल्लंघन करने का वाध्य किया और फिर अपने जनतक आचरण पर पदा डालन के निण इस सफेक गठ का आश्रय

लिया कि उस उत्तेजित करन के लिए बहुत कुछ बिया गया था। बापू अनाचार और अमृत्य का दहन मात्र से व्यथित हो उठते हैं यह आपको बतान की जरूरत नहीं। एक निरशुभ सत्ता न वहा बापू का असत्य और अनाचार की चुनौती दी थी। इस सदभ म द्वितीय गोलमज काफ़रेंस के जबसर पर ब्रिटिश सरकार द्वारा अल्पसंख्यक जातिया के पबट को मायता प्रदान करने का भी उल्लेख प्राप्तगिक होगा। बापू के पास ऐसी चुनौतिया से निपटने का बचत एन ही शस्त्र है, 'प्राणा की बाजी लगाकर उमका प्रतिराध करना। इस सम्बन्ध म सदेह की कोई गुजाइश नहीं है।

रही वाइस्मराय की बात। वे अपन अधिवारा का सम्पूर्ण उपयोग गिब्सन कीकम कम्पनी की नीति के समथन म कर रह हैं तो उनकी मोपिक सहानुभूति का क्या मूल्य है? आपने रजवाडा का किसी काय के लिए विवश करने के मामले म वाइमराय की असमथता की दलील के सदभ म बापू की स्थिति का ठीर ठीक नहीं समथा। राजवाट क ठानुर साहब को अपने वचन का उरलथन करने को गिगन के अतिरिक्त और निगी ने वाध्य नहीं किया। वाइमराय गह तो गिब्सन को अपनी गलती का परिमाजन करने को वाध्य कर सकते हैं। ही सवता है कि वाइमराय ने गिगन को यसा आचरण करने को प्रयक्ष रूप म प्रेरित न किया हा पर वे अपने एन मानहन क जाकरण के दोष स गवथा मुक्त कस हा सवत हैं? यदि गिगन सघ्राट की सरकार की अयत्नता जसा कोई काम कर बठता ता क्या उगना एक क्षण क लिए भी अपन पत्र पर बन रहना सम्भव होना?

बापू के स्वास्थ्य का लकर आपसो जा चिन्ता हा रही है मुझ भी हो रही है। मरी बहन (डॉ० गुशीला नयर) उनक पूरी तरह स्वस्थ न हान तक आपका राज उनका स्वास्थ्य सामाचार भजती रहगी। आज मैं सिविल राजन क बापू के नत्रा की रसमनाय करनबाची धमनिया का मध्यक परीक्षण करन का बुता रहा हू। मुझे वधनी हा रहा है। पूण स्वास्थ्य-नाम क त्रिण बापू का जितन विधाम की जरूरत है वह उतें मिनाया मिग्राई नहा रहा है। उहाने जवाहर और बाग का निग्र भा मिया है कि विनापार स्वास्थ्य क कारण उह त्रिपुरी क अधिवशन म भाग लन म मुक्त रग्या नाय। अचना यह कारण कितना बध चितता जनात्य है दी ध्यात म रग्या जरूरी है। मना पर भी यदि राजराट की स्थिति और

बिगड़ी, तो आप उह राजकोट के आस पास ही वही पढाव डाले पायेंगे। बापू का स्वास्थ्य जसा है, उसे देखते हुए उह इस स्थिति से बचाना बहुत जरूरी है।

भवदीय,
प्यारेलाल

श्री धनश्यामदास बिडला
बिडला हाउस
घालीगज बनकत्ता

३०

मगाव
६२ १६३६

प्रिय धनश्यामदासजी,

आपका पत्र मिला। आपने जिस सलग्न सामग्री का जिफ्र किया है, वह याद नहीं क्या थी। हो सकता है कि आपको पत्र लिखने के बाद ऐसा लगा हो कि उसे भेजना अनावश्यक है, इसलिए नत्थी नहीं किया हो। यदि मेरा पत्र आपके पास अभी भी हो तो कृपा करके उसे मेरे पास भेज दीजिए जिसस मुझे याद आ जाये कि वह क्या सामग्री थी।

आपकी एक लम्बी चिट्ठी के जवाब में मैंने कल आपको एक महत्त्वपूर्ण पत्र बलकत्ते के पते पर भेजा था। उसकी नकल महादेवभाई के पास दिल्ली भेज दी थी कि सम्भव है आप अभी वही हा।

बापू का आज का स्वास्थ्य समाचार इस पत्र के साथ भेज रहा हू। कल वाला बुनेटिन महादेवभाई का भेजी चिट्ठी के साथ नत्थी कर दिया था।

भवदीय
प्यारेलाल

पुनश्च

अपने प्रोग्राम की अग्रिम सूचना देते रहियेगा।

३१

८ फरवरी, १९३६

प्रिय प्यारेलाल

तुमने अपने ६ तारीख के पत्र में लिखा है कि भरी चिट्ठी के जवाब में तुमने मेरे कलकत्ते के पते पर एक महत्त्वपूर्ण पत्र भेजा है। वह पत्र शायद कल पढ़ने को मिले। मैं कलकत्ते के लिए बन्द खाना टा रहा हूँ। दो-तीन हफ्ते वही ठहरूँगा।

तुमने अपने ६ तारीख के पत्र में स्वास्थ्य ममाचार नयी बरन की बात कही है पर वह ता मिला नहीं।

तुम्हारा

धनश्यामदास

श्री प्यारेलाल

सेगाव

३२

विडला हाउस

बनारस

८ फरवरी १९३६

प्रिय सुशीला बहन

तुम्हारे ४ तारीख के पत्र से बापू के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में पूरी जानकारी मिली। यह जानकर एक बड़ी चिंता से छुटकारा मिला कि बापू के स्वास्थ्य में जा गटगडी हुई थी वह कायभार के कारण थी या और कोई चिंता की बात नहीं है। तुमने जो कुछ कहा है उसमें यह आशा बंधन लगी है कि जहां तक विश्राम करने का सम्बन्ध है बापू डाक्टरों की सलाह पर चलेंगे।

भवदीय

धनश्यामदास

सुधी सुशीला नयर

सेगाव

३३

तार

बिन्ला हाउस लालघाट बनारस
८ २ १९३६

महात्मा गांधी

मारफ्त जमनालालजी वजाज,

वर्धा

जमनालालजी ने फोन पर बात की। मैंने उन्हें सलाह दी है कि उनका दुगारा जाना और अधिकारिया द्वारा बलात् खदडे जाना खिलवाड और मर्यादा शून्य होना। महादेवभाई ने भी फोन पर बात की। वह मुझसे सहमत हैं। मेरी राय में जमनालालजी को अधिकारिया को लिखित चेतावनी देनी चाहिए कि व प्रतिबध उठा लें यदि वे न उठावे, तो वहा दुवारा जाय। पत्र को प्रभावोत्पादक बनाने के हेतु उसे 'गोपनीय' रखना आवश्यक है। व्यापक दृष्टिकोण का तकाजा है कि स्थिति में सुधार करने की दिशा में आप श्रीगणेश करें। इससे राजकोट और जयपुर दाना मामला में सहायता मिलेगी। आप अपनी सम्मति भी तार द्वारा भेजिए।

—घनश्यामदास
मारफ्त 'लकी

३४

गुरुपोत्तम मशन,
आपरा हाउस के सामने
बम्बई ४
८ फरवरी १९३६

प्रिय महादेव

तुम्हारा पत्र मिला। उसके साथ तुमने श्री लखवेट के साथ हुए पत्र व्यवहार

का साराश भेजा वह भी मिला। इन लागा के रुय के बार मे तुम्हारा जो जदाज है, उससे मैं सहमत नहीं हूँ। व्यवहार-कुशलता तो शलवती है, पर नीयत साफ नहीं है। 'स्टेटसमन का अतिम लख अधिक स्पष्टवादिता के साथ लिखा गया था, पर यदि हम किसी गिंसन या वीकम के ऊपर लिखें या कहे तो हमारे इरादा पर शक होने लगगा। इस मामले मे जाति का सवाल बिलकुल नहीं है। हमने उनके किले पर घावा बाला है और वे ग्रीज उठे हैं। उन्हें अपने अपराध का पान है पर वे अनजान बनते है। जो भी हो मुझे तो जमकर मोर्चा सभालने के आसार दिखाई दे रह है। मुझे इस बाबत कोई सदेह नहीं है कि गिंसन ने काठियावाड की सारी रियासता मे गुण्डागर्दी का सगठन किया है। लीमडी मे श्री गिंसन की नीति जिस रूप मे खुलकर सामने आई तुम्हें जानकर शोभ होगा। तीन बडी बडी डकतिया हूइ हैं जिनमे लोगा की सम्पत्ति लूटी गई और उ ह घायल किया गया। रियासत के अनाचारा का जनता प्रतिरोध कर रही ह। उसे आतंकित करने के लिए सशस्त्र डकतिया कराई जा रही हैं। पिछले दो-तीन दिनो स लोग बाग महल के चारो ओर घेरा डाले बठे हैं और जाच की माग कर रह हैं, पर राज्य के काना पर जू तब नहीं रेंगे है। वा को कष्ट झेलना पड रहा है। यह सब कुछ गिंसन की जानकारी मे तो है ही इस सार व्यापार मे उसका हाथ है ऐसा लगता है।

तुम्हारा,
बल्लभभाई

श्री महादेव देसाई,
बिडला हाउस
नयी दिल्ली

३५

बिडला हाउस,
जल्दूक्क राड,
नयी दिल्ली
६ २ १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

रियासता के बार मे आपने जवाहरलाल का वक्तव्य तो देखा ही होगा।

एसा लगता है कि समझौता नहीं होगा, और इस मामले को लेकर सम्बन्ध विच्छेद हो जायेगा। राजकुमारी ने मुझे जो पत्र लिखा है इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ। चिह्नित परे को देखिए। बर्धा का दिमाग जिस दिशा में काम कर रहा है इसका अनुमान आप उस परे से कर लेंगे। यदि सरकार सर धीकम जैसे जन्मजात मूर्खों का समर्थन करती रहेगी, तो पता नहीं क्या हो जाएगा। मुझे अभी तक बापू का तार नहीं मिला है और मुझे एसी आशंका होने लगी है कि कोई तार नहीं आयेगा, और बापू कोई कदम नहीं उठावेंगे। प्यारलाल का पत्र पढ़ने लायक है।

सप्रेम,
महादेव

३६

तार

बर्धागज

६ फरवरी १८३६

धनश्यामदास विडला,
'लकी',
कलकत्ता

मरी समझ में जमनालाल का अपनी प्रेरणा के अनुरूप आचरण करने की स्वतंत्रता दना ठीक होगा। नोटिस देने के पक्ष में मैं नहीं हूँ। यदि उन्हें कष्ट झलना ही है, तो भले झेलें।

—बापू

समाव

६ फरवरी, १९३६

प्रिय धनश्यामदासजी

बापू का स्वास्थ्य पहले जसा ही है। सूजन तो तिन पहले लगभग बिल्कुल उतर गई थी आज फिर हो गई है। आज कनल होकोपीनटराय ने उनकी परीक्षा की। उन्होंने कहा कि उनके वारडोली जाने से पहले उनका हृदय की ध्वनि जसी थी अब उसकी अपेक्षा अधिक क्षीण है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बापू कम-से-कम एक पत्रवाङ्क पूरा विश्राम लेँ और कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने कदापि न जाए। बापू ने कहा कि इतने स्थानों पर जग्मि प्रज्ज्वलित करने के बाद अब उनके लिए चैन से बैठना सम्भव नहीं है। उन्होंने कहा कि रुई के गाला में लिपटकर जीवित रहने की अपेक्षा वह मुस्तद रहकर मरना अधिक पसन्द करेंगे। जैसी कुछ स्थिति है उस देखते हुए उनके लिए मानसिक शांति सम्भव नहीं है। भगवान उनकी देखभाल करेंगे। हमारे लिए जितना कुछ सम्भव है हम उन्हें आराम देते हैं और वह खुद भी सावधानी बरत रहे हैं। पर बापू लाचार हैं डा० जीवराज और गिल्डर के आने के बाद आपका फिर लिखूंगी।

भवदीया

सुशीला

पुनश्च

अपनी गतिविधि की सूचना दत्त रहिए।

कलकत्ता

१० फरवरी, १९३६

प्रिय प्यारेलाल,

यहां पहुंचने पर दया कि तुम्हारा पत्र प्रतीक्षा कर रहा है। मैं कल शाम ही लौटा हू।

जयपुर के लिए जमनालालजी के तीसरी बार प्रस्थान के वार में वापू का तार मिला। मैं सहमत हूँ। वह जसा उचित समझें करें या यह चूह बिल्ली का कौतुक मुझे अप्रिय नगा है। यगन जो कुछ किया है, उसका वणन वापू ने 'सगठित गुण्डागर्दी' और 'बबरता जस शान्ता म किया है पर वह मुझे अब भी पसंद नहीं आया है। जमनालालजी ने अपने सब प्रथम वक्तव्य में यह स्वीकार किया था कि पुलिस ने उनके साथ सद्व्यवहार किया। उनकी दूसरी यात्रा के वार में जो कुछ समचार अभी तक प्राप्त हुए हैं उनसे स्पष्ट है कि उन्हें बलपूर्वक हटाते हुए भी पुलिस ने उनके साथ भद्र व्यवहार किया और जब उन्होंने मोटर में बैठने से इंकार किया तो स्वयं दामोदर का कहना है कि यगन अपने जादमिया का जमनालालजी को बलपूर्वक उठाने में बड़ी सावधानी बरतने का तारीफ की। जो कुछ किया गया वह भले ही गलत हो पर पुलिस अप्रमत्त अपने स ऊंचे अफसर के निर्देश के अगुरूप उहे राज्य की सीमा से बाहर छोड़ने को बाध्य थे। ऐसा उसने उड़ी भद्रता के साथ किया। उसके इस जाचरण को बबरतापूर्ण और 'सगठित गुण्डागर्दी' का सनादना ठीक नहीं होगा। यह मरी ममझ कि बाहर है कि एम वणन स यग या उसके उच्चतर अफसरा का हृदय परिवर्तन किस प्रकार सम्भव होगा।

आज जब विधान ने बताया कि वापू का स्वास्थ्य के विषय में उहे अच्छी रिपोर्ट नहीं मिली है तो मुझे बड़ी चिन्ता हुई। वापू को विश्राम करना चाहिए राजकोट और जयपुर की देखभाल भगवान स्वयं कर लेंगे। आज रात को विधान से मिल रहा हूँ। इस बीच मुझे वापू के स्वास्थ्य के समाचार बराबर भेजते रहना।

फिलहाल मेरे करने योग्य कोई काम बाकी नहीं रह गया है। हाँ मैं दूसरे पक्ष के साथ सम्पर्क अवश्य बनाय रखूंगा, और यदि वापू के ध्यान में लाने लायक कोई बात हुई तो तुम्हें खबर कर दूंगा। साथ ही, मुझे यह भी लिखते रहना कि वापू के क्या विचार हैं।

तुम्हारा

धनश्यामदास

श्री प्यारेलाल

सेगाव

३६

दिल्ली

१० फरवरी, १९३८

प्रिय घनश्यामनामजी

हा अब हम इस प्रयत्न में लगना चाहिए कि मूर^१ वापू का भली भांति समझ आर तब भरमबा प्रयत्न करें। आत्मी नीयत का साथ है, हा कुछ मद-बुद्धि अवश्य है। यदि वह चाहता बहुत कुछ कर सकता है।

बलनमभाइ का पत्र आया है। साथ में भजता है। पढ़िए, यास तीर स चिह्नित वाक्य को। एसा मालूम होता है कि हमारा दल गादावरी (या वाशी) शायद ही जा सकेगा।

आपका,

महादेव

१ आपर मूर स्टेटसमन के सम्पादन।

४०

सगाव

१० फरवरी, १९३६

प्रिय बिडलाजी

आपका पत्र मिला।

मैंने आपको जो पत्र भेजा था उसमें साथ स्वास्थ्य का बुलेटिन नहीं भेज पाया। बात यह हुई कि मैंने उसको एन नकल महादेवभाईवाले पत्र के साथ रख दी थी और तब पता चला कि आपके लिए कोई नकल नहीं बची है। डाक का समय हो गया था इसलिए तत्काल कुछ किया भी नहीं जा सकता था। पता चला कि सुशीला ने कुछ बुलेटिन बुक-पोस्ट द्वारा कतिपय अर्थ लोका को भजन को ताकीत कर दी थी। मैं आपका पत्र लिखनेवाला था, इसलिए बुलेटिन आपके पास

बुक-पास्ट द्वारा नहीं भेजा गया। उद्यम बुलेटिन की सारी नकलें भी समाप्त हो चुकी थी।

अपने पिछले पत्र के साथ कुछ और सामग्री भी रखने की बात साची थी पर मैं बापू से कहा कि मैं कुछ सामग्री आपके पास भेज रहा हूँ ताकि उन्हें यह पता नही आया। बाल कोई जरूरत नहीं।

पिछले दो दिनों में बापू के रक्तचाप में काफी सुधार हुआ है। आज मध्याह्न १ बजे १२८/६८ है। आज कोई बुलेटिन जारी नहीं किया जायगा। डा० गिल्लर और जीवराज मेहता शनिवार को पहुँच रहे हैं। स्वास्थ्य में थोड़ा सुधार हान का एक कारण यह भी हो सकता है कि मौसम उतना शीतल नहीं है। इधर मुंगीला बापू को जल स्नान भी बग रही है।

आपका
प्यारेलाल

८१

बलकत्ता

११ फरवरी १९३६

प्रिय श्री प्यारेलालजी

हाल में महात्माजी ने बाइसराय का जो पत्र लिखा है श्री धनश्यामदासजी बिडला उसकी नकल अपनी फाइल के लिए चाहते हैं। वह पत्र महादेवभाई दिल्ली अपने साथ लाय थे, और उस बिडलाजी ने बाइसराय के सप्रेटरी को स्वयं सौंपा था। कृपा करके उस पत्र की नकल ऊपर के पत्र पर भेजिए।

धन्यवाद,

भवदीय,
सप्रेटरी, श्री बिडला

श्री प्यारेलाल,
वर्धा

स्वास्थ्य बुलेटिन

जाज डॉ० गिल्डर और डा० जीवराज महता ने वापू की परीक्षा की। हृदय का विद्युत चित्र भा लिया गया। पता चला कि हृदय के स्नायु म दुबलता है।

परीक्षा के द्वारा इस बात की पुष्टि हुई कि किडनी और दिल दाना ही ठान दग स काम नहीं दे रहे हैं। उहान वही पुरानी सलाह दी—पूण विधाम किया जाये। शारीरिक और मानसिक थम जितना कम हो अच्छा है। यात्रा स यथा सम्भव बचा जाय।

बल स सूजन फिर बट गइ है। मूत्र की परीक्षा स पता चला कि किडनी भरी हुई है।

मीसम म कुछ गर्मी ह जिसके कारण रक्तचाप कुछ नीचे जा गया है। जाज प्रातः काल ५ बज १६६/१०० था ११ बज डा० गिल्डर न रक्तचाप लिया ता १७०/१०२ निकला।

सुशीला नयर

११ २ ३६

सगाव

तार

प्यारलाल

मारफ्त महात्मा गांधीजी,

वर्धा

सुशीला बहन ने जो रिपोर्टें भजी हैं उनके अध्ययन स डा० विधान सतुष्ट

नहीं हुए। मैंने उन्हें वर्धा जाने का कहा है। बापू की सहमति का तथा अनुकूल तारीख का तार भेजो।

—धनश्यामदास
मारपत 'लकी

विडला दस वि०

बनवत्ता

११ २ ३६

४४

बलवत्ता
११ फरवरी १९३८

प्रिय महात्मावभाइ

प्यारेलाल ने मुझे मूत्र पत्र भेजा था और तुमन ठीक ही कहा कि उसे पत्रवर कुछ ग्राम हूय नहीं हुआ। दिल्ली में जसा कुछ वातावरण है उससे मेरे लिए यह अनुमान करना कठिन नहीं था कि राजकोट में क्या हो रहा है। पर राजकुमारी अमृतकौर यह कैसे कहती हैं कि मेरे मेल मिलाप की बात बन्द करने से सहायता मिलेगी ?

मैं लेखवेट का फिर लिख रहा हूँ। पर मैंने वाइमराय को जितना कुछ ममत्ता है उसके आधार पर कह सकता हूँ कि वह जो-कुछ करेंगे स्वेच्छा से करेंगे और यदि उन्हें मेरा सुझाव रुचा भी तो भी वह यह नहीं बनायेंगे कि उनका दिमाग किस विश्वास में काम कर रहा है। हम मंगल की ही आशा करनी चाहिए।

बापू ने यग क हथकड़ा का सगठित गुण्टागर्दी बताया यह मुझ विलकुल अच्छा नहीं लगा। मैंने उन्हें यह बात लिख भी दी है।

सप्रेम
धनश्यामदास

श्री महादवभाई देसा
नयी दिल्ली

४५

स्वास्थ्य बुलेटिन

सेगाव, वर्धा

१२ २ ३६

डा० गिल्डर और डा० जीवराज मेहता के परामर्श के अनुसार कल रात वापू वरामदे में सोये। उन्हें यह पसंद नहीं आया। वह रात के ११ बजे तक बरबस बदनते रहे और प्राथना के बाद भी उन्हें नींद नहीं आई।

उनकी साधारण स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। सूजन बनी हुई है। आज प्रातः काल रक्तचाप १७०/१०० था। दिन भर मोन के बाद वह १६२/१०० पर आ गया।

मुशीला नगर

४६

स्वास्थ्य बुलेटिन

सेगाव, वर्धा

१३ फरवरी १९३६

कल रात वापू खुल में सोये और उन्हें अच्छी नींद आई। वन और आज दिन भर हरिजन मन्बधा काय और मुलाकातिया के साथ व्यस्त रहे।

भोजन की मात्रा पहले की तरह ही स्वल्प है पर वजन में कमी नहीं आई है। इसका कारण यह बताया गया है कि शरीर में तरल पदार्थ संचित है।

सूजन बनी हुई है।

आज प्रातः काल और मध्याह्न के बाद भी रक्तचाप १७६/१०६ रहा।

मुशीला नगर

४७

तार

वर्धा

१३ फरवरी १९३६

घनश्यामदासजी

लकी,

कलकत्ता

वन गिन्जर जीर जीवराज ने परीक्षा की थी पर डा० विधान को आने का अधिकार है जब आना चाहें आ जायें।

—वापू

४८

कलकत्ता

१४ फरवरी १९३६

प्रिय प्यारेलाल

डा० विधान राय यहाँ से वर्धा के लिए २२ तारीख का खाना हागे। आशा है, उनके यहाँ पहुँचते-पहुँचते वापू का रक्तचाप सामान्य स्थिति में आ जायेगा और वह अधिन स्वस्थ हो चुके होंगे। डॉ० राय का वापू के हृदय की दुबलता को लेकर चिन्ता उत्पन्न हो गई है। उसका कहना है कि यह दुबलता दूर होने के बाद फिर भी उभर सकती है। उन्हीं मूल में एल्युमिन की इतनी अधिक मात्रा को नकार चिन्ता है। जा भी है यह कहा जा रहे हैं। पत्र का यह अंग अपनी बहन का पत्र कर सुना देना।

आधर मूर व साथ दर तक बातें हुई। इन सब लोग का वापू के लय पर हैरत है। यह तो को नहीं बहता कि उन्हें मुठभेड बन् कर दनी चाहिए पर इन लोग की समझ में यह नहीं आ रहा है कि इतनी बटोर भाषा का प्रयोग क्याकर हुआ। मूर व गुडो बनाया कि उसी भारत-भरवार ने सूचना मिली है कि उन

लोगों की धारणा है कि यह सारा बमेडा ठाकुर माह्य न खडा किया है, वह रजिडेंट का जाथय लेकर सावभौम सत्ता और काप्रेस को आपस में भिडाना चाहते हैं। यदि इस कथन में कोई तथ्य हुआ तो मुझे ताज्जुब नहीं होगा। इस मामले में मैं विशेष रूप से कुछ कहने का अधिकारी नहीं हूँ पर इतना अवश्य कहूँगा कि मुझे हार्दिक विश्वास है कि वाइसराय वही बात कहेंगे, जो उनकी दृष्टि में ठीक जचगी और यदि यह कुछ बर सबन में अपन आप का असमर्थ पार है तो इसका एकमात्र कारण यही है कि उनके माग में अडचनें हैं। गिम्पन और बीकम को दिल्ली बुलाया गया था क्या परिणाम निकला सा मैं नहीं जानता। पर लखवेट के साथ अपनी बान्धोत के दौरान भरी यह असन्निध्य धारणा हुई थी कि राजगण्ट में जो दमन जारी है यदि सचमुच ऐसा ही कुछ है तो उसका अन्त कर दिया जायेगा। लखवेट न कहा था कि इस दमन काय के वार में स्वयं उस कोई जानकारी नहीं है। भूय के विचार में पारस्परिक सम्पर्क बडा सहायक रहेगा। वह दिल्ली वाइसराय से मिलन जा रहा है। जरूरत हुई तो वधा भी जायेगा। वापू का यह सब यता दना।

सुशीला से कहना कि वह जा बुलटिन भेज रही है इसका लिए मैं उसका जाभारी हूँ। जाना है जब तक वापू का स्वास्थ्य चिन्ता का विषय बना रहे तब तक वह इसी प्रकार बुलटिन भजता रहेगी।

भवन्तीय,
घनश्यामदास

श्री प्यार नाल
सगाव वर्धा

४६

तार

नयी दिल्ली
१४ फरवरी १९३६

घनश्यामदास
लकी,
कनकता

आज मुझसे फोन पर बात कीजिए अत्यावश्यक।

—महादेव

५०

कलकत्ता

१५ फरवरी १९३६

प्रिय महादेवभाई,

मूर आज सुबह फिर मिलने आया था। बोला, मैंने वाइसराय का लिखकर पारस्परिक सम्पर्क की आवश्यकता सुझाई है। मैंने सोच विचार के बाद तुमसे फोन पर बात करना ठीक नहीं समझा। अब तो बर्धा को सवाद भेजने और वहाँ स पान के नये साधन जुट ही गये हैं उनका पूरा उपयोग होना चाहिए।

मूर ने कहा कि इस स्टेज पर वह सावभौम सत्ता के हस्तक्षेप पर जोर देगा। बाना यह कहना बहूदा है कि हस्तक्षेप किया ही नहीं जा सकता पहले भी अनेक बार ऐसा हो चुका है। नाभा और इ गौर के उदाहरण मौजूद हैं।

आग क्या कुछ होता है उस सामने रखकर मैं अपना प्रोग्राम बनाऊंगा।

सप्रेम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
नयी त्रिली

५१

कलकत्ता

१८ फरवरी १९३६

प्रिय प्यारेलाल

बापू का स्वास्थ्य सुधरता दीखता है। तुम जानते हो कि वह छुद इस मामले में गिनने चौकने रहते हैं। यदि बीच-बीच में यह लापरवाही बरतने लगते हैं तो इसका एकमात्र कारण यही है कि उनसे नोपा की अपेक्षाओं की कोई भीमा नहीं है। बापू जिस प्रकार प्रवृत्ति को तिलाजलि देकर सबल्प का आश्रय लेने पर उतारू हो जाते हैं उससे यह स्पष्ट है कि यह विश्व के कल्याणाय अपनी सारी शक्ति-

सामर्थ्य को संचित रखना चाहते हैं। मैं तो उन्हें यही सुझाव देना चाहूंगा कि वह मुत्ताकानिया की सख्या त्रिलकुल पटा दें और पत्र व्यवहार भी सीमित कर दें। बापू के लिए इस ओर ध्यान देना अत्यावश्यक है और यदि तुम्हें ऐसा लगे कि वह इस ओर ध्यान दे रहे हैं तो उन्हें यह बताना मत भूचना कि मरी यह एक सम्मति है कि वह इस बारे में तुरत कोई फसला कर डालें।

अब मैं इस इतजार में हूँ कि तुम मुझे यह बताओ कि बापू के माघ सुभाप की भेंट का क्या परिणाम निकला। मुझे जो कुछ मालूम हुआ है, और मेरी सूचना का सूत्र स्वयं सुभाप बाबू ही हैं वह यह है कि बापू ने उनसे कहा है कि वह अपनी क्विनेट स्वयं बना लें और ६ महीने का नोटिस देने और उसकी ममाप्ति पर सघप आरम्भ करने का कायत्रम भी स्वयं ही बनाए। इसका क्या परिणाम हागा यह बताना मेरे बूते व बाहर है। यह बिलकुल स्पष्ट है कि अकेले सुभाप बाबू के लिए लडाईं छेडना सम्भव नहीं है। यह भी प्रायः निश्चित है कि जब तक बनी लडाईं की साधकता के बारे में बापू का समाधान न हो जाए सुभाप बाबू को उनका सहारा मिलने में रहा। तो फिर क्या बापू उनके लिए मैदान खुला छोड़ देंगे? मुझे ऐसा लगता है कि बापू की अपनी कोई काय-योजना है।

आधर मूर मुझसे दो बार मिल चुका है। मुझे उसमें पता चला है कि उसने वाइसराय को लिखकर पारस्परिक सम्पक की आवश्यकता पर जोर दिया है। आशा है ऐसा सम्पक स्थापित होकर रहेगा।

मैं जल्दी ही कलकत्त से बाहर जान का विचार कर रहा हूँ। पहले मेरा विचार था कि वर्धा होना हुआ दिल्ली जाऊँ पर बापू व स्वास्थ्य की बात को ध्यान में रखकर वसा करना ठीक नहीं जचा। अब यह बताओ कि बापू क्या पसंद करेंगे?

भवदीय

घनश्यामदाम

श्री प्यारेलाल

संगाव

५२

तार

बर्धा

१८ फरवरी १९३६

धनश्यामदास बिजला

लकी

कलकत्ता

विधान स कहा बारडोली यात्रा रह कर दी है। चिन्ता की कीई बात नहीं है।

—बापू

५३

सेगाव बर्धा

१८ २- ६

प्रिय बिजलाजी

आपका पत्र आज बापूजी को मिला। उसके जवाब में जो तार उन्होंने भेजा है वह मिला होगा।

इसके साथ वात्सराय और बापू के पत्रों की नकल आपकी सूचना के अनुसार भेजी जा रही है।

बापूजी की तबीयत अभी पूव स्थिति में ही है। या पावा की सूजन लगभग चली गई है। पशाव में जल एल्बुमिन विनकुल नहीं है। कास्टस भी नहीं है। यूरिया ठीक स्थिति में है। पेशाब कम होने पर भी गुर्दे अपना काम बराबर कर रहे हैं। इसमें लगता है कि उनकी स्थिति अच्छी है। जो विकार पशाव में पाया गया था वह अस्थायी कारणों से था।

भवदीय,

प्यारेलाल

वाङ्मराय भवन

नयी दिल्ली

१६ फरवरी १९३६

प्रिय मिस्टर गांधी

आपके १२ फरवरी के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। आपने अपना जो लेख पढ़ने का मुझे अवसर दिया है उसके प्रकाशन के आपके सकल्प के बारे में मुझे कोई गलतफहमी नहीं है। आपने देखा ही होगा कि मर वीकम सेंट जान ने उस मुलाकात का अपना विवरण दिया है।

मुझे यह जानकर दुःख हुआ है कि आपकी तबीयत खराब है। डाक्टरों ने आपको झंझटों से दूर रहने की सलाह दी है तिस पर भी आपने मुझसे सारी स्थिति पर बातचीत करने के लिए यहाँ आने की तत्परता प्रकट की इसकी मैं सराहना करता हूँ। मैं समझता हूँ आप जानते हैं कि मैं आपसे मिलने को हमेशा तयार हूँ और इस विचार ने मुझे बड़ी प्रसन्नता प्रदान की कि हम एक-दूसरेके साथ सम्पर्क स्थापित करने का अवसर मिला है। यदि आप वसा सम्पर्क अब स्थापित करने का विचार रखते हो तो मैं बातचीत के लिए विलकुल तयार हूँ। पर मेरे विचार में फिलहाल यह भेंट स्थगित रखना ठीक रहेगा। क्यों सो भी साफ साफ बता दूँ। पिछले अवसरों पर जब हम मिले थे तब हमने अपनी भेंट का प्रबंध कुछ इम तग से किया था कि उसका एक असाधारण घटना के रूप में विज्ञापन न हो और न उन अवसरों पर जनसाधारण में तनाव पैदा करनेवाला कोई वातावरण ही उपस्थित था जिसके निराकरण के लिए तुरत और विशिष्ट कारवाई की जरूरत होती। आप और मैं दोनों इस बारे में निश्चित हैं कि हम दाना में जो बातचीत होगी वह शांति और अवसादशून्य वातावरण में ही होगी। पर आप जानते ही हैं कि मुझे और मुझे विदित है कि आपको भी अत्यंत अनेक हितों को ध्यान में रखना है और मेरी यह धारणा है कि यद्यपि मैं आपसे भेंट करने के अवसर का सदैव स्वागत करूँगा हमारी भेंट तभी हो जब उसके द्वारा कोई उद्देश्य सिद्ध होना सम्भव हो और वसी भेंट के लिए पहले जसा अनुकूल वातावरण हो। फिलहाल परस्पर विरोधी तत्वों और हिंसा में सामंजस्य स्थापित करने की जा समस्या उठ खड़ी हुई है उसे ध्यान में रखते हुए ऐसी भेंट से जनसाधारण में गलतफहमी पैदा हो सकती है तथा ऐसी आशाओं अपेक्षाओं को बल मिल सकता है जिनकी

पूर्ति सम्भव न हो। यह प्रश्न गम्भीर विचार की ज़रूरत रखता है क्योंकि इसका सावजनिक दृष्टि से असाधारण महत्त्व है। आप मुझे जानते हैं, और मेरी धारणा है कि अच्छी तरह जानते हैं इसलिए मैं जो कुछ कहा है वह इस कारण नहीं कहा है कि मुझसे भेंट करने की आपकी तत्परता की सराहना न कर पा रहा होऊँ, विशेषकर इस समय तो आपकी यह तत्परता मेरे लिए बड़े मूल्य की वस्तु है। पर आप और मैं दोनों ही सावजनिक हिता का प्रतिनिधित्व करते हैं इसलिए हम जो कुछ निष्पन्न निश्चय करेंगे उसकी सावजनिक प्रतिक्रिया अवश्यम्भावी है और हम ऐसी आशाओं के नैराश्य से बचना चाहिए जिनके प्रति हमारा कोई उत्तरदायित्व नहीं है। पर मैं जो-कुछ कहा है यदि उसे पत्ने के बाद भी आपको ऐसा लगे कि भेंट करना अच्छा रहेगा तो मुझे आपसे पुनः मिलकर बड़ी प्रसन्नता होगी। मेरे इज्जतनगर के दौर का समय आ गया है। २४ तारीख निश्चित हुई है। यदि यह भेंट मेरे राजपूताना के दौरे के बाद रखी जाए तो मेरे लिए सुविधाजनक रहेगी।

आपका
लिननियगा

५५

सगाव
वर्धा (मध्य प्रान्त)
२० फरवरी १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आज बहुत दिना के बाद आपका शांतिपूर्वक पत्र लिख सका हूँ।

आपने बापू के सम्बन्ध में जो कुछ कहा ठीक ही है। मुझे तो यही उम्मीद है कि बापू अपने स्वास्थ्य के बारे में सापरवाही नहीं करेंगे, क्योंकि वह खुद भी तो अपने कुशल मगल को एक आध्यात्मिक धाती मानते हैं। कसर इतनी ही है कि बापू किसी भी कीमत पर स्वास्थ्य अथवा जान है तो जहान है' में विश्वास नहीं रखने। अब से कोई दो साल पहले एक मित्र ने बड़े दिन के उपहारस्वरूप जापत्ति लिख भेजी थी वह मुझे चिरस्मरणीय रहेगी। पत्ति थी दीया प्रकाश प्रदान करने की धुन में अपने-आपको स्वाहा कर डालता है।' भगवान के सदस

बाहको के भाग्य में भी यह वृद्धा है कि वह इस अधकारपूर्ण जगत को अपनी ज्योति से प्रज्वलित करने की धुन में अपने-आपको स्वाहा कर डालें।

सुभाष यही थे कोई तीन घण्टे बापू के साथ एकांत में बातें करत रहे। पत्रा में जो समाचार छपा है, वह निराधार नहीं है। मैं आपको लिख ही चुका हूँ कि बापू ने उन्हें जा सलाह दी उसे उ होने एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया। वह स्वयं कुछ कर गुजरने पर तुले हुए हैं। जिन माधिया का सहारा लेकर वह अछयक्ष की गद्दी पर आसीन हुए हैं वे उन्हें कटा खेर ले जायेंगे यह कौन जानता है? उनके माझियों का यह गिरोह खतरनाक है। पर बापू की धारणा है कि यदि सुभाष अपने अहिंसापूर्ण तौर-तरीके को उचित ढंग से कार्यान्वित करेंगे तो कुल मिलाकर उससे वायस और देश नाना का ही हित-साधन होगा।

इधर ऐसा लगने लगा है कि अपनी जगली बठक में जखिल भारतीय कांग्रेस कमटी का बहुमत समझ भ्रूझकर चलने के पक्ष में रहेगा। सलाह-मशवरा जारी है। एक-दो दिन में आपको सब मालूम हो जाएगा। बहुत सम्भव है बापू प्रकाशनाथ वक्तव्य जारी करें।

जयपुर की तरह राजकोट के मामले को लेकर कुछ एक जनपक्षित उम्मीदवार पाचवें सवारा की फेहरिस्त में नाम लिखाने का उतावले हो रहे हैं। नाम नहीं बताऊंगा। अब यह बात ऊपर निर्भर है कि वह इन अपेक्षाकृत अधिक ख्याति प्राप्त सज्जना का साथ चाहेंगी या नहीं।

भवदीय,
प्यारलाल

५६

सगाव, वर्धा

२१ फरवरी १९३६

प्रिय लाडलिनलिथगा

आपके सहृदयतापूर्ण और स्पष्टवादिता से जोतप्रोत पत्र के लिए आभारी हूँ। ऐसी परिस्थिति में मैं उस समय की प्रतीक्षा करूंगा, जब आपका भेट वाछनीय लगेगी।

आपका
मो० क० गांधी

प्रिय घनश्यामदासजी

देखता हूँ कि कुछ पत्रों में यह धारणा बनाई जा रही है कि कांग्रेस का भावी कार्यक्रम क्या हो, इस बारे में बापू और सुभाष के बीच एक प्रकार का समझौता हुआ है। यदि इसका आशय यह हो कि सुभाष जिस ढंग की नीतियों का प्रतिपादन करने का दावा करते हैं उनके प्रति बापू की ओर से किसी प्रकार की रिआयत भी गई है अथवा उन्हें भायता प्रदान की गई है तो यह बिल्कुल अनुनियत और सरासर ध्रामक धारणा बनाई जा रही है। बापू ने सुभाष के सामने यह बिल्कुल स्पष्ट कर दिया था कि अपनी नयी नीतियों के बारे में उन्हें कांग्रेस की पुरानी क्विनेट से सहयोग की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। पर फिलहाल बापू इस मिथ्या धारणा का निराकरण करने के लिए ढाड़ बकनव्य नहीं देंगे क्योंकि निहित हिता द्वारा उनका दुर्लपयोग किया जा सकता है, अथवा उसके गलत अर्थ लगाए जा सकते हैं।

बास और डा० सुनील के तार के उत्तर में बापू ने कार्यकारिणी की वर्तमान बैठक में मुख्य प्रश्न पर अंतिम निर्णय लेना स्थगित कर दिया है। पर सदस्यगण यदि चाहें तो उन्हें पत्र लिखकर यह बता सकते हैं कि उनका इम्तीफा तयार है वह जब चाहें तलब कर सकते हैं। इधर बापू का ध्यान लीमडो और राजकोट की स्थिति का आरंभ अधिक खिचता जा रहा है। राजकोट में जिन सत्याग्रहियों को गिरफ्तार किया गया है, उन्हें मानना दी जा रही हैं। इसका विरोध में अधिकांश गिरफ्तार सत्याग्रहियों ने भूष-हड़ताल शुरू कर दी है। इनमें कई एक पुराने और मजबूत सहकर्मी भी शामिल हैं। बापू के दृष्टिकोण से यह एक गम्भीर मामला है। जिन कार्यकर्त्ताओं को यातनाएँ दी जा रही हैं उनमें से अनक का वह स्वयं जानते हैं और उनके हिमाश्रय आवरण के बारे में उन्हें जरा भी संदेह नहीं है। अतः उनकी यातना के समाचार में बापू व्यथित हो उठे हैं।

बापू ने राजकोट के प्रमुख सत्रय का तार देकर यह सारा काण्ड समाप्त करने को कहा है और उम्मीद है कि यह भी कहा है कि उन्हें सत्रय में बूढ़ पड़ने से अपने-आपको रोकने में कितनी कठिनाई हो रही है।

आज दोपहर की नींद लेने के बाद बापू का रक्तचाप ऊँचा हो गया—

१८६/११४। यह उनके किसी ज्ञात जातरिक उद्वेलन के ही कारण हुआ हांगा पर है यह अस्थायी। फिलहाल चिन्ता की कोई बात नहीं है।

भवनीय,
प्यारेलाल

पुनश्च

आपके वर्धा आने के बार में बापू कुछ कहने से चूक गए। मैं उनसे अवसर मिलते ही फिर पूछूंगा पर इतना तो कह ही दू कि जहा तक बापू के स्वास्थ्य का सबध है उसे लेकर आप यहां आन से बतई मत रुकिए। यदि आप जान और फिर वापस लौटने में जल्दवाजी से काम न लें तो आपका जाना बापू की परेशानी का कारण होने के बजाय उह राहत पहुंचायेगा।

५८

तार

महामहिम वाइमराय क प्राइवेट सत्रेटरी
नयी दिल्ली

मैंन राजकोट के प्रमुख सदस्य का निम्नलिखित तार दिया है

यदि जितने समाचार मिले हैं वे सब मनगढत है तो यह मेरे और मेरे सह कर्मियों के लिए गम्भीर बात है। यदि उनमें कुछ तथ्य है, तो यह राज्य के अधि कारिया के ऊपर गम्भीर लाछन है। उधर भूख हडताल जारी है ही। चिन्ता ने मुझे याकुल कर लिया है। अत मैं कल रात का अपने साथ चिकित्सक, सत्रेटरी और टाइपिस्ट का लेकर राजकोट के लिए रवाना हो रहा हू। मैं सत्य की खोज में और शान्ति स्थापना के लिए आ रहा हू। गिरफ्तारी करान का कोई इरादा नहीं है। मैं अपनी आखा देखना चाहता हू और यदि मैंने देखा कि सहकर्मियों ने मनगढत समाचार भेजे हैं तो मैं पूरा मुआवजा दूंगा। मेरी ठाकुर साहब से भी अपील है कि वह जनता की खातिर अपने भग किये वचन का पालन करें। मैं जनता से प्रदर्शन रोकने को कहूंगा और जब तक राजकोट में मेरे प्रयत्न

जारी रह तब तब के लिए मरदार से राज्य और राज्य से बाहर के लागा का सत्याग्रह स्थगित करने को कह रहा हू। यदि ठाकुर साहब और कौंसिल के लिए कुछ सदस्या के हेर फेर के बाद समझौते को बरकरार रखना तथा कदिया को तुरत रिहा करना और जुमनि वापस करना सम्भव हो तो मैं स्वभावतया ही अपनी यात्रा रद्द कर दूंगा। कौंसिल में कौन कौन सदस्य रहें इस बाबत बातचीत चलाने के लिए आप किसी पूण अधिकारयुक्त व्यक्ति को भेज सकत हैं। शत यही है कि उसमें सरदार द्वारा नामजद व्यक्तियों का बहुमत रहेगा। भगवान ठाकुर साहब और उनके परामशदाताओ का पथ प्रदर्शन करें। क्या मैं एमप्रेस तार की प्रतीक्षा करू ?

कृपया इस वाइसराय के सम्मुख रख दीजिए।

—गांधी

वर्धा

२४ फरवरी, १९३६

५६

तार

महात्मा गांधी,

राजकोट

हम आत्मा से आपका साथ हैं। भगवान आपको हमारा पथ प्रकाशमय रखने के निमित्त दीर्घ जीवन प्रदान कर। प्रेम, प्रणाम।

—धनश्यामदाम महाश्व देवदास

बिहला हाउस, नयी दिल्ली

७ मार्च, १९३६

६०

वाइसराय का शिविर

भारत

१० मार्च १९२६

प्रिय श्री देसाई

मुझे यह अभी-अभी महामहिम क पास से वापस मिला है। उन्होंने आपसे इस सौजन्य के लिए धन्यवाद देने का आदेश दिया है और यह कहा है कि उन्होंने यह बड़ी रुचि के साथ पढ़ा। आप जानते ही हैं कि हम आगामी बुधवार का दिन क ११ बजे महात्माजी की प्रतीक्षा करेंगे। उनकी अनुमति लेकर मैंने इस विषय की सूचना प्रस का द दी है। आशा है महात्माजी अनशन के कारण आई कम जोरी से छुटकारा पा गए हंगे। दखता हू कि वह यथास्वभाव काय रत हैं।

आशा है आप भी अब पहले से अच्छ हाग और आपने अधिक आराम लिया हागा।

भवदीय

जे० जी० लेखवट

श्री महादवभाई दसाड

विडला हाउस

नयी दिल्ली

६१

१० मार्च १९२६

प्रिय श्री लेखवट

आपके १० तारीख के पत्र के लिए और विशेष रूप से महामहिम के इस वृत्तापूर्ण सन्देश के लिए कि उन्होंने मेरे लेख का पारायण करन लायक समय निकाला, मैं अत्यत आभारी हू।

मैं जो इम मामल म इतनी दिलचस्पी ल रहा हू सो केवल इसलिण कि मुझसे जो अत्यत महत्त्व का प्रश्न किया गया था उसे लेकर महामहिम के दिभाग म यदि

किसी प्रकार का स दह बना हुआ है। तो मैं उस यथामम्भव दूर कर सकूँ। इस सम्बन्ध में मुझे जा चि ता है वह यह कि राजकोट में अभी भी चल रहे झूठे प्रचार में बद्धि हुई है। गांधीजी वहाँ केवल जनशन करने के लिए गये थे जिससे देश भर में अशांति की लहर फल जाय।

जिस दिन मुझे वाइसराय से साक्षात्कार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, काश मैं उस अवसर पर अपने-आपका इतना सयत कर पाता कि उन्हें उन सारी बातों की जानकारी देता, जिनका अत उन अनेक अनशना के रूप में हुआ है। महामहिम मुझे वसा एक अवसर पुन प्रदान करें यह तो मैं सोच भी नहीं सकता पर मैं उनसे यह अनुगय अवश्य करूँगा कि वह गांधीजी के साथ दिन जाकर बात करें जिससे उनके लिए सारी स्थिति का स्पष्ट करने का मौका मिल। मैं जानता हूँ कि किस प्रकार लाड इर्विन ने उनमें लम्बे असें तक चलनेवाली बातों की थी, ता उनसे अनेक अतरण प्रश्न भी किये थे। उस वार्ता-समुच्चय का अत गांधी इर्विन समझोते के रूप में हुआ जो अब इतिहास की सामग्री बन चुका है। उस अतरण वार्तालाप के फलस्वरूप दोनों प्रेम की रज्जु में बध गए थे।

मैं आपको इस मामले में एकमात्र यही उद्देश्य सामने रखकर व्यस्त कर रहा हूँ। मरी एकमात्र कामना है कि एक-दूसरे का समझने और एक-दूसरे के प्रति मैत्री की भावना पदा करने का अवसर दिया जाये—केवल यही नहीं बल्कि राज काट में भी यही करना हागा। वसा होन स जिन महती सम्भावनाओं की आशा बधेगी उसे क्षति पहुचानवाली किसी भी परिस्थिति को प्रश्रय न दिया जाए।

मैंने १८ फरवरी का हि 'दुस्तान टाइम्स' के वापिक अंक के लिए एक लेख लिखा था। उस समय मुझे यह पता नहीं था कि गांधीजी राजकोट जाने का विचार कर रहे हैं। उस लेख से गांधीजी के मानस का मम्यक दिग्दर्शन होता है। उसकी एक प्रति आपके—और यदि मम्भव हो ता महामहिम के—अवलोकनाथ इस पत्र के साथ रखता हूँ जिसमें यदि आप आघा घण्टा उसके निमित्त निकाल सकें तो निकालें। ऑफिस का कामकाज बड़ा पवानवाला होता है। इस लेख से आपका दिल-बदलाव भी हागा और महामहिम को गांधीजी को समझने में सहायता भी मिलगी।

भवदीय

महान्व दसाई

थी ज० जी० लयवेट

वाइसराय भवन

नयी दिल्ली

गोपीजी का निनमिषगी को पत्र

दिनांक ११/३/२६

गोपीजी

१ मार्च १९२६

मैं यह पत्र आपको पागलानगर पहुँच तक भिजवाने की आज्ञा कर रहा था। पर वाइसराय भवा मी गोपा दिवसी जल गया जहाँ बन्नी भूय हड़ताल कर रहे थे। उनका पागल टहलना मैं लिए मैंने जिनका समय की जरूरत समझ रखी था। उमंग बढ़ा अधिका समय मंगा—पूरा था पण्डे। मुझ यह कहती प्रगल्भता ही है कि बलिपात मरी बात सुनी और मरी मौजूदगी में ही आजाग ममापन कर दिया। उन्हें बलात् भोजन कराया जा रहा था। अब मैं उनकी रिहाई के बारे में सर रजिस्ट्रार महकमल का लिख रहा हूँ।

आपका माप मरी जा बागपीन हूँ उम में अब निनिबद्ध करता हूँ। मैं आपका तार से समझा कि ठाकुर साहब ने मंग २६ दिसम्बर का सरदार वन्दरभ भाई पटल का जा पत्र दिया था उमका अर्थ प्रधान न्यायाधीन लगाये। यह समझकर कि एका हमारी इच्छा के अनुसार हुआ है अब एका समिति का गठन किया जाएगा जिनका सरदार द्वारा नामजत गाग लाग हाने और राग्य के तीस अधिकाारी भी हाने जिनकी नामजतगा स्वयं ठाकुर साहब करेंगे। इस सदस्या म ग एका का ठाकुर साहब अध्यक्ष नियुक्त करेंगे।

आपका तार में जित्त दूनरी बात का उन्तय है वह यह है कि यदि एक आर सरदार द्वारा नामजत सदस्या म और दूनरी ओर अधिकाारिया म २६ दिसम्बर की विमलि के अर्थों का सेगर कभी मतभेद हुआ, तो प्रधान न्यायाधीन को पत्र बनाया जायगा और उनका निणय अंतिम माना जायगा। जहाँ तक प्रधान न्यायाधीन का निये गए दो हवालत का सम्बन्ध है, आपका तार का मैं यही तरनाकी मम ग्रहण करता हूँ। रही शासन विधान की रूप रग्या निश्चित करती बात तो हम मामले में बहुमत का ही मान्यता दा जाएगी।

मैंने जो दो मुद्दे उठाये थे उनका बारे में मैं आपको लिखता था बतान दिया था इस पत्र में उनको लेकर और अधिका लिखना आतापरयव है। पर आपका प्रति

औचित्य के आचरण का तकाजा कहता है कि ठाकुर साहब के परामशदाताओं ने उनसे कुछ ऐसी नामजदगिया करा डाली है जिनसे पीछे हटना सर्वोपरि मत्ता के लिए भी परशानी से खाली नहीं रहेगा। मेरा अभिप्राय दा मुसलमाना और एक भायात की नामजदगी से है। सम्भव है आपको इस कठिनाई का ज्ञान हो, मैंने भी इससे पार पाने के लिए कुछ रास्ते आपको सुझाये थे। यदि आपको उनकी जान कारी न हो तो मैं उनका खुशी खुशी खुलासा करूँगा। आपके साथ अपनी बात चीत का सिंहावलोकन करता हूँ तो मुझे लगता है कि कई मामला म किसी निणय पर नहीं पहुँचा जा सका था। मुझे आपका अधिक समय न लेने का बराबर खयाल रहा, और जब यह प्रतीत होने लगा कि अय अनेक मामलो की भाति इस मामले को लेकर भी कोई कठिनाई उपस्थित नहीं होगी तो बातचीत को और जाग बढ़ाना मैंने अनावश्यक समझा। आप मेरे इस कथन म सहमत होंगे कि मैंने जिन शर्तों पर अपन उपवाम का अंत बिया था, उनकी पूर्ति के बारे म किसी तरह की गलतफहमी नहीं होनी चाहिए। जो कदम उठाय जानेवाले हैं यदि उनकी घोपणा के बाद उनम से किसी पर मुझे जापत्ति हुई, तो यह बड़ी भयकर बात होगी। इसलिए मेरा सुझाव है कि राजकोट के मामले मे जो घोपणा अथवा घोपणाए की जानेवाली हों उनसे मुझे पहले से ही अवगत कर दिया जाए।

अय कुछ बातें ऐसी हैं, जिनकी मैंने अपनी बातचीत के दौरान चर्चा की थी और जिहे ठाकुर साहब को 'अल्टीमटम' कहकर बतया जा रहा है। इस बारे मे आपके दा तार सदेशो म मुझे जाश्वासन मिला है। मेर और आपके बीच तारा का जो आदान प्रदान हुआ है, उनमे और भी कुछ ऐसी बातों का उल्लेख है जिनरी पूरी सफाई के लिए एक और भेंट री जरूरत है। आपके और मेरे बीच रियासती के बारे मे जल्दी-जल्दी जो बातें हुई, उनके दौरान आपने मुझे यह बतया था कि आप निक्कट भविष्य म एक नयी नीति काम म लान का विचार रखते हैं। उस वार्ता के फलस्वरूप मेरे मन मे जशाति-सी पदा हो गई है। अपनी इस अस्पष्ट आशका को लिखित रूप देने मे मुझे सबाच हो रहा है। आप यदि यह सोचते हो कि मैंने आपके अभिप्राय को ठीक ठीक समझा है तो बात दूसरी है। इसक लिए भी मैं आपसे एक बार फिर मिलना चाहूँगा।

क्या आप सूचित करने की कृपा करेंगे ?

६३

बिडला हाउस

नयी दिल्ली

१६ मार्च १९३६

प्रिय सर रेजिनाल्ड

महादेव देसाइ ने आपका मरा पत्र देते समय आपके साथ जा बातचीत की उसका सारांश उहाने मुझे बताया है। आपने उनका लिए समय निकाना इसने लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। आपने जा सुभाव दिये व उहाने मुझे बताया। मैं विद्या की इच्छा को जाने बिना कोई काम नहीं उठाना चाहता था इसलिए मैंने उहें उनके पास भेजा था। अब मैं यह कहने की स्थिति में हूँ कि भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए हिंसा व माग में उनकी कोई आस्था नहीं है और न उनका ऐसी किसी सस्था में प्रवेश करने का ही इरादा है जिसकी शायद पद्धति हिंसात्मक हो। मुझे आशा है कि इस पत्र को आधार मानकर आप जब उन बन्धियों की बिना शर्त रिहाई की घोषणा कर देंगे। मुझे यह भी आशा है कि विद्या की रिहाई का प्रश्न से प्रत्येक प्रांत में जलजल डग से निपटने की नीति का पूणतया त्याग कर दिया जाएगा।

भवदीय

मा० क० गांधी

आनरेबल सर रेजिनाल्ड एम० भवसवन

गृह-सदस्य भारत सरकार

नयी दिल्ली

६४

नयी दिल्ली

१६ मार्च १९३६

प्रिय सर रेजिनाल्ड,

मुझे जो सुविधाएँ देने की कृपा की गई उनसे मैं दिल्ली जेल में उन तीन

भूष हड़तालियो से भेंट कर सबा। मुझे यह बहुत प्रसन्नता होती है कि उन्होंने मरी सलाह मान ली और भूष हड़ताल स्थगित कर दी। सरकार जो आश्वासन चाहती थी, मैंने उन्हें वह आश्वासन देने के लिए राजी करने की भरसक काशिश की, पर उनका कहना था कि वे कौल-करार के द्वारा अपनी आजादी नहीं खरीदना चाहते, उन्हें बगैर भुक्दमा चलाए जेल में डाला गया है और जिस प्रकार अन्य अनेक बन्दिओ का रिहा किया गया है उसी प्रकार उन्हें भी बगैर किसी शर्त के रिहा किया जाए। मुझे उनकी आपत्ति में औचित्य दिखाई दिया। पर मैंने उनसे कहा कि उनकी रिहाई के निमित्त सफल प्रयत्न करने के लिए यह आवश्यक है कि वे मेरा समाधान करायें, कि वह कांग्रेस की अहिंसात्मक नीति में विश्वास रखते हैं और भविष्य में कांग्रेस की देखरेख में काम करेंगे। इसके लिए वे तुरत तैयार हो गए, और उन्होंने अपने आश्वासन को लिखित रूप दे दिया। पर साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि मैं उस लिखित आश्वासन का आधार पर उनकी रिहाई का प्रयत्न कदापि न करूँ और न उनकी रिहाई के प्रयत्न के दौरान सरकार को यह पत्र दिखाऊँ। इन बन्दिओ को आप बिना किसी शर्त के रिहा कर सकें ता वही बात ही। यदि आप ऐसा करेंगे, तो राजनैतिक क्षेत्र में अहिंसा की नीति का अवलम्बन करने के मेरे मिशन में बहुत सहायता मिलगी।

श्री पत्रले ने मुझे जो पत्र भेजा है उसमें मैं इस शर्त का भी उल्लेख पाता हूँ कि वे बन्दी अमुक-अमुक प्रांत में प्रवेश नहीं करेंगे। यह शर्त अनावश्यक है। यदि उन प्रांतों की सरकारें वहाँ उनकी उपस्थिति के खिलाफ हाथी लाँ उन प्रांतों में उनके प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा देंगी। भारत सरकार को ये शर्तें लादने की क्या जरूरत है ?

मैं यह पत्र महादेव देसाई के हाथ भेज रहा हूँ ताकि वह आपको पूरा रूप से बता सकें कि उन ३ बन्दिओ और मेरे बीच क्या क्या बातें हुई।

भवदीय,
मो० क० गांधी

आग्नेवल सर रजिस्टार एम० मक्सवेल,
सी० एस० आई०
गृह-मन्त्रालय भारत-सरकार
नयी दिल्ली

६५

महारमाजी का साह सितलियगी को पत्र

विजया हाउस,

नयी दिल्ली

१७ मार्च १९३६

'आपन बच मुने प्रघात ग्यायाधीन का विष जालेवात हवान का जा मगी ।
 कृपापूर्वक लिया का धतु वापस भेज रहा हू । मैंने मगोना मरलात पत्र का
 लियाया । त तो वह उमम काई परिधान-परिवहन करना चाहत है । त ही
 करता शाहता हू । मगोना की गहन बना सी है ।

तन जावता जाना समय लिया ह्मक निर पुन शमाप्रायीं हू । पर मुन
 आशा है कि मगी तरह आपकी भा गही धारणा बनी हागी कि ह्म समय का
 सदुपयोग हुआ कम-से-कम हाता तो हुआ कि राजकोट के मामल को मवर
 भविष्य म किमा तरह की गन्तव्यमी पना हाता की सम्भावना क्यागम्भव कम
 हो गई ।

आपन सदी सितलियगा म परिषद कराया ह्मक निर एक बार फिर आप
 को धन्यवाद देना हू ।

६६

आनरेबल सर मॉरिस ग्यावर क० सी० धी० क० सी० एल० आई०

भारत के प्रधान न्यायाधीश का नाम

मैं निम्नलिखित दस्तावेजा की नवले सम्मानपूर्वक प्रेषित करता हू

(अ) राजकोट-नरवार की २६ दिसम्बर, १९३८ की विज्ञप्ति संख्या ५० ।

(आ) उमी तारीख की लिया गया राजकोट के ठाकुर साह्य का श्री पटल

का नाम पत्र ।

इन दस्तावेजा के सही अथ का लेकर सदेह उठ खड़ा हुआ है और मेरा यह सम्मानपूर्ण अनुरोध है कि आप यह सलाह दें कि उनका क्या अथ लगाया जाये।

जिस मुद्दे पर आपकी सलाह की तत्काल जरूरत है वह यह है कि ठाकुर साहब ने जिस समिति के गठन का वचन दिया है उसका गठन किस रूप में किया जाय। इस बार में ठाकुर साहब का कहना है कि उहोंने समिति में लिये जानवाले 'यक्तिया की सिफारिश करने को श्री पटेल से अवश्य कहा था, पर किन किन को नामजद किया जाय इसका निणय वह स्वयं करेंगे। इसका मतलब यह हुआ कि वह श्री पटेल द्वारा सुझाये गये लोगो में से किसको सदस्य बनायेंगे किसको नहीं, इस बार में वह स्वतन्त्र रहेग। उधर श्री पटेल का कहना है कि अपने २६ दिसम्बर के पत्र में ठाकुर साहब उनके द्वारा सुझाये गये सभी लोगो को समिति का सदस्य बनाने के लिए वाध्य हैं।

ठाकुर साहब और श्री पटेल से कहा गया है कि उहें अपने अपने विचार के प्रतिपालन में जो-कुछ कहना है, उसे लिखित रूप में पेश करें। जब उनके बयान प्राप्त होंगे आपके पास भेज दिये जायेंगे। यदि उनके लिखित बयानों का अध्ययन करने के बाद आपको लगे कि उनके मौखिक बयानों की भी जरूरत है, तो वंसा प्रवच भी हो सकेगा।

आप से यह अनुरोध है कि मामले का अध्ययन करने पर जस ही आप यह बतान की स्थिति में हो कि समिति का गठन किस प्रकार किया जाय आप अविलम्ब बता दें। समिति का गठन फिर उस जादार पर किया जायेगा। उसके बाद यदि सदस्या में इन दस्तावेजा के किसी अंश विशेष के मम के सबध में कोई मतभेद हागा तो मामला पुन आपके पास भेजा जायगा, और मतभेद के विषय पर आप अपना निणय देने कि उसका ठीक ठीक अथ क्या हो सक्ता है।

६७

बिडला हाउस

नयी दिल्ली

१७ मार्च १९३६

प्रिय महोदय

आपने १६ ताराख के पत्र के लिए धन्यवाद। आपने आग्रह का पालनस्वरूप मैं इस पत्र के साथ राजवाट के ठाकुर साहब का २६ दिसम्बर, १९३५ का मूल

पत्र लक्ष्मी करता हूँ।

इसी व माथ ठाकुर साहब व उक्त पत्र वा अपना अध तथा उमी तारीख की राय द्वारा जारी की गइ विनक्ति वा मवधित अश भी भेज रहा हूँ।

भवनीय

वल्लभभाई पटेल

पश्चिमी भारत के रायो के

माननीय रजिस्ट्रार

राजग्न मेरा निवेदन

- (१) निवेदन है कि २६ दिसम्बर १९३८ को राय द्वारा जो विनक्ति जारी की गई थी उमी तिन ठाकुर साहब न जो पत्र लिखा था वह अपने आशय म असदिग्ध है और उमका केवल एर ही अध लगाया जा सक्ता है। फात उमका अब निवानन व तिण वाह्य माक्षी अग्राह्य है।
- (२) ठाकुर साहब की दनीन उक्त विनक्ति की भाषा जीर मम के प्रतिकूल है।
- (३) इनन पर भी यदि प्रधान 'यायाधीन' किमी मुद्द पर कफियन तत्रय करें ता मैं पश करन को प्रस्तुत हूँ।
- (४) यदि ठाकुर साहब की जीर से कोइ दनीन पश का जायगी तो उसका प्रत्युत्तर दन वा मुच अधिकार रहगा।

वल्लभभाई पटेल

६८

२० मार्च १९३९

प्रिय श्री लखवट

जापने आज प्रात काल क पत्र तथा आपने इस जाशयानन र निए कि जाप सामन म उचित कारवाद कर रह हूँ मैं अत्यधिक कृतज्ञ हूँ।

पर मुच एक जीर दु छद कहानी कहनी है। आज सुबह जब सरदार वल्लभ भाई अपने एक मित्र को माननीय प्रधान 'यायाधीन' को भेज गय अपने निवेदन की नक्कल लिखा रहे थे, ता उहान देगा कि उक्त निवेदन म भून मे तीन शब्द

छूट गये हैं वैसे य छूटे हुए तीन शब्द विशेष महत्त्व के नहीं ह। सरदार को यह उचित लगा कि वह प्रधान यायाधीश का ध्यान इस ओर आकर्षित करें, ताकि उनके बयन में वे तीन शब्द शामिल किये जा सकें। उहान उनमें यह अनुरोध भी किया कि उन्हें दिल्ली में कितने दिन और ठहरना होगा, इस सबब में यदि सम्भव हो तो वह उन्हें सूचना दे दें, क्योंकि वह दिल्ली में केवल इसी अपेक्षा में रुक हुए हैं कि सम्भव है उनकी उपस्थिति की आवश्यकता हो। हम सब माननीय प्रधान यायाधीश के प्राइवेट सेनेटरी की इस सूचना में हैरत में पड़ गये कि उसे केवल हवाले के मुद्दे प्राप्त हुए ह सरदार का निवेदन अभी नहीं मिला है। प्रधान यायाधीश राजनतिक विभाग में सम्पर्क स्थापित करेंगे तथा जब तक उनके सामने मारे कागज पत्र पेश नहीं ह्याग, उनके लिए यह बताना सम्भव नहीं होगा कि सरदार को यहाँ और कितने दिन ठहरना होगा।

यह आपकी सूचनाय है, क्योंकि मैं बल इसकी चर्चा आपसे कर ही चुका हू। यह सारा बिलम्ब किसलिए है? इसमें किसका दोष है?

भवदीय,

धनश्यामदास बिडला

श्री जे० जी० लेखवट

वाइमराय के प्राइवेट सेनेटरी

का आफिस

नयी दिल्ली

६६

२१ मार्च, १९३६

प्रिय श्री लेखवट,

यह रही राजकोट से आय एक ताजा तार की नकल

‘एक जोर काश्तकार की जमीन बचने का आदेश हुआ है। बल बची जायगी। जुर्मान के लिए काश्तकारों की जमानतें ली गई हैं।—डेवर।’

सत्र का प्याला लबरज हो चना है। यह जाहिर है कि यहाँ से जो निर्देश भेजे जाते हैं उनका बावजूद राजकोट के अधिकारी यह सब कर रहे हैं—या तो जन जान में या जान बूझकर। तार में जमीनों बेचे जाने का आदेश गांधीजी को प्रमुख

सदस्य द्वारा दिया गया इन आश्वासनों के संवत्सा प्रतिबन्ध है कि जमीनों के चयन के नोटिसों पर अमल नहीं किया जायगा। जुमाने के लिए जमानतें तलब करना वाइसराय के निर्देश का स्पष्ट उल्लंघन है। महामहिम ने यह निर्देश गत ७ तारीख को मरा भोजपुरी में सम्भवतः राजनतिक विभाग का दिया था जब मैं उनसे भेंट करने उपस्थित हुआ था। वह निर्देश यही था कि कदिया का रिहा करने तथा लिये गए सारे जुमाने वापस करने का आदेश तुरत जारी किया जाय।

जब मैंने उक्त तार गांधीजी का पत्र मुनाया तो उन्होंने कहा कि सत्र की सीमा पार हो गई। क्या यह मामला तत्काल कारवाय करने की जरूरत नहीं रखता ?

भयनीय

वल्लभभाई पटेल

श्री जे० जी० लघवे

वाइसराय के प्राइवेट सेक्रेटरी

का आफिस

नयी दिल्ली

७०

श्री गाँधी विट के साथ हुए वार्तालाप के नोट

१ अप्रैल १९३६

श्री गाँधी विट गांधीजी से जो जो प्रश्न करना चाहते थे उनकी सूची उन्होंने पहले से ही दे दी थी। उनका प्रथम प्रश्न भारत के विकासशील प्रजातंत्र को सांप्रदायिक समस्या से बंधनिक तौर तरीका पर चलने की नीति के विरुद्ध तरण समाज के विद्रोह से राजनतिक दलबन्दी से श्रमिक समाज के असतोष से तथा ग्रामीण समाज की सीधी कारवाय करने की बन्ती हुई प्रवृत्ति से उत्पन्न होना खतर से सम्बन्ध रखता था। गांधीजी का उत्तर था श्री विट इन समस्याओं का जितना महत्त्व देते हैं वाम्तव में वह डाक्टरों की निदान करने की भांति की याद दिनाता है जिसमें यह मान ही लिया जाता है कि लक्षण साधनिक सिद्ध हो सकते हैं। पर वास्तव में वे आम तौर से साधनिक सिद्ध नहीं होते। फलतः आप

इन समस्याओं का जितना गम्भीर ममज्ञत है, उतना मैं नहीं समझता। मैं यह मानता हूँ कि उत्तर भारत में शेष भारत की अपेक्षा साम्प्रदायिक समस्या अधिक उग्र है पर यह उतनी उग्र नहीं है, जितनी फिलस्तीन में है। हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य आम जनता में घर नहीं कर सका है। जैसा कि पंडित जवाहरलाल ने आज सुबह जारी किये गये अपने वक्तव्य में कहा है यह लड़ाई उतनी धार्मिक नहीं है जितनी राजनीतिक और आर्थिक। यदि कांग्रेस एकाग्र चित्त होकर और केवल एक लक्ष्य सामने रखकर कायरेत हो, तथा मुसलमानों की वध आकांक्षाओं की पूर्ति कर, तो इनके दुक्के दगा को छोड़ साम्प्रदायिक समस्या अवश्य सुलभ जायगी। मुख्य बात यही है कि हम अपने अहिंसा-व्रत के समर्थ में विचलित न हों। यह सतोष का विषय है कि यह समस्या नगरों में सिर उठाती है गावाँ में नहीं, और असल में भारत का निवास गावाँ में है। यह वस्तुस्थिति है कि राजनीतिक उदाल नगरों में ही दिखाई पड़ता है, पर इमका दोष ब्रिटिश शासन के कुप्रभाव के मत्ते में मढ़ना चाहिए। जसा कि मैं कह चुका हूँ यदि कांग्रेस मुसलमानों की राजनीतिक आकांक्षाओं का समाधान करे, तो लड़ाई बगडा छूट ही जाय।

‘रही मुस्लिम लीग द्वारा लगाय गये इस लाठन की बात कि मुसलमानों पर अत्याचार हो रहे हैं सो विभिन्न प्रांतीय सरकारों ने इन आरोपों की जांच-पड़ताल करने के वाद उन्हें बंदुनियाद पाया है।’

श्री बिट ने भाषा-सम्बन्धी वाद विवाद का उल्लेख किया था। इन सम्बन्ध में गांधीजी ने कहा, ‘मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि इस शिकायत में कोई गार नहीं है। कांग्रेस ने उन्हीं पर कभी प्रहार नहीं किया वास्तव में किसी और ने भी ऐसा कभी नहीं किया। आपको शायद यह मालूम न हो कि इस विचार का, कि भारत की राष्ट्रभाषा का स्थान अंग्रेजी को देने की योजना हिन्दुस्तानी को दिया जाय, जमदाता में गूढ है। मैं अभी अपने प्रयत्न में सफल नहीं हुआ हूँ पर हम लाग सचष्ट हैं। वास्तव में भारत का राजवाज चलाने के लिए हिन्दुस्तानी ही उपयुक्त हो सकती है—न अकेली हिन्दी ही सकती है न अकेली उर्दू। हिन्दुस्तानी हिन्दू मुसलमान दोनों बालत हैं लिखत है कुछ दबनागरी लिपि में कुछ फारसी लिपि में। हिन्दुस्तानी में ससृष्ट फारसी और अरबी के विनष्ट शब्दों का अभाव रहता है। मैं उर्दू का काफी ध्यानपूर्वक अध्ययन करता हूँ पर उर्दू की दागनिब पुस्तकों का आशय मैं ग्रहण नहीं कर पाता क्योंकि उनमें फारसी और अरबी के शब्द भरते रहते हैं जिनके बन्धुबन्धन फारसी और अरबी कायों के होते हैं। इस बात में मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है कि उर्दू का एक अर्थात् निश्चित और प्रतिष्ठित स्थान है। वास्तव में, पञ्जाब में तो उर्दू हिन्दू मुसलमान दोनों की

है, यदि मेरी बतार्ट गइ शर्ते पूरी हा जाय, ता मैं विधान के इस अग वो भी जमल म लाने में नही हिचकिचाऊगा पर साथ ही यह शत भी रयूगा कि कांग्रेस सचमुच की अहिंसा जपनाय न कि इस समय की मूक अहिंसा।”

श्री विट न पूछा कि वास्तविक नियन्त्रण स आपका क्या अभिप्राय है ?

गांधीजी न उत्तर दिया उस स्थिति म वाइसराय वसा जावरण करने म सकोच करगा जसा अब करता है। इस समय स्थिति यह है कि यदि व्यवस्थापिका सभा किसी बिल को रद्द कर देती है ता वाइसराय उस बध करार दे देता है और व्यवस्थापिका सभा को उसका जाग मिर झुवाना पडता है। भारत ब्रिटिश पक्ट का व्यवस्थापिका सभा न १० वोट स रद्द कर दिया था और यदि मरवारी वोटो और ४० नामजद सदस्या के वोटो को कम कर दिया जाय तो पक्ट क पक्ष म बवल ६ वोट थे। इतने पर भी उसे लाद दिया गया। यह कितन परिताप का विषय है। जब भारत को स्वराज्य देना ही लक्ष्य है तो भारत सचिव हमारी बाता का निणय क्या करें ? वाइसराय की राय भले ही भिन्न हो पर वह मुह खोलने म असमथ रहता है। इस प्रकार ३५ करोट स्त्री पुरुषो की इच्छा यक्त करन का जिम्मा अपने ऊपर लिय हुए है। इस अग्रज जाति की नियन्त्रणप्रियता भली भाति प्रमाणित होती है पर इसम मरे जसा ब्यक्ति जो भारत और ब्रिटेन क बीच सचमुच की मली चाहता है भयातुर हो उठता है। जब अनमत की इस प्रकार जवना की जाती है तो जात्मी को भारत गामन क खिलाफ विद्राह करने की प्रेरणा मिलती है।

रक्षा के मामल म भी रूपय का जिस प्रकार जपब्यय हा रहा है देखत नही बनता है। आप सीमा प्रान क दौरे म मरे साथ रहते तो देखते कि वहा जिन लोग का वास्तविक महत्व है उन्हें किस प्रकार उपक्षित रखा जाता है। खान अब्दुल गफ्फार खा को ही लीजिए। वह फौलाद जस खर है और जमेजो क प्रति उनके हृदय म किसी प्रकार की दुभावना नही ह। पर उ ह सदेह की दष्टि स दखा जाता है, और सरकार की दष्टि मे उनका काई महत्व नही है।

श्री विट न फिर जिनासा जतलाई कि श्री पी० एन० सप्रू ने सुझाव दिया था कि व्यवस्थापिका सभा की एक सेना भूमिति गठित की जाये जो वाइसराय की प्रबन्धकारिणी समिति के साथ मिल-जुलकर काम करे। यदि वसी किसी समिति का गठन हा जाय, तो क्या आप सतुष्ट हो जायेंगे ?

गांधीजी न उत्तर दिया कदापि नही। हम अपनी क्षमता का कसौटी पर कसकर देखना है। यदि सम्पूर्ण अधिकार हमार सुपुद करने की इच्छा मौजूद है

ता उसी अनुपात में हम पर भरोसा करने की सम्भावना का भी जन्म देना होगा, उत्तरदायित्व का हस्तांतरित करना होगा हम भूल करने की स्वतंत्रता प्रदान करनी होगी, विश्वास का सलाह भगवरे की जरूरत होने पर उपयोग करने का हम अवसर देना होगा। पर इस समय यह सलाह हमारे ऊपर लादी जा रही है। यह तो सहयोग का माग नहीं है।

श्री विट न पूछा 'परंतु क्या हमने उत्तरोत्तर अधिकाधिक अधिकार सौंप कर अपना दृग्गदा स्पष्ट नहीं कर दिया? हमारे इरादे का सशय की दृष्टि से देखने में अतिशयोक्ति से काम लिया गया है। क्या सत्ता हस्तांतरण की अतिरिक्त अवधि में श्री सत्रू का सुझाव उपादेय सिद्ध नहीं होगा? यदि १० वर्षों के भीतर हस्तांतरण का कारण उल्लिखित है, तो क्या यह अतिरिक्त व्यवस्था स्वयं भारत के हित में लाभदायक नहीं होगी?'

'भारत के साथ ब्रिटेन का नाता काफी पुराना हो चुका है। यदि इतने वर्ष बीतने के बाद भी आप हमारे ऊपर भरोसा करके हम अधिकार नहीं सौंप सकते हैं, तो इस पुराने नाते का देखते हुए कोई विशेष बात नहीं है। जब आप परिवर्तन काल की बात कहते हैं तो मुझे आप पर शक होने लगता है। परिवर्तन-काल का प्रश्न उठे ही क्या? यदि आप वास्तव में हम अधिकार सौंपना चाहते हैं तो हम नैतिक और वास्तविक नियंत्रण का अधिकार तुरंत मिल जाना चाहिए। आपने हमारे मंत्रियों पर भरोसा किया तो बेजा नहीं किया। और यदि आप कहें लगे कि गवर्नर ने अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग नहीं किया तो हम कहें कि इसका योग्य प्रदूत श्रेय हम भी मिलना चाहिए क्योंकि हमने उन्हें बसा करने का अवसर ही नहीं दिया। मैं चाहता हूँ कि ब्रिटिश सरकार कुछ इस ढंग का आचरण करे, जिससे यह लगने लगे कि समूचा शासन विधान ही जल्दारी के सुपुत्र कर दिया गया है। हमारे ऊपर सालह जान भरोसा करना होगा थोड़ा बाड़ा करके नहीं जमा कि इस समय हो रहा है। यदि मासिकारी हा तो सचमुच की जोर स्वच्छा पूरक हो। तकनीकी मामला में आप लोगों के विशेषण हमारे शिष्ट रहें, हमारे स्वामी नहीं।

आप हिन्दू मुस्लिम तनाव की बात कहते हैं। इस तनाव के मौजूद रहते हुए भी आप लागू या यह शिकायत करने का कभी अवसर नहीं मिला कि मंत्रियों ने एक बग के हिता पर किसी अन्य बग के हिता का बलिदान किया। हम लागू न आठ प्राता में अपनी अच्छी-भ्रामी कफिदत न है। अतएव आप ऐसा बानावरण पना कीजिए कि हम नाना एक दूसरे का अधिकाधिक प्रिय लगने लगे। इस भरोसे की भावना का श्रीगणेश आपकी आर म ही हाना है।

है यदि मरी बतार्ई गइ शतें पूरी हो जाय तो म विधान के इस अग को भी जमल म लाने में नही टिचकिचाउगा पर साथ ही यह शत भी रखूगा कि कांग्रेस सचमुच की जहिंसा अपनाय न कि इस समय की भूक जहिंसा ।

श्री ब्रिट न पूछा कि वास्तविक नियंत्रण स आपका क्या अभिप्राय है ?”

गाधीजी न उत्तर दिया उस स्थिति म वाइसराय वसा जाचरण करन मे सकोच करगा जसा जय करता है। इस समय स्थिति यह है कि यदि 'यवस्थापिका सभा किसी बिल को रद्द कर देती है तो वाइसराय उस बध करार दे देता है और व्यवस्थापिका सभा का उमक आग मिर युक्ताना पडता है। भारत ब्रिटिश पकट का 'यवस्थापिका सभा न १० वोटो स रू कर दिया था और यदि सरकारी वोटो और ४० नामजद सदस्या क वोटो को कम कर दिया जाय तो पकट के पक्ष मे केवल ६ वाट थे। इतन पर भी उसे ज़ाद दिया गया। यह कितन परिताप का विषय है। जब भारत को स्वराज्य देना ही लक्ष्य है तो भारत सचिव हमारा बाता का निणय क्या करें ? वाइसराय की राय भले ही भिन्न हो पर वह मुह खोलने म असमर्थ रहता है। इस प्रकार ३१ करोड स्त्री पुरुषा की इच्छा 'यवत करन का जिम्मा अपने ऊपर लिय हुए है। इससे अंग्रेज जाति की नियंत्रणप्रियता भली भांति प्रमाणित हाती है पर इसम मज जसा ब्यविन जा भारत और ब्रिटेन क बाच सचमुच की मत्री चाहता है भयातुर हा उठता है। जय जनमत की इस प्रकार जयज्ञा की जाती है तो आदमी को भारत शामन क खिलाफ विद्राह करने की प्रेरणा मिलती है।

रक्षा के मामले म भी रपय का जिस प्रकार अपव्यय हा रहा है देयत नहा बनता है। आप सीमा प्रात क दोरे म मरे साथ रहत ता देयते नि बहा जिन लोगा का वास्तविक महत्त्व है उहे किस प्रकार उपश्रित रखा जाता है। खान अब्दुल गफ्फार खा का ही लीजिए। वह फौलाद जस खर है और अंग्रेजो क प्रति उनके हृदय म किसी प्रकार की दुभावना नहा है। पर उ ह सदेह की दृष्टि स दखा जाता है और सरकार की दृष्टि म उनका कार्द महत्त्व नही है।'

श्री ब्रिट न फिर जिनासा ततलाइकि श्री पी० एन० सप्रू न सुझाव दिया था कि व्यवस्थापिका सभा को एक सना-समिति गठित की जाय, जा वाइसराय को प्रवर्धकारिणी समिति क साथ मिल-जुलकर काम कर। यदि वसी किसी समिति का गठन हो जाय तो क्या आप सतुष्ट हो जायेंगे ?

गाधीजी न उत्तर दिया कदापि नही। हम अपनी क्षमता का कसौटी पर कसकर देखना है। यदि सम्पूर्ण अधिकार हमार सुपुद करन की इच्छा मौजूद है

ता उसी अनुपात में हम पर भरासा करन की सम्भावना को भी ज़रूर दना होगा, उत्तरदायित्व का हस्तांतरित करना होगा, हम भूल करन की स्वतंत्रता प्रदान करना होगा विशेषता के सत्ता-भ्रमण की ज़रूरत हान पर उपयोग करन का हम अबसर दना होगा। पर इस समय यह सलाह हमारे ऊपर नादी जा रही है। यह तो सहयोग का माग नहीं है।'

श्री विठ्ठल पृच्छा 'परंतु क्या हमने उत्तरात्तर अधिकाधिक अधिकार सौंप कर अपना दायित्व स्पष्ट नहीं कर लिया? हमारे इरादों का सशय की दृष्टि से दायित्व में अनिश्चयता से काम लिया गया है। क्या सत्ता-हस्तांतरण की अंतरिम अवधि में श्री सपू का सुधाव उपादय सिद्ध नहीं होगा? यदि १० वर्षों के भीतर हस्तांतरण के कारण उपस्थित हों तो क्या यह अंतरिम व्यवस्था स्वयं भारत के हित में लाभदायक नहीं होगी?'

'भारत के माय विठ्ठल का नाता काफी पुगना ही चुका है। यदि इनके सप दायित्व के बाव भी आप हमारे ऊपर भरासा करके हम अधिकार नहीं सौंप सकते हैं तो इस पुराने नाते का खंडन हुए कोई विषय बात नहीं है। जब आप परिवर्तन-काल की बात कहते हैं तो मुझे आप पर शक होने लगता है। परिवर्तन-काल का प्रश्न उठे ही क्या? यदि आप वास्तव में हमें अधिकार सौंपना चाहते हैं, तो हम नैतिक और वास्तविक निषेध का अधिकार तुरंत भित्त जाना चाहिए। आपने हमारे मंत्रियों पर भरोसा किया था वजा नहीं किया। और यदि आप कहते लगे कि परिवर्तन में आपने विषय-अधिकारों का प्रयोग नहीं किया, तो हम कहेंगे कि इनका ध्यान-ध्यान भ्रम भी भित्तना चाहिए क्योंकि हमने उन्हें बड़ा करन का अवसर ही नहीं दिया। मैं चाहता हूँ कि ब्रिटिश सरकार कुछ टंग टंग का आचरण कर जिससे यह लगन लगे कि समूचा सामन विधान ही अमारी के मुमुक्षु कर लिया गया है। हमारे ऊपर मान्य वान भरासा करना होगा याग-योग करके नहीं, जसा कि इस समय ही कहा है। यदि मान्यारा टंग ता उचमुच की और स्वच्छ-पूर्वक है। नकनीकी मामला में आप लागे के निषेध हमारे विषय रहेंगे, हमारे स्वामी नहीं।

जय हिन्दू मुस्लिम-सनातन की बात कहते हैं। हम तनाव के मान्य रहते हुए भी आप लागे का यत्न निदान करन का अभी अवसर नहीं भित्तना कि मंत्रियों ने एक बग के हित पर किना अंग का के हितों का बलिदान किया। हम लागे ने आठ प्राणा में अपनी अक्षा-भ्रमण के निषेध का टंग। अनएव आप एसा वातावरण बना कीजिए कि हम दाना एक-दूसरे का अविनाशिक प्रिय लगन लगे। हम भ्रमण की भावना का शीघ्र-गैंग आरका धार न होंगे।

ब्रिटेन और भारत के पारस्परिक सम्बन्धों के बारे में बालत हुए गांधीजी ने यह भी स्पष्ट कर लिया कि घट केवल अपनी बात कह रहे हैं। उन्होंने कहा, 'मैं वस्तुस्थिति का कुछ उच्च स्वरूप में पेश करना चाहूंगा। मैं ब्रिटेन और भारत के बीच मुक्त और बराबर की साझेदारी चाहता हूँ। ब्रिटेन ने हमारा शापण किया है तिस पर भी मर मन में अग्रजा के प्रति जादर की भावना बनी हुई है। हम लाग कूप मण्डूवत स्वतंत्रता के अभिनापी नहीं हैं हम विश्व भर की मत्री का स्वाद लन का आतुर हैं। और यदि हम बराबरी के दर्जे की सापदारी का रिशना कापम करना है ता हम इस सापदारी का स्थायी रूप दना चाहेंगे। पर यह ब्रिटेन भारत मत्री निष्प्राण न हाकर सजीव हा। अग्रज जाति के भीतर यह दूढ़ भावना जाग्रत हानी और रहनी चाहिए कि उनके सकेत काल में हम उनका परि त्याग केदापि नहीं करेंगे साय ही हमार जदर भी इस आशका को आश्रय नहीं मिलना चाहिए कि जाप लाग हमारी मुनीवत में हमारी महायता के लिए आग बढन में पसोपश करेंगे। आपका हमार ऊपर २५ करोड स्त्री पुरुषा के अनुरूप भरोसा रखना होगा रेंगत हुए असहाय कीड मकोडा के अनुरूप नहीं। बसी जवस्था में प्रभाव का क्षत्र लदन न हाकर दिल्ला बन जायगा। इस हस्तांतरण के पश्चात हम लोग आज की भाति ब्रिटिश कामनवेलथ के पिछनमू न रहकर शक्ति-मम्पन साझीदार बन जायगे। मेरा यह सुप्न-स्वप्न बहुत पुराना है। हा मक्ता है कि यह मरे जीवन में अथवा क्तापि चरिताथ न हा पर यदि भारत न अहिंसा में अपनी जास्था बनाये रखी ता यह स्वप्न चरिताथ अवश्य हागा। पर यदि काफी अमें तक साझेदारी का प्रश्न टाला जाता रहा तो जा सधप हागा भगवान जान उसका किस रूप में अत हागा। यदि हम अहिंसा के माध्यम में स्वतंत्रता प्राप्त करन में सफल हुए तो हम अग्रज जाति तथा सम्पूर्ण मनुष्य जाति का यह तोहफा पश करेंगे।

७१

नयी दिल्ली

२ अप्रैल, १९३६

प्रिय सुभाष

तुम्हारा २१ तारीख का पत्र मिला। इसमें पहल का पत्र भी मिल गया था। तुमने बनी स्पष्टवादिता से काम लिया है और विचारा का जिस सुन्दर ढंग

स स्पष्टीकरण किया है, मुझ वह बहुत पसंद जाया ।

तुमने जिन विचारों का प्रतिपादन किया है वे अत्यंत लामा के और स्वयं भर विचारों से इतने भिन्न हैं कि उनमें किसी प्रकार का सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश करना व्यर्थ होगा । मैं मानता हूँ कि सत्रको अपना अपना विचार जनता के सामने प्रिना किसी प्रकार के जविश्वास क रखने की स्वतंत्रता हानी चाहिए । यदि ऐसा स्वच्छ मानस क साथ किया जाय तो मैं तो नहीं समझता कि किसी प्रकार की निष्कता का अवसर उपस्थित हागा, और जिसके परिणामस्वरूप गह युद्ध की नौबत आयगी ।

जो खराबी है वह यह नहीं है कि हम लोगों में मतभेद हैं बल्कि यह कि हम लोगों ने एक-दूसरे के प्रति आदर और भरोसे की भावना को तिलाजलि द रची है । समय के साथ इस त्रुटि का परिमाजन हो जायगा, समय बीतने पर भाव भरत और सूखत है । यदि हम लोग अहिंसा की भावना से अनुप्राणित रह, तो गह-युद्ध होने जयवा तिक्तता रहने का सवात्र ही नहीं उठता है ।

इन सारी बातों को ध्यान में रखने हुए मरी राय तो यही है कि तुम अपनी कविनेट का गठन खुद करो और अपनी काय योजना भी खुद ही निश्चित करो और फिर उसे अधिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की अगली बैठक के सामने रखो । यदि कमेटी ने तुम्हारी काय योजना अपना ली, तो सब कुछ सहज भाव स हो जायगा और तुम अपनी काय योजना को, अल्प सत्यक टोली की चिन्ता किय बगर, कार्याचित कर सकोगे । पर यदि कमेटी ने तुम्हारी काय योजना मानने से इकार कर दिया तो तुम्हें इस्तीफा द देना चाहिए । तब कमेटी अपना अध्यक्ष स्वयं चुनगी । वसी स्थिति में तुम जनता को अपनी कायविधि से अवगत करने के लिए स्वतंत्र रहोगे । मैं यह सलाह पडित पत के प्रस्ताव के बावजूद दे रहा हूँ ।

जब तुमने जा प्रश्न किय है उनक सम्ब ध मैं कुछ कहूंगा । जब पडित पत का प्रस्ताव रचा गया था, तब मैं विस्तर पर था । प्यारेलाल मर स्वास्थ्य के समा चार टेलिफोन पर त्रिपुरी पहुंचाता रहता था । एक दिन सबेरे वह यह सदेश लाया कि एक ऐसा प्रस्ताव पेश किया जानेवाला है जिसके द्वारा पुराने महारथियो में विश्वास व्यक्त किया जायगा । मरे समक्ष उस प्रस्ताव का मजमून मौजूद नहीं था । मैंने कहा कि यदि ऐसा हो तो अच्छा ही है, कयाकि मुझे सगाव में बताया गया था कि तुम्हारा निर्वाचन तुममें उतनी जास्था यकन नहीं करता जितना पुराने महारथियो में विशेषकर सरदार पटेल में अनास्था यक्त करता है । उसके बाद तो प्रस्ताव का मजमून केवल इलाहाबाद में ही मरी नजरा स गुजरा, जहा मैं मौलाना साहब से मिलने गया था ।

मेरी प्रतिष्ठा का तो सवाल ही नहीं उठता है। उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। जब मेरी नीयत पर शक किया जाना है, आर दश मेरी नीति और कार्य योजना का मायता देने से इकार कर देना है तो मेरी प्रतिष्ठा भी समाप्त हो जाती है। भारत का उत्थान अथवा पतन उसके लाखों करांडा स्त्री पुरुषों के सामूहिक आचरण पर निर्भर करता है। व्यक्तियों का चाहे व कितनी ही प्रतिष्ठा हो। इससे अधिक जोर काइ मूल्य नहीं है कि वृत्तता जनादन का सच्चा उच्चा प्रतिनिधित्व करे। फलतः इन मारी बातों पर विचार करते समय मुझे बेलबुल अलग रखा।

मैं तुम्हारे इस कथन से कतई महमत नहीं हूँ कि दश आज जितना अहिंसा प्रिय है उतना पहले कभी नहीं रहा। मैं इस वायुमंडल में जब सास लेता हूँ तब मुझे हिंसा की गंध आती है पर हिंसा ने छद्मवेश धारण कर लिया है। यह पारस्परिक अविश्वास हिंसा का एक धिनीना रूप है। हिन्दुओं और मुसलमानों का जो तनाव बढ़ता जा रहा है वह भी इसी दिशा की ओर सकेन करता है। मैं अथ अनेक दृष्टांत पेश कर सकता हूँ।

ऐसा मालूम पड़ता है कि इस समय काग्रस म भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति जा घुमी है उसके वार में मर और तुम्हारे बीच मतभेद हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि यह प्रवृत्ति जोर पकड़ रही है। मैं पिछले कई महीना से इसकी छान बीन करने पर जोर दे रहा हूँ। ऐसी परिस्थिति में मैं सामूहिक अहिंसात्मक जादोनों के लिए आवश्यक वातावरण का उभाव पाता हूँ। जब तक हमारी चुनौती के पीछे आवश्यक बल न रहे वसी चुनौती देना निरर्थक ही नहीं बल्कि हानिकर भी होगा।

पर जमा कि मैं तुम्हें बता चुका हूँ मैं बुड्ढा हो चला हूँ और सम्भव है, स्त्रन भी लगा होऊँ और पूँक पूँककर कदम उठाना ठीक समझने लगा होऊँ। तुम जवान हो तुम्हारे सम्मुख पूरी जवानी मौजूद है और जवानी का जाश तुम्हारी रंग रंग में समाया हुआ है जा कि एक जवान आदमी के लिए ही सम्भव है। मेरी कामना है कि मैं गतत साबित होऊँ और तुम ठीक साबित होओ। मेरी दड धारणा है कि अपने वतमान स्वरूप में काग्रस कुछ भी करने की स्थिति में नहीं है मन्वितय अथवा जादालन का संचालन करने की शान तो बहुत दूर है। अतएव यदि तुम्हारा विद्वान ठीक है तो मैं पुराना पड गया हूँ और सत्याग्रह के प्रमुख संनानी के रूप में मेरी उपयोगिता समाप्त हो गई समझ लेनी चाहिए।

तुमने रात्रकोट जैसे छोटे मामले का उल्लेख किया यह खूशी की बात है। यह मामला हम दोनों भिन्न रूप में देख रहे हैं। इस मामले में मैं जा

७२

नयी दिल्ली

७ अप्रैल १९३६

प्रिय लाड लिलियगो,

आपका पत्र अभी अभी मिला। उसमें दिये गये सम्पूर्ण और असंदिग्ध आश्वासन के लिए धन्यवाद। इस आश्वासन को अपने साथ लेकर जब मैं यहाँ मन्म समाधान के साथ खाना हो रहा हूँ कि ठाकुर साह्य की २२ दिसम्बर की विनयित का अक्षरशः पालन होगा।

यदि मैं अपने उत्तर में इस बात पर स्पष्ट प्रकट करने से रह जाऊँ कि मेरे इस मुझाव को आपका ६ माच वाला तार रद्द करता है अथवा उमका खुनासा करता है इसका निणय भारत के प्रधान यायाधीश पर छोड़ दिया जाए उस आपने अस्वीकार कर दिया है तो मैं इस पत्र को अप्रुण समझूँगा।

आपका

मा० क० गांधी

७३

नयी दिल्ली

७ अप्रैल १९३६

प्रिय श्री लेखकेट

इस पत्र के साथ गांधीजी का महामहिम का नाम लिखा पत्र पहुँच चुका है। वह आज रात को राजवाट के लिए खाना हो रहे हैं पर मैं तो आपकी बीच बीच में परेशान करने के लिए यहाँ मौजूद ही हूँ। आप इतने सज्जन हैं कि मैंने आपका दिन में या रात में किसी भी समय व्यस्त करने में कभी किसी प्रकार का सकाच नहीं किया। मैंने एक बार गांधीजी को बताया था कि आप मेरे साथ कितनी भद्रता से पेश जाते रहे हैं। वह बोले कि उ हान आपमें सहायता करने की जिस तत्परता तथा सौजन्य को देखा उससे उन्हें १९१०-१४ का दण्डित जमीन के समय का स्मरण हुआ आया। वहाँ तब जनरल स्मट्स के गेनेरली

किया जाए तो भारत के प्रधान-यायाधीश के नियम के अनुसार समिति का गठन कदापि सम्भव नहीं होगा। यदि आप सर्वोपरि गत्ता के प्रतिनिधि की हैमियत से सक्रिय रूप से हस्तक्षेप नहीं करेंगे तो दिल्ली में जो याजना तय की गई थी वह परी ही निष्प्रयाजन सिद्ध होगी। मैं आपका ध्यान इस बात की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ कि ठाकुर साहब ने सरदार पटेल के नाम लिखे अपने १२ जनवरी के पत्र में उनके बताये सात व्यक्तियों में से चार की नाम जदगी की मजूरी दे दी थी। ठाकुर साहब की जोर से पत्र किया गया कागजात में परिशिष्ट के तौर पर जो डर के डर कागज़ पत्र शामिल किया गया था उनमें इन सात व्यक्तियों का विस्तारपूर्ण विश्लेषण था जिनकी सरदार पटेल ने मिपारिश की थी। इन परिशिष्ट पर दरबार वीरावाला तथा परामशदायिनी समिति के अन्य सदस्यों के हस्ताक्षर थे। इन सात व्यक्तियों में से एक वक्ता दा के इस कारण अस्वीकार किया गया था कि वे राजकोट रियासत के निवासी नहीं हैं। अब ऐसी क्या बात है कि एक को छोड़ बाकी सारे के साथ व्यक्तियों की नामजदगी के अयोग्य समझ लिया गया? और सर ऊपर जो भार लाया गया है यदि मैं उसे वहन कर सका तो मैं तो इन प्रारम्भिक कामों का अंत होगा और मैं नहीं जाच ही जागी।

आपको कष्ट देने या सर्वोपरि गत्ता के हस्तक्षेप की मांग करने का विचार मुझे रुचिकर नहीं है। पर इस कठिनार्थ से पार पाने का और कोई उपाय भी तो नहीं है?

भायात एव गिरासिया समाज ने जो रुख अपना रखा है वह भी मुझ हृद दर्जे का गर मुनासिब लगता है। ज्या हा मैंने पत्रों में पता कि वे लोग मर तथा कथित वचन का निष्पक्ष निरीक्षण का विषय बनाना चाहते हैं मैं उनका प्रस्ताव पर तुरत राजी हो गया। पर मुझे लगा कि इस हृथकण्डे के माध्यम से मामला देर तक खींचन का भंडा इरादा है। इसलिए मैंने कहा कि इस बीच समिति के गठन का काम चलता रहे और यदि उक्त निष्पक्ष निरीक्षण के परिणामस्वरूप भायात लोशा की बात सही उतरे तो समिति में उनका प्रतिनिधि ल लिया जायगा और हमारे द्वारा नियुक्त सदस्य का हटा दिया जायगा। भायात समाज ने मरी बात पर ध्यान नहीं दिया। उनका कहना है कि जब तक विचारक की नियुक्ति न हो जाए और उसका नियम उपलब्ध न हो तब तक के लिए समिति के गठन का काम स्थगित रखा जाय। यदि मरे प्रस्ताव को मान लिया जाता तो नियम प्राप्त हान तक समिति अपना कार्य आरम्भ कदापि न कर पाती और समिति के गठन के पत्रस्वरूप नियम अधिक शीघ्रता के साथ उपलब्ध हो जाता।

मैंने यह मम्मति व्यक्त की है कि इस मामले को लेकर सर मॉरिस ग्वाथर का क्या दना अनावश्यक है, पर यदि भारत-सरकार को उनकी नियुक्ति के लिए राशी किया जा सके और सर मॉरिस यह निमंत्रण स्वीकार करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। बदले में, मैंने यह सुझाव दिया कि बम्बई हाई-कोर्ट के किसी जज का यह मामला मौफा जाए। मेरा विश्वास है कि यदि आप चाहें तो इसका वन्दोवस्त आमानो से कर सकते हैं। मैं समझता हूँ जज के लिए कल या परसों तक हवाई जहाज से आ पट्टचना विसकुल सम्भव है। मेरे पास जज से कुछ अधिक कहने के लिए नहीं है, और न भायात लोणा का ही कुछ अधिक कहना है। इसलिए जज को अपना निणय देने में अधिक समय की जरूरत नहीं होगी। मुझे जिस बात की जाशका है और जिस चीज का सन्देह है वह यह है कि यथाचित कारवाई करने की कहीं कोई इच्छा नहीं है। मैं आपसे अपने मन की बात कह रहा हूँ कि इसका कुछ खयान मत कीजिए। मैं आपको राजा के स्थानीय प्रतिनिधि के रूप में देखता हूँ जिसे मुपुद समिति के गठन तथा उसके सुचारु रूप से संचालन का काम मौफा गया है, इसलिए यदि मैं अपने मन की बात आपसे न कहूँ तो यह आपके साथ अजाय होगा।

मुझे २४ तारीख को दोपहर के १-१० बजे राजकोट से कलकत्ता के लिए रवाना होना है। वहाँ से मुझे बृदावन जाना है। यहाँ मैं जल्दी-से-जल्दी वापस लौटने की काशिश करूँगा, पर अगले महीने की ७ तारीख से पहले लौटना सम्भव नहीं है। इस बीच श्री डेवरभाई मेरा प्रतिनिधित्व करेंगे। पर मुझे आशा है कि दोन ५ दिना के भीतर ही बहुत कुछ कार्य सम्पन्न हो जायेगा।

क्या मैं आपको दाद दिला दूँ कि मेरा उपवास बबल स्थगित किया गया था और यदि सर सार प्रयत्ना के बावजूद इस मामले में प्रगति नहीं हुई तो मुझे पुनः उपवास करना पड़ेगा। यदि चँसा हुआ तो उसका परिणाम गम्भीर हो सकता है और मैं उस स्थिति को बचाना चाहता हूँ। मेरे शरीर में उपवास करने की सामर्थ्य नहीं है पर जहाँ कस्तव्य का आवाहन है, एसी भौतिक बाधाएँ मौण हो जाती हैं। यह मामला इतना गम्भीर है कि मुझे आशा है कि आप महा महिम को कम से-कम इस पत्र के सार से अवश्य अवगत करा देंगे। मैं उनके आराम में विघ्न नहीं डालना चाहता क्योंकि उन्हें विश्राम की बेहद जरूरत है। यदि आपको दमे कि मेरी शिक्षायत में कुछ तथ्य है, और आप उम दूर करती क्षमता और इच्छा रखते हैं तो महामहिम को परेशान करने की जरूरत नहीं है।

मैं यहाँ मौजूद हूँ ही और यदि आप समझें कि मिलकर बातचीत करना

आवश्यक है तो आप मेरे बुगार की बिजबुन परवाह मत पीजिए। मैं सुरत आ जाऊगा। हा ११॥ वजे डा० जम्बेडार ग अयय मिनना है।

मिनहान में ठापुर माह्य के पत्र का उतर नहीं द रहा हू।

भवनीय

मो० क० गाधी

७५

रघी लिनी

२० अप्रन १९३६

प्रिय घनश्यामजी

इस पत्र के साथ जा मामरी भेज रहा हू वह गुन निपाके म आर्यी। और मैं ठहरा आपका पुराना मन्टरी इलनिण मैंन उमरा अवलोमन किया और उसे रोचक पाया।

राजकाट म जा समाचार आ रह है उनस बडी घबराहट पैग हो रही है। गिम्नन का बापू न जा पत्र निखा है उस भी एक तरह का अल्टीमटम ही समझना चाहिए। बापू न गिम्नन का ध्यान ठापुर माह्य क देर लगानेवान ह्यकपडा की ओर जाहृष्ट किया है और कहा है कि यह और कुछ नहा समिति न बनने देने की टालमटाल है। उन्होंने उसम कहा है कि सर्वोपरि माता के प्रतिनिधि की हैसियत स आपनो इम मामन म हस्तक्षेप करना चाहिए। बापू ने यह मान रखा है कि उह हस्तक्षेप करने का अधिकार है केवल इच्छा करने की देर है। यदि उन्होंने हस्तक्षेप करने से इकार किया तो बापू पुन उपवास करेगे क्याकि उन्होन उपवास का परित्याग नहीं किया था। उसे केवन स्वगित किया था। उन्होंने यह भी कहा है कि यदि वह स्वय हस्तक्षेप करने म असमथ हो तो उनके पत्र का सार महामहिम तक पट्टचा दे अयथा मैं उनके आराम म विघ्न डालना पसन्द नहीं करूगा। यदि बापू की तबीयत ठीक रही तो वह आज तीसर पहर तीन बज गियन स मिलनेवाले हैं। तब वह उमी के मुह से सुनना चाहेंगे कि वह क्या कुछ करने का इरादा रखता है। इम भेंट पर बहुत-कुछ निभर है और यदि मुझे ऐसा लगा कि टेलिफोन पर कहने लायक कोई बात है तो मैं आपनो फोन करूंगा।

आज सुशीला राजवाट से आई हैं और पजाब स्थित गुजरात जा रही हैं, जहाँ वह अपने भाई की शादी में शरीक होगी। उन्होंने बताया कि एक दिन बापू और बल्लभभाई में दिलचस्प झड़प हो गई। बापू ने तीन पत्र लिखकर रख छोड़े थे, जिनमें उन्होंने मुसलमानों और भायाता को सब-कुछ समझा कर दिया था। बल्लभभाई विगड़ पड़े हुए। बापू ने कहा 'मैं भली भाँति जानता हूँ कि मेरी मूखता का फल तुम्हें भोगना पड़ता है।' बल्लभभाई ने उत्तर दिया अभी तक तो आपने मूखता का कोई काम नहीं किया है पर ये पत्र अवश्य मूखतापूर्ण हैं। बापू पहले तो हँस पड़े फिर गम्भीरतापूर्वक बोले "तो अब मुझे लीडरी छोड़कर एकांतव्रत बनना चाहिए न?" मैं यह तो नहीं जानता कि इस वार्तालाप का अन्त किस रूप में हुआ पर इतना अवश्य जानता हूँ कि ये पत्र फाड़ डाले गए। सुशीला ने यह भी बताया कि बापू को पता लग गया है कि उनकी अपेक्षा बल्लभभाई का दुष् स्वभाववाने आत्मियों की मनोवृत्ति का अधिक जोर नैर्गमिक चान है। बापू एक बार स्वतः ही यह उठे 'यह कदम आत्महत्या जसा घातक साबित होगा। (उनका संकेत मुसलमानों द्वारा वचन पालन न किये जाने की स्थिति में उपवास आरम्भ करने की ओर था)। अतः हमारा उस दिन प्रातः काल का लम्बा तार औचित्यपूर्ण सिद्ध हुआ। पर इस सारे मामले ने मुझे गम्भीर चिन्ता में डाल दिया है। उस दिन सुबह हम दोनों के बीच अहिंसा की सम्भावनाओं और विशेषताओं को लेकर देर तक जो बातचीत होती रही थी सो तो आपको पता होगा ही। जब सुशीला ने मुझे जो कुछ बताया है उसमें मैं इस दुविधा में पड़ गया हूँ कि क्या अहिंसा के माध्यम से पार्थिव हित साधन किया जा सकता है। यह प्रश्न आथर मूर ने उस प्रसिद्ध वाद विवाद के दौरान उठाया था। अब जब हम दोनों बापू में मिलेंगे और उनका थोड़ा-बहुत समय ले पायेंगे तो मामले के इस पहलू पर उनके साथ विस्तारपूर्वक विचार विमर्श करेंगे। अभी तो मेरे लिए यह बताना मुश्किल है कि हमारे भाग्य में क्या वधा है। हम सब एक प्रकार के वणनातीत रहस्यमय अन्त की ओर बलात् खदेड़े जा रहे प्रतीत होते हैं।

अब रही गायो की बात मैं अभी तक उन्हें खरीदने नहीं गया हूँ। पता नहीं द्वारा की ठीक तरह से देखभाल करने के लिए ग्वालों का ब-दोवस्त करने से पहले गायें खरीदना ठीक रहेगा या नहीं। मेरी समझ में तो आपके अनेक प्रसादों में से एक का भार उधे ठीक दशा में रखने के लिए आवश्यक साधना का सग्रह किए बिना लेने के समान ही यह होगा। यदि गायो की उचित ढंग से देखभाल नहीं की गई, तो उनकी दशा जल्दी ही विगड़ जायेगी। इसलिए मेरे विचार में अकतूबर तक ठहरना ठीक रहेगा। तब हम दोनों फिर मिलेंगे ही। इस बीच मैं सेयर से फिर

३०८ बापू की प्रेम प्रमादी

मिलूंगा और पूछूंगा कि क्या वह हमारे एक या एक से अधिक ग्वालो के दा तीन महीने प्रशिक्षण का जिम्मा लेने को तयार हो जाएगा। क्या ठीक है न? वृपया बताइए। बिडला हाउम आपकी अनुपस्थिति में सुनसान लगता है। बापू के जान के बाद भी सुनसान जसा लगने लगा था। पर यह सब कुछ होत हुए भी जब मैं यहां से २४ या २५ को बिदा होऊंगा तो हृदय में टीस अवश्य उठेगी कि जिन चीजां में आपका इतना माह है उनकी जानकारी हासिल करने के बाद उन्हें छोड़कर जा रहा हू।

सप्रेम
महादेव

७६

नयी दिल्ली
११ ४ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

भट्ट आ गए हैं। वह तो सयर का अच्छी तरह जानते हैं। उनके हाथ के नीचे काम किया है। जो उचित होगा वही करेंगे। आज वे उनसे मिलन गए हैं।

आपका
महादेव

७७

बिडला हाउस
बनारस

२२ अप्रैल १९३६

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारा २० तारीख का पत्र आज मिला। इस समय क्या स्थिति है यह जानने के लिए आज रात या कल सुबह तुम्हें फिर फोन करूंगा। कल मरी यह

प्रबल इच्छा हुई कि लेखकेट को पत्र लिखकर उस बताऊँ कि यह मेरी व्यक्तिगत राय है कि सर्वोपरि सत्ता को २६ दिसम्बरवाली विजयिणी क अनुत्प आचरण करवाने के लिए हस्तक्षेप अवश्य करना चाहिए। शासन विधान की रचना का काय उन लोगो को अपन हाथ में ले लेना चाहिए कि गांधीजी की महायता करन स इकार करने व लोग बहुत बड़ी गलतफहमी और आलोचना का निमंत्रण दे रह हैं। मैं यह भी पूछना चाहता था कि राजकोट के शासन विधान की रचना का प्रश्न अपन हाथ में लेने में उन लोगो को क्या आपत्ति है। पर फिर मैंने सोचा कि कुछ और अधिक सूचना संग्रह करना ठीक होगा। साथ ही, मैंने यह भी सोचा कि तुम मुझसे बात करोगे ही, और शायद उन लोगो में से किसी को लिखा भी। तब भी एक ही विषय को लेकर दो दो पत्र लिखने में कोई बुराई नहीं है तथापि ऐत नाजुक मामलो में जल्दबाजी से काम लेने की अपेक्षा देर करना अधिक अच्छा है। अतएव मैं शायद कल तक फमना करूँगा कि क्या करना ठीक रहेगा।

तुम्हें अपने दिल की बात बताऊँ, तो मैं कहना चाहूँगा कि तुम्हारे इस कथन से मैं सहमत ही हूँ कि सासारिक उपलब्धियों में अहिंसा का माध्यम एक सदिग्ध माध्यम है, साथ ही मुझे इस बारे में भी सन्देह है कि राजकोट में आरम्भ से जत तक जो कुछ हुआ उस अहिंसा से अभिहित किया जा सकता है। वास्तव में जसा कि मैंने तुमसे उस दिन कहा था यह उपवास का मामला एक प्रकार का दास नहीं, तो क्या है? इन अल्टीमेटमा के द्वारा हम चांगे अपने प्रतिपक्षियों का हृदय परिवर्तन किस प्रकार कर सकते हैं यह मेरी समझ में नहीं बठ रहा है। सरदार पटेल की स्थिति को समझना कठिन नहीं है क्योंकि उन्होंने कभी भी किसी ऊँचे दार्शनिक तत्त्व का प्रतिपादन करने का दावा नहीं किया और राजकोट में उन्होंने जो कुछ किया वह एक प्रकार का निःशस्त्र विद्रोह ही था पर वह सोलह आने अहिंसापूर्ण विद्रोह रहा ऐसी बात नहीं है। इसलिए यदि वीरावाला और ठाकुर साहब हमारा प्रतिरोध करने में हमारी प्रणाली अपनायें तो हम शिवायत क्या करनी चाहिए? हमने शासन को कहा बखशा, जा जब हम उससे सहायता की आशा करें? हा, इस मामले में वाइसराय का उत्तरदायित्व अवश्य बना रहता है। पर वाइसराय की अपनी कठिनाइयाँ हागी जिनका हम ज्ञान नहीं है। हम लोग बेसत्री से काम ले रहे हैं और यह बेसत्री किसी के लिए भी सहायक नहीं होगी। यदि यह सारा मामला बापू की दार्शनिक कसौटी पर कसा जाय तो कहा जा सकता है कि हम दूध के घोड़े कदापि नहीं हैं। मेरी यह प्रबल धारणा है कि अब यह उपवास का सिलसिला हमेशा के लिए खत्म होना चाहिए। जब बापू यहाँ कलकत्ता आयेंगे तो हम सब मिलकर उनसे यह मनवा लेंगे ऐसा मुझे आशा

है। यदि बातचीत शांति के वातावरण में होती है तो मरा सुझाव है कि उस अवसर पर बापू, तुम और मैं इन तीन व सिवा जीर काई मौजूद न रहे। सरदार की मौजूदगी में धावा बोलना मरे बूते व वाट्टर ह।

तुमने बापू जीर सरदार की आपसी बातचीत के बारे में जो कुछ लिखा है उसमें मुझे बड़ा मजा आया। सरदार कम बोलते हैं और यत्नकदा असम्बद्ध बात भी वह उठते हैं पर उनकी प्रेरणा शक्ति अदभुत है। कसर इतनी ही रही कि वह भी वीरावाला से वाजी नहीं मार सके।

अब गाया के बारे में। भट्ट तुमसे मिल ही लिये हंगे। जीर में समझता हू कि क्या कुछ करना ठीक रहगा इस बारे में तुमने निणय कर लिया होगा।

तुम २८ या २९ को जा रहे हो सा समझा। मैं यहा से २५ को चल पडूंगा। यदि तुम मरे वहा पहुंचने तक रुके रहोगे तो तुम्हारे वहा से खाना हान व पहल तुमसे एक बार फिर बातचीत हो जायगी।

सप्रेम

धनश्यामदास

श्री महादवभाई देसाई
नयी दिल्ली

७८

तार

२३ अप्रैल १९३६

महात्मा गांधीजी
राजकोट

विधान न आपक निणय की बात पत्रा में दी है। उसमें परिवर्तन करने से उह दुख होगा।

कलकत्ता आन जयवा वहा से जाने के दौरान मालवीयजी से भेंट करने का स्मरण दिलाता हू। उनका स्वास्थ्य गिर रहा है सम्भव है यह अन्तिम भेट हो।

—धनश्यामदास

७६

तार

गजकोट

२४ अप्रैल १९३६

धनश्यामदास बिडला

मारफत लकी'

बनारस

डॉ० विद्यान जीर मुभाप मरे सोदपुर मठहरन पर राजी हो गए थे। मालवीयजी न मिलने का अतिशय इच्छुक हूँ। कलकत्ता जात समय यात्रा भग करना असम्भव है। लौटते समय मिलूंगा।

—बापू

८०

तार

दम्बई

२५ अप्रैल १९३६

धनश्यामदास बिडला,

लकी,

कलकत्ता

सरदार के साथ पूरी बातचीत करके निणय हुआ कि वह कलकत्ता की बठक में भाग न लें।

—बापू

८१

बिहार जात हुए

२ मई, १९३६

प्रिय धनश्यामदासजी

कल रात मैंने बापू को राजकाट क ब दा तार दिखाए । उन्होंने उनका ध्यान पूर्वक अध्ययन किया फिर बोल मुझे ता वीरावाला का तार साफ नीयत म दिया गया लगता है । इसम सचार्द की झलक मिलती है । उसन जा वचन दिया है उसका वह पालन करता दीखता है । आज बापू राजकोट पर वक्तव्य देनवाल थे पर उन्होंने कहा, अभी कोई वक्तव्य नहीं । उसने जितना कुछ करन का वचन दिया है उसे उतना करने दो । कुछ दिन और बाट देखते हैं । सम्भव है आज बापू वीरावाला का राजी करनेवाता कोई तार भेजें । जो भी हो बापू राजकोट के समाचार म निश्चिन्त दिखाई पड रहे हैं यह अच्छी बात है ।

यह गाडी इतनी खराब है कि आप पर बिगडी लिखावट का पत्न का और अधिक बोझ लादन का साहस मुझ म नहीं है ।

कलकत्ता म जसी कुछ गुजरी उससे भी बापू बडे प्रस न हैं—विशेषकर जवाहर की जवामर्दी से । वह स्टेशन जाए और वहा भी उन्होंने बापू को अपन पूरे सहयोग का आश्वासन दिया ।

मप्रेम

महादेव

८२

वृंदावन

वेतिया हाकर (बिहार)

३ मई १९३६

प्रिय धनश्यामदासजी

इसके साथ जा सामग्री भजी जा रही है वह वीरावाला स प्राण तथा उस बापू का उत्तर है जा आपको रोचक लगेगा । आपको याद होगा मैंने बताया था

कि भुझे वीरावाला न जो फान किया था, उसमें किसी प्रकार प्रसारांतर से उसने यह सुझाव दिया था कि बापू का राजकोट वापस नहीं लौटना चाहिए और किस प्रकार बापू ने अपने तार में ये शब्द जोड़े थे, सम्भवतः राजकोट १० का पहुंच रहा है। इस तार में उसीका हवाला है। आपका यह भी याद होगा कि किस प्रकार वाइमराय बापू के राजकोट दुबारा जान के विरुद्ध थे। वल्लभभाई ने बापू के साथ राजकोट का लेकर लम्बी बहस के दौरान यह कहा था कि उन्होंने अपने वक्तव्य से सबका स्तब्ध कर दिया है। जब बापू ने देखा कि वल्लभभाई उनके दृष्टिकोण को नहीं समझ पा रहे हैं तो उन्होंने केवल इतना ही कहा, वल्लभभाई मैं एक नूतन प्रणाली का विनास कर रहा हूँ। तुम अभी इसकी खूबियां का नहीं समझ रहे हो, पर एक न एक दिन अवश्य समझ लगे और राजकोट की प्रजा का मर वक्तव्य के खिलाफ कोई शिकायत नहीं हानी चाहिए, क्योंकि मैं उसमें जो कुछ कहा है वही मैं उन सब लोगों को बताता जा रहा हूँ। हम लोगों ने वीरावाला के साथ जो इतनी ज्यादाती की, बेजा किया। यही कारण है कि हम लोग उससे अमली लक्ष्य सफल कराने में असमर्थ रहे। अब मरी सारी काशिशें इसी उद्देश्य सिद्धि में लगेंगी। पर कोई बात नहीं। अब मैं आप लोगों से केवल यही चाहता हूँ कि आप राजकोट को अपने दिमाग से निकाल दें और उम्मा सारा बोध मेरे कंधे पर लाद दें। और जब मैं वीरावाला का दिए गए बापू का उत्तर वल्लभभाई का दिखाने की बात कही, तो वा बाल उठी महादेव वल्लभभाई को बोधो-यस्त करत हा ? इस सार मामल से उहे परेशान करने की क्या जरूरत है ?

यहां का मौसम काफी गर्म है पर वनकत्ता की गर्मी तो वरणाशत के बाहर थी। हा एक बात जरूर है, वहां की रातें यहां की अपेक्षा अधिक शीतल थी। बगाल की खाड़ी की हवा का ज्ञान यहां तक कहा पहुंच पाता है ?

सप्रेम
महादेव

तार

दरवार श्री वीगवाला

राजकोट

जापका तार मिला। मेरे तारा को एक साथ पलिए। नूतन प्रणाली का विकास कर रहा हू। हस्तक्षेप न करने की मरी इच्छा का यह अर्थ नहीं है कि जो लागू मरा पथ प्रदर्शन चाहते हैं उससे मैं उन्हें वंचित रखूंगा। पर मैं चाहता हू कि ढेवरभाई तथा परिपद के अर्थ लोग स्वयं अपन ही माधनो पर निर्भर रहकर मुझसे अथवा वल्लभभाई से स्वतंत्र रूप में आचरण करें। वे ऐसा करेंगे तो इसमें हमारी और जापकी, दोनों की विजय होगी। पर वे ऐसा तभी कर पायेंगे, जब आप परिपद के लोगो का उपेक्षित रखेंगे और उन्हें निकम्मा मानते रहेंगे। ढेवरभाई विनष्टि श्री रू म राज्य के नागरिक भले ही न हों पर वह बाहरी आदमी नहीं हैं। इसके अलावा वह मरा प्रतिनिधित्व करते हैं और वही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिनसे मैं भला भाति परिचित हू और जिन पर उद्देश्य सिद्धि के लिए भरोसा कर सकता हू। उनमें एकमात्र त्रुटि यही है कि वह सरदार पर और मुझ पर आवश्यकता से अधिक निर्भर करते हैं। सरदार ने उनसे कह दिया है कि यदि उन्हें पथ प्रदर्शन की निता से आवश्यकता हो तो केवल मुझसे ही अनुरोध करें। मैं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की चेष्टा कर रहा हू। मैं राजकोट आना नहीं चाहता पर मैं वहां आने से तभी रुक सकता हू जब जाप याव और उदारशीलता से काम ल समझौता करने के अपने वचन को पूरा करें और सम्प्राप्त व्यक्तियों की छीछालेदर करने के बजाय उनका प्रति आदर का व्यवहार करें।

—गांधी

वक्तव्य

४ मई, १९३६

प्रिय महादेवभाई

तालचर और राजकाट के बारे में जो समाचार छप रहे हैं वे सतोषप्रद नहीं हैं पर मुझे आशा है कि बापू त्रिम घम से काम ल रहे हैं उसका परिणाम अच्छा ही होगा ।

आशा है तुमने बापू से कहा होगा कि उन्होंने अपने जयपुर-सम्बन्धी वक्तव्य में उपवासा की बात लाकर भ्रम की । आज के पत्रों में निकला है कि २५ सत्याग्रही रिहा कर दिए गए हैं । ऐसा लगता है कि उन लोगों ने रिहार्ड का सिलमिला शुरू कर दिया है जोर कुछ ही दिनों में सब रिहा कर दिए जायेंगे ।

आशा है बापू कांग्रेस के सम्बन्ध में वक्तव्य देंगे । यहां बंगालियां में यह गलतफहमी फैली हुई है कि बंगाल की उपक्षा की जा रही है । विधान एक वक्तव्य बनवाले थे । यह विचार मुझे नहीं रुचा, इसलिए उन्होंने अपना वक्तव्य सबूत देकर दिया है । वह उसका परिमाजन करेंगे । पर जिस चीज की जरूरत है वह है स्वयं बापू का वक्तव्य । यदि बापू ४ घण्टे अधिक तर्क हात तो मैं उनसे बंगाल का दौरा करने का कहता ।

कुछ रात्रि घटनाएं घटने जा रही हैं । ऐसा लगता है कि बंगाल की लीडरी के लिए एम० एन० राय सुभाष से लाहा लग । कल सुभाष ने एक सभा की थी । उनका प्राग्राम कम से कम सिद्धांत की दृष्टि से कांग्रेस के प्रोग्राम से भिन्न नहीं लगता । सुभाष का दल बापू के प्रति आदर का भाव तो बनाए रखेगा लेकिन भरोसा नहीं करेगा ; इसके विपरीत, एम० एन० राय में तो बापू के प्रति आदर का भाव ही नहीं है उन पर भरोसा करने की तो बात अलग ही है ।

सप्रेम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देमाई

बन्दावन (धम्पारन)

५ मई, १९३६

प्रिय महादेवभाई

क्या, विधान का बकनव्य कसा लगा ? बक्तव्य एक से अधिक हाथों से होकर जरूर गुजरा है पर उमका आशय सुस्पष्ट है। वास्तव में विधान को वह बहुत रचा और उन्हें कई एक ने बघाई भी दी। हम उसे एक दूसरे रूप में पेश करना चाहते थे पर उसमें स्वयं विधान के दृष्टिकोण का समावेश करना भी तो जरूरी था। भापा देवदास और पारसनाथजी की है।

बगाल की दशा दयनीय है। यहाँ दो दल हैं यह तो तुमने सुना ही होगा। ये दल हैं 'जुगांतर दल' और 'अनुशीलन दल'। पता चला है कि 'अनुशीलन दल' अपने-आपका अलग बल रखेगा। दूसरा दल दो खण्ड में बँटा हुआ है एक 'एम० एन०' का समर्थन करता है दूसरा विधान का। और 'एम० एन०' राय और सुभाष में तो प्रतिद्वंद्विता है ही।

यदि कोई राजनेता मात्र होता, तो अपने विपक्षियों की इस जापसी फूट से फूला न समाता। पर बापू का दल राजनेताओं का गिरोह तो है नहीं इसलिए बगाल में जो-कुछ हो रहा है उममें उनका दुःखित होना स्वाभाविक ही है। बगाल को महायुद्ध की आवश्यकता है पर जसी परिस्थिति है उसे देखते हुए उसकी कुछ अधिक सहायता कर पाना किसी के लिए भी सम्भव प्रतीत नहीं होता।

माखन सेन का दल 'एम० एन०' राय की सहायता करेगा। ऐसी अपवाह है कि इस दल ने जान बूझकर सुभाष का समर्थन इसलिए किया था कि उन्हें गत रास्ता पकड़नेवाला मित्र किया जा सके जिससे 'एम० एन०' राय फायदा उठाये। इन अपवाहों पर अधिक विश्वास नहीं करना चाहिए पर ता भी वस्तुस्थिति यह है कि माखन सेन के दल ने देशबन्धु दास के विरोध में श्यामसुन्दर चक्रवर्ती का समर्थन किया फिर सुभाष के खिलाफ देशप्रिय सेनगुप्त का समर्थन किया उसके बाद विधान के विरोध में सुभाष का समर्थन किया, और अब यही दल शायद सुभाष के विरोध में 'एम० एन०' राय का समर्थन करेगा। काश, बापू बगाल का दौरा कर पाते।

वीरावाला और बापू के बीच तारा का जो आदान प्रदान हुआ उनकी बकल मिल गई। मुझे बापू के तारा का एक वाक्य ठीक नहीं जचा। उन्होंने कहा था नूतन प्रणाली का विकास कर रहा हूँ। तुम्हें गीता के १८वें अध्याय का ६७वा

३१८ बापू की प्रेम प्रसादी

श्लोक याद है न ?'

इद ते नातपस्वाय नाभक्ताय वदाचन ।

न चाशुश्रूपवे वाच्य न च मा योऽभ्यसूयति ॥^१

नूतन प्रणाली की चर्चा वीरावाला म करना भस व आगे बीन बजाने की कहावत चरिताथ करने के समान है। पर शायद बापू को उसकी प्रासंगिकता अधिक जची हागी।

मैं तुम्हें जो पत्र लिखता रहता हूँ उनके जो अंश तुम्हें आवश्यक लगें, उन्हें बापू को अवश्य बता दिया करा।

सप्रेम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

बंदावन (चम्पारन)

१ जो नपस्वी नहा है जा भक्त नहा है जो सुनना नहा चाहना और जो भेष द्वय करता है उसमें यह जान लू कभा मन बहना।

८७

तार

६ मई १९३६

महादेवभाई

मारफत महात्मा गांधीजी

बंदावन (चम्पारन)

कानिबल की रिपाट हे सरदार को पानियामट्री बोड म नही लिया गया उसकी वीज जवाहरलाल को लिया गया। बम्बई के व्यापारी मित्र स्तब्ध है उन्होंने मुझमे पछन को कहा है। मैंने उत्तर दिया मैं समाचार को सत्य नही

मानता। खबर का खण्डन वाछनीय। तार भेजो। मालवीयजी का तार है सारे दन के ठहरने का सेवा-उपवन म प्रवध है। उन्हें पहुंचन का तार भेजा।

—धनश्यामदाम

बिडला ब्रॉस,
कलकत्ता

८८

कलकत्ता

६ मई १९३६

प्रिय महादेवभाई

बापू ने दाइसराय को जयपुर राजकाट और तालचर के बारे म पत्र लिखा होगा। उसकी नकल भेजने की कृपा करो।

वल्लभभाई का तार मिला है कि बापू बनारस म मरी प्रतीक्षा करेंगे। ऐसा लगता है कि उन्होंने मरे माथ मजाक किया है। समझ म नही आया कि जब बापू बनारस मे कुछ ही घण्टे ठहरेंगे तो वहा वह मेरी प्रतीक्षा कैसे कर सकते हैं? यदि मेरी सचमुच आवश्यकता हो तो तार नना। मुझे तो ऐसा लगता है कि जब मैंने उन्हें तार दिया कि मैं कलकत्ते मे उनकी प्रतीक्षा करूंगा तो उन्होंने बदले म यह तार भेजा कि बापू बनारस मे मेरी प्रतीक्षा करेंगे।

मप्रेम

धनश्यामदाम

श्री महादेवभाई देसाई
बंदावन (चम्पारन)

बन्दायन

८ मई १९३६

प्रिय घनश्यामदासाजी

आपके मारे पत्र भिन्न गये। घयवाद।

बल्लभभार्त का तार मजाक नहीं था। वास्तव में उम्र तार का मजमूरा मैंने बनाया था। बापू ने उनसे धनारस साथ चलने की कहा था और बताया था कि आप बहा होंगे। हा उन्होंने मुझमें यह अवश्य कहा था कि आप उन्हें बनारस में डाक्टरी परीक्षा के लिए चाहते हैं। बम्बई जाने पर वह बहा शायद अपनी कुछ चिकित्सा कराएँ।

वीरावात्रा ने बापू को एक जोर तार भेजकर राजकोट न आने का कहा है। उन्होंने उत्तर में कहा है कि वह अपने सहकर्मियों का दिलदल में फसा नहीं छोड़ सकते। जब बापू का अपनी नूतन प्रणाली की जाजमाइश सहकर्मियों पर करनी चाहिए। मैं इस बारे में आपसे सट्टमत हूँ कि बापू की भाषा कभी कभी भस के आगे बोन बजाने के समान प्रतीत होता है। पर कभी-कभी बापू अपने प्रति पक्षियों का चर्चित करने की ऊँचाई तक भी ता पहुँच जाते हैं।

बगल की दशा शांतिनीय है। यदि किसी बाहरी आत्मी का यह सब दिखाई न पड़े तो इसमें आश्चर्य की बोन-सी बात है ?

हम राजकोट १५ को पहुँच रहे हैं। अब आपको वही स लिखूँगा।

सप्रेम

महादेव

६०

कलकत्ता

१० मई १९३६

प्रिय महादेव

मैं इसी उधेड़ बुन म लगा हुआ था कि वही वापू बनारस म मेरी उपस्थिति किसी ग्रास कारण स ता नहीं चाहते क्याकि यदि बसो कोई बात होती तो मैं वहा पहुच जाता । मुझे लगा कि उहोन मोच निया होगा कि मैं वहा मौजूद रहूंगा इसनिण मैं वहा नहीं गया ।

सप्रेम,

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देमार्न्,

राजकोट

६१

आनन्द भवन

राजकोट

१५ मई १९३६

प्रिय धनश्यामदासजी

इम पत्र के साथ बाइमराय तथा आथर मूर को भेजे पत्रा की नकल भेज रहा हू ।

दो महीन पहले वापू की बसन्ती न हमम स कुछ जागा को नुद्ध कर दिया था, अब उही जागा को उनक सन्न स शुद्ध होना हागा । वापू महा अनंत काल तक वाट जोहन का तयार निखाइ पडते हैं । मुझे ता ऐमा लगता है कि वही आथम खोलकर आसो न जमा दें । वापू तो राजभक्ता के सुधार प्रस्ताव तक का मानन को तयार हो गए । इन सुधार प्रस्तावा की प्रेरणा बीरावाना स मिली निखाई दती है और उनका वास्तविक महत्व नहीं क बराबर है । कडेल ने तो इन सुधारो म भी अधिक् प्रदान करन की तत्परता दिखाई थी । पर वापू इन सीमित सुधारा का भी ग्रहण कर लेने—शत यह है कि व स्वच्छता स और हसी खुशी के साथ

प्रदान किय जाए । व सुधार बलात छीन जानवाले शत प्रतिशत सुधारो का २५ प्रतिशत मात्र है । बल वीरावाला से मरी लम्बी चौडी बातचीत हुई । वह कभी तो समझौते के लिए बेतरह आतुर प्रतीत होता है, पर दूसरे ही क्षण विपरीत ढंग का आचरण करने लग जाता है । फलत यह कहना कठिन है कि वह बापू के इस नये स्वयं को किस रूप में ग्रहण करेगा । यदि वह इन हृद दर्जों के अपर्याप्त सुधारो को स्वीकार करने की घोषणा कर दे तो सारी विपत्ति का अन्त हो जाए । पर यदि उसने इन सुधारो का भी मानने से इंकार कर लिया तो पता नहीं हम कितने दिन यहाँ जटखना पड़ेगा । यदि यह समझौता भंग हुआ (वीरावाला का उत्तर आज रात को मिलनेवाला है) तो हम लाचार होकर स्वायत्त के निणय का आश्रय लेना पड़ेगा जिसका अर्थ यह होगा कि मामला बहुत दिनों तक अटका रहेगा और यह विनिम्ब हमारे लिए बड़ा ही यथा पट्टुचानेवाला होगा । भायात मुमलमाना के मामले को सर मारिस स्वायत्त के हवाले कर दिया गया है । इस हवाले की धाराआ को लिखित रूप देने में पूरा दिन खप गया । सर माग्नि इग्ल के लिए खाना होने से पहले अपना निणय दे जायेंगे पर उनके बाद क्या होगा ? अतएव समझौते की सम्भावना की बहुत झीनी आशा लग रही है भन्ने ही यह समझौता हृद दर्जों का असतोपजनक हो । यहाँ की दुनिया सदह यथापूण चाला और डरादा से इतनी घुरी तरह भरी है कि आदमी आत्मविश्राम गवा बठता है ।

बापू के लिए जितना स्वस्थ होना सम्भव है उतन स्वस्थ हैं ।

सप्रेम,
महादेव

६२

कलकत्ता

१८ मई १९३६

प्रिय महाश्वेभाइ

तुम्हारा पत्र मिला साथ ही लाड लिखलियो और राधर मूर के नाम बापू की चिट्ठिया की नकल भी मिलने की बात थी । जब यह पता लगा कि वाइसराय के नाम चिट्ठी की नकल का कवन पत्रना पना है बाकी नकारद तो बहद पर गानी हुई । इस चिट्ठी की पूर्ति मूर के नाम निग पत्र का दो नकल भजकर हुई

दीखती है, पर उससे काम कैसे बनता। आज तुम्हें तार भेजा है कि बाकी पंथ भी भेजा।

आज बापू का वह बदनव्य पढा, जिसमें उठोने सर मारिस ग्वायर के निणय का परित्याग करन की घोषणा की है। मुझे इस विषय में रचमात्र भी सदेह नहीं है कि उनका यह कदम विलकुल ठीक है। हम लोगों ने बापू के उपवास को कभी भी अहिंसात्मक नहीं समझा था। मेरी धारणा है कि बापू की वर्तमान नीति अधिक सफल होगी। पता नहीं, दमन सरदार को निराशा हुई या नहीं पर इसमें सदेह नहीं कि वर्तमान नीति की सफलता की सम्भावना वही अधिक है।

सप्रम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देमाई,
राजकोट

६३

आनंद भवन

राजकोट

१६ मई १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका तार मिला। आपको यह तार भेजना पडा इसका मुझे दुःख है। यह मर सेनेटरी की भूल थी। (आप मर सेनेटरी नारायणराव का तो जानते ही हैं)। मैं पूरी नकल भज रहा हूँ साथ ही वाइसराय के उत्तर की नकल भी रख रहा हूँ। यह उत्तर जाज ही आया है। बापू ने उत्तर पढ़कर टिप्पणी की, बडा सुंदर पर उतना ही निक्कमा जीर निरुधक, जितना ग्वायर निणय।" पता नहीं आप ताजा बदनव्य के बारे में क्या रहेंगे। यह हमारा दुभाग्य है कि जब बापू को कदम उठाते हैं तो हमारी प्रतिव्रिया पर खीज उठत है पर बाद में उसी नतीजे पर पहुचते हैं जिस पर हम पहुचते थे और तब अपना मतव्य इतने जोरदार शब्दों में व्यक्त करत हैं कि हम सबको हैरत होती है। हमने उनकी अधीरता पर अनवरत टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि वह अधीर नहीं हैं और हा भी तो वह अधीर होने का अधिभाग है। अब वह कह रहें हैं उनकी बमनी हिंसा की प्रतीक है जीर

उनका सर्वोपरि सत्ता के पास दौड़कर जाना ठाकुर साहब को धासवाज तथा बीरावाला को गिरगिट जोर रियासत के लिए अभिशाप बताना अधीरता का निशानी था इसलिए हिमापूण था। मैंने बापू के साथ उनका बचन पढ़ कर लम्बी चौड़ी बहस की कहा, क्या आपका यह खयाल नहीं है कि आपका सर्वोपरि सत्ता के पास पहुँचाना जोर उनका प्रधान यायाधीश के द्वारा नियम कराने का मुताबक नतिक दृष्टि जोर तकनीकी लिहाज से भा अपने आपको ठाकुर साहब तक ही सीमित रखने की अपेक्षा अधिक बाछनीय नहीं था क्या एन गुनाम के खिलाफ सत्याग्रह करना कोई अनुमादनीय काम कल्पि नहीं है और य सब राजा-नवाब गुलाम मात्र नहीं तो क्या हैं ? इस पर बापू बाल तुम यह नतीजा चाहिर होने के बाद कह रहे हो। सुमहारा यह बचन कि ठाकुर साहब सर्वोपरि सत्ता के गुनाम मात्र हैं केवल अढसत्य हैं। यदि यह मान भी लिया जाए कि यह एक गुनाम से बचकर कुछ नहीं है तो भी मरे सत्याग्रह का—यदि वह उच्च नाटि का हो ता—यह तकाजा है कि वह गुलाम का गुलामी की जजीर तोड फेंकने का प्रेरित कर। जा भी है। भरा नियम को टुकराने का सकल्प आम निरीक्षण का परिणाम मात्र है और यह आत्मनिरीक्षण जोर कुछ नहीं जिम मानसिक दबाव ने मुझे रात दिन व्यथित कर रखा था उससे ब्राण पाने की जातुरता मात्र थी।

बीरावाला मुताम सलाह जोर पथ प्रदर्शन की जिम हूँ तक अपेक्षा करने लगा है उससे मुझे परेशानी होने लगी है। मुझे राज घण्टा उनका साथ निभाना पडता है। इस सम्बन्ध का एनमात्र परिणाम यह हुआ है कि मैं उस अधिकाधिक समझन लगा हूँ। उनका हाइल वाल स्वल्प से हम लाग बटुन पहल से परिचिन थ। जब मैंने उसके डा० जकिन वाले स्वरूप को पहचानना शुरू किया है जोर मुझे लगता है कि उसके इस स्वरूप को समझ पाऊंगा। अकसर उसका विश्लेषण करना असम्भव प्रतीत हान लगता है जोर जकसर वह मुझसे इनती जास्था निखाने लगता है कि उससे लिए मैं अपने आपको तयार नहीं पाता हूँ। जब किसी दिन मित्रता हागा तो उस वार में बन्त मानी बान हागी।

गिमन के साथ मन बार्ड ६० मिनट बिताय। बडा शिष्ट था बडा स्पष्ट बानी उसने जादर भाव तन दिखाया। यह पुराने घाव भूला नहीं है—गुण्डागर्दी का जागप जोर मुलाभात का ऐसा प्रकाशन जिम वह त्रिलकुल मिथ्या बताना है आदि पर मुझे कहना पडता है कि मुझे जादमी अच्युत लग्य। जोर यह प्रसन्नता की बात है कि मैं उससे मित्रा। जगाथा के बारे में आपको मालूम है उसने क्या कहा ? बडी भद्र महिला हूँ पर उससे बिना बक्ति का अभाव है। हमारी बातचीत के विषय जनेर ये, और मुझे ऐसा लगा कि मैं उस समझन लगा हूँ।

मैं जितना ही इन लोगो से मिलता हूँ, मेरी यह प्रतीति दब होती जाती है कि हमारा समूचा जागलन हमारी अधीरता का चित्र मात्र था। यदि थोड़े बहुत घय से काम लिया जाता, तो बात बहुत कुठ बन जाती। खर, दर जायद दुस्त आयद।

हम लाग यहा २ जून के बाद ठहरनवाले नहा है। आज हा कोई न-कोई धापणा होगी। मसौदा तयार करन मे मेरा बहुत बडा हाथ था, पर कवल इसी हद तक कि मैंन अपन-आपका वीरावाला का सेनेटरी बनने दिया (वह दिन म दम बार मुने इस उपाधि मे विभूषित करता है—वाह वाह ! क्या बढिया उपाधि है।) पर मैं अपना पश किसी भी रूप मे उसका समर्पित नही करता हूँ। जहा तक बधानिक सुधार का ताल्लुक है, समझौते का अधिक महत्त्व नहा है। उसका एक मात्र यही महत्त्व है कि उससे इन लोपो की नीयत परखन का अवसर मिल जाएगा (यदि दन लागी की नीयत साफ हुई तो)।

सप्रम
महादेव

६४

कलकत्ता

२५ मई, १९३६

प्रिय महादेवभाई,

वापू के बक्तव्य के बाद अत्र मैं 'हरिजन' में वापू के कुछ लेखा के बार में अपन मन की बात कह दूँ। एक लेख का शीपक था, लात और चुम्बनवाली स्पीच। इस स्पीच की कभी पुष्टि नहीं हुई। वापू एसी बातें तभी छाप सकते हैं, जब उनकी सत्यता के बारे में उनका पूरा समाधान हो जाए। इस स्पीच की सत्यता के बारे में मरा सदह बना हुआ है। मेरी धारणा है कि एक स्पीच अवश्य दी गई थी पर महाराजा द्वारा नहीं कनल हक्सर द्वारा। यदि मेरी यह धारणा सच्ची प्रमाणित हो तो हम किसी न किसी रूप में इस भूल का परिमाजन करना होगा।

यदि गिम्पन अब भी कुछ मर्महत हा तो वेजा नहीं है। मेरी ग्वालियर की मिल के मनेजर और सेनेटरी उसकी प्रशंसा करते नहीं अघाते थे। उसके बारे में मुझे बताया गया था कि वह बहुत खरा जादमी है और सबसे दिल खोलकर

मिलता है, विणपकर बच्चो त। वह मिल म आ जाता था और बच्चा के साथ खलता रहता था। यह तो हो नहीं सकता कि अपने यकिनगत आचरण म वह इतना अच्छा रहा हो, और राजनतिक आचरण म इतना बुरा साबित हो। बापू न उस बुरा भला कहन मे कोई कौर कसर बाकी नहीं रखी थी। क्या बापू उसक वार म अपनी राय बदल ग ? और क्या वह इमका अधिकारी है ? मरी यह धारणा ता है ही कि राजकोट क ठाकुर साहब ने जो वचन भग किया उसका दोषी अशत गिसन भी है। पर मेरे सहयोगी यह मानन का तयार नहीं हैं कि उनके लिए गुण्डेपन पर उत्तर आना सम्भव है।

लोदियन लिखत है

— ऐसा प्रतीत हाता है कि महात्मा काग्रेस को उसी नीति पर ले जा रहे हैं, जिसका उहान मरे सेगाव प्रवास क दौरान इगित किया था। पर मरी राय म रियासता म उत्तरदायित्वपूण शासन की माग के लिए कुछ करना जल्दीबाजी हा जाएगी। जनता को अभी प्रतिनिधि शासन का अनुभव नहीं है और यदि काग्रेस ने उन्हें उस दिशा म अधिक तेजी क साथ ढक्ला तो सम्भव है वह मुसलमानों को भारत क बाहर त्वेल दे। मरी यह धारणा पहले से भी अधिक दृढ़ हो गई है कि सघाय शासन-व्यवस्था का आधारभूत सिद्धा त ही एकमात्र ऐसा उपादेय सिद्धा त है जिसका सहारा नेकर भारत प्रगति कर सकता है और सकट स बच सकता है। जाप महात्मा स मिलें तो उन्हें मरी सदभावनाए दीजिए।

कृपया यह पत्र बापू के सामने रखना।

तुम्हारा

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

राजकोट

६५

राजकोट

२५ ५ ३६

प्रिय धनश्यामदासजी

प्रणाम। आपका २२का पत्र मिला। बहुत जानद हुआ। बापूजी को पढाऊगा ता फिर आपको नमस्कार कह देन की याद रखने की बात नहीं रहेगी।

बीरावाला क बार म आप जा कहत हैं सो ठीक है। हम कौन स तपस्वी ह ? और सच बात तो यह है कि किसी का हृदय परिवर्तन करन के लिए हमारा अपना परिवर्तन सो गुना हाना चाहिए। बीरावाला अपना दाव खेल रहा था हम भी उसक साथ दाव खेल रह थे—बलभभाई तो खेल ही रहे थ—उसम उसन हमको शिक्स्त नी। बापू बलभभाई के अतीव प्रेम के बश हाकर जीर राजकोट की ममता के कारण भूल कर बठे। परतु बापू को अपनी भूलें तुरत सुधारना आता है हमार जसे तुरत शाधन नही कर सकते और हमारी भूलें हमारे साथ जम भर चलती रहती हैं और आख-नाक की तरह हमारी प्रकृति का अग बन जाती है। अपनी भूलें दखना और सुधारना हम बापू से सीखें, ता समधिए काफी सीखा।

‘हरिजन’ म ए मोम-टस डिस्सीजन लेख पढियेगा। काफी साचकर लिखा है।

बीरावाला के साथ काम ठीक चल रहा है। उस बेचार की आदतें भी उसकी प्रकृति का अग बन बैठी हैं उन्हें वह तुरत कस सुधार सकता है ? परतु उसकी बत्ति बदल रही है उसके साथ भीठा सबध हो रहा है, और उसकी शक्ति का भी मैं काफी परिचय पा रहा हू। परतु यह बात तो सही ह कि वह गिम्न का ही पिलाया पानी पीता है। छोटी से छोटी बात क्या न हा—बिना उसम पूछे नही हाती।

हम एक तारीख तक यहा है। दूसरी को बर्द पडुचेंग। रामश्वरजी क यहा ही रहन का निश्चय किया है।

आशा है आपकी तबोयत अच्छी होगी।

आपका विनीत रसिक,
महादेव

६६

राजकोट

२६ मई, १९२६

प्रिय धनश्यामणासजी

आपका २५ तारीख का पत्र मिला। हा गिम्न अब भी चोला हुआ है। उमन मुत अपनी शिवायतें बह गुनाइ। बापू न उत पत्र लिखकर उमस ममा

याचना की है कि उनसे उपवाम काल में उस इतना दस्त हाना पडा था। मैं उसकी जगह शिकायत की भी छानबीन कर रहा हूँ। बीरावाला व निवट सम्पन्न में जान पर पता चला कि कइ वाता को लेकर उस भी कुछ सन्नमुच की शिकायत है। सारे मामले से भाड डग से निपटा गया कम जोरकपा यह भगवान् ही जान। शायद दुर्भाग्य हमारा पीछा कर रहा था।

रियासतें रजिडेंटा की मर्जी के बिना कुछ नहीं करती हैं। यह मैं अपनी जाओ दया है और इसमें मुझे कोई सदह नहीं रह गया है कि बीरावाला न जा कुछ किया उसमें उम गिंसन का समयन प्राप्त था। पर गिंसन का इस बात का लेकर कोई शिकायत नहीं है। उमकी शिकायत ता यी है कि हरिजन में उमकी मुलाकात का जो ब्योरा छपा उसमें कुछ एमे शब्दा का उल्लेख किया गया, जिनका उसने कभी व्यवहार नहीं किया था। उम यह भी शिकायत है कि उसने यहा जो कुछ किया उसे बापू ने गुणगर्नी का नाम दिया।

हम १ तारीख का फिर मिल रहे हैं और मुझे आशा है कि सार मामले की सफाई हो जाएगी और फिर उसकी कोई शिकायत बाकी नहीं रहेगी। बीरावाला की कथा विराली है पर जसा कि मैं आपको बता ही चुका हूँ यह मुझ पर भरोसा करने लगा है और फिलहाल मुझे भी वह मिलनसार प्रतीत हो रहा है। उसे प्रभुता का साधारण माह है और उस पर आच जानवाली किसी भी बात को वह सहन नहीं कर सकता।

हम यहा से १ तारीख को खाना हाकर दूसरे दिन बम्बई पहुच रहे हैं और ६ तारीख को सीमा प्राण की यात्रा पर जाना है।

सप्रेम,
महात्मेव

६७

आनंद भवन
राजकोट
३० मई, १९३६

प्रिय धनश्यामदासजी

मुझे पक्का यकीन है कि इस पत्र के साथ भेजी जा रही सामग्री आपको रचि कर लगी। मैं इसे 'हरिजन' में नहीं दरहा हूँ। मन बिटवाली मुलाकात भी नहा

छापी थी। निश्चय ही इस जादमी को बापू से उतना नहीं मिल पाया, जितना ब्रिट हासिल करने में सफल हुआ था पर यह आदमी मुझे घटा इमानदार और प्रभावशाली लगा।

गिम्सन यहाँ कल संध्या के समय पहुँच रहा है और बापू और मैं उसके साथ मुलाकात करेंगे। मैंने एक सप्ताह पहले उसके साथ अपनी भेंट का प्रारम्भ किस प्रकार किया था सा शायद आपका मालूम नहीं है। मैंने उससे कहा कि मैं उसके बारे में जितना कुछ जानता हूँ वह ग्वालियर की मिल के मजदूर की जवानी ही मालूम हुआ है और वह यही कि वह बच्चों के साथ कितनी सहृदयता से पेश आता है और किस प्रकार वह बीच-बीच में मिल में उनके साथ खेलने के लिए आया करता था। वस, इतना कहने की देर थी कि उसका दिल पसीज गया और हम दोनों ६० मिनट तक बड़े आनंद के साथ दुनिया भर की बातें करते रहे जसा कि आपको पता ही है।

मैंने ग्वालियरवाली तथाकथित स्पीच के बारे में आपका संदेश बापू का अभी नहीं दिया है पर मैं आपसे इस बारे में सहमत हूँ कि किसी न किसी रूप में परिभाजन आवश्यक है।

आपने लोदियन का पत्र उद्धृत ता किया पर यह नहीं बताया कि उसके बारे में आपकी क्या धारणा है। रियासत में उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की अवधि को सीमित करना एक बात है और वहाँ की प्रजा का कुचलना जसा कि लीमडी, तालचर और अ य स्थानों पर हो रहा है, बिल्कुल दूसरी बात है। पर भगवान का धन्यवाद देना चाहिए कि घण्टे के पेंडुलम का रुख जब विपरीत दिशा में हुआ गया है और बापू धन्य से काम लेने का अभ्यास कर रहे हैं।

बम्बई पहुँचकर फिर लिखूंगा।

एक वान प्रताना भूल गया। गिम्सन में शुष्क विनाद का भावना मौजूद है। बापू ने उस पत्र लिखा था कि उनके उपवास-काल में उसे कितनी दिक्कत उठानी पड़ी थी इसका उन्हें पता है और इसके लिए उन्हें दुःख है भल ही वह उपवास निष्फल मिट्टा हुआ है। अब उसका जवाब आया है जिसकी नकल साथ रखता हूँ।

सप्रेम,

महादेव

रजिडमी
राजवाट,
बालाचट्टी

२७ मई १९३६

प्रिय मिस्टर गांधी

आपने पत्र लिखन का मौजय दियाया बहुत बढ़िया बात हुई। जनक धर्य वान् । आपने जिन दिना का उल्लख किया है उन दिना काम अवश्य बन गया था पर यदि करने योग्य कोई काम हो तो मुझे काय भार की चिन्ता नहीं रहती है। उन दिना जितना काम बढ गया था उसके मुकाबल जाजन का काम बाज नहीं के बराबर है। पर वास्तव म जिन लोगो को काम का बाण सभालना पडा ब तार विभाग और टेलिफोन विभाग के लोग थे। रही रेजिडेन्सी के जमल की बात, सा (जापस भेद की बात कह दू) व तो बराबर ही काय भार से दवे रहते हैं।

मैं राजकोट ३१ मई की रात को तौट रहा हू और मैंने मिस्टर महादेव देसाई को लिख लिया है कि दूमरे दिन बातचीत होगी। आपके जाने के पहल मैं आपसे एक बार और मिनना चाहूंगा पर शायद उस दिन सुबह आप बहुत व्यस्त हागे इसलिए मैं कोई सुझाव नहीं दे रहा हू। पर यदि आप कुछ मिनट निवाल सकें तो जो समय आपकी सुविधा का हो आ जाइय।

भवदीय

के० सी० गिन्सन

६८

बलवन्ता

१ जून १९३६

प्रिय महादेवभाई,

पत्र के लिए धन्यवाद। मुझे भालूम हुआ कि जयपुर के मामल का लकर राधाकृष्ण बापू म और तुमसे मिल चुके ह। जमनालालजी और राज्य के विभिन्न अधिकारिया क बीच जो मुताकात हुई उसने उनका सक्षिप्त चारा मेर पास भी भेजा ह। मर लिए यह समझ पाना बठिन है कि क्या तो टाड आरम्भ म इतनी

शिष्टता स पश जाया, जोर क्या वह जत म इतना रूखा बन गया ! यह यकीन करन का जो नहीं चाहता नि नीति म अचानक कोई परिवर्तन हुआ है। वास्तव म यदि मरी यह धारणा सही निकले कि अपनी भेट के दौरान दाना म कुछ मत भेद उठ खडा हुआ, जिसके कारण दाना का रस बदल गया ता मुझे ताज्जुब नहीं होगा। मैं यह केवल इमलिए लिख रहा हू कि बेसप्री से काम न लिया जाए जोर तसवीर क दोना पहलुजा की जानकारी हासिल करन तज रखा जाए।

तुम्हारा

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
राजकोट

६६

मेगाव वर्धा

१७ जून, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका याद हागा कि मैंने बापू के साथ स्टील की मुलाकात का व्योरा आपक पाम राजकोट से भेजा था। क्या आपन उसका कोई उपयोग किया ? आशा है आपन नहीं किया हागा। स्थिति इस प्रकार है—बापू साच रह थे कि मुलाकात को हरिजन' म प्रकाशित किया जाय या नहीं। जब मैंन वह व्योरा भेजा था तो मुझे इस बारे म कोई सशय नहीं था कि उस न छापना ही ठीक रहेगा। पर अथ प्यारलाल न बम्बई स हरिजन के लिए कुछ सामग्री भेजी है जिसम उस मुला कात का व्योरा भी ह। (अधिकाश मे दाना व्यारे एक ही जस है।) बापू न जानना चाहा कि उस क्या न छापा जाय। मैंन कहा कि मेर विचार म उस प्रका शित करना वाछनीय नहीं ह क्याकि बसा करन से व्यथ का वाद विवाद उठ पडा होगा और अटकलबाजिया का बाजार गम होगा। मैंन कहा कि इस व्योर का प्रकाशित करन की अपग्या यह कहा अच्छा रहेगा कि उसे लेथवेट के पास भेज लिया जाय जिसस वह वादसराय का दिघा द विशेषकर इसलिए कि उसम वाइमराय की भूरि भूरि प्रशसा क उदगार भी है। बापू न पूछा, तो तुम्हारा यह

खयाल है कि ऐसा करना इस छापने की अनक्षा अच्छा रहेगा ?' मैंने कहा कि मुझे इस विषय में कोई सदेह नहीं है।' फिर मैंने कहा "तो मक्ता है कि विडला जी ऐसा कर भी चुके हैं पर यदि वह ऐसा करते तो कह जरूर दत।' बापू बान, मुझे आशा है कि उहान ऐसा नहीं किया होगा, क्याकि यह उचित नहीं है कि वादमराय के पास ऐसी चीजें इस डग से भेजी जायें। इससे उनकी शान पर आच जायगी। उहान और भी बातें कही। मैं आपसे इसीलिए पूछ रहा हूँ। मुझे पूरा यकान है कि आपने ऐसा नहीं किया होगा। क्या आप अपना उत्तर तार द्वारा भेजने की कृपा करेंगे ?

बापू की तवीयत ठीक ही चल रही है हा कमजोरी वनी हुई है। शरीर में पुर्ती का नितान अभाव है हा सकता है गर्मी के कारण हो पर अभी तो गर्मी भी अधिक नहीं पड रही है।

अब हम बम्बई में मिलने।

आपका,
महादेव

१००

सगाव (वधा हाकर)

१८ जून १९४६

प्रिय घनश्यामदासजी,

हम यहा से २० का खाना हो रहे हैं।

आप हाथ में वन कागज पर क्या नहीं लिखत ? आपसे पास तो अब डेर का दर पडा है। आप बम्बई जा रहे है क्या ? यदि आयें तो उसी ट्रेन में क्या न आयें, जिससे हम चलेंगे ? पर मैं भूल गया। यदि आप १६ का चल पडे हाम तो यह पत्र आप तक समय पर पहुंच भी नहा पायगा।

सप्रेम,
महादेव

१०१

तार

१६ जून १९३६

महादेवभाई दसाई,
मगनवाडी,
वर्धा (मध्य प्रांत)

स्टील की मुलाकात का कोई उपयोग नहीं किया है।

—घनश्यामदास

विडना प्रिंटर्स लिमिटेड,
कानकता

१०२

कानकता

१६ जून १९३६

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारे पत्र के लिए धन्यवाद। मैंने स्टील की मुलाकात का कोई उपयोग नहीं किया है। पर वापू का यह बयान मरी समझ में नहीं आया कि 'यह उचित नहीं है कि वाइमराय के पास ऐसी चीजें इस ढंग से भेजी जायें। इससे उनकी प्रतिष्ठा का जाच आयेगी।' यह बात जरा जीर खुलासा करके समझाया ता अच्छा रहेगा। वास्तव में मुझे जब कभी एमा लगा कि कना चीज वाइमराय तक पहुँचाना काय के हित में है ता में वसा करने से कभी नहीं चूका। इसलिए जब मैं इस मुलाकात का ध्याना पढा, ता मैं इस विचार में पड गया कि वाइमराय के पास इसका सम्बद्ध उद्धरण भजा जाना ठीक रहेगा या नहीं। वाइमराय की प्रशंसा में कही गई बात पढ़ने के बाद ही मुझे एसी प्रतीति हुई। फिर तुरत ही मैंने यह सोचा कि यह प्रशंसात्मक उद्धरण भेजूंगा तो चाटुकारिता का दोषी सिद्ध होऊंगा। इसलिए मैं रक गया और फिर मैंने वह विचार ही त्याग दिया। यदि मुलाकात में

वाइसराय की सरान्नास्वरूप कुछ न होता ता मैं उमका उपयोग करता और तब यदि तुम्हारा पत्र मिला तो बड़ा खुश होता ।

कृपा करके यह पत्र बापू का दिया देना और उनका कहना कि भविष्य के लिए मेरा पथ प्रदर्शन करें । बापू के स्वास्थ्य के बारे में भी मरी पूरी जानकारी बताय रचना । सेन् है, मैं बम्बई नहीं जा सकूंगा । इसके दो कारण हैं एक तो यहाँ का काम-काज दूसरा जालस्थ ।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देगार्डे

बम्बई

१०३

पत्रकर्ता

२० जून १९२६

प्रिय महादेवभाई

तुम्हें याद होगा कि मैंने तुमसे कहा था कि पिलानी काकाजी की पुस्तिका पर मैं तुम्हारी राय जानना चाहूँगा । मैंने बापू से भी कुछ सराच के साथ कहा था कि इस पर निगाह डालें । जब मैंने बापू से आग्रह किया था तो शुद्ध काम काजी प्रेरणा के कारण कहा था कि मैं जा-कुछ कर रहा हूँ उस पर उनकी सलाह और पथ प्रदर्शन चाहता हूँ । मित्त लामा की बधाइयाँ के संदेशों का डेर लग गया है जिसमें उलटे वचन ही हाती है । तुमसे और बापू से अपेक्षा करता हूँ मित्ततापूर्ण जालोचना की ।

जलम डाक में पुस्तिका की दो प्रतिषा भेज रहा हूँ । सीमा प्रातः के दौर में इस पत्र का समय निर्वात पाया तो वही बात है । जाना है बापू को भी उम पर निगाह डालने का समय मिल जायगा ।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देगार्डे

बम्बई

१०४

बनवत्ता

२० जून, १९३६

प्रिय महादेवभाई,

तुम्हारा १८ तारीख का पत्र पान के बाद मुझे पचनावा हो रहा है कि मैं बम्बई नहीं गया। पर जसा कि मैं अपने पिछले पत्र में लिख चुका हूँ वना न जानना एक कारण काम बाज था। मैं बनवत्ता के बाहर इतने ज़रिफ़ दिन रहा कि अब काम बाज बीच ही में छोड़कर यहाँ से जाना टोकर नहीं ज़रा। नमी निवास इन दिना यहाँ नहीं है। मैं समझता हूँ कि अब बापू भीमा प्रान के लिए रवाना हो ही रहे हंगे। वहाँ से बापू भी पर ही इनक ज्ञान हा पायेंगे।

हाथ के बने बागज का चरन नमी दिना के विना हाउस में जागे है। पर विडला प्रदस की फर्मी में उमक उपयोग का मुभाव मैं ब्रजमान का दूगा, वह शुरु अपनी बड़ी-मी फबटरी में बागज तयार कर रहा है।

मंग्रम,

धनश्यामदास

महादेवभाई देमाई,

बम्बई

१०५

विना हाउस
माउण्ट प्लजेट रा
बम्बई

२० जून, १९३६

प्रिय धनश्यामदासजी

आपके तीनों पत्र मिल गये—गारा इक कन। धनश्यामदास। बापू न क
राय की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पत्र लिखा है। नका नकल भेजता हूँ। बापू न क
रामश्वरदासजी ने फोन पर आपसे इसका जना न कर्मा।

पुस्तिका अभी तक नहीं पटुची है। उस जल्ती ही पढ़ूंगा वापू भी पढ़ेंगे, पर यह तो भगवान ही जाने कि बसा सीमा प्राप्त जात हुए सम्भव होगा या राजशोट जाते हुए। पता नहीं किस कारण राजकाट की स्थिति एकाएक बिगड़ गई है। कल रात वापू को उसरी चिंता भ नींद नहीं आई। प्राथना के समय वह बाल उठे, 'तुम्हें राजशोट जाना होगा। वहां ग तुम्हारी वापसी पर आग क्या करना होगा, इस पर विचार किया जायगा।

हो सकता है सीमा प्राप्त कीयात्रा स्थगित रहे। यह सब ध्यान साह्य के आग्रह पर ही निर्भर है। यदि उनका विशेष आग्रह न हुआ तो सम्भव है, यात्रा का निवार त्याग दिया जाय। इसके बजाय, सम्भव है वापू द्वावणशोर जायें वगैरें कि मर सी० पी० रामस्वामी अय्यर का कोई एतराज न हो। वापू न सी० पी० को कम बार म तार भेजा है— सावणशोर वाग्रम का आग्रह है कि उमकी बंठर का उत्थाटन में बन्द। क्या आप मेर आन के पक्ष में हैं?" वहां भ जो उत्तर आयेगा आपका उमकी सूचना लूंगा।

मप्रेम
महादेव

१०६

विडला हाउस
मन्नापार हिल
बम्बई
२२ जून, १९३८

प्रिय साहब चित्तलिथगा

आपके १६ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद।

यद्यपि यह दुःख की बात है कि बन्ती पखीसिंह को रिहा नहीं किया जा सकता तथापि मुझे आपके निणय को न समझ पान म कोई बठिआई नहीं हो गयी है। जब मैं किसी अन्य अवसर की प्रतीक्षा करूंगा।

जयपुर का मामला अनिश्चय की स्थिति में पड़ा है। समस्या के हल की आशा करूँ या नहीं यह मैं नहीं जानता। जहाँ तक मुझे मालूम है स्वयं महाराजा सेठ जमनालालजी तथा अन्य वदियों को रिहा करने प्रजा परिषद् को मायता में और जब तक अहिंसा का पालन होता रहे तब तक नागरिक स्वतंत्रता प्रदान करने की राजी थे।

इस पत्र में एक अन्य बात का भी समावेश करना उचित समझता हूँ। मुझे मालूम हुआ है कि कई एक राजा नवाब मुझसे मिलने के लिए इच्छुक हैं पर राजनतिक विभाग की नाराजी से डरते हैं। जैसा कि मैंने दिल्ली में बातचीत के दौरान कहा था—मेरी राय में उन्हें जिस किसी से मिलना चाहें उससे मिलने की आज्ञा नहीं रहनी चाहिए बशर्ते कि वह मिलना जुलना खुले रूप में हो। इस बाबत आपकी नीति की घोषणा सावजनिक रूप से अथवा निजी तौर से जिस रूप में आप वाछनीय समझें करना अच्छा रहेगा। मेरी धारणा है कि केवल मेरे जन्म लोगो के मामले में रियायत बरतना उचित नहीं है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि रियासतों की प्रजा का सारे भारत में कांग्रेसियों तथा अन्य लोगों के साथ राजनतिक एवं सामाजिक ताता जुड़ा हुआ है क्या यह बुद्धिमत्ता और औचित्य का तकाजा नहीं है कि राजाओं नवाबों का उन लोगों के साथ जिनका उनकी प्रजा पर प्रभाव है, सम्पर्क स्थापित करने का प्रोत्साहित किया जाय ? कांग्रेसियों तथा अन्य लोगों को बाहरी आदमी समझते रहना इतना अस्वाभाविक है कि यह बंधन अधिक दिना तक टिकनेवाला नहीं है। इस बंधन का अन्त सघन और कटुता के बाद ही हो यह दुःख की बात होगी। पता नहीं इस वस्तुस्थिति की ओर आपका ध्यान गया है या नहीं कि कई एक रियासतों ने गर कांग्रेसी प्रमुख व्यक्तियों को या तो आमन्त्रित किया है या उनका स्वागत किया है। मुझे इस बात का लेकर कोई शिकायत नहीं है। पर राजनतिक विभाग ने कांग्रेसियों के प्रवेश के मामले में जिस विरोधी भावना को उत्तेजित किया है वह इस रवये के साथ विरोधाभास ही है।

भवदीय
मो० क० गांधी

१०८

विडला हाउस
माउण्ट प्लेजट रोड,
बम्बई ४ जुलाई १९३६

प्रिय जगया

मैंने पिछले पांच या छह हफ्ता में आपको कोई चार पत्र लिखे हैं। उनमें से एक की भी पट्टी नहीं मिली है। मुझे चिन्ता हो रही है कि वही पत्र आपका नहीं मिल पाया।

मैंने अपना अंतिम पत्र राजकोट से लिखा था। हम सीमा प्राप्त करने का तयारी कर रहे हैं। राजकोट में गिन्सन और बीरावाला अपनी जड़ें मजबूत करने में लग हुए हैं और प्रजा के नतिज ह्रास न उठे ऐसा करने का स्वर्ण अवसर प्रदान किया है। या दोनों ही स्पष्टवादी प्रतीत हुए पर दोनों कुत्सापूर्ण विजया लाल का आनंद अवश्य ले रहे हैं। मैंने गिन्सन से पूछा कि क्या नूतन प्रणाली का राजकोट के लोगों पर किसी प्रकार का प्रभाव पड़ा? उसने उत्तर दिया एक ठर ही ऐसा आदमी है जिसने उमका मम ग्रहण किया है। उसने हम बहुत दिना से तग कर रखा था। अब उसकी प्रशंसा में यह कहना पड़ेगा। मैंने वहां पर जानकर बड़ी खुशी हुई, पर मैं बीरावाला तथा अन्य लोगों की बाबत जानना चाहता था। गिन्सन बोला 'आप यह समझे बैठे हैं कि उनकी इस नूतन प्रणाली में क्या आस्था है?' मैंने उत्तर दिया इसके विपरीत मेरे कानों में तो यह बात आई है कि वे लोग इसका मजाब उड़ा रहे हैं। तब गिन्सन बोला 'नहीं एमी बात तो नहीं है। हा, वे शायद इसके गूढ दार्शनिक पहलू को हृदयगत नहीं कर पाये हैं। और सचमुच बात भी यही है।

सरकार ने भी इसके दार्शनिक पहलू को हृदयगत नहीं किया है। आपको याद होगा कि किस प्रकार वापू ने मुलाकात के दौरान वाइसराय से भारतीय नरेशा के साथ सम्पर्क स्थापित करने का प्रसंग उठाया था और किस प्रकार वाइसराय ने दोरूक बात कह दी थी कि वह इसके खिलाफ हैं। अब जबसे यह नूतन प्रणाली जमल में आई है बेचारे नरेशा को—उनमें से कुछ को—यह लगने लगा है कि स्थिति बदल गई है और जसा कि मैं आपको अपने पिछले पत्र में बता चुका हूँ, वे वापू के पाम यह अनुरोध लेकर पहुंचे कि वाइसराय उन्हें वाप्रेसिया व (जिनमें वापू भी शामिल हैं) वातचीत करने की छूट दे दें। इस पत्र

१०७

वाद्मराय सोज,
शिमला
१ जुलाई, १९३६

प्रिय मिस्टर गांधी

आपके २२ जून के पत्र के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। उमम दा-एक एमी बाने उठाई गई हैं जिनका समावेश मैं अपने उत्तर में करना चाहता हूँ।

१ जयपुर के सम्बन्ध में मरा कहता है कि मठ जमनालाल बजाज का आवश्यकता से अधिक दर तक राग रगन की जरूरत नहीं है। आपको याद होगा कि प्रारम्भ में दरवार में उह टिरागत म लेन में जान की भरगब कोणन की थी। सेठ जमनालाल तथा अ य बलिया व सबध में अभिलपित धारवाई दरवार जिन शर्तों पर करना चाहत हैं उमकी उह पूरी जानकारी है और जहा तप में जानता हूँ महाराजा व वहा म जान के फनस्वरूप इग स्थिति म वाई परिवता नही हुआ है।

२ अपने पत्र के अन्तिम पर मैं आपन जो बात कही है उम मैंन पूरे ध्यान से पता है और इस सम्बन्ध में आपन मुझे अपने दृष्टिकोण से अवगत करा दिया इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। मैं समझता हूँ राजनतिक विभाग के साथ न्याय का यह तकाजा है कि मैं यह कहूँ कि नरेशा और उनकी प्रजा के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के मामले में वह (आप अपने वाक्य का उपयोग करने की अनुमति दें तो) गर काग्रेसी प्रमुख व्यक्तियाँ और काग्रेसी प्रमुख व्यक्तियाँ में किसी प्रकार की भेदभाव की नीति को बढ़ावा नहीं देता।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक रहता होगा।

भवदीय
निनलिथगो

१०८

विडला हाउस
माउण्ट प्लजेंट रोड,
बम्बई ८ जुलाई १९३६

प्रिय जगथा,

मैंने पिछले पाच या छह हफ्ता में आपको कोई चार पत्र लिखे हैं। उनमें से एक की भी पहुँच नहीं मिली है। मुझे चिन्ता ही रही है कि कहीं व पत्र आपको न मिलेगा।

मैंने अपना अंतिम पत्र राजकोट से लिखा था। हम सीमा प्रांत जाने की तयारी कर रहे हैं। राजकोट में गिब्सन जीर वीरावाला अपनी जड़ें मजबूत करने में लग हुए हैं और प्रजा के नतिक ह्रास ने उन्हें ऐसा करने का स्वर्ण अवसर प्रदान किया है। या दोनों ही स्पष्टवादी प्रतीत हुए पर दोनों कुत्सापूर्ण विजयोत्सव का जान-बूझ अवश्य ले रहे हैं। मैंने गिब्सन से पूछा कि क्या नूतन प्रणाली का राजकोट में लोगों पर किसी प्रकार का प्रभाव पड़ा? उसने उत्तर दिया एक डबल ही ऐसा आदमी है जिसने उसका मम ग्रहण किया है। उसने हम बहुत दिनों में तग कर रखा था। अब उसकी प्रशंसा में यह कहना पड़ेगा। मैंने कहा यह जानकर बड़ा खुशी हुई, पर मैं वीरावाला तथा अन्य लोगों की वास्तविक जानना चाहता था। 'गिब्सन बोला आप यह समझें बैठे हैं कि उनकी इस नूतन प्रणाली में कोई आस्था है?' मैंने उत्तर दिया इसके विपरीत, मेरे कानों में तो यह बात आई है कि व लोग इसका मजान उड़ा रहे हैं।' तब गिब्सन बोला, 'नहीं एसी बात तो नहीं है। हाँ वे शायद इसके गूढ दार्शनिक पहलू का हृदयगम नहीं कर पायें हैं। जीर सचमुच बात भी यही है।

सरकार ने भी इसके दार्शनिक पहलू को हृदयगम नहीं किया है। आपको याद होगा कि किस प्रकार वापू ने मुलाकात के दौरान वाइसराय से भारतीय नरेशाक सायम्पक स्थापित करने का प्रसंग उठाया था और किस प्रकार वाइसराय ने दोटूक बात कह दी थी कि वह इसके खिलाफ हैं। अब जबसे यह नूतन प्रणाली अमल में आई है बचारे नरेशाको—उनमें से कुछ को—यह लगने लगा है कि स्थिति बदल गई है और जसा कि मैं आपको अपने पिछले पत्र में बता चुका हूँ वे वापू के पास यह अनुरोध लेकर पहुँचे कि वाइसराय उन्हें वाप्रेसिया (जिनमें वापू भी शामिल हैं) प्रांतघीत करने की छूट दे दें। इस पत्र

१०७

वाइसराय लाज
शिमला
१ जुलाई १९३६

प्रिय मिस्टर गांधी

आपके २२ जून के पत्र के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। उसमें दो एक ऐसी बातें उठाई गई हैं जिनका समावेश मैं अपने उत्तर में करना चाहता हूँ।

१ जयपुर के सम्बन्ध में मेरा कहना है कि सेठ जमनालाल बजाज की आवश्यकता से अधिक देर तक रोके रखने की ज़रूरत नहीं है। आपको याद होगा कि प्रारम्भ में दरबार में उन्हें हिरासत में लेने में बचन की भरसक कांशिश की थी। सेठ जमनालाल तथा अन्य विद्वानों के सम्बन्ध में अभिलषित कारवाई दरबार जिन शर्तों पर करना चाहते हैं उसकी उन्हें पूरी जानकारी है और जहाँ तक मैं जानता हूँ महाराजा के वहाँ से जाने के पक्षस्वरूप इस स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

२ अपने पत्र के अंतिम पर मैं आपसे जो बात कही है उसमें पूरे ध्यान से पढ़ा है और इस सम्बन्ध में आपसे मुझे अपने दृष्टिकोण से जवगत करा दिया इसका लिए मैं आपका आभारी हूँ। मैं समझता हूँ राजनैतिक विभाग के साथ 'याय का यह तकाजा है कि मैं यह कहूँ कि नरेशों और उनकी प्रजा के साथ सम्पर्क स्थापित करने के मामले में वह (आप अपने वाक्य का उपयोग करने की अनुमति दें ता) गर काफ़ी प्रमुख 'यक्तियाँ और काफ़ी प्रमुख 'यक्तियाँ में किसी प्रकार की भेदभाव की नीति का बताना नहीं देता।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक रहता होगा।

भवदीय
चिनलियगो

श्री मो० क० गांधे
वम्बई

१०८

विडला हाउस
माउण्ट प्लेजेंट रोड,
रम्पई ४ जुलाई १९३६

प्रिय जगाया,

मैंने पिछले पांच या छह हफ्ता में आपको कोई चार पत्र लिखे हैं। उनमें से एक की भी पहुँच नहीं मिली है। मुझे चिन्ता हो रही है कि कहीं व पत्र आपको न मिले हा।

मैंने अपना अन्तिम पत्र राजकोट से लिखा था। हम सीमा प्रांत जान की तयारी कर रहे हैं। राजकोट में गिंसन जीर वीरावाला अपनी जड़ें मजबूत करने में तग हुए हैं और प्रजा के नैतिक ह्याम में उन्हें ऐसा करने का स्वर्ण अवसर प्रदान किया है। या दोनों ही स्पष्टवादी प्रतीत हुए पर दोनों कुत्मापूषण विजया-रताम का आन्तक अवशय ले रहे हैं। मैंने गिंसन से पूछा कि क्या नूतन प्रणाली का राजकोट के लोगों पर किसी प्रकार का प्रभाव पडा ? उसने उत्तर दिया 'एक डेवर ही ऐसा आत्मी है जिमने उसका मम ग्रहण किया है। उसने हम बहुत जिन में तग कर रखा था। अब उसकी प्रशंसा में यह कहना पडेगा। मैंने कहा यह जानकर बड़ी खुशी हुई पर मैं वीरावाला तथा अन्य लोगों की वास्तव जानना चाहता था। गिब्बन बोला 'जाप यह समझे बैठे हैं कि उनकी इस नूतन प्रणाली में कोई आम्षा है ? मैंने उत्तर दिया 'इसके विपरीत मर काना में तो यह बात आइ है कि वे तग इसका मजाक उडा रहे हैं।' तब गिब्बन बोला, 'नहीं एसी बात ना नहीं है। हा, वे गायद हमके गूढ दाशनिक पहन का हृदयगम नहीं कर पाय हैं। और मनमुच बात भी यनी है।

सरकार न भी इसका दाशनिक पहनू को हृदयगम नहीं किया है। आदमी गान्हाग कि किस प्रकार बापू न मुलाकात के दौरान वाइसराय में भारतीय नरणा व भाष सम्पक स्थापित करने का प्रमग उठाया था और किस प्रकार वाइसराय न दाटूक बात कह दी थी कि वह हमका विनाफ है। अब जबमें यह नूतन प्रणाली अमन में आई है वचार तरेगा की—उनमें से कुछ की—यह मगन गया है कि स्थिति बल गई है और जगा कि मैं आपको अपने पिछले पत्र में बता चुका हूँ व बापू के पास यह अनुरोध लेकर पहुँचे कि वाइसराय उन्हें वांप्रतिपा व साथ (जिनमें बापू भी शामिल हैं) वातचीन करने की छूट दे दें। इस पत्र

के साथ जो पत्र-व्यवहार नत्थी कर रहा हूँ उसमें आप भयम ही दृष्ट लेंगी कि हवा का रुख निघर है। मैं तो नहीं समझता कि इसमें बाद यादमराय के पास से और जा कोई पत्र आया वह इसमें भी बुरा हो गया है। यादमराय ने बापू के लिए सार द्वारा बत कर दिये मालूम हात हैं और सम्भव है वह भविष्य में बापू के पत्रों का उत्तर तो न दें। कम गन्धम बापू की यही प्रतीति है। उन्हें धार निराशा हुई है और वह इसी चिन्ता में निमग्न हैं कि अगला कदम क्या है। यदि हा सना तो मैं इस पत्र के माध्य हरिजन के लिए बापू के ताजा संख की नकल भी भेजूंगा। यदि भरे पास कोई अनिश्चित नकल न बची तो चन्द्रशेखर तो पूरा स यथापूर्व भेजेंगे ही।

आपका,

महादेव

१०६

विडला हाउस

माउण्ट प्लेजेंट रोड,

बम्बई ५ जुलाई, १९३६

प्रिय घनश्यामदामजी

आपके नम्येपत्र के लिए धन्यवाद। यह आज ही आया। अंत में मेरा तावण कोर न जाना ही तय हुआ। रामचंद्रन ने तो तार भेजा है कि अभी वहा छादी का क्षत्र इतना तयार नहीं हुआ पाया है कि बापू मुझे वहा भेजें। बापू को यह जान कर जाश्चय भी हुआ और यथा भी हुई कि वे 'योग रचनात्मक' काय में इतने पिछड़ बयो गये हैं। पर असलियत सामने जा गई यह अच्छा ही हुआ। आपकी यह धारणा निराधार नहा है कि बापू ने भरे लिए कुछ कूटनीतिक कायक्रम सोच रखा था। वास्तव में रामचंद्रन का स देश मिलत ही उद्धान सरसी० पी० रामस्वामी अय्यर को मेरे वार में लिखने की बात सोची। पर अब वह योजना कम-से कम इस समय तो रद्द हो गई है। अब बापू मुझे तावणकोर के बजाय बिहार भेज रहे हैं और आज मैंने राजेद्र बापू को पत्र लिखा है। इन दिना उत्तर बिहार में वर्षा के कारण मौसम बहुत खराब होगा। वहा छादी का काम काफी

प्रगति कर चुका है इसलिए सम्भव है मैं दक्षिण बिहार का दौरा कर। राजेन्द्र बाबू मुझे जरूर बुलाना चाहेंगे क्योंकि ज्यो ही उन्हें मालूम हुआ कि मैं सीमा प्रांत वापस नहीं लौट रही हूँ उन्होंने मुझे बिहार जान का सुझाव दिया था।

मैं दिल्ली में अपनी जो चीजें छोड़ आई हूँ उनके सम्बन्ध में मेरा कहना यह है कि मुझे यह तो पता नहीं था कि मुझे कहा भेजा जायेगा जथवा किस प्रकार का काम मेरे मुपुद किया जायगा इसलिए उन्हें अपने साथ लिये फिर्ना मैंने उचित नहीं समझा। उनमें से अधिकांश घरल काम काज के बतन भाड़े जादि हैं और जब तक मैं कहीं जमकर डेरा न डालूँ मेरे लिए उनका कोई उपयोग नहीं है। सीमा प्रांत में मुझे इन चीजों की जरूरत थी क्योंकि मैं अपना प्रबन्ध अलग जोर स्वतन्त्र रखना चाहती थी। इसलिए यदि कोई असुविधा न हो तो मैं चाहूंगा कि फिलहाल मेरी चीजें दिल्ली में ही रखी रहे। बिहार जाकर देखूंगी कि क्या करना ठीक रहेगा।

बापू आज रात को फ्रिजियर में लगे रहना हो रहे हैं। जो दल साथ में है उसकी हालत ठीक नहीं है। महादेव के प्रांत में दद है डाक्टर के पास गये हैं शायद वह कुछ कर सकें ताकि वह बापू के साथ जा सकें। प्यारलाल के टासिना में गूजन आ गई है इसलिए उन्होंने भी अभी तक तय नहीं किया है कि बापू के साथ जाए या नहीं। यदि प्यारलाल नहीं गये तो सुशीला भी जान सके जायेंगी, और सुशीला एक गदता बाबा भी जाना नहीं हो सकेगा क्योंकि हाल की बीमारी के बाद स उन्हें शुभूपा की जरूरत रहती है। अब बापू के साथ जान योग्य केवल बनू और महादेव का लडका नारायण रह गये यशर्त कि वह अपने बाप में अलग रहने में समय हा। या मैं यह आशा करती हूँ कि अंत में सभी जान लायक स्थिति में हा जायेंगे।

बापू विलकुल स्वस्थ हैं। समुद्र की वायु ने उनका बहुत उपकार किया है। वह पशावर न जाकर सीधे हजारा जायेंगे, इसलिए वहां के पहाड़ों में समय बिताने में उन्हें बड़ा आनंद आयगा। बापू का ऊंचाई की विशेष चिन्ता नहीं है और यहां डॉक्टरों का कहना है कि ६००० फीट की ऊंचाई तक चिन्ता की कोई बात नहीं है। मरी और आपकी भी यही कठिनाई है। घर में प्रति महानुभूति दिग्गजों के लिए कम-से-कम एक आदमी तो मिला।

जब तक राजेन्द्र बाबू का उत्तर नहीं आयगा मैं ३६ दिन तक यहीं ठहरी रहूंगी। मैंने उन्हें तार द्वारा उत्तर भेजने की लिखा है। मुझे कहा पशव डानकर

३८२ बापू का प्रेम प्रसादी

काम म जुटना है, इस बाबत में आपका सूचना दूगी ।

सप्रेम,
मीरा

पुनश्च

क्या सीमा प्रात की उस सूत कातन की मशीनरी के बार म कुछ मुनन म आया है ?

११०

बिडना हाउस
माउण्ट प्लेजेंट रोड
बम्बई
५ जुलाई, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

मेरे एक दात म इतनी पीना है कि साथ भजा पत्र लिख चुकने के बाद आपकी अलग से पत्र लिखने लायक हिम्मत रही ही नहीं । पर जा सामग्री साथ भेज रहा हूँ उसमें आपको सारी खबरे मिल जायेंगी और उन्हें दुहरान की आवश्यकता नहीं है ।

हम लोग आज रात को सीमा प्रात के लिए रवाना होनेवाले हैं पर बहुत कुछ दत्त चिकित्सक के ऊपर निर्भर है क्या पता वह रोक रखे । दुर्भाग्य से प्यार लाल के भी एक दात म तकलीफ है और शायद आपरेशन कराना पड़े । यदि वह भी नहीं जा सके तो विचित्र स्थिति उत्पन्न हो जायेगी क्योंकि तब कनु और मेरे नडके की छोड़ और कोई उनका साथ नहीं दे पायगा और बापू जाने पर तुल हुए हैं हा ।

आपका,
महात्मा

१११

बलकृष्ण

७ जुलाई १९३६

प्रिय मीराबेन

मुझे यह जानकर धार निराशा हुई कि अतः मैं आपका त्रावणकोर जाना नहीं हो सका। 'मेरे मन कुछ जोर है, विधना के कुछ और। जाशा है भविष्य में विधाता की ऐसी कृपा होगी कि हमारे मनोरथ अधिक सफल होंगे।

स्थिति काफी अधिकारपूर्ण है। बापू की नूतन प्रणाली की खूबियाँ उनके जाने के बाद समझ में आयेंगी। पर जो लोग बीजा के अच्छे बुरे हान का निणय उनके परिणामों से करते हैं उन्हें तो यही प्रतीत होगा कि बापू की नूतन प्रणाली के कारण राजकोट तालचर और अन्य स्थान अब पहले से अधिक सुखद स्थिति में हैं। पता नहीं, वाइमराय का दिमाग किस दिशा में काम कर रहा है। मैं उनसे मिलना चाहता हूँ पर ऐसा लगता है कि सदियों से पहले उनसे भेंट नहीं होगी। क्या शिमला में अधिकारियों को बापू की नूतन प्रणाली की खूबियाँ जरा भी अच्छी लगी? मुझे तो काफी शक है। भूरे बीच बीच में अच्छे खास लेख लिखता रहता है पर अधिकारियों की दुनिया को ऐसा लगता है कि बापू की शक्ति सामर्थ्य अब समाप्त हो गई है, जधवा उन पर बुढ़ापे की सनक सवार हो गई है नहीं तो ऐसा कौन आदमी होगा जो होश हवास दुरुस्त रहते अपनी गलतियाँ क्यूँलेगा? पर उन लोगों ने तो जीवन भर बापू को गलत समझा है। जो भी हैं भगवान् उनकी सहायता करेगा।

यह जानकर खुशी हुई कि आप बिहार जा रही हैं। यदि बिहार का अधि-हजारीबाग और रांची भी हो तो आप मेरी जमींदारी में ही डरा डालकर जी भरकर काम क्या न करें? रमणीय स्थान है। मैं उन पर अब तक कोई जाठ लाख रुपया लगा चुका हूँ पर आमदनी एक पस की नहीं है। भले ही आप जमींदारी के विरुद्ध जहाद खड़ा करें मैं बेफिक्र रहूँगा। वहाँ के लोग सबभुक्त दरिद्र हैं और अधविश्वाम के शिकार हैं। उनमें रहकर समाज कल्याण का काम काफी किया जा सकता है। मुझे यह कहते हुए सज्जा होती है कि जबसे मैंने यह जमींदारी छोड़ी है, वहाँ एक बार भी नहीं गया हूँ। सच तो यह है कि मैंने उनमें कभी रस नहीं लिया। पर आपको वहाँ की अवाहवा भी भायेगी और वहाँ के निवासी भी

जल्द लगे और हाँ सकता है कि आप उनके किसी काम ही आ जाए। पर मैं समझता हूँ आप राजेन्द्र बाबू के जादेश के अनुसार आचरण करनी और आपका कहा कहा जाना चाहिए इसका फसला भी वे ही करेंगे।

हाँ हम आपको सारी सम्पदा का दिल्ली में भावधानी के साथ सुरक्षित रखेंगे। आप निश्चित रहिये ऐसा कुछ बदोबस्त कर दिया जायेगा माना आपका चीजें इम्पीरियल बैंक की तिजारी में रखी हैं। पर मुझ तक ऐसा लगता है कि आपको उनकी जरूरत कभी नहीं होगी। और कौन कह सकता है आपको सरहदी सूब में दुबारा जाना पड़े।

आज महादेव का एक पत्र आया है, जिसके साथ उन्होंने जगाथा के नाम लिखे पत्र की नकल भजी है। बापू के नाम वाइसराय के पत्र की नकल भी है। मन बड़ा उदास हो रहा है। यह सब कुछ इस समय हो रहा है जब अंतर्राष्ट्रीय स्थिति इतना खराब है। ब्रिटन रूस से संधि की याचना कर रहा है। वह भारत के साथ संधि क्या नहीं करता? पर जानबुल एक विचित्र जीव है। वह मथर गति से चलता है और उसका आचरण मूखता से ओत प्रोत रहता है। हाँ यह अवश्य है कि वह किसी न किसी तरह पार पा जाता है। पर क्या यह सद्गुण है? मैं स्वगत यही प्रश्न करता रहता हूँ।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक रहता होगा।

सप्रम

धनश्यामदास

सुश्री मोरारज
बम्बई

भाई धनश्यामदास

डेप्यार, काम के बाग में विशारलालजी ने जो फसला किया है उसकी एक नकल तुमको भेजी गयी है। उसमें जा तुम्हारे बरन का है मा कर दीजिय। ऐसे हाँ मैं ल मोनारगयणजी और परमश्वरीप्रसाद का लिखा है।

आजकल मैं जा लिख रहा हूँ वह मेर हृदय मयन का शब्द चित्र है। लेकिन हिंसा के इतने अविर्भाव में वाचा बचारी क्या कर सकती है? इस खयाल से कई बार कलम बन्द करने का दिल होता है, लेकिन राकी नहीं जाती है। दिल की बात मुनाता हूँ।

नलिनी बाबू कदिया को छुडान में कुछ नहीं कर सकत है। इस प्रदेश में शायद एक मास जायेगा। उससे अधिक तो नहीं। सम्भव है काश्मीर हो आऊँ।

बापु के आशीवाद

११३

२ ननवान काट

एलमन ब्रिज राड एस० डब्ल्यू० ११

१४ जुलाई १९३६

मर प्यार गाधीजी

महान्त्र कहते हैं कि मैंने कुछ भी लिख बिना काफी समय गवा दिया है। मैंने जान बूझकर कुछ नहीं लिखा, क्योंकि इतने दिन यहाँ में अनुपस्थित रहने के बाद मैं सभा मोसाइटिया में भाग लेकर और मुलाकातें करके यहाँ के बारे में आपका पूरी जानकारी भेजना चाहती थी। आपको मेर समुद्री तार से आश्चय हुआ होगा। मैं समझता गई थी पर मैं पूरा अभिप्राय जानना चाहती थी और हरिजन से पता चला कि यही क्या खुद भारत में भी लोग बाग यही चाहते थे।

यहाँ जो-कुछ हुआ उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है यहाँ वापस लौटने के तुरंत बाद मैंने लाइ जेटलड से भेंट की दरखवास्त की क्योंकि मैं जो बात बाद में साक्ष्यनिक रूप से बतानेवाली थी पहले उन्हें बताना चाहती थी। मैंने इंडिया आफिसवाला से तथा अय महत्वपूर्ण व्यक्तियों से कुल मिलाकर चार मुलाकातें की। यह मैं आरम्भ में ही बता दूँ कि यहाँ मैंने लोगों को मेरी बात सुनने के लिए इतना तत्पर पहले कभी नहीं पाया था। इसका प्रधान कारण यह था कि मैं वहाँ से काल हीथ का जो पत्र भेजती रही थी, उनका उपयोग करके उन्होंने भारत सचिव को पूरी पूरी जानकारी दे रखी थी। इस प्रकार जब मैं यहाँ वापस लौटी,

तो माग खुला पाया। यदि आप इस बात को ध्यान में रखें कि इस समय यहाँ लोगों का ध्यान 'युद्ध या युद्ध नहीं' के प्रश्न पर केंद्रित है तो आपको मर कथन का मम समझन में दूर नहीं लगनी। क्योंकि यहाँ बातावरण में जो तनाव है उसकी गुरता समझना जरूरी है जो देखकर ही समझी जा सकती है। शुरू शुरू में मैंने अपनी सारी कोशिशें उस सूचना को फलान में जा मैं भारत से लाई थी और भारतीय स्थिति का लेकर जो गहरी चिंता का विषय है उसकी यहाँ जानकारी सम्बन्धित लागा को दन में लगाई। यहाँ रियासता के बारे में बहुत कम जानकारी है और मैंने सब कुछ अपनी आंखों से देखा था और काना से सुना था इसलिए मैं यहाँ सारी बात कह सुनाने की स्थिति में हूँ। मैंने वर्धा में जा कई एक सप्ताह बिताया था उनकी वकीलत मुझे पच्छिमी का सही नाम हो गया था। मैंने दिल्ली में जो समय बिताया वह भी इस अवसर पर उपयोगी रहा। उत्कल में जो कुछ हो रहा था उसका नाम मुझे था ही। मेरा राजकाटवाला अनुभव विशेष रूप से काम आया। सबसे पहले मैंने अपनी सारी सूचना भारत ब्रिटेन मंत्री गोष्ठीवालों के पास पहुँचाई। उसके बाद चशम हाउस में एक सावजनिक सभा की गई जिसका सभापतित्व लाड लादियन ने किया। ऐसी सभाओं के द्वारा नयी सभाओं का आग्रह होता है। एक सभा के सभापति लाड सेंकी थे उसके बाद से मैं विशेष रूप से काय व्यस्त रही।

हम लोग जिस लाइन पर चल रहे हैं वह भी बता दूँ—भारत की स्थिति गम्भीर है सलाह-मशवरे की बहद जरूरत है। मैंने गाँधी के बुलटिन के निमित्त जो लेख लिखा था उसकी एक प्रति साथ रखनी हूँ। इस लेख में तो आपको पता चलेगा कि मैं किन किन बातों पर ज़ार देनी आ रही हूँ।

रियासतें

मैंने भारत से काल हीथ का एक पत्र लिखकर एक ऐसी पुस्तिका तयार करने की आवश्यकता पर ज़ार दिया था जिसमें यथासम्भव मारी स्थिति यहाँ की जनता के सामने पेश की जाय। उस पुस्तिका की एक प्रति अलग टाक से आपको भेजी जा रही है। उसकी सामग्री के लिए होरस अलेक्जण्डर और श्री प्रट विशेष रूप से जिम्मेदार थे। मेरे अनुभव को ध्यान में रखकर भुवस पुस्तिका की भूमिका लिखने का कहा गया था। यह पुस्तिका पार्लियामेंट के गिने चुने सदस्यों के पास भेजी जा रही है। साथ में उन तीन सदस्यों का एक पत्र भी रहेगा जिन्होंने पार्लियामेंट भवन में भारत-सम्बन्धी बातें जानने के लिए उम दिन म्यूरिअल सेंटर का तथा मुझे एक बैठक में बुलाया था। वह पुस्तिका समाचार पत्रों और अग

व्यक्तियों के पास भी भेजी जायगी। भारतीय नरशा का अपक्षित उत्तर जल्दी ही प्रकाशित होने की सम्भावना है यह पुस्तिका उनका उत्तर से उत्पन्न हुई स्थिति का निपटन में काफी उपयोगी होगी। इधर यह सब हा रहा है उधर आपके और वाइसराय के बीच हुए पत्रा के जादान प्रदान की नक्लें महादेव ने मुझे अपने पत्रा के साथ भेजी हैं। महादेव का पहला पत्र मिलते ही मैं सर फाइण्डलेटर स्टीवाट से भेंट करने गई उस समय लाड जेटलड बाहर थे। सर फाइण्डलेटर स्टीवाट से विस्तार के साथ बातचीत हुई। आप वाइसराय के साथ सम्पर्क बनाय हुए थे इसलिए मैंने इस मामले में सावधानी बरती कि कहीं ऐसा न लग कि घटना स्थल पर मौजूद आदमी के पीछे यह सब किया जा रहा है। पर मैंने अपना अभिप्राय स्पष्ट कर दिया। मैंने बताया कि यदि राज नवाब अपनी अपनी रियासत में सुधार लाने के निमित्त आपकी अथवा किसी की सहायता की याचना करें और उन्हें बसा करन से रोका जाय तो इसका लेकर हम सबका घोर चिन्ता होगी। मुझे यह ता पता लग ही गया कि इस बारे में कोई नीति निर्धारित नहीं की गई है पर मैंने भारत में रहकर इस बारे में जितना कुछ सुना था वह सब मैंने सर फाइण्डलेटर का कह सुनाया।

महादेव की दूसरी चिट्ठी के साथ वाइसराय के उत्तर की नक्लें आई हैं और इससे याकुलता उत्पन्न हो गई है। महादेव कहते हैं कि आपका धार निराशा हुई है। होना स्वाभाविक ही है, पर वाइसराय के पत्र का कई बार पढ़ने के बाद भी मुझे यह नहीं लगा कि वह इतना निराशाजनक है। वाइसराय फूँक फूँककर काम रखते हैं इसलिए क्या आपके लिए उनके पूरे ध्यान वाले शांति का कुछ अधिन उदार आशय ग्रहण करना सम्भव नहीं है? मुझे ता ऐसा प्रतीत जाना है कि आपका वाइसराय से मुलाकात करन में देर नहीं करनी चाहिए। आप इस समय सरहद के इलाके में हैं। क्या आपके लिए इस यात्रा के दौरान उनसे मिलने के लिए शिमला जाना सम्भव नहीं है? निणय को अस्वीकार करने के सम्बन्ध में आपन जो कदम उठाया था तब से आप उनसे नहीं मिले हैं। मैं यह जानती हूँ कि आपन उन्हें पत्र लिखा था पर यदि आप अपनी यह नूतन प्रणाली उन लागों को समझाना जरूरी समझते हैं जा आपके निकटतम सम्पर्क में हैं ता क्या आप उस वाइसराय-जस आदमी को जो भाति भानि के आदमियों से घिर रहते हैं समझाना जरूरी नहीं समझते? आपके और वाइसराय के बीच जा पत्र-व्यवहार हुआ है उस पत्र के बाद काल हीय ने महादेव का एक पत्र लिखा है। उस पत्र में काल हीय ने कहा है कि आपकी नूतन प्रणाली का हृदयगम करने के लिए आध्यात्मिक दृष्टि और काम की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी लिखा है कि इस प्रणाली का

तत्काल ग्रहण नहीं किया गया ता इस पर उन्हें आश्चर्य नहीं हुआ है। मुझे इस बात का पक्का यकीन है कि आपका वाइमराय से बातचीत करने का अवसर मिलना चाहिए। आप दोनों में क्या कोई सफट उपस्थित होने पर ही भेंट होगी ? क्या आप सीमा प्रांत से वापस लौटते समय उनसे मिलकर उस प्रश्न का उत्तर तलब नहीं कर सकते जिसकी उद्धान उपेक्षा कर दी है ? यदि आप उन्हें चर्चित पायें तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। वह आपसे यदाकदा ही मिलते हैं जबकि आपक मन की बात जानने के लिए घनिष्ठतर और बार बार के सम्पर्क की जरूरत है। सम्भव है आपने पहले से ही ऐसा कुछ करने की बात सोच रखी होगी।

सघ की बाबत

मरे देखन में आया है कि यहा लागो की अब भी यही धारणा बनी हुई है कि सघ की याजना स्वीकार कर ली जायगी। इस धारणा के मूल में प्रातीय स्वायत्त शासन-मन्व धी वस्तुस्थिति है। साथ में भारत में जा सूचना प्राप्त हुई है उससे भी इस धारणा को बल मिला है। अनेक लोग लोदियन के विचार के हैं। लादियन इस योजना के दोषा से अनभिन्न हैं पर उनका कहना है कि जब याजना अमल में जायगी तो त्रुटिया दूर हो जायेगी। कागज पर याजना भल ही जायवहाय प्रतीत हो अमल में आने पर वह जायवहारिक सिद्ध होगा। एकमात्र इसी योजना के विभिन्न पटलुओ पर इतने विस्तार के साथ विचार हुआ है। जवाहरलाल के रच का सबका पता है सुभाष बोस की इस धारणा की बात भी सबका मालूम है कि अल्टीमटम देने का समय जा पहुँचा है। जब मैं इन सारी बातों पर विचार करती हूँ ता मुझे लगने लगता है कि थोड़े बहुत सशोधन के साथ आप याजना को मायता प्रदान कर देंगे।

उत्तर में मैं वह बात दुहराना चाहती हूँ जा आपन मुझसे मरी भारत-यात्रा के दौरान कही थी। आपन कहा था कि आप यह विश्वास करने से इन्कार करत हैं कि ब्रिटिश सरकार जापक विराध के बावजूद योजना का भारत पर लाइ देगी। आपन अमेरिकी प्रेस रिपाटर का हाल ही में जा सख दिया था मैं उसका उद्धरण दे रही हूँ। पर इस सबका मूल धारणा पर अधिक प्रभाव नहीं पडता है।

आपन अपन एक पत्र में कहा था कि सघ की बात न जब गौण स्थान ग्रहण कर लिया है। पर जब कुछ ही मिनो में भारतीय नरेशा का उत्तर उपलब्ध हो जायगा ता यह प्रश्न फिर सामने जा खडा होगा। मैं इस बारे में आपका अथवा वायकारिणी को विवश तो नहीं करना चाहूंगी पर इतना अवश्य कहूंगी कि आप स्थिति को यहा व्याप्त दिल्केण से देखने की कोशिश कीजिए। यह दश इस समय बडी शकट में फसा हुआ है। इसलिए वह यह जानना चाहेगा कि यदि

सर मारिम ग्वायर यहा आ पहुचे हैं । हम लोग उनके साथ सम्पर्क बनाय हुए हैं । मुझ भारत से एग पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें बताया गया है कि आपका राज कोटवाले निणय के सम्बन्ध में सर मारिस न योग्यपूण उदगार व्यक्त किये थे । मैं आपका यह बता देना चाहती हू कि उनका स्वभाव इस प्रकार का नहीं है । वह तो आपको भाल समझना चाहते हैं । जब वह वापस लौटें ता आप स्वाभाविक ढंग से भेंट का आयोजन अवश्य कीजिए ।

मेरा प्रेम सन्देश ग्रहण करें ।

अगाथा हेरिमन

पुनश्च

तालचर से मुझ सीधे समाचार नहीं मिलत । वहा की शासनीय स्थिति अब सुधरी होगी ? भूनाभाई यही हैं पर आगामी रविवार का जा रहे है । उनसे कुछ बातचीत हुई थी । मैंने उन्हें यहा की स्थिति से पूरी तरह अवगत कर दिया है ।

११४

कलकत्ता

१६ जुलाई १९२६

प्रिय महादेवभाइ

राजनैतिक कानिया की रिहाई के बारे में ननिनी बाबू के साथ बात हुई थी । उन्होंने वही बात कही जिसका मैंने अनुमान लगा रखा था । उन्होंने कहा कि यदि इस प्रश्न के साथ उचित ढंग से निपटा जाये तो स्थिति में सुधार हा सकता है । इसलिए मैंने तुरत विधान बाबू से यह प्रसंग उठाया और कहा कि उन्हें तुरत बिदया को समझा बुझाकर भूख हडताल का अंत करने को राजी करना चाहिए और उनके बाद सरकार से समझौते की बात चलानी चाहिए । विधान नाजिमुद्दीन से मिल लिये हैं और बिदया में शायद बात मिलेंगे । देखें क्या हाता है ।

बापू को बता देना ।

सप्रम

घनश्यामदाम

श्री महादेवभाई देसाई

एटावा

११५

काप्रेम शिविर,

रामगढ़

२८ जुलाई १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके दा पत्र मुझे राची मे मिल गए थे। मैं जवाब देने से रूकी रही क्याकि मैं जापकी कुछ अधिक निश्चित रूप से बताना चाहती थी।

मैं बिडला हाउस म बडे आराम से रही। जब मैं वहा पहुची तब राजेन्द्र बाबू की तबीयत अच्छी नहीं थी पर मरे वहा से रवाना होने तक वे ठीक हो गए थे। अब मुझे आशा है कि काफी सपर करने लायक हो गय है यदि आप कलकत्ता म हूए तो उनसे नि सदह मिलेंगे ही।

मैंने यहा जाठ गावा म घूम फिरकर देखा। साथ म जखिल भारतीय चरखा सघ के दो कायकत्ता थे। बारिश काफी हो रही थी इसलिए यह काय कुछ कष्ट-प्रद मिद्ध हुआ पर यहा की स्थानीय स्थिति के वार म हमारी काफी जानकारी हो गई। हम इस नतीजे पर पहुचे कि बारिश के खत्म हान पर ही काम ठीक ढग से प्रारम्भ किया जा सकता है। किसी गाव मे जाकर डेरा डालना असम्भव है क्याकि वर्षा म रहने योग्य कोई घर नहीं मिलगा, और हम खुद घर तयार करने स रहे। यहा की आबोहवा भी कुछ अच्छी नहीं है और ऐसी परिस्थिति म मेर लिए अपना स्वास्थ्य बनाय रखना सम्भव नहीं है। इसलिए हमन यह तय किया कि फिनहाल मैं रघ्नमत लू जीर फिर वापस जाकर लगन क साथ काम म जुट जाऊ। इसलिए मैं आज रात सेगाव के लिए रवाना हो रही हू। मिनम्बर के अंत म अथवा अक्टूबर के आरम्भ म वापस लौटने की आशा ह। यहा बसत मिनकुल चना गया है पर उसे पुनर्जीवन प्रदान करना सम्भव है। यहा की स्त्रिया इस कला को मोघन का राजी हैं जीर कई एक् वयस्क स्त्रिया को इम कला का अब भी स्मरण है। वे मोटा कपडा पहनती हैं और उन्हें यह भाता भी है। कुछ बड पुरुषा को अभी तक याद है कि किस प्रकार कभी उनके घरो म ही कपडा बुना जाता था जो ५ से ८ माल तक चलता था। काप्रेस का अधिवेशन आगामी दिसम्बर म होगा, इसलिए समय थाला रह गया है पर हमे इमी बीच कुछ-न-कुछ करना है। हमयह आशा रगाए बडे हैं कि काप्रेम रपय पस से कुछ मदद करगी फोकि चरत्रा सघ के लिए महत्ता एग तब केन्द्र का बरय भार उठाना कठिन मिद्ध होगा। आशिर हम नागा ने काप्रेम का नाम गोनन करने के लिए ही यह जगह छाटी है।

वगैरे विचार म अ य जेव त्तम म्था है जो इम काम क लिए उत्कृष्ट सिद्ध हगि ।

आगिर आपनी जमीनारी है कहां पर ? विमी त्ति यह जगह दपता पाटूगा यदि ँ लाय म्पया पूतने क तद भा आपनी आमदनी धन की भी नहीं है तो दान म कुछ पाता अवश्य है । मुझे ता त्ता मगता है कि भगवान् न आपना और अनक मदगुण प्रदान किय पर सावजतिन म्पया का गुण प्रदान कस्त-कस्त रह गया । विमी त्ति हम ताता साथ साथ त्त क इम अतन का निरीक्षण जोर यहां के निवासिया का अध्ययन करेग ।

मन का विवाद स भ्रमनवाती कुछ बानें अवश्य हुई हैं । भारतीय त्तता क साथ म्पक म्थापित करन क मुतायवान बापू क पत्र का वाइमराय न जा उत्तर त्तिया उगत त्ति त्तप उठा मै ता नती मममती त्ति यह वाइमराय का कृतिव था । जेव बापू न वह पत्र पढ़ा ता यह उनका मीन दिवस—गामवार था । मैन बापू स कहा मुष ता वाइमराय लाचार-मा प्रतीत होता है । मै इमका बाता म उड़ा दना ताहती थी । पर बापू न एक पुर्जे पर त्तिया वाइमराय लाचार गरी है मरे जम आत्मी म त्तग जा गया है और मुगत पीछा छुडाना चाहता है । कन पत्रा म यह जफतह छपी थी त्ति बापू महामतिम के साथ मुलाकात करन धान हैं । विनकुन वाटियात बा है । वाइमराय बापू स त्तग मन ही आ गया हा पर एत-न एक त्ति उसे बापू क साथ माधातार करना ही होमा । यदि य अत्रेज लोग साथ म्पक क इच्छुक नहीं हैं ता बापू की यह नूता प्रणामी उह वेतरह म्पस्त करन का बापी है । हमने जा उह दूर रपन की गीति बरती थी उगत उह अच्छा खामा बटाना मित गया था ।

उदामी क चाहे जितने कारण उपस्थित रह जहा बापू हैं वहा मै उदाती क अस्तित्व त्त से इ-बार कर दूगी । त्तस महामातव का उगवे जीवा-वान म डीर टोक न मममता जा सके यह कोई अनहानी बात नहीं है । आशचय तो इम बात का है कि उहे इतना कुछ समथा जाना भी सम्भव हुआ । भगवान् न इत आदमी की कलिजात म अननरित त्तिया है इसलिए उम समझना लागे क लिए कस सम्भव हो सकता है ? क्यों क्या आपकी यह धारणा नहीं है कि वास्तव म यही बात है और इमलिए जा कुछ हो रहा है स्वाभाविक है ।

फिनहाल इतना ही मुझे विस्तर गाल करना है और पल जकरत स ज्यादा नम्बा हा चला है ।

११६

वाइसराय शिविर,
भारत
२८ जुलाई, १९३६

प्रिय मिस्टर गांधी,

मैं आपको यह सुझाव देने की बात सोच रहा था कि आगामी मास जब मैं उड़ीसा से वापस लौटू तो हम दोनों मिलें, पर मैंने पत्रा म देखा कि आप वर्धा वापस लौट रहे हैं। यदि आपके लिए सयोगवश आगामी ५ अगस्त शनिवार को दिल्ली आना सुविधाजनक हो, तो आपसे पुन भेंट करके मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी। मैं ४ तारीख शुक्रवार की सध्या तक दिल्ली वापस आने की आशा करता हू। ६ तारीख का सारा दिन हिसार मे दुर्भिक्ष सम्बन्धी राहत का निरीक्षण करने मे लग जाएगा। इसलिए शनिवार के दिन प्रात काल ११ बजे का समय आपके लिए सुविधाजनक हो तो मुझे आपसे मिलकर बडा ह्य होगा।

२ आपसे मिलने का कोई विशेष प्रयोजन नही है पर भेंट हुए कई महीने बीत गए हैं अत आपसे पुन मिलने के अवसर वा मैं स्वागत करुगा।

भवदीय,
लिनलियगो

श्री मो० क० गांधी

✻

११७

इंडिया बुलेटिन

अगाथा हैरिसन के कुछ सस्मरण

जुलाई अगस्त १९३६

मैं चौथी बार भारत होकर अभी लौटी हू। जब मैं पिछले अक्टूबर मे यहा से रवाना हुई थी तो किसी ने यह टिप्पणी की थी ' भगवान का लाख-लाख शुक्र,

संसार भर में भारत ही एक ऐसा स्थान है जहाँ शांति धराज रही है।" 'शांति' से उसका क्या अभिप्राय था सो मैं नहीं जानती, पर मत्वीपूण और आतिथ्य सत्कार की भावना से भरपूर इस देश में रहकर मैंने जो धारणा बनाई है उस याद करती हूँ तो यह टिप्पणी विचित्र-सी लगती है। पिछले एक वर्ष से वहाँ की देशी रियासतों में जो भारी आन्दोलन चल रहा है क्या उसे शांति कहा जा सकता है ? और सघ-योजना के प्रति वहाँ जो विरोध और रोष की भावना व्याप्त है क्या उसके अमल में आने से शांति स्थापित हो सकती है ? योजना के आलोचना में मतभेद है यह मैं स्वीकार करती हूँ। राजा और नवाब उसका अपने निजी कारणों से विरोध कर रहे हैं। हाल में हुई उनकी बम्बई की अनौपचारिक बैठक की जो रिपोर्ट मिली है उससे पता चलता है कि उनके दिमाग में क्या चीज काम कर रही है। मुसलमान योजना के विपक्ष में हैं ही। और इम बुलेटिन के पाठका को पता ही होगा कि इस योजना के वार में राष्ट्रवादी भारत का क्या दृष्टिकोण है।

मैंने वहाँ जो कुछ देखा और सुना उसे याद करके घोर चिन्ता लेकर लौटी हूँ। मैं वहाँ ब्रिटिश महिला समाज के संस्थानों की एक प्रतिनिधि के रूप में अखिल भारतीय महिला परिषद के बम्बई-अधिवेशन में भाग लेने गई थी। मेरे जिम्मे कोई काम नहीं था। पर उम अधिवेशन में भाग लेकर मुझे जो महत्वपूर्ण अनुभव हुआ उसका वर्णन यदि स्थान रहता तो इस बुलेटिन में अवश्य करती। मेरी यह धारणा है कि वहाँ का महिला-समाज यह अधिक पसन्द करेगा कि मैं आपको बताऊँ कि भारत की स्थिति क्या है क्योंकि वहाँ के महिला समाज का आन्दोलन वहाँ की देश-यापी स्थिति का ही एक अंग है।

वैसे मैंने कोई योजना स्थिर नहीं की थी पर मैं यह अवश्य देखना चाहती थी कि वहाँ प्रांतीय सरकारें कसी चल रही हैं। जब मैं वहाँ १९३६ ३७ में गई थी, तो निर्वाचन हो रहे थे। मैं सरहदी सूबे में जाकर वहाँ के निवासियों तथा वहाँ स्थित ब्रिटिश लोगों के साथ भी बातचीत करना चाहती थी। मैं चाहती थी कि वहाँ विभिन्न विचारों के लोगों से मिलूँ और उनकी विचारधाराओं की पूरी जानकारी हासिल करूँ। मैं उस काल के अनुभवों की बात करती हूँ तो मुझे अधिकाधिक विश्वास होने लगता है कि सघ में जुटे हुए लोगों के बीच मुक्त रूप से तथा बिना किसी प्रकार का स्वाध-साधन का उद्देश्य लेकर जाना कितना मूल्यवान सिद्ध होता है। मैं अनुभवों से भरपूर उन दिनों की याद करती हूँ तो मेरा यह विश्वास और भी दृढ़ होता जाता है कि जब लाग सघ में रत हा तो उनके बीच नि स्वाध भाव से मुक्त रूप से और अपनी मान मर्यादा की रक्षा करने की

चिन्ता से सबथा मुक्त होकर जाना कितना मूल्यवान सिद्ध होता है ! अपनी ऐसी यात्रा के दौरान मनुष्य को इस दृढ़ भावना से प्रेरित रहना चाहिए कि बड़े-बड़े मामले बलप्रयोग की अपेक्षा शांति के साथ समझौते की बातचीत द्वारा अधिक सतोपजनक और फलप्रद ढंग से निपटाय जा सकते हैं ।

मैं कुल मिलाकर चार बार दिल्ली गई, अंतिम बार उस समय जब राजकोट वाले उपवास के दिनों में मिस्टर गांधी ने वाइसराय से बात की थी । इन चारों यात्राओं के दौरान मुझे केन्द्रीय शासन का कठिन कार्य सम्पादन करनेवाले उच्च-पदस्थ अधिकारियों और अन्य अनेक लोगों से बात करने का अवसर मिला । आपको उन शानदार इमारतों में जाकर कुछ आभास होता है कि भारत-जैसे बड़े देश का शासन-कार्य कितनी बड़ी समस्या है । पर यदि आप भारत की सच्ची ज्ञाना लेना चाहते हैं तो आपको अत्यन्त जाना होगा । भारत की नब्ज जिन लोगों के हाथ में है वे इन भव्य प्रसादा में वास नहीं करते । वे लोग भारत के नेता हैं । उदाहरण के लिए महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और सुभाष बोस भिन्न परिस्थितियों में रहते और काम करते हैं । दुर्भाग्य से मेरी भारत-यात्रा के अधिकांश समय मि० बोस बीमार रहे । पर मैंने उनसे कई बार बातचीत की । अंतिम वार्ता अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की मई मास की बलकत्ता की बैठक के तुरंत बाद हुई । उस अवसर पर उन्होंने मुझे फारवर्ड ब्लाक के गठन की पृष्ठभूमि का दिग्दर्शन कराया । मुझे वे छह दिन भी याद हैं, जब मैं जवाहरलाल नेहरू के यहाँ इलाहाबाद में ठहरी थी । प्रातःकाल से रात तक उनके घर का बरामदा उनके साथ बातचीत करने के लिए लालाधित लोगों से भरा रहता था । संयुक्त प्रांत में हिंदू मुस्लिम तनाव ने उग्र रूप धारण कर रखा था और दोनों ही सम्प्रदायों के लोग उनकी सलाह लेने के लिए आते थे । साथ ही श्रमिकों के नेतागण भी, मजदूरों की समस्या का समाधान तलाश करने के निमित्त आते थे ।

जवाहरलाल नेहरू इस परिस्थिति से जिस ढंग से निपटते उनका ध्यान देख कर मैं आश्चर्यचकित रह जाती थी । उनकी दैनिक डाक काफी भारी होती है । उसमें भारत के बोलने वालों से आये पत्र तो होते ही हैं, विश्व के अन्य अनेक देशों से आये पत्र भी होते हैं । फिर समुद्री तार, देशी तार और टेलिफोन की निरंतर बजती रहनेवाली घण्टी । इस कार्यभार के ऊपर रियासती प्रजा मण्डल का भार भी आ गया था । मैं प्रजा-मण्डलों के लुधियाना अधिवेशन में भी भाग लेने गई थी । जवाहरलाल उसके सभापति थे । मैं उनकी सभाओं में भी गई थी । गांधी में आयोजित सभाओं में मेरी विशेष रुचि थी । दुभाषिये ने मेरे बठने की व्यवस्था सभा मंच पर की थी । वहाँ से मैं सभा में एकत्रित स्त्री-पुरुषों के चेहरों का अध्ययन

करती थी। वे धूप और गर्मी में भी लो चलकर अपने प्यारे नेता के दर्शन करने आए थे। जवाहरलाल उनसे सीधी-सादी भाषा में बात करत थे और उनकी दैनिक समस्याओं की चर्चा करते थे। पर वह उनकी समस्या को विश्व-व्यापी समस्या के साथ प्रयत्न करने में कभी नहीं चूकते। उन्होंने पिछले साल स्पेन और यूरोप में रहकर जो अनुभव प्राप्त किया था उसकी उनके मानस पर गहरी छाप थी। मैं यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाती थी कि वह सहज भाव से विश्व-व्यापी व्यथा का वर्णन करते और उनके श्रोताओं का भी वसी ही अनुभूति होती दिवाई देती। श्रोताओं की दृष्टि उनके चेहरे पर ही जमी रहती थी। कभी-कभी तो वह दो-दो घण्टे लगातार बोलते रहते थे।

अपनी वर्धा-यात्रा का वर्णन किन शब्दों में करूँ ? मैं वर्धा चार दफा गई। वहाँ से सेगाव जाना होता है जो मिस्टर गांधी का निवास स्थान है। यदि आप वहाँ कुछ देर तक ठहरें तो देखेंगे कि भारत के कोने-कोने से नेता लोग आकर एकत्र हुए हैं—और भारत ही क्यों सत्तर के अन्ध देशों के विभिन्न श्रेणियाँ और कोटियाँ के लोग वहाँ एकत्र होते हैं। मैंने देखा कि चीन जापान फिनलैंड जर्मनी आदि अनेक देशों के लोगो का मेला लगा हुआ है। वे सब अपने-अपने देश की समस्याओं का हल करने में अहिंसा का प्रयोग करने को आतुर थे। और विश्व के कानो-कोने से जो पत्र आत उनमें भी ऐसी ही जिज्ञासा का समावेश रहता था।

टेलिफोन कई मील दूर है। दो मील की दूरी पर एक डाकघर खोल दिया गया है जिससे चिट्ठी पत्ती भेजने और पाने की सुविधा रहे। यह प्रसन्नता की बात है कि मध्य प्रांत की सरकार ने वर्धा से सेगाव तक पक्की सड़क बनाने की मजूरी दे दी है। इस खबर से खुश होना स्वाभाविक है क्योंकि मैं वर्धा से सेगाव तक ५ मील का फासला बलगाडी से तय करके जाती थी। नागपुर ५० मील की दूरी पर है। वहाँ हवाई अड्डा है। प्रांत के मुख्य मंत्री तथा अन्ध मंत्री अपनी कठिन समस्याओं के हल की तलाश में मिस्टर गांधी के मागदर्शन और सलाह मशवरे के लिए हवाई जहाज द्वारा आत रहते थे। नित्य प्रति स्त्री-पुरुषों का मेला लगा रहता था। पर उस अवसर पर मिस्टर गांधी को जिस बात ने बेचन कर रखा था वह थी रियासतों की समस्या विशेषकर राजकोट की समस्या। देश भर में फैली हुई रियासतों से लोग वहाँ अपने दमन की कथन कहानी सुनाने आत रहते थे और खबरों का तो ताता ही लगा रहता था।

मैंने रियासतों के प्रश्न का अध्ययन यही रहकर किया था। अब मैं वहाँ सशरीर मौजूद थी और मुझे वहाँ की प्रजा की कहानी अपने कानों से सुनने को मिल रही थी। मैंने जान-कुछ सुना उसे लेकर मैं वर्धा से दिल्ली पहुँची और जानना चाहा कि

राजनतिक विभाग और उत्तरदायित्वपूर्ण अधिकारियों को इस सबध में क्या कहना है। दोनों ही पक्षों में भले आदमियों का सबधा अभाव नहीं था पर उनके बीच जो खाई खोद दी गई थी उसके दशन करके बड़ा दुःख होता था। रियासतों की समस्या बहुत जटिल बना दी गई है, और सभी पक्षां क समुक्त योगदान के द्वारा ही उसका हल खोजा जा सकता है और रियासतों की दशा सुधारी जा सकती है। इसके बाद मैं उड़ीसा गई और वहा लोगों से मिली। पालिटिकल एजेंट मेजर वजेलगैट की हरया कुछ ही दिन पहले हुई थी और वहा वातावरण में बेहद तनाव था। मैं अगुल में तथा उसके चारों ओर फले हुए शरणार्थी शिविर देखने गई। यहा तालचर और डेकानल के स्त्री पुरुष दास में बचने के लिए एकत्र हुए थे। मैंने इन शरणार्थियों की आप बीती पूछी और मेरा हृदय क्षोभ से भर गया। इधर इग्लैंड से मेरे पास पत्र आ रहे थे जिनसे पता चलता था कि किस प्रकार यूरोप के लोग इग्लैंड में आकर शरण ले रहे हैं और उनकी सहायता के निमित्त कितना कुछ किया जा रहा है। उड़ीसा में मैं वंसी ही समस्या का सजीव दशन कर रही थी। वहा के शरणार्थियों को अधिक नहीं तो कम-से कम वहा के निवासियोंके स्तरके अनुरूप सहायता पाने का अधिकार अवश्य था। पर मेरा खयाल है कि वहा ऐसी स्थिति कभी थी भी, इसका यहा बहुत ही कम लोगों को ज्ञान है—तफसील की बात जानना तो दूर की बात है। यह गनीमत हुई कि राजनतिक विभाग के लोग और कांग्रेसी नेताओं ने आपस में सम्पर्क स्थापित करके समस्या का हल तलाश करने की कोशिश की है। अभी भी वहा शरणार्थी शिविरों में कुछ शरणार्थी मौजूद हैं जो अत्यन्त दुःख का विषय है।

भारत की देशी रियासतों के बारे में हमारा अज्ञान बहुत है। हा वहा की कुछ बड़ी-बड़ी रियासतों के बारे में हम थोड़ा बहुत अवश्य जानते हैं। हमें यह भी मालूम है कि कई नरेशों ने अपनी रियासतों में सुधार लागू किये हैं। हम यह जानते हैं कि कई अन्य नरेशों ने भी प्रजा की जागति से विवश होकर सुधार-कार्य आरम्भ किया है। पर कुल मिलाकर ५६२ रजवाड़े हैं। इनमें से कुछ तो बहुत ही छोटे हैं। इन रजवाड़ों की प्रजा भी वही सब कुछ चाहती है जिसके लिए ससार भर के स्त्री-पुरुष सधप कर रहे हैं—नागरिक अधिकार मिलने जुलने की आजादी, वाणी की स्वतंत्रता, समुचित धाय-व्यवस्था और प्रजातन्त्रीय ढांचे की शासन व्यवस्था जिसमें प्रजा का योगदान रहे। एक सर्वोपरि सत्ता की हैसियत से हमारा यह कर्त्तव्य हा जाता है कि हम इन सभी ५६२ रियासतों में इन सारी चीजों की व्यवस्था करें। पर जब तक हमें वहा की वास्तविक अवस्था का पता नहीं लगेगा तब तक हम कुछ नहीं कर सकेंगे।

अब लदन वापस लौटने पर देखती हूँ कि लोग का ध्यान अबेल भारत को छोड़ सत्तार के शेष सभी भागा पर केन्द्रित है । क्या हम यह शतुरमुग जसा रूप तब तक अपनाये रहेंगे जब तक खतरे की घडा सचमुच सिर पर सवार न हो जाएगी ? और आनेवाले खतरे की घटनाओ की कोई जानकारी न रहन के कारण उस खतरे से निपटने के लिए सम्भव है हम कोई गलत काम कर बैठें । हम एक नया रास्ता ढूढ निकालना होगा । ऐसा करना नितात आवश्यक है । सघ की योजना की लेकर चलन के बजाय हम भारतीय जनता के साथ सलाह-मशवरा करें तो कसा रहे । भारत के लोग इस योजना व खिलाफ हैं सघ के खिलाफ कदापि नहीं हैं । मैं जानती हूँ कि भारत और ब्रिटेन दोनो ही देशो मे राज नीतिमत्ता का अभाव नहीं है इमलिए यदि सभी पक्षा के लोग एन साथ मिलकर बतमान स्थिति पर नये ढग से विचार करें तो एक सम्मानपूण माग खोज निवालना काई असम्भव कल्पना नहीं होगी । इस निमित्त महा के प्रत्यक स्त्री-पुरुष को आग्रह करना चाहिए ।

११८

तार

वर्धा

१ अगस्त १९३९

महामहिम वाइसराय

वाइसराय शिविर

अतिशय सेद है कि ५ तारीख को पहुचना सम्भव नहीं है विशपकर जबकि भेंट का कोई खास प्रयाजन नहीं है । जरूरी काम से सरहूद की घका दने वाली यात्रा की है । २० तारीख के बाद कोई भा दिन सुविधाजनक रहेगा ।

—गाधी

११६

वाइसराय शिविर

भारत

(पुरी)

२ अगस्त, १९३६

प्रिय मिस्टर गांधी

आपका तार अभी-अभी मिला। अनेक घयवाद। आप वहा से निकल पाने मे जिस कठिनाई का अनुभव कर रहे हैं, उसे मैं समझता हू। खुद मुझे आशका हो रही थी कि शायद आपके लिए वैसा करना सम्भव न हो और यही हुआ भी। मैं आप पर यात्रा करने के थम का भार ढालने के मामले मे हृद दर्जों के सकोच का अनुभव करता हू, और आपको जब कभी भेंट करने का मेरा सुझाव अनुकूल न लगे ता आप मुझे नि सकोच बता देंगे, इसकी मुझे पूरी आशा है। मैं आपकी सूचना के गलत मानी कभी नहीं लगाऊगा।

आपने जो यह सुझाव दिया है कि हम इस मास के अंतिम दिनों म मिलें सो बड़ी कृपा की है। जसा कि मैं पहले ही कह चुका हू मुझे किसी खास विषय पर बात नहीं करनी थी और आपसे दिल्ली मे भेंट करने का मेरा एकमात्र उद्देश्य यही था कि आपसे सम्पर्क बनाय रखू और बीच-बीच म भेंट होती रह। न मैं यही चाहता हू कि आप शिमला की यात्रा करने का कष्ट उठायें। इसलिए मैं समझता हू कि फिलहाल यही ठीक रहेगा कि भेंट स्थगित रखी जाए। वष के आगामी मासा म जब पहाड से वापस लौटूंगा तो आपसे भेंट करन के अवसर की प्रतीक्षा करूंगा।

सदभावनाओ के साथ

भवदीय

लिनलियगो

श्री मो० क० गांधी,

सगाव

१२०

सगाव

२ अगस्त, १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

फिलहाल अगाथा को पत्र नहीं भेज रहा हूँ पर जो सामग्री इस पत्र के साथ भेजता हूँ वह उससे कहीं अधिक रोचक है। मैं तो समझता हूँ कि यह अगाथा की भारत सचिव से मुलाकात का नतीजा है। भारत-सचिव ने वाइसराय से कहा होगा कि कुछ-न-कुछ करना जरूरी है। सरहद से वापस आने के बाद इतनी जल्दी बापू के लिए यह यात्रा सम्भव नहीं थी। दिल्ली से बर्धा तक की वापसी यात्रा काफी कष्टप्रद रही। हम लोग अनुशासन कब सीखेंगे ? और जब तक लोग-बाग यह पाठ न पढ़ें तब तक बापू की यात्रा के दौरान उनके आराम की कुछ अधिक सतोपजनक व्यवस्था करना जरूरी है। रेलवे बोर्ड ही बापू के लिए एक अलग डिब्बे का इन्तजाम क्यों न करे ?

आज और अधिक लिखने का समय नहीं है। बंदियों के साथ मेरी मुलाकात का विवरण जानकर बापू को घोर वेदना हुई। उन्होंने उनके निमित्त जो सदेश भेजा है आपने देखा ही होगा। श्री सुभाष बोस और श्री शरत बोस के लिए यह कड़वा घूट साबित होगा।

सप्रेम,

महादेव

१२१

बलकला

४ अगस्त, १९३६

प्रिय महादेवभाई,

मुझे भी आशंका ही रही थी कि ५ तारीख बापू के लिए सुविधाजनक नहीं रहेगी। अब वह वाइसराय से २० के बाद मिलेंगे तो उ हे शिमला जाना होगा।

जब तुम यही थे तो मैंने भविष्यवाणी की थी कि अनशन भंग हो जाएगा। दूध बन्द करके पूरा भोजन देना शुरू कर दिया गया है। यह सब किस आश्वासन पर हुआ ? मैं तो नहीं समझता कि दो महीने बाद आदोलन चलाने की बात सुभाष गम्भीरतापूर्वक कह रहे हैं। इस सूबे में बेईमानी का जितना दौर दौरा है, देखते ही बनता है।

मैं यथासम्भव शीघ्र ही जयपुर जा रहा हूँ। देवदास ने कल फोन करके बताया था कि वह जयपुर के मामले को लेकर 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में कड़ी आलोचना लिखने की बात सोच रहे हैं। मैंने कहा कि बापू की वाइसराय से भेंट होने तक रुके रहें और जब वह दिल्ली पहुँचें तो उनकी सलाह लें। पर ऐसा लगता है कि अभी कुछ समय तक बापू का दिल्ली आना सम्भव नहीं है।

मैं भी बापू से मिलने का इच्छुक हूँ पर मैंने अभी तक यह तय नहीं किया है कि पहले वर्धा जाऊँ या वर्धा जाने से पहले जयपुर हाँ आऊँ। क्या तुम कोई सुझाव देना चाहोगे ?

सप्रेम,

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

वर्धा

१२२

सेगाव,

(वर्धा होकर)

४ अगस्त १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

अगाथा की चिट्ठी भेजता हूँ।

नागपुर से कोई खबर लाया है कि सारे बन्दी रिहा कर दिये गए हैं। यह जाहिर है कि नाजिमुद्दीन ने बात छिपा ली थी क्योंकि उन्होंने राजद्र वाद को या मुझे इसका कोई संकेत नहीं दिया था। हाँ, सुरन वादू ने यह अवश्य कहा था

कि यदि विधान सभा में कांग्रेसी सदस्य अथवा ममता में मंत्रिमंडल का समर्थन करने का वचन दें, तो सदियों की सहज ही रिहा कर दिया जाएगा। चाहे यह हुआ है या इसी तरह की कोई और बात हुई है पर अब दाना भाई अपनी नीति का विचार पीटने में लगे और बापू को और भी अधिक तीव्रता के साथ उलाहता देंगे।

जित्त समय बापू ने सदियों के बारे में यह वक्तव्य दिया था, तो मैं उन्हें रोना था। मेरा कहना था कि उनसे बर्निया को भी रोना होगा और दोन भाई भी घीज जायेंगे। वक्तव्य देने के बजाय सदियों को उत्तर देना बेहतर होगा। पर बापू ठठरे दृढ़ स्वभाव को और अब मुभाय बापू ने मदककर यह यथा द डाना। विपदा तिर पर पड़ी नाथ रही है और ऐसा लगता है कि हम अपने जीवा-दान में ही अराजकता और अमान्ति देंगे।

सर मिन-दर ह्यात ने साहोर स्टेशन पर मुगलमाना के विरोधी प्रदमा के लिए धमा-वाचना का तार भेजा है और जिना ने तार भेजकर इन बात की घोषणा कर लन को कहा है कि ये प्रदमाकारी नीत में और ये क्या चाहत में।

बापू ने २० तारीख के तार मुसलमान के मुभाय का जो तार भेजा था उसका वाइसराय ने अभी तक कोई उत्तर नहीं दिया है।

जमनालालजी का स्वास्थ्य बहुत त्रिगड गया है और बापू ने त्रिजिन के लिए बड़ा ऋद्ध लेण लिखा है।

सप्रेम
महान्व

१२३

सेवाय वर्धा होवर
५ अगस्त १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

बापू के तार का वाइसराय ने यह उत्तर भेजा है। आपकी क्या प्रतिक्रिया है? मैं तो समझता हूँ बापू का ५ तारीख को न जाना अच्छा ही रहा।

मुभाय का वक्तव्य देखा। आप सच्चे अविष्यक्त निवृत्त। ये लोग बापू और

कांग्रेस की श्रेय देने को तयार नहीं थे। आशा है यह हथकण्डा सबकी समझ में आ जायेगा। बन्धिया का हमने जो आश्वासन दिया था, सुभाष का आश्वासन उससे बन्धिया कहा रहा ?

अस्तु, अत भला सो भला।

आज और अधिक लिखने को समय नहीं है।

आपका,
महादेव

१२४

बलकला

७ अगस्त १९३६

प्रिय महादेवभाई

वाइसराय का पत्र खासा अच्छा है। मेरी तो यही प्रतिश्रिया है। वाइसराय ने बापू को तो लिखा ही, साथ ही ज्यो ही लेथवेट को वाइसराय से पता चला कि बापू नहीं आ सकेंगे, उसने मुझे चिट्ठी लिखी। लेथवेट ने इस बात पर भी दुःख प्रकट किया कि वह वाइसराय के साथ मेरी भेंट का ब दाबस्त नहीं कर सका, क्योंकि उसका खयाल था कि बापू दिल्ली आयेंगे।

मुझे तो तुम्हारा यह अनुमान ठीक नहीं जवा कि वाइसराय का पहलेवाला पत्र भारत-सचिव के किसी प्रकार के सकेत से आया है। न मुझे इसमें अगाथा की पहल ही दिखाई देती है। मुझे तो सभी सूत्रों से यही सूचना मिल रही है कि वाइसराय बापू की बड़ी प्रणसा करते हैं और मेरी तो यही धारणा है कि बापू के साथ सम्पर्क बनाए रखने की वाइसराय की हार्दिक अभिलाषा है।

पर मैं वाइसराय के इस कथन का स्वीकार करने को तैयार नहीं हू कि उन्हें बापू से किसी विशेष विषय को लेकर बात नहीं करनी थी। मैं समझता हू कि कुछ समय बाद वह सभ के बारे में बातचीत करना शुरू कर देंगे, क्योंकि वह मामला उत्तरात्तर निकट आता जा रहा है। नरेशा के मामले में वाइसराय की जो लाचारी प्रतीत हो रही है उसका एक कारण यह भी हो सकता है कि उनके सभ में शामिल होने तक उन्हें बेचैन करने से वे बचना चाहते हैं।

बन्दियों की भूख-हडताल का खात्मा पूवनियोजित था। मुझे प्यार मिली है कि २० ३० को छोड़ बाकी सबका दो महीने के भीतर रिहा कर दिया जायगा।

बापू ने वह वक्तव्य देकर ठीक ही बिया। सुभाष ने उसकी आलोचना भल ही की हो महा के पत्रा न तो उस अच्छी भावना से ग्रहण बिया है। बापू अपने मन की बात प्रकाश म लाए इसका समय आ पहुचा है। इधर उहानि ऐसा करना धुरु कर भी दिया है।

यदि कायकारिणी कुछ करन पर उतारू हो गई तो नियन्त्रण-सम्बन्धी वार-वाई का क्या परिणाम होगा इस बारे म मेरी कोई निश्चित धारणा नहीं है। मुझे इस मामले म परस्पर विरोधी सम्मतिया मिल रही हैं पर मेरी अपनी राय तो यह है कि जो डर्रा चल रहा है उस ज्यो-वा त्या नहीं छोडा जा सकता।

अगाथा का पत्र मिल गया। उस अपनी फाइल म रख लू न ? यह मैं इसलिए कह रहा हू कि तुम चिट्ठिमा की फाइल नहीं रखते हो और महत्त्वपूर्ण कागज पत्रो को सुरक्षित रखना जरूरी है।

सप्रेम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१२५

कलकत्ता

६ अगस्त १९३६

प्रिय महादेवभाई

मेरा जयपुर जाने का प्रोग्राम फिलहाल रद्द हो गया है क्वाकि पत्रो मे निक्ला है कि टाड अचानक इग्लड के लिए रवाना हो गया है और सम्भव है वापस न आए। मैंने वाइसराय को लिखकर इस बात पर जोर दिया है कि किसी भारतवासी को ही जयपुर का प्रधान मंत्री नियुक्त किया जाए।

अब मैं वर्धा आऊंगा, पर मुझे सिंधिया के काम-काज के सिलसिले में बंबई भी जाना होगा। वहा से खबर मिलते ही मैं अपना प्रोग्राम बनाऊंगा।

सप्रेम,

धनश्यामदास

श्री महाश्वभाई देसाई,
वर्धा

१२६

सेगाव

१० अगस्त, १९३६

प्रिय धनश्यामदासजी

मैं डा० भर्खा को साथ लेकर जमनालालजी को देखने जयपुर जानेवाला था, पर मरा प्रोग्राम बना ही था कि बापू बोल उठे “शायद तुम्हारे जाने की जरूरत न रहे। हो सकता है तुम्हारे वहा पहुंचने से पहले ही वह रिहा कर दिये जाए।” और इस बातचीत के दो घण्टे के भीतर तार पहुंचा कि उन्हें रिहा कर दिया गया है। इस तरह जयपुर का मामला निपट गया। क्या पता, बाइसराम बापू को यहा बताना चाहते होंगे कि जमनालालजी को रिहा करने की बात सोची जा रहा है। मुझे बाइसराम का पत्र तो अच्छा लगा, पर उनका बार-बार यह दुहराना अच्छा नहीं लगा कि “काई विशेष प्रयाजन नहीं है। राजकुमारी कल ही आई हैं कह रही थी कि वे लग सघ-मम्बघी वार्ता आरम्भ करनेवाले हैं। राजकुमारी को इसका आभास ग्लेसी स लगा होगा। उन्होंने यह भी बताया कि टाड जयपुर स जानेवाला है या शायद चला भी गया है क्योंकि उसमें और महाराजा स पगरी नहीं बठी।

अब यदि बापू अक्टूबर स दिल्ली जाए—और उन्हें जाना ही होगा—तो आप उन्हें पिनानी अवश्य ले जाइए और इसके लिए एक सप्ताह अलग निकाल रखन का अनुरोध कीजिए। इससे उन्हें थोडा-बहुत आराम भी मिल जायेगा।

मुझे डा० विधान से बन्दी भूख-हडतालियों को लेकर दुरिया भर की गद्दी सौबाबी का पता चला। विधान कह रहे थे कि सुभाष भारी दाव लगा रहे हैं।

मैंने मन-ही मन कहा कि वह अपनी कन्न छुद छोड़ रहे हैं।

कायकारिणी के मारे के-सार सदस्य सुभाष के गिनाफ अनुशासनारम्भ कार वाई की माग कर रह हैं पर शायद जवाहरलाल इसक लिए राजी नहीं होंगे। वह हृद-से-हृद यही चाहेंगे कि सुभाष को चेतावनी दे दी जाए। पर मैं कह नहीं सकता, आज तीसरे पहर चर्चा होगी।

बापू बिलकुल स्वस्थ हैं।

सप्रेम

महादेव

पुनश्च

क्या बजरगजी मेर लिए कलकत्ता के किसी पुस्तक विक्रेता से ब्रॉटन की गुप्त माग शीपक पुस्तक लायेंगे? मैंने लक्ष्मीनिवास के बभर म जिसम राजेंद्र बाबू ठहर थ ह्यूम के १२ उपनिषद देख थे और मटरलिक के वे दो महान नाटक 'मेरी मकडालन' और 'मोनावाना — जिनका मैंने आपसे दिल्ली मे जिक्र किया था—देखे थ। आपक के-द्रीय हॉल के बड़ पुस्तकालय मे य मौजूद हैं।

१२७

कलकत्ता

१४ अगस्त १९३९

प्रिय महादेवभाई,

तुम्हें बाइसराय का पुराना फामूला दुहराना अच्छा नहीं लगता, सो तो मैं समझा पर साथ ही मैंने यह भी पता लगाया है कि बाइसराय बचनो मे कम, पर करनी मे अधिक विश्वास रखते हैं और मेरा अनुमान है कि जमनालालजी की रिहाई कराने मे उन्हें कुछ कठिनाइयो का सामना करना पडा होगा। मैं यह विश्वास करने को तयार नहीं हू कि इसका श्रेय महाराजा को मिलना चाहिए, क्योंकि मैं उन्हें खूब जानता हू। उनमे सत्साहस का नितान्त अभाव है।

बापू का उनके पितानी जाने के बचन की याद अवश्य दिला देना, जिससे जब वह बाइसराय से मिलने अक्तूबर मे पधारें तो एक हफ्ता अलग निकाल

रखें। बापू पिलानी अक्षतूत्र म, नवम्बर मे, जब उनको सुविधा हो, जा सकते हैं। हा दिसम्बर मे सर्दी अधिक हो जाती है, जो उनके स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं होगी। पर बापू अभी से इस बारे में स्वयं ही अस्थायी रूप से तय कर लें तो उत्तम रहेगा।

मुभाप-काण्ड के बारे मे 'स्टेट्समैन' इधर कुछ बहुत ही सुन्दर लेख लिख रहा है। तुम्हें कटिंग भेज चुका हू। आशा है, वे तुम्हे ठीक लगे होंगे। मुझे अंग्रेज लोग इसलिए अच्छे लगते हैं कि वे चीज का अध्ययन करने का कष्ट करते हैं। इधर हिन्दुस्तान स्टण्डर्ड' को देखो, दलील का घोडा दौडाने की धुन मे दुनिया भर की असम्बद्ध आलोचना करता रहता है।

विधान महा आज सुबह ही पहुँचे है। यदि उहोन यह आशा लगा रखी हागी कि स्टेशन पर उनकी वाले शण्डो से अगवाती की जायेगी तो उहें हताश ही होना पडा। उलटे बडा बाजार के लगभग २०० नागरिक वहा उनका स्वागत करने को मौजूद थे। कहना हागा कि कुल मिलाकर बगाल बात का पचा गया।

पुस्तक का बारे मे बजरगजी से कह दिया है।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

१२८

तार

२४ अगस्त, १९३६

प्यारेलाल

मारफन महात्मा गांधीजी

सगाव, वर्धा

क्या तुम बापू के युद्ध विषयक प्रस्ताव का, जो काय-कारिणी न पास नहीं किया है मसौदा भेज सकते हो ?

—घनश्यामदास

बिन्ला पाक

१२६

बलवत्ता,

२६ अगस्त, १९३६

प्रिय महादेवभाई

मैं इस पत्र के साथ एक विनप्ति भेज रहा हूँ जिस पर युद्ध छिड़ जाने पर कई-एक प्रमुख व्यापारी हस्ताक्षर करेंगे। मैं अविलम्ब जानना चाहता हूँ, तार द्वारा हाँता और भी अच्छा कि बापू को इस सम्बन्ध में कुछ कहना है क्या? विनप्ति का मजमून में हमारा स्वतन्त्र दृष्टिकोण पक्ष किया गया है, और यह दृष्टिकोण कांग्रेस द्वारा अपनाये गये राय के अनुरूप ही है। फिर भी हम लोग ऐसा कोई काम नहीं करना चाहेंगे जो बापू की मर्जी के विताप हो। अतएव बापू की प्रतिश्रिया मुझे जल्दी से जल्दी सूचित करना।

सप्रेम,

धनश्यामदान

श्री महादेवभाई देसाई

वर्धा

फेडरेशन ऑफ इंडियन चेम्बर्स आफ कामर्स के लिए तयार किया गया मसौदा

हम एक बहुत नाजुक अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का सामना कर रहे हैं। अधिकांश मानव जाति एक एके महायुद्ध में लिप्त हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न देशों के असंख्य लोगों के प्राण जायेंगे और बेशुमार स्त्री पुरुषों का कष्ट झेलने पड़ेंगे। या हम भारतवासियों का भौगोलिक दृष्टि से यूरोप के युद्ध से कोई वास्ता नहीं है पर यह स्पष्ट है कि हम उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। एक ऐसे युद्ध का परिणाम, जिसमें ब्रिटेन और साम्राज्य के अर्थ देन लिप्त हो हमारे लिए एक स अधिक दिशाओं में निर्णायक सिद्ध होगा। हम इस प्रश्न पर एकमात्र भारतीय हितों को सामने रखकर विचार करना है। पर भारत के आधारभूत और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हितों को एक ओर ब्रिटेन और फ्रांस, तथा दूसरी ओर तानाशाही देशों के परस्पर सघप से अलिप्त रखना सम्भव नहीं है।

भारतीय लोकमत ने इधर कई वर्षों में भली भाँति दख लिया है कि जा शक्तियाँ ब्रिटेन की शत्रु हैं वे प्रजातंत्र और राष्ट्रीय स्वतंत्रता व उन आदर्शों की भी शत्रु हैं, जिनकी उपलब्धि के लिए भारतवासी मचेष्ट रह रहे हैं। भारतीय लोकमत ने यह भी दख लिया है कि ये शक्तियाँ जाति की सकीण मनोवृत्ति से प्रेरित हैं जो भारत की सहिष्णु जनता का सबका अरिचक्र हैं। भारत को इस बात पर रोष और व्यथा है कि ब्रिटेन आर फ्रांस अयोमीनिया चेकास्लोवाकिया और चीन जैसे छोटे अथवा निबल देशों के पक्ष में खड़े नहीं हुए। इन देशों को तानाशाही शक्तियों व हाथा अपनी स्वतंत्रता गवानी पड़ी। इन देशों को उन देशों की जाततायी मनोवृत्ति की बलिवेदी पर कुर्बान होना पड़ा। पर यह सतोष का विषय है कि कम से कम अब ब्रिटेन और फ्रांस को यह भान तो हुआ कि इससे स्वयं उनके हितों की रक्षा के लिए यह आवश्यक है कि कानून पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था कायम रहे। यह भी सतोष का विषय है कि ब्रिटेन और फ्रांस ने निबल देशों का अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए महायत्ना देने का सफल किया है।

भारत का अभी स्वराज्य नहीं मिला है उसकी राष्ट्रीय आकांक्षाएँ अभी तक अपूर्ण हैं। पर वह इस संघर्ष के प्रति उदासीनता का रूप नहीं अपना सकता क्योंकि तानाशाही शक्तियों की विजय का भारत के भविष्य पर साघातिक प्रभाव पड़ेगा। एन ही साम में यह दलील पेश करना कि इंग्लैंड या निबल देशों की रक्षा के लिए अथवा प्रजातंत्र की रक्षा के लिए लड़ना चाहिए और साथ ही साथ यह भी कहना कि भारत का ब्रिटेन की सहायता नही करनी चाहिए तबसगत ता है ही नहीं जसम्भव भी है। पर भारत पर युद्ध का भार लादना जो वर्तमान शासन विधान के अंतगत बिलकुल सम्भव है और भारत का स्वेच्छापूर्वक प्रदान किया गया सहयोग प्राप्त करना एक दूसरे के प्रतिकूल बात है। जब तक प्रजातन्त्रीय सिद्धांतों का जिनकी रक्षा के लिए ब्रिटेन लड़ने को तत्पर रहने का दावा करता है भारत में सत्ताप्रद ढंग से जमली रूप नहीं दिया जाता तब तक भारत स्वेच्छा पूर्वक सहयोग कस दे सकेगा ? इंग्लैंड की बठिनाइयाँ को सामने रखकर भारत की सुविधाओं की बात उठाने का प्रश्न नहीं है नतिक दृष्टि से स्पष्टीकरण की आकांक्षा है। ब्रिटेन भारत से उच्च आदर्शों के नाम पर जपीन कर। पशुपल का सहारा लेकर अथवा भारत की उदार मनावृत्ति से लाभ उठाकर युद्ध में उसका उपयोग न कर तथा जिन प्रजातन्त्रीय सिद्धांतों की रक्षा के लिए वह युद्ध करने की तत्परता का दावा करता है उह भारत में लागू करने से न बचा रहे। यदि पोण्ड अथवा रमानिया या टर्की की स्वतंत्रता इंग्लैंड को युद्ध में घसीट मवनी है

तो 'याय और विवेक का यह तकाजा है कि वह भारत की स्वतन्त्रता व निमित्त और भी अधिक प्रयत्नशील हो क्योंकि भारत ब्रिटिश साम्राज्य का एक सदस्य है। जसल बात तो यह है कि औपनिवेशिक देश तक बिना किसी शर्त के ब्रिटेन की सहायता करने को प्रस्तुत नहीं हैं। युद्ध होने की स्थिति में व इस बात की हठ करेंगे कि उनसे इस बार में सत्ताह भशवरा किया जाए कि ब्रिटेन की विदेश नीति क्या रहेगी अथवा वह युद्ध में किस उद्देश्य को सामन रखकर शामिल हो रहा है। भारत को भी जपान अधिकारों की माग करने का अधिकार है क्योंकि वह ब्रिटिश साम्राज्य का एक स्वायत्त शासित देश होने का दावा करता है, और अपने धन जन के उपयोग के बारे में खुद उत्तरदायित्व उठाने का इच्छुक है। जसा कि ब्रिटिश प्रधान मंत्री न जमनी जीर पोलण के विचारों की चर्चा करते हुए कहा था यदि दाना पक्षों में एक दूसरे पर भरोसा करने की भावना को पुन जाग्रत किया जा सके तो ऐसा काइ प्रश्न नहीं है जिसका निपटारा शस्त्रास्त्र का आश्रय लिये बिना न हो सके। जहा तक भारत और इंग्लैंड का सम्बन्ध है दाना के बाद विवाद का निपटारा करने के लिए शस्त्रास्त्र का सहारा लेने का सवाल ही नहीं उठता। भारत में प्रांतीय स्वायत्त शासन काय दवाई वष तक निष्पष्टक रूप से चलता रहा जिससे यह साबित हो गया है कि यह आपसी मतभेद बातचीत के द्वारा दूर हो सकता है वशर्ते कि दोनों पक्षा में एक दूसरे का समझने की एक दूसरे पर भरोसा करने की भावना पैदा हो जाय। हम यह कहने को बाध्य होना पड़ता है कि एकमात्र इस अविश्वास की मनावृत्ति के कारण ही दोना दशा के सम्बन्धों में खिचाव पैदा हो गया है। यदि अब भी उचित वातावरण बनाया जा सके तो राष्ट्रीय रक्षा के लिए योजना तयार करने में दर नहीं लगगी। तब इस योजना को ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा का अविभाज्य अंग माना जायेगा। हम सौदजाजा नहीं चाहते पर हम इतना अवश्य कहेगे कि जो नीति तानाशाही देशों की मंत्री प्राप्त करने की कोशिश में बरती गई थी वह नीति तो ब्रिटिश साम्राज्य में कही अधिक आवश्यक है फन्त उस भारत के मामलों में बरतना चाहिए। भारत के पूर्ण स्वराज्य के लक्ष्य में शक शुद्ध की अब कोई गुजाडण नहा है न इस प्रगति की शिथिल अथवा स्थगित ही किया जा सकता है। जब समय आ गया है कि ब्रह्म में पूर्ण उत्तरदायित्व शासन स्थापित करने का प्रश्न जिसमें विदेश नीति की रक्षा विभाग भी शामिल हैं अविलम्ब हाथ में लिया जाए। ब्रिटेन में इस साधारण से मनावनानिक तथ्य को हृदयगम करने का विवेक होना चाहिए कि जब वह भारत में सहायता की माग करता है तो उसे भारत में बसा सहयोग प्रदान करने के लिए आवश्यक उतमाह उत्पन्न करने की कोशिश भी करनी

चाहिए। यह सहायता तभी दी जा सकती है, जब ब्रिटेन भारत के अधिभार को मायता प्रदान करने और मागा का पूरा करने को तत्पर प्रतीत हो। यदि भारत का इस युद्ध में स्वच्छापूर्वक बलिदान करना है, तो उस यह प्रतीति हानी चाहिए कि कम से कम अपने घर में तो वह स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहा है जिसकी कामना वह सप्तर के सभी देशों के लिए करता है और जिसके लिए उमने युद्ध में हाथ बटाने को कहा जा रहा है।

मामला इतना गम्भीर और इतना अधिक महत्त्व का है कि उसके निपटारे में देर करने से काम नहीं चलेगा। हमारा सुझाव है कि वाइसराय भारत के सर्वमाय नेताओं के साथ तुरंत सम्पर्क स्थापित करें और जो राजनतिक समस्या अभी तक पटाई में पड़ी है उसका हन तलाश करने के हेतु उन नेताओं पर पूरा पूरा भरोसा करें ताकि समस्या का स्थायी हन खोजा जा सके। हम इस बात में कोई मशय नहीं है कि यदि उत्तरदायित्वपूर्ण भारतीय लोकमत से अपील की जायगी तो वह उसे ग्रहण कर आपसी मतभेद भुला दगा और घरलू सघष का अंत कर देगा। पर उसके लिए यह आवश्यक है कि ब्रिटेन इस बात का प्रमाण दे कि वह नेक नीयती के साथ भारत को ब्रिटिश साम्राज्य में बराबर के साथीदार की हैसियत में स्वीकारता है।

६ अगस्त १९४८

१३०

तार

वर्धागज

२८ ८ १९३९

घनश्यामदास

मारफन 'सकी,

कानवस्ता

नाप्रेस के अनावा वापू की भी नापमद है। वकनय में आमूल परिवर्तन की जरूरत है। अभी ठहरी नहीं है।

—महात्मा

१३१

तार

३० द १९३६

महादेव देसाई
मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रांत)

यापारी समाज के दृष्टिकोण का ध्यान में रखकर हमारे हितार्थ बापू की सलाह तुरंत भजो। मैं वर्धा जाऊँगा जहाँ पीछे समाज के भाग दशन के लिए कुछ छोड़ जाना चाहूँगा।

—घनश्यामदास

विडला ब्रन्स
कलकत्ता

१३२

सेवाग्राम

वर्धा

३० अगस्त १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपको फोन पर पाने के लिए घण्टा इंतजार करना पड़ा तब वही आपसे बात हा सकी। मेरे विचार में मगनवाडी में टेलिफोन की बहुत जरूरत है साथ ही मेरे लिए एक छोटी-सी जास्टिन गाडी की भी। पर बापू को राजी कौन कर ? हा आप किंगी न त्रिमी दिन भल ही कर सकें। मैं रात भर मगनवाडी में ठहरा रहा और तड़के ही आपको फिर फोन किया।

मैं बापू से कहा कि आप मुझसे विनक्ति का मसौदा तयार कराना चाहते हैं। बोले, नहीं सबसे अच्छा यन्ी रहेगा कि आप यदा जा जाएं। विनक्ति की

एसी जल्दी क्या है, जोर ऐसा लगता है कि युद्ध छिड़ने स रह जाय । यदि न छिड़े ता यह हमार हित म होगा । अथवा हमारी पोल खुल जायगी ।

राजद्र बाबू बहुत बीमार है चल फिर भी नहीं सकते । तब फिर काय-कारिणी की बठक राची म क्यों करें ? हम उह तग न करके उनके बगर ही कायकारिणी की बठक कर सकते है । पर हम युद्ध प्रेमी कतई नहीं हैं ! यदि हम युद्ध समाप्त हाने क वाद भी मिलेंग तब भी हम बेअसर रहग मानो कुछ हुआ ही न हो ।

सप्रेम,
महादेव

१३३

कलकत्ता

३१ अगस्त १९३६

प्रिय महादेवभाई

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति म जब भी तनाव बना हुआ है । मन कहता है युद्ध नहीं होना चाहिए पर जा दिखाई दे रहा है उससे ऐसी आशा नहीं बघती । यदि युद्ध छिडा तो मैं तुरत दिल्ली या वर्धा जहा भी वापू होगे, वहा के लिए चल पडूंगा । यदि युद्ध न भी छिडा तो भी मैं कुछ दिन वाद वापू के दशन करना चाहूंगा । समय पर हम और तुम दोना मिलकर प्रोग्राम बना लेंगे ।

सबकी कामना है मेरी भी यही कामना है कि इंग्लड की विजय हो । यह आम धारणा है कि इंग्लड के पक्ष म याय है । दूसर इंग्लड की पराजय का भारत पर साधातिक असर पडगा जो कोई नहीं चाहना । क्या वापू न पालेड को शुभ कामना भेजकर अपन-आपको आध्यात्मिक रूप से बचनबद्ध नहीं कर लिया है ?

पर यदि हमारी सहानुभूति इंग्लड के साथ ह तो जनता यह भी चाहती है कि राजनतिक समस्या का समाधान ढूढने म देर न की जाए । मूर ने दा बहुत ही सुन्दर लख लिखे हैं जिनमे उसने कहा है कि के द्र मे उत्तरत्पायित्वपूण मत्रिमडन अबिलम्ब बनाया जाय । जिसम रक्षा और विदेश विभाग का उत्तरत्पायित्व भी भारतीय मत्रिया को सौंपा जाए । उसन मुझे बताया कि वाइसराय की प्रतिक्रिया

अनुकूल है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि सफ्ट आ पड़ा हुआ, तो समझौता हान म बोझ कठिनाई नहीं होगा। इस प्रकार स्थिति यह है कि हम इंग्लैंड की विजय की कामना करते हैं साथ ही यह भी चाहते हैं कि हमारे राजनतिक मतभेद अकिलम्व दूर हो जाए। मैं किसी प्रकार की सौत्राजी की भावना से प्रेरित नहीं हूँ। मर विचार म हमारी समझौता की माग का तालमल ब्रिटन के प्रति हमारी जा सहानुभूति है उसके साथ बठाया जा सकता है।

अब मैं अपनी स्थिति बताऊँ। वापू का रुख कुछ इतना जाध्यात्मिक और साधुतापूर्ण है कि मरे जैसे व्यक्ति के लिए उसके अनुरूप आचरण करना सम्भव नहीं है। साथ ही मुझे वायमारिणी के प्रस्ताव के प्रति भी विशेष मोह नहीं है। शायद हमारे लिए यह कहना हमारी ईमानदारी का अधिग उत्तम प्रमाण होता है कि यद्यपि हम इंग्लैंड की विजय चाहते हैं तथापि हम तब तक युद्ध म भाग लेने से दबे रहेंगे जब तक समझौता नहीं हो जाता। जो भी हो युद्ध छिपते ही यहा का व्यापारी समाज एक विनष्टि जारी करेगा। उस समय में शायद वर्धा म होऊँ मसलिए मैं यहा के लोग के पथ प्रदर्शन के निमित्त कोई मागदर्शक सामग्री छाड़ जाना चाहता हूँ। इसीलिए मैंने कल तुम्हें तार दिया था कि वापू का पथ प्रदर्शन भेजो जिस में वर्धा रवाना हान से पहले यहा छोड़ जाऊँ।

सप्रेम,

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा

१३४

तार

वर्धागज

३१ अगस्त १९३८

धनश्यामदास
लकी
कलकत्ता

मरी दल सलाह है व्यापारी-समाज तब तक खामाण रहे जब तक नतीजा सचमुच प्रकाश म न जा जाए।

१३५

तार

कलकत्ता

१६ १६३६

महादेवभाई देमाद,
मगनदाडी
वधा (मध्य प्रात)

फोन पर पान की चपटा की। कल प्रात काल सात बजे पी के ११६६ पर फोन करा। बापू स कहा मिलू, दिल्ली म या वधा मे।

—घनश्यामदास

बिडला प्रिन्स लिमिटेड

१३६

गामा

८ सितम्बर १६३६

प्रात काल १० ०५

प्रिय घनश्यामदासजी

ता जब हम राजेन्द्र बाबू के पास है। मेरे सुपुत्र जा काम किया गया था, उस पुरा कर पाना कठिन हाता पर राजेन्द्र बाबू की कृपा से सब कुछ सहज ही हा गया। वह जिस प्रकार इष्ट मित्रो से घिरे रहते हैं उस कारण यह असम्भव हो जाता पर अत म शांतिपूर्वक बातचीत सम्भव हो ही गई और उनके जाने क निणय की घोषणा कर दी गई। वह अब पहले की अपेक्षा कही अधिक स्वस्थ है और यात्रा का कष्ट झेल सकेगे। उन्होंने बताया कि चन्द्रधरपुर वा माग रात म बडा खतरनाक है इसलिए जोखिम उठाना ठीक नहीं है। वह चन्द्रधरपुर जाने का

तयार भी हो गए थे, पर सबने शोर मचाना शुरू कर दिया। मुझे एक बिहारी मोटर चालक का गत सायंकाल का अनुभव था, इसलिए मैं चन्द्रधरपुर का आग्रह नहीं किया। फलतः हम सात बारह बजे पहुँचनेवाले चम्बर्द मल की प्रतीक्षा कर रहे हैं कुछ मिनट बाक है सोचा उनका उपयोग यह पत्र लिखकर ही क्या न किया जाए।

बिहारिया न सुबह की गाड़ी में मुझे एक लच स वचित कर दिया। मैंने साचा था अभी काफी समय पडा है इसलिए मैं गया में १० बजे के लच का आडर दे दिया। वास्तव में मैंने ११ बजे के लिए कहा था पर वेटरन कहा था ता १० बजे या १२ बजे। मैंने १२ बजे को पसन्द किया। लच के वक्त का इतजार कर ही रहा था कि देखता क्या है कि लच के बजाय प्लेटफाम पर मेर इतजार में एक घासी भीड़ जमा है। गाड़ी रुकने की देर थी कि भीड़ में कहा राजेन्द्र बाबू का फोन आया है उतरकर हमारे साथ चलिए। मैंने कहा भलमानसा मुझे अपना लच तो छा लेने का आता ही होगा और इसके अलावा क्या आप लोगो का पचना यकीन है कि कोडरमा में मुझ लने के लिए मोटर नहीं जाई होगी ? मगर उनका जवाब यही था कि राजेन्द्र बाबू का टेलिफोन जाया है। काटरमावाला व दीवस्त रद्द कर दिया गया है स्टेशन पर खाना खाने की बात तक मत सोचिए घर पर थाली ठडी हो रहा है। मैं लाचार था उतर पडा।

मने उनस बहस की जिरह की कहा इस तरह आप लाग समय की वचित करन के बजाय जीर अधिक समय नष्ट करेंगे। भरा पट्टे दर्जे का टिकट बरवाद करेंगे। लच स तो वचित कर ही दिया साथ ही एक गलन पटाल फूँके सो जुदा। पर कौन सुनता है ? वे अडे रहे कि एक घण्टे का वचित होगी। पर मोटर का डाइवर मेरे तक से सहमत था। उसे रास्ता मालूम नहीं था। वह रास्त में यह पूछने में लगा रहा कि गाड़ी किधर को माहनी चाहिए। मुझ मालूम हो गया कि मुसीबत मिर पर सवार है। मैं डरने लगा कि इस तरह तो रामगढ पहुँचते पहुँचते रात हो जाएगी और हमन सचमुच ११० मील की यात्रा १५० मील का सफर करके पूरी की। मगर और भी लम्बा हो जाता पर हजारोग्राम की एक मोटर जिसमें एक पुराना परिचित बिहारी राजबंदी था पास से होकर गुजरी। गाड़ी में स एक पुलिस इंसपेक्टर उतरा और बोला टूजूर आपन गया में उतरकर गलती की। मुझसे समय की वचित बिलकुल नहीं हुई। मैंने आपको गया में उतरते देखा था और मुझे मालूम था कि आपके पाम कोडरमा का टिकट है। मैं भी उसी गाड़ी में सवार था और हम नोग हजारोग्राम रोड स्टेशन पर उतरे थे। मैंने कहा जब आप रास्ता बताइए किधर को जाना है।

अब पत्र समाप्त । बम्बई मेल आ गया है । जब गाड़ी मुगलसराय स चल पडा, तब वही मेरी निगाह आपक विस्तरे पर पडी जो आप छोड गए थ । आपका मरा गया स भेजा तार मिल गया था न ? आशा है, आपका विस्तरा आप तक सही-सलामत पहुच जाएगा ।

मणि पर खपा मत हाइए, कम-स-कम उसका पत्ता मत काटिए । बंचार का घर पर रतनी सारी चीजें छाड जान पर डाट पट चुकी थी नतीजा यह हुआ कि वह विस्तरा भी छाड आया ।

सप्रेम
महादेव

१३७

निजी

सेगाव

१० सितम्बर १९२६

प्रिय धनश्यामदासजी

जमनालालजी की गादी पर दुनिया भर के लामा का जमघट था इसलिए मैं टलिफान पर आपको कुछ अधिक नहीं बता सका । बल बापू न कायकारिणी के विचार क लिए एक और मुझाव पेश किया, यह मानकर कि कायकारिणी क सदस्य या मन्निगण शातिवानी नहीं हैं । उन्हाने कहा कि न तो अडगा लगाना चाहिए न असहयोग ही करना चाहिए । मन्निया के लिए जहा तक सम्भव हा उन्हें काम चलाते रहना चाहिए तथा जिस हद तक सहयाग दन को अत करण गवाही दे देत रहना चाहिए । उन्हाने बताया कि दश विमी प्रकार का प्रतिरोध बनन की दशा मे नहीं है । दमन होगा और खुलकर हागा । जसा कि जयप्रकाश ने कहा है हमे सीने पर गानिया खाने के लिए सकडो जयप्रकाश मिल जायेगे पर फिर भी यह बलिदान निष्प्रयोजन होगा । अन्य विदशिया की अपेक्षा अग्रजी स निपटना अधिक महज है । इस युद्धाग्नि मे साम्राज्यवाद इतनी बुरी तरह झुलस जाएगा कि उनक लिए नये सिरे से उभरना सम्भव नही होगा । हमारे लिए ससे अच्छी नीति यही रहेगी कि जडचन बालन के बजाय हाथ बटाए । बापू न यह

सुभाष और जयप्रकाश के उत्तर में बहना था। सुभाष का बहना था कि उनकी धारणा है कि जनता दश-पापी जहिसामक प्रतिगंध के लिए तयार है। जयप्रकाश का बहना था कि अग्रजा की मदत करने का अपेक्षा वह यशरहित मृत्यु का अधिक पसंद करेगा। बहस जारी है क्या नतीजा निकलगा सो अभी सो बहना मुश्किल है। पर वह निश्चित है कि वामपंथियों के साथ युद्धमधुल्ला सम्बन्ध विच्छेद होगा। कायकारिणी न भी अभी कोई निश्चित मत नहीं बनाया है। युद्ध मुझ यह समझने में कठिनाई हो रही है कि वापू न जिस ढंग की तटस्थता सुनायी है उस मन्त्रिगण किस तरह जमान में लायेंगे। मुझ तो ऐसा लगता है कि इस सुझाव का मायता प्राप्त नहीं होगी।

मैंने बल्लभभाई का आपका इस सुझाव की बात यना था कि वापू का सर्वे सर्वा नियुक्त किया जाए। वह बोले कि इस सुझाव का अंगीकार करने में कोई कठिनाई नहीं हानी चाहिए पर सत्र कुछ जवाहरलाल पर निर्भर करना है जो आज तीसरे पहर पहुँच रहे हैं। जवाहरलाल के जो मित्र यहाँ पहले से ही मौजूद हैं वे यह मानने को तयार नहीं हैं कि जिस ढंग के वक्तव्य की चर्चा है वसा वक्तव्य जवाहरलालजी न वास्तव में दिया था। दखें क्या होता है। वापू कायकारिणी से यही अनुरोध करने में लगे हुए हैं कि वह उन्हें छोड़ दे और जो ठीक समझ वह करे।

मैंने आपका विस्तार गया म्यूनिसिपलिटि के चयरमन और वहाँ के एडवाकट श्री मथुराप्रसाद के पास जमा कर दिया था और कह दिया था कि वह उसे अगले दिन आपके सुपुद कर दें जयवा उस रत्न से पासल कर दें। मैंने उन्हें आपका ठिकाना दे दिया है। आपका मैंने रामो स्टेशन से एक पत्र लिखा था मिला क्या ?

सप्रेम,
महात्मा

पुनश्च

क्या आपने इधर आन की वार्ड सम्भावना है ?

१३८

कलकत्ता

११ सितम्बर, १९३६

प्रिय महादेवभाई

मरे मनेजर न कोटरमा कार भेजी थी, पर तुम वहा नही उतर, इसलिए कार खाली वापस लौटी ।

तुमन मरा बिस्तरा किसक पास छाडा सो नही जानता पर शायद वह मिल मर पास समय पर भेज ही देगा ।

जात्र सुन्हु तुम्ह फोन पर पान की काशिश की थी तुम नही मिले । आशा है, कायकारिणी बापू का सार अधिकार सौंप दगी और इस सम्बन्ध म प्रस्ताव पास कर देगी ।

सप्रेम,

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाइ,
वर्धा

१३९

कायकारिणी समिति का युद्ध विषयक प्रस्ताव

कांग्रेस न दश को विदेशी प्रभुता से मुक्त करने के ह्त्वु १९२० से जान नूझकर अहिंसा की नीति अपना रखी है । इस नीति की साथकता के मामले म उतार चढाव आए, पर कांग्रेस यह साबित करन मे सफल हुई है कि भारत न अपने लक्ष्य की दिशा म जितनी प्रगति अहिंसा की नीति का जबलम्यन करके की है उतनी पहले कभी नही हुई थी । न उतना जन जागरण ही कभी देखने म जाया था जितना अहिंसा की नीति के बाद हुआ । पर साथ ही यह स्वीकार करना होगा कि अहिंसा की भावना जन साधारण म उतनी गहराई से प्रवेश नही कर पाई है

जितनी करनी चाहिए थी। यह भी परिताप का विषय है कि कांग्रेसी मंत्रियों को शांति बनाए रखने के हेतु पुलिस और फौज की सहायता जनी पड़ी और लाठी प्रहार तथा गोली चलाने का अनुमति दनी पड़ी। कायकारिणी का इन्हीं परिस्थितियों में कांग्रेस के प्रस्तावों का अर्थ लगाने का जावाहन मिला है। युद्ध के बाद न मडरा रहे हैं यह बन्तुस्थिति भी सामने है। कांग्रेस की यही कामना है कि विश्व भर में शांति का राज्य रहे। यदि दुर्भाग्यवश युद्ध छिड़ गया, तो उससे न तो भारत का मंगल होगा न ससार के किसी अथ देश का ही। युद्ध का अत तथाकथित विजताओं की विजय के रूप में कदापि नहीं होता। उसका अत सभ्यता की हामी भरनेवाले ढाँचे के सम्पूर्ण विध्वंस के रूप में ही होता है। फलतः कांग्रेस न निरपेक्ष रहने का निणय किया है। वास्तव में जब तक भारत में विदेशी शासन मौजूद है युद्धरत देशों में उसकी जावाज का कोई महत्त्व नहीं है। स्वयं कांग्रेस ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ युद्ध में ही लगी हुई है यद्यपि उसका यह युद्ध शांतिपूर्ण उपायों द्वारा जारी है। सब दृष्टियों से विचार करने के बाद कांग्रेस का यह निणय है कि दश में युद्ध की जो तयारियाँ हो रही हैं उनसे किसी प्रकार का सरोकार न रखा जाय। भारतीय सेना को जिस प्रकार सिंगापुर मिस्र तथा अन्य देशों को भेजा गया है इसके प्रति कांग्रेस उदासीन नहीं रह सकती। कायकारिणी का कांग्रेसी मंत्रियों से कहना है कि वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी प्रकार की युद्ध प्रवृत्तियों के साथ अपना सम्बन्ध न रखें और न ब्रिटिश सरकार द्वारा अपनाई गई किसी भी प्रकार की युद्ध सम्बन्धी कारवाइयाँ को स्वीकार करें। कायकारिणी जनता से ज्वलित करती है कि यह युद्ध सम्बन्धी अप्वाहो से विचलित न हो युद्ध सम्बन्धी प्रवृत्तियों के साथ कोई सहयोग न कर इनके विपरीत यह हम विश्वास द्वारा अनुप्राणित हैं कि वर्तमान युद्ध में कांग्रेस के भाग न लेने से भारत की किसी भी प्रकार की क्षति नहीं होगी क्योंकि भारत युद्ध में भाग लेने का इच्छुक नहीं है।

१४०

कलकत्ता

१५ सितम्बर १९३६

प्रिय महाश्वेभानन्द

कायकारिणी ने जो प्रस्ताव पाम किया है उससे मुझे निराशा हुई। उसमें

एक हा बात इतनी बार दुहरायी गयी है कि सारा-ना-सारा प्रस्ताव जनगल-सा लगता है। उसमें जो कुछ बटा गया है उस सम्बोधन भी बटा जा सकता था। लगता है कि इस प्रस्ताव की रचना में बापू का कोई हाथ नहीं है। भाषा जवाहरलाल का लगती है। परन्तु क्या इतना ही यथेष्ट है या अगल बंदम की बात भी सोची जाएगी ? मैं नहीं समझता कि ब्रिटिश सरकार इस वक्तव्य का कोई उत्तर देगी। पर किसी प्रकार के आश्वासन की जरूरत है तो इसके लिए बापू ही एवमात्र उपयुक्त व्यक्ति हैं। आशा है बापू वाइमराय में एक बार फिर मिलग और काय-कागिणी अपनी कायशीलना वक्तव्य पर वक्तव्य जारी करते रहने तक ही सीमित नहीं रहेगी। उभय पक्षों के लिए पारस्परिक सम्पर्क जरूरी है। और अब जबकि वाइमराय न सभ की उपालक्षित्य करन की घोषणा कर दी है जा कि वास्तव में बापू और उनका पारस्परिक सम्पर्क का ही परिणाम है तो मरी समय में अगला कदम अपेक्षाकृत अधिक सहज हो जाएगा। इस स्थिति में केवल बापू ही निपट सकते हैं।

पिछले बार दिना में मैं तुम्हें टेलिफोन पर पाने की निरंतर अग्रपल कागिश करता रहा। मगनवाडी में टेलिफोन लगने की बात थी, क्या हुआ ?

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महाश्वभाई देमाई,
वर्धा

१४१

सेगाव वर्धा होजर

१५ ६ ३६

प्रिय घनश्यामदासजी

दा दिन पहले मैं आपके टेलिफोन काल पर दौडा आया पर काल कसिल करती पडी। यहा तुरत पुरत मेरे लिए कार भेजने का बन्दोबस्त करन का किसी पर भरोसा नहीं किया जा सकता और मेरे पहुचते पहुचते काल कमिन् हो जाती है। आपको विकल्प के रूप में कलनभभाई को बुलाना चाहिए था।

जाण जानत ही हें ति कथा दृष्टा । ता कुठु टुआ उगता होता अतिशय धा ।
 कायकारिणी को वापू का प्रस्ताव ताका सा । वल्लभभाई तथा अय लागे म वापू
 क प्रस्ताव को लेकर जनता क सामा उन्मिये हाता का मात्तम नही था । तय वापू
 न कहा ति उह जवाहर क प्रस्ताव पर ध्यान नवा पाटिण । जवाहरनाथ १४
 पन्तो का लय प्रस्ताव लेकर जाण और कायकारिणी न उतता स्वीकृति चाही ।
 कायकारिणी ता उस पर ताका दिन तक विचार विमल किया और थोडे बट्टा
 सशोधन क बाण स्वीकृति द दी । मौलाता और वल्लभभाई दाना न वापू पर
 जाण डाता ति बहु ता तज जा पाणीता स्यासागत धाय हें उगता परिवाण
 परें । दूसर पाठ्या म उता कहा ता था ति गमगीत की वाचनीत का श्रीगणत
 वापू वरें अर्थात् वापू हा इग फामत म गर्वेंगवा हा । वापू ता कहा ति उता लिए
 दम पर रागी हाता सम्भर नता हें कथानि यथनय क बाण जब बहु सरकार के
 पाण समगीत का शतें, तय करत रहा जा मरत । क जिग दम म गमगीत की
 वाचनीत चनात हें जवाहर का इग उगम भिन प्रकार का हें । अत दगाता भार
 जवाहर के ही कथा पर छोटा देता चाहिए । हम ताणा म इग बात का तातर भी
 मतभेन था ति यदि सरकार न समुतिन उत्तर न दिया ता हमारा अगला काम
 क्या होगा । इसने वायजूद मौलाता और वल्लभभाई तथा अय लोग वापू पर
 जाण जानते रहे । तय फिर वापू न जवाहर न कहा जनी स्वतंत्र राय दो ।
 जवाहर न यह कहन म तकि भी सवाच रहा किया ति समगीत की वाचनीत
 चनाने की कता स वापू अनभिा हें । उनक प्रतिपधी उतरी उदारता का हमशा
 स नाम उठात आण हें इगतिण सरकार म गमगीता करन का काम बहु वापू क
 सुपुन नही करना चाहमे । वापू न रहा तिनकु यनी बात है । यद्यपि समगीत
 की कता की अनभिाता क कारण उतक द्वारा राष्ट्र की अभी तय काई धति गही
 हुई है इसका उह पूरा मनात है । पर वापू हम बात पर अडे रह कि जय जय
 कि कायकारिणी ने जवाहर के प्रस्ताव को घाटा-बहत छोटा करने के बाद मगुरी
 द दी है तो गतृत्व की वागधोर भी उह ही सभातनी है और सरकार स समगीते
 की बात नी चत्तानी है तथा यति बातचीत असफल रह ता लडाई का सचाना
 भी उह ही करना चाहिए । लडाई का सचानन कम हा बट काई गही ताता
 स्वय जवाहरनाथ भी इस मामल म बोद निश्चित धारणा नही बना पाए हें । पर
 हम ताणा न एक अत्यत महत्त्वपूण निणय कर डाला १९२६ ता ताहौरवाले
 निणय म भी अधिक महत्त्वपूण । चूकि १९० म सत्याग्रह क सचालन का भार
 वापू क कथा पर था अय जवाहर क कथा पर जा पडा है और यदि दश लडाई पर
 क मर कम ले तो वापू स्वय नही जानत ति उगवी सहायता तिस तरह की पाए,

क्या कि उह दृढ विश्वास है कि लडार्ड व जुरूल वातावरण आज नहीं है। बड़ी भयावह स्थिति है, पर बाइ विकल्प भी ता नहीं था। क्याकि बायकारिणी म बापू द्वारा सुधाया गया माग अपना न वा साटस नहीं था और जवाहर म अपनी नीतियों सिद्धांता वा सत्साहस प्रचुर मात्रा मे मौजूद था। भविष्य अधवारमय और विपादपूण है और एसा लगता ह कि हम तीन वष या इमस भी अधिक समय तक घायद भटकना पडेगा। पर हम इसी के अधिकारी ह। हमने न तो बापू की अहिंसा को हृदयगम किया है, न अपनी ही कोई अ य नीति निर्धारित की है।

जो-कुछ घटित हुआ यह उमकी एक झलक मात्र है। मध्यम और विशद वणन व लिए एक पुस्तक लिखनी पडेगी। य दिन बापू व लिए परीक्षा और "याकुलता के दिन हैं। पर वह बायकारिणी को नेतृत्व की वागडोर जवाहर को सौंपन की सलाह देने के अतिरिक्त और कोई माग नहीं सुधा सके।

सरकार की क्या प्रतिनिया होगी, इसकी भविष्यवाणी करन वा दुस्साहस ननी करूंगा। सम्भव ह सरकार चुप्पी साध ल या उसकी प्रतिनिया हो भी ता प्रतिकूल प्रतिक्रिया हा (जिमकी सम्भावना अपक्षाट्टत अधिक ह) बसी स्थिति म हम भी निणय करना होगा कि क्या करना चाहिए। हम यही जाणा रखनी और प्रायना करनी चाहिए कि दस गम्भीर सवट की वता म बापू की मताह पर ही चलने वा सवका मा बनेगा।

सप्रम

महादेव

१४२

कलकत्ता

१६ सितम्बर १८३६

प्रिय महादेवभाइ,

वास्तव म बायकारिणी के प्रस्ताव न बापू न जो चुलासा लिया है उसे मल्लिनाथ के भाष्य के नाम से पुकारना ठीक होगा। बापू की टिप्पणी मूत स यही उत्कृष्ट है। पर जसा कि मैं अपने कलवाले पत्र म कह चुका हू इस समय जिम चीज की नितांत आवश्यकता है वह है पारस्परिक सम्पक। वकन या व द्वारा चार्नाताप करने स काम नहीं वनागा। य अच्छा है कि बापू इस दिशा म सचष्ट हैं।

कल रात सरदार क साथ बातें हो रही थी। उन्होंने बताया कि तुमन सेगाव म स्थायी रूप स डेरा टात दिया है फान का क्या हुआ ? सरदार म मोर्चा सभालन की प्रवृत्ति की काफी मिली और मुझे उनके राजकोटवाले दिना की याद जा गयी। इसके विपरीत बापू का वक्तव्य बड़ी मात्वन प्रदान करता है। स्थिति कुछ ऐसी है कि उससे निपटन म बड़ी सावधानी की आवश्यकता है, और मुन इमम कोई सह नहीं है कि बापू यही कर भी रह हैं।

मैं शीघ्र ही दिल्ली जानवाला हू। म यही सोच रहा हू कि वर्धा कब जाना ठीक रहगा। अथवा क्या बापू जकनूर क प्रथम सप्ताह म दिल्ली जा रह हैं ?

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देमाई
सेगाव

१४३

वर्धा जाते हुए

१८ सितम्बर १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

कायकारिणी का प्रस्ताव जिन परिस्थितियों मे पारित हुआ मैं आपको बता चुका हू। उसके बाद बापू का वक्तव्य प्रकाशित हुआ और उसने स्थिति को बढ़िया ढंग स सभाला। कायकारिणी क प्रस्ताव का इसमे अच्छा भाव्य सम्भव नहीं था और यदि आपन इस वक्तव्य को हमारे उन तीन नदन स्थित मित्रा को अभी तक नहीं भेजा है तो अब भेजिए। स्टेटसमेंन का लेख इतना उत्तम है कि पत्रर आश्चय होता है। अच्छा हो कि इसकी कटिंग भी बहा भेजें। मेर विचार म युद्ध म रूस के आ कूदन मे हमारा रास्ता जोर भी आसान हो गया है और जब ब्रिटेन के लिए भी कांग्रेस के मत्रीपूण सकेत का समुचित उत्तर देना सुगमतर हो जायगा। और यदि वही जापान भी रूस म जा मिला तो हमसे भी युद्धांगि की उपटो म धनसने की अपेक्षा की जायगी। हमार भाग्य मे क्या बदा है भगवान

ढग अच्छे प्रतीत नहीं होत, पर सम्भव ह् उराने फामूल की चचा राजाजी से विस्तार क साथ की हा ।

सप्रेम
महादेव

१४६

सेगाव आश्रम
(वर्धा होकर)

१५ अक्तूबर, १९३६

प्रिय घनश्यामदामजी,

जापना ताजा घटनाओ की जानकारी दू । राजाजी यहा अखिन भारतीय काग्रस कमटी की बठक म भाग लेने आये थ । उ-ह वाइसराय ने बुला भेजा था, बत्कि यह कहना ठीक होगा कि मद्रास के गवर्नर ने उनसे दिल्ली जाकर वाइस राय स भेंट करा वो कहा था । राजाजी का झिझक थी क्योकि उ-ह आशका थी कि लोग वाग तरह-तरह की अटकलें लगायेंग साथ ही, उ-हें यह भी लग रहा था कि उनका वाइसराय स मिलना जवाहरलाल तथा अ-य लोगो का शायद अच्छा न लग । पर बापू का इस बार म स्पष्ट मत था कि वह जरूर जायें मलिन और सब भी सहमत हो गये । अ-य सुनने मे जाया है कि राजाजी वाइसराय से दावार मिले, और यह सब अकारण नहीं हुआ हागा । राजाजी आज सध्या को यहा वापस आ रहे हैं उनस सारी बात का पता लग ही जायेगा । इस बीच जापनी वह सब बता दू, जा देवदाम जीर लेथवेट के बीच गुजरा । देवदास उसे गत ११ तारीख को मरा पत्र देने गये थे । वह पत्र मैन बापू के निर्देश स लिखा था जीर उसम अखिल भारतीय काग्रस कमटी की बठक और उसके दौरान जवाहरलाल के दृष्टिकोण का व्याारा था । मरा पत्र पढन के बाद लेयवन् ने कहा, ' हा तेहरून जसा कुछ कहा उसस मुझ भा खुशी हुई थी । लाक रचि के प्रतिकून जान कहना एक दुल्ह काय है । फिर दानो के बीच निम्न प्रकार चर्चा हुई

देवदास उनकी (अर्थात् जवाहरलाल को) सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वे लोटूक बात कहन है । छल-अपट उनके भानस म नहीं है । यही कारण है कि उ-हाने अपने मन की बात कह जाती ।

राय की विनक्ति के उत्तर में बतलाने तयार करना था, और ऊपर से शिक्षा सम्बन्धी बर्धा-योजना का अध्ययन करने के निमित्त जो ७० प्रतिनिधि आ पहुँचे थे उनसे बातचीत करनी थी। इस समय बापू न चहलकदमी करना बंद कर रखा है और अधिकांश समय सोन में ही बिताते हैं। परमा रात बापू पूरे १० घण्टे सोये एक घण्टा मालिश कराते समय सोये और तीसरे पहर के समय जाग्र घण्टा सोन रहे। इस प्रकार कुल मिलाकर वह २८ घण्टे में १२ घण्टे सोये। नींद निर्विघ्न आती है। पावा की सूजन कम होने लगी है। पर सूजन पूरी तरह उतरने के बाद भी उ हैं लम्बे असें तक विश्राम लेना होगा। सूजन केवल इस बात की निशानी है कि घोड़े को उसकी सहन करने की सामर्थ्य से अधिक चातुक लगाय गये है। कल दिन भर उनका रक्तचाप १८६/१०४ रहा। आज दोपहर की नींद लेने के बाद रक्तचाप १७२/१०८ निरला। यदि सावधानी से काम लिया गया तो सूजन एक हफ्ते से भी कम में पूरी तरह उतर जायगी। मूत्र में एल्ब्युमिन बिलकुल नहीं है। यद्यपि हृत्प का घटकन घीमी है और हृत्प की मासपशी था न है हृदय का फलना बंद हो गया है। य माने लक्षण अच्छे हैं पर बापू तथा अन्य सभी का सतक रहना जरूरी है।

भवदीया
सुशीला

१४५

मेगाथ

१५ अक्तूबर १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी

क्या आप कृपा करके और शीघ्र ही यह बतायेगे कि क्या जान के लिए पास पोस्ट की जरूरत पड़ती है क्या? मैं तो नहीं समझता कि पासपोस्ट की जरूरत पड़ेगी पर आप ठीक ठीक पता लगाकर सूचना लीजिए क्यारि पृथ्वीसिंह अपने भाइया से मिलने क्या जाना चाहते हैं। शायद गगनविहारी मेहता आपको ठीक ठीक सूचना दे सकेंगे।

देवदास के साथ लेथवेट की बातचीत का आपने क्या अर्थ निकाला? रग

दृग अर्द्धे प्रतीत नहीं हात, पर सम्भव है, उसने फामूले की चर्चा राजाजी से विस्तार के साथ की है।

सप्रेम,
महादेव

१४६

सेगाव आश्रम
(वधा होकर)
१५ अक्टूबर १९३६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका ताजा घटनाजी की जानकारी दू। राजाजी यहाँ अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का बैठक में भाग लेने आये थे। उन्हें वाइसराय ने बुला भेजा था कि वह कहना ठीक होगा कि मद्रास के गवर्नर ने उनसे दिल्ली जाकर वाइसराय से भेंट करन को कहा था। राजाजी का जिक्र था कि क्या कि उन्हें आशंका थी कि लोग-बाग तरह-तरह की जटिल लगावों साथ ही, उन्हें यह भी लग रहा था कि उनका वाइसराय से मिलना जवाहरलाल तथा अन्य लोगों को शायद अच्छा न लग। पर वापू का हम बारे में स्पष्ट मत था कि वह जरूर जायें इसलिए जोर सब भी सहमत हो गये। जब सुनने में आया है कि राजाजी वाइसराय से दो बार मिले और यह सब अन्तर्गत नहीं हुआ होगा। राजाजी आज सध्या का यहाँ वापस आ रहे हैं उनमें सारी बातों का पता लग ही जायेगा। इस बीच आपको वह सब बता दू, जो देवदास और लेखक के बीच गुजरा। देवदास उसे गत ११ सारीख को मेरा पत्र देने गये थे। वह पत्र मैंने वापू के निर्देश में लिखा था और उसमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक और उसके दौरान जवाहरलाल के दृष्टिकोण का व्यास था। मेरा पत्र पढ़ने के बाद लेखक ने कहा ' हा, नही न जना कुछ कहा उससे मुझे भी खुशी हुई थी। लोक रचित क प्रतिकूल बात कहना एक दुर्लभ बात है। फिर दोनों के बीच निम्न प्रकार चर्चा हुई

देवदास उनकी (अर्थात् जवाहरलाल की) सभसे बड़ी विशेषता यही है कि वे दोटूक बात कहते हैं। छल कपट उनका मानस में नहीं है। यही कारण है कि उन्होंने अपने मन की बात कह डाली।

नववट मैं यत्न पत्र महामहिम का जहर दिया जाता। यादव न, महात्मा का पत्र भेजते हैं मैं यत्न महामहिम का दिया देता हूँ।

नववट वारतन म भर पिताजी महामहिम का मुद दिया था न थ, पर यह पत्र भी भगा ही है माना पिताजी न मुद दिया ही। उनका मत समझना जभाय ता था ही य वत्न भर हूण भी थ। हम मरवा आया है सिद्धम मवगा पणिम जन्मा ही निरतया।

नववट आप जाते ही हैं सि कठिनाइया हैं और जब मैं कहना हूँ सि कठिनाइया हैं तो वस्तुस्थिति का पता कर पता कर रहा हूँ। आप हम जगतिगत म मुद नो मोद मरत सि अल्पमयव जागिया और यगो म वेगनी है और य मत्त की भावना स भर हूण है। आप और काप्रेम पटता न सि हम मथर गति म घन रह हैं और काफी दूर तत रही गय हैं, दूसरी ओर अल्पमयव जागिया और यगो का कहना है सि हम बहुत तजो म वदून आग यद गय हैं। मैं अ य मप्रदायि और यगो के वचन का महत्त्व नहीं देता पर काप्रेम और मुगलमान—दाता का ही महत्त्व है। और आप सि दू महागभा तथा डॉ० अम्बरार की भी उपस्था नहीं कर सकते।

नववट हम यात स इ सार नहा दिया जा सकता सि कुछ यगो म अमनोप की भावना काम कर रही है। पर जो व्यापक विश्वास है वह यत्न है सि इन यगो क हित का बहिष्कार सिम सिम भा मुद-न-मुद दिया जा सकता है। ऐसा करना बहुत जरूरी है और हम गौडवाजी स काम सत नी भा का न वात रही है। आप स्वय ही वह चुक हैं सि काप्रेम का तरह स ज पकी सत्यायता करती है।

नववट मैं जानता हूँ सि यह मत्त है और मैं यह भी जानता हूँ सि आम तोर म कुछ दिया भा जा सकता है और सार मामल की मुदर व्याप्या ही जा सकती है। पर यत्न ईमानदारी गहा होगी। ऐसा करना दुनिया की जाग्या म धन सारना भर हागा।

नववट सरकार स एसा का न काम करन का कहन था, जा नमानदारी क बिपरीत नो सवात ही नी उठना। पर हमारा कहना तो यही है सि अल्पमयव जागिया और यगो की समस्या ही एकमात्र समस्या नहीं है। साम्प्रदायिक समस्या क महत्त्व की बात स्वीकार करने के बाद भी कुछ एसी समस्याएँ बाकी रह जाती हैं जिनका सीधा सम्बन्ध स्वय अग्रजा म है। कुछ एसा बात है जिनका सार म अग्रजा का विषय

करना होगा। उह एक न एक दिन रस ममग्या का सामना करना ही होगा। उस मामले से आज भी निपटा जा सकता है। ऐसा कुछ नहीं हाना चाहिए कि युद्ध की समाप्ति के बाद, और जसी कि उम्मीद है प्रजातन्त्र की विजय होगी किसी तरह का पछतावा करने की नीवत आये।

लखवट हा, लेकिन मैं पुन अपनी पहलीवाली बात की तरफ आपका ध्यान खीचना चाहता हूँ। मेरा मतलब मुसलमाना और अन्य अल्पसंख्यक वर्गों से है व कांग्रेस के साथ सहमत नहीं हूँ।

देवदास मैं समझता हूँ कि यह प्राय स्पष्ट है कि मुसलमाना के खिलाफ कांग्रेस की कोई दुरभिसंधि नहीं है। कांग्रेस उह सतुष्ट करन के लिए सब कुछ करने की इच्छुक है। यदि महामहिम का इस बार म समाधान हा जाये तो फिर उनका भाग स्पष्ट हो जाता है। कांग्रेस की किसी के खिलाफ दुरभिसंधि नहीं है।

लखवट आप इस विषय म खातिर जमा रहिए कि जहा तक महामहिम का सम्बन्ध है उनका मन सदह की भावना से सबथा मुक्त है। उहान वस्तुस्थिति को अच्छी तरह से समझ लिया है। कांग्रेसियों का मन साफ है और उनके मन म कोई मन नहीं है इस तथ्य स वस्तुस्थिति म कोई अंतर नहीं पडता क्याकि अल्पसंख्यका क मन मे सदह बना हुआ है। पर महामहिम के सामन सारी स्थिति स्पष्ट है और उह मिस्टर गांधी से भरपूर सहायता मिली है। दोनों एक-दूसरे का पूण रूप से समझते हैं।

देवदास मैं जानता हूँ कि मेरे पिताजी वाङ्मराय के सम्पर्क म आने के बाद से निश्चित हो गये है। अब समस्या का समाधान स्वयं महामहिम के हाथ म है। मैं तो नहीं समझना कि लदन स्वच्छा स कुछ कर मकेगा।

लखवट हा, यह बात भी है। लदन का भी ध्यान म रखना होगा पर जा-कुछ भी है उससे महामहिम और मिस्टर गांधी के एक दूसरे को समझ लन की भावनाभा म कोई अंतर नहीं पडेगा।

आपका,

महात्मा

पुनश्च

मैं यह पत्र बाबला को बोलता गया और उसने सीधा टाइप किया। एक मूखता भर प्रसंग में बापू मुझे कलकत्ता भेजना चाहते हैं। जाना हुआ तो तार दूंगा।

१४७

कलकत्ता

१७ अक्टूबर १९३६

प्रिय महादेवभाइ

मैंने तुम्हें यह नहीं लिखा कि मरी सर मारिस ग्वायर के साथ बातचीत हुई थी। मैंने उनका यहां चाय पी और बातचीत कोई डेढ़ घण्टे तक चली। मैंने समझा कि हिंदू मुस्लिम समस्या और कई एक गौण समस्याएं कठिनाइयां पदा कर रही हैं। फिर भी मेरी यह धारणा है कि कुछ-न कुछ किया जाना सम्भव है और शायद किया भी जाय। पर सारा प्रश्न इस बात का है कि यह कुछ न कुछ जवाहर लालजी को सतुष्ट कर पायगा क्या? मुझे पूरी आशा है कि यदि बापू का सारा फामूला मालूम हो जाय और वह सरकार की स्थिति का जान सकें तो वह उस फामूल में कुछ इस उग का परिवर्तन परिवर्द्धन कर सकेंगे जो कांग्रेस के दक्षिण पश्चिम का ग्राह्य है और शायद ऐसा ही होनवाला भी है।

राजाजी निराशावाद से श्रोतप्राप्त है। पर यदि वह १०० प्रतिशत निराशावादी हैं तो उसमें से कुछ कम करके उसका मूल्यांकन ७५ प्रतिशत करना ठीक रहेगा। मेरी धारणा है कि वह स्वभाव से ही निराशावादी हैं। पर साथ ही यह भी मानना होगा कि कठिनाइयां हैं।

आज प्रातः काल श्री एच० एम० वास ने फोन करके जानना चाहा कि क्या तुम आनेवाले हो। मैंने कहा तुम्हारे जाने के बारे में मैं कुछ नहीं जानता, न यही कि तुम क्यों आ रहे हो, पर अब तुम्हारे पत्र से लगता है कि तुम आना सक्ते हो। तुम्हारा आना एक मूख के काम से होगा या विध के काम से इसका निश्चय तो तुम ही करोगे।

मैं यहाँ काइ एक सप्ताह और हूँ, पर जिस घटी बापू दिल्ली के लिए रवाना होगे मैं भी चल पड़ूँगा।

लथवेट का एक पत्र विडला हाउस में तब पहुँचा जब मैं वहाँ से चल चुका था। उसमें पत्र में कहा था कि उसके लिए महामहिम के साथ मेरी मुलाकात की तिथि जगले हफ्ते (अर्थात् इस हफ्ते) के किसी दिन निश्चित करना सम्भव होगा। मैं उत्तर में कहा है कि महामहिम का इतनी अधिक मुलाकात करनी पड़ रही है कि मैं उनकी सख्ता में बढ़ि करना नहीं चाहता। पर यदि वह समझें कि मैं किसी काम आ सकूँगा, तो तार द्वारा सूचित करें। मैं तो नहीं मम्यता कि मेरी जरूरत होगी।

सप्रेम

धनश्यामदास

१४८

बलकृता

१८ अक्टूबर, १९३६

प्रिय महादेवभाइ

आखिर बकनय प्रकाशित हो ही गया और उस पत्र पर निराशा हुई। मरी तो यही धारणा है कि हम जाग इमी योग्य हैं। जब स्वयं हममें ही इतनी फूट पड़ी हुई है और हममें ही गडबड घोटाला कर रखा है, तो हममें वाइसराय का क्या दाप है कि उन्होंने हम टका सा जवाब दे दिया।

इस बकनय को नेकनीयती से भरा हुआ और बकनीयती से परिपूर्ण—दाना ही रूप में ग्रहण किया जा सकता है। दबलास न पान पर बात की, तो मुझ बताया कि उन्हें बकनय बुरा नहीं लगा, कुल मिलाकर अच्छा ही लगा। पर सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि उसका किस रूप में अध्ययन किया जाय। हम अपनी फूट का ध्यान से देखते हैं तो यही लगता है कि इसमें बहुत सीज के हकदार नहीं हैं। पर यदि दूसरी ओर हम ब्रिटिश उदारता पर ही निगाह डालें, और उनकी दृष्टि का ध्यान करें तो हम दूसरी ही नतीजे पर पहुँचते हैं। पर मैं यही मान रहा हूँ कि क्या बापू के लिए इस बकनय का आधार के रूप में ग्रहण कर उस पर कोई रचनात्मक ढाँचा तैयार करना सम्भव होगा या नहीं। यह

जाहिर है कि बापू का फिर आमंत्रित किया जायगा और हम आशा करनी चाहिए कि परिणाम अच्छा ही होगा। शायद जब कांग्रेसी सरकारें इस्तीफा दे देंगी।

तुम्हारा १५ तारीख का पत्र अभी मिला। वहाँ जाने के लिए पासपोर्ट की जरूरत नहीं है।

सप्रेम,
धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाइ,
सेगाव

१४६

सेगाव
२१ १० ३६

प्रिय धनश्यामदासजी

आपका १८ तारीख का पत्र मिला। मूख का कायभार वहन करने की नीवतनी भी आइ—भगवान की धरणा। बापू मुझे मटापालिटन के पास इसलिए भेजना चाहते थे कि वह वाइसराय पर दबाव डाले। फिर उन्होंने यह तय किया कि उसका बाद नतीजा नहीं निकलेगा।

जापन बापू का कठोर वक्तव्य निश्चित आश्चर्य के साथ पढ़ा होगा—यदि मैं उसके प्रति आपकी प्रतिश्रुति का ठीक ठीक अनुमान लगा पाऊँ तो यही कहना होगा। पर अब अपने मन की बात कह टालने के सिवा बापू के पास और क्या उपाय रह गया था? बापू की धारणा है कि वाइसराय ने अपने वहाँ के कट्टर पक्षियों का मत परिवर्तन करने की शिशा में कुछ करा धरा नहीं। उन्हें लगन लगा है कि उन्होंने वाइसराय को अपना दृष्टिकोण समझाने के जितने प्रयत्न किये सब व्यर्थ सिद्ध हुए। कल टाइम्स आफ इण्डिया का जर्मनी मिस्टर गांधी के नाम पर अपील का प्रकलन जाया था जो पत्र में सम्पादकीय लेख के रूप में प्रकाशित होने की था। गणपाल स्वामी ने बताया कि लेख बम्बई के गवर्नर के साथ परामर्श करने के बाद लिखा गया था। बापू ने उससे लम्बी-सी मुनासबत की यह भेंट वार्ता में समझता हूँ प्रेस एजेंसी द्वारा मक्खन तार द्वारा भेज ही गई होगी और जो यही पत्र पढ़ने के पहले ही आप पढ़ चुके होंगे। इस मुनासबत के दौरान बापू

न जा सुचारु दिया है उमका समुचित उत्तर देना सरकार के हाथ में है। यह वापू क रचनामक प्रयत्ना की उच्च कोटि का नमूना है जो कि तीथल म दी गई मुला कात जमा महत्वपूर्ण सिद्ध हा सकता है। पर बल मुशी ने दिल्ली स फोन करके मुप बताया कि जब जगतीश ने वाइसराय का यह सुझाव दिया कि वह वापू स मुताकान करें, तो वाइसराय न उत्तर में कहा "कोई लाभ नहीं होगा। उह यहा घमीकर लाने की क्या जरूरत ह जब मैं इसस अधिक् कुछ देन म असमथ ह ?

बस, राज इतना ही बताना है।

सप्रेम,
महादेव

१५०

बलकृता

२३ अक्टूबर १९३६

प्रिय महादेवभाई

भगी राय में काथकारिणी का प्रस्ताव अत्यन्त मयादापूर्ण रहा। अब वाइसराय क्या करेगे, सा तो मैं नहीं जानता। पर यह विश्वास करने को तथीयत नहीं करती कि पिछत दो वर्षों में जो कुछ किया गया ह उस पर इस तरह अचानक पानी फेर दिया जायगा। सब कुछ इन पर निर्भर करता है कि समस्या के साथ किस ढंग स निबन्धा जाता है। मुये आशा है कि हम अत में सफल होंगे। पर यह आशा मात्र है। दयन म तो स्थिति घोर निराशापूर्ण लगती है।

आशा है वापू का स्वास्थ्य ठीक रहता होगा।

सप्रेम
धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेगाव

१५१

२६ नवम्बर, १९३६

प्रिय महादेवभाई

इस पत्र के साथ एक कटिंग भेज रहा हूँ। इसमें जवाहरलालजी की स्पीच का उल्लेख है जिसमें यहाँ कुछ चीजें पढ़ाई गई हैं। उन्होंने बाइसराय के इस कथन की कि कुछ बड़े बड़े पत्र लिखे जायेंगे और सरकार खतर का सामना करने का तयार है जिस डग से चर्चा की है उसमें हम विशेष सहायता नहीं मिलनेवाली।

आज मैंने नथवट से दर तक बातचीत की। वह उसका विवरण बाइसराय को अवश्य देगा। उससे बाद यदि बाइसराय न चाहे तो मैं उनसे भी मिलूँगा। यदि कोई लिखने लायक खबर आती है तो तुम्हें फिर लिखूँगा।

सप्रेम,

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई दमाई

बधा

१५२

३० नवम्बर, १९३६

प्रिय महादेवभाई

जभी तब भरी बिभी शीपस्थ व्यक्ति से भेंट नहीं हो पाई पर इस समय मुझे स्थिति कुछ इस प्रकार मालूम होती है

१ बाइसराय मतभेद दूर करने के बहुत इच्छुक हैं और चाहते हैं कि कांग्रेस पुनः पद ग्रहण करे पर उन्हें ऐसी कोई घोषणा करने की अनुमति नहीं है जो मुसलमानों को नाराज कर दे। हमारे त्याग पत्र देने के बाद से पत्र और बंगाल के मन्त्रिमन्त्रालय ने बहुत जवनापूण रवैया अतिचार कर रखा है। वाणिज्य मंत्री रामस्वामी मुन्निवार हाल ही में क्लेशता में थे। उनमें शूराधीय जूट मिल

मालिका न डेपुटेशन ले जाकर भेंट की। उ हान इस बात की शिकायत की कि मंत्रिया द्वारा निरंतर शापण के फलस्वरूप व्यापार बहुत डावाडोल हो गया है। वाणिज्य मंत्री उ ह किसी प्रकार की सात्वना देन मे असमथ था। पजाब और बंगाल के मन्त्रिमडला ने भारत सरकार को बतता दिया है कि मुस्लिम लीग ने निर्देश क पालनस्वरूप वे अपने त्याग पत्र अपनी जवा म तयार रखे हुए हैं। कांग्रेसी मन्त्रिमडलो क त्याग पत्र के कारण यहा सरकार उ ह नाराज करने की तयार नही है।

२ ब्रिटेन की क्विनट की यह धारणा लगती है कि वाइसराय न भारतीय नरेशा को नाराज कर ही रखा है अब वह मुसलमानो को नाराज करने का नया जोखिम तब तक उठान का तयार नहा है जब तक कांग्रेस को मोमा के भीतर रह कर सतुष्ट करने की गारटी न रह। वसी स्थिति म सरकार एसा काई बडा कदम नहा उठायेगी जिससे मुसलमान उसके खिलाफ हो जायें। सरकार इस बात को नही भुला सकती है कि आमपास के देशो की सारी शक्तिया मुसलमान शक्तिया हैं, और ब्रिटेन इस समय लडाई मे फसा हुआ है ही।

३ मुसलमान हम लोग के साथ किसी भी स्थिति म तब तक कोई समझौता नही करेगे, जब तक उ ह प्रशासनिक मामलो म किसी भी कदम का रद्द करने का अधिकार न ले दिया जाये। जिना तथा अय लोगा की शिकायत है कि जवाहर लाल न उनके साथ समझौते की बात चलाने की कभी कोशिश नही की। अय उन लोगा ने यह खूब अपनाया है कि यदि जवाहरलाल जिना से मिलना चाह ता व्यक्तिगत रूप से भले ही मिल सकते हैं पर यदि हम लोग सचमुच समझौते के इच्छुक हैं, ता कांग्रेस औपचारिक रूप से मुस्लिम लीग का यह लिखकर स्वीकार करे कि भारतीय मुसलमानो की एकमात्र प्रतिनिधि सस्था मुस्लिम लीग ही है। समझौते का आधार ५० ५० हो गया अत समझौते की कोई सम्भावना नही है। सर जगदीशप्रसाद और रामरवामी अस लोगा की धारणा है कि यदि हम लोग पद ग्रहण किये रहते ता भुमनमान लोग हमारे साथ समझौता करन के लिए अपदाकृत अधिक तत्पर दिखाइ दते। अब जहा तक मुसलमाना का संबंध ह समझौते की काई आशा नही है। इन लोगा को अब भी यही आशा है कि किसी प्रकार गांधीजी मतभेद दूर कर सोंगे और प्राता म पुन कांग्रेसी मन्त्रिमडल बन जायेंगे। यहां सभी उच्च पन्स्थ हिन्दुओ का विश्वास ह कि जब तक हम पुन सत्तारूढ रही हगि मुसलमान लोग समझौता नही करेगे। सर जगदीशप्रसाद की यह निश्चित धारणा है कि यदि हम लोग वाइसराय की प्रबन्धकारिणा परिष्क म शरीर हो जायें, ता भारत क आठ प्राता म और केन्द्र म एक प्रकार से कांग्रेसी

सरकारें हो जायेंगी। मैं तो समझता हूँ कि उक्त इम वचन में कुछ सार है। मैं यह सब तुम्हें केवल यह यत्नान के लिए लिख रहा हूँ कि हुवा का रख बिधर है।

सप्रम

धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बर्धा

१५३

८ दिसम्बर १९३६

प्रिय महादेवभाई

यहां कुछ ऐसी धारणा व्याप्त है—बाइसराय का उसका कोई प्रत्यक्ष लगाव भले ही न हो। उनका म्य हमारे प्रतिकूल तो है ही—कि दक्षिणपथी और वामपथी मिलकर यह खेल खेल रहे हैं। दक्षिणपथी पटुचत हैं और किसी-न किसी प्रकार के मंत्री सूचक सक्त की याचना करते हैं और जब ऐसा कोई सकेत किया जाता है तो उस ठुकरा दिया जाता है। इम बात का ह्ययगम नहीं किया जा रहा है कि सारा दोष सम्राट की सरकार का है जो जा जाय दिन घोषणा करती है पर यह पता लगान का यत्न नहीं करती कि उसकी घोषणा स्वीकारी जायगी या नहीं। पर वस्तुस्थिति यह है कि गान्धिराय सम्राट की सरकार की निगाह में गिर गये हैं। उह दो बार मुह की खानी पड़ी और जब वह कोई नयी घोषणा करते हुए घबराते हैं। औपनिवेशिक दजों की परिभाषावाला बापू का हरिजन में प्रकाशित लेख भी यहां गलत समझा गया यद्यपि वह गलत नहीं समझा जाना चाहिए था। सयुक्त प्रांत के मरकारी जमले की जवाहरलालजी ने जो आलोचना की है उसमें जमल में काफी चिडचिडाहट फन गई है। एक तरह से बाइसराय ने अपनी पराजय के आगे घुटने टेक दिए हैं और एमा लगता है कि प्रतिक्रियावादी तत्त्वा की बन आई है।

बाइसराय ने बापू को लख की आलोचना करते हुए कहा कि इस प्रकार उनके हाथा का कमजोर किया जा रहा है। वह उदाम से थे और उनकी धारणा है कि जब कुछ करना शेष नहीं रह गया है, क्योंकि वह कुछ भी करेंगे कांग्रेस उस

अवश्य नामजूर कर दगी। उनके बचनानुसार वह अपनी हार मानना तो कुछ इस लिए बाध्य नहीं हुए हैं कि वह कुछ करना नहीं चाहते बल्कि इसलिए कि कांग्रेस का समाधान एक असम्भव कार्य है। जोर मुगलमाना का तब जा बठिगाई है वह भी सबकुछ की बठिगाई है। इसलिए मैं आज लेखक से फिर मिला और उसके साथ दर तक बातें की। इस बातचीत का यह तो परिणाम हुआ ही कि उसने वस्तुस्थिति के दूसरे पहलू पर भी नजर दोढ़ाई। मैंने कहा कि वह सारी चीजाँ को एक गलत दृष्टिकोण से देख रहा है, और ऐसी स्थिति की कल्पना कर रहा है जिसे अस्तित्व ही नहीं है। इस बातचीत का ठास परिणाम यह हुआ है कि यदि राजाजी न मेरी महायत्ना की तो मैं और राजाजी एक फार्मूला तयार करेंगे, जिसमें अपना जिम्मेदारी पर पश बरगा और लेखक भी मेरे इस कार्य में फामूल का रचनात्मक विश्लेषण करके समीक्षक आवश्यक हर फेर सुझायगा। यदि हम दोनों किसी सट्टमति पर पहुँच पाय तो मेरा अगला कदम यह होगा कि उन फामूल का मसौदा बापू को दिखाऊँ। यदि जरूरत हुई तो तुम्हें कल्पना आना हागा क्योंकि वधा जाने और वधा से वापस लौटने में काफी समय बर्बाद होगा। कम से कम प्रारम्भ में तो ऐसा होगा ही।

मैं तुमसे फोन पर इस बारे में बात कर ही चुका हूँ। सौभाग्य में मैं राजाजी भी यहाँ पहुँच रहे हैं। उनका जागमन बड़ा सहायक होगा।

सप्रम,
धनश्यामदास

श्री महाशिवभार्द्द दमाई
वर्धा

१५४

वर्धा जाते हुए माग में
२५ १२ १९३६

प्रिय धनश्यामदासजी

मैं पिछले दो हफ्तों में बराबर एक स्थान से दूसरे स्थान को आता जाता रहा हूँ और मुझे घर की कोई खोज पथर नहीं है। मैं मद्रास में जिस किसी से मिला उसने यही कहा कि वाइसराय बापू से सम्बन्ध में मँट करेंगे। लेकिन मैं नहीं जानता

कि इसमें कितनी सचाई है, पर यदि इस खबर में कुछ सार है तो आपको अवश्य जानकारी होगी। क्या नेवदास अभी वही हैं ?

जमनादाम गांधी ने जा वच्छराज कम्पनी तथा अब शुगर सिंगीकेट द्वारा विनापित स्थान के लिए अर्जी दी है। वह मगनलाल गांधी का भाई है, योग्य है और इमानदार है। यदि उम्मीदवार के चुनाव में आपको बालन का अधिकार हो तो मेरा जाग्रह है कि उसके प्राथम पत्र पर विचार किया जाय। देवदाम आपको उसके चार में कुछ अधिक बता सकेंगे।

आपका
महादेव

पुनरुच

हमारे मित्रों की फिरहाज कोई सम्भावना है क्या ?

१५५

२८ दिसम्बर १९३६

प्रिय महादेवभाई

मैं तुम्हें फोन पर यह बताना भूल गया कि वाइसराय भवन में श्री साउथवे में जमानत मिलना हा गया। उन्होंने तुम्हें याद किया है। ऐसा मालम पड़ता है कि तुम्हारी उनके साथ प्रगाट मत्री हा गयी है। उन्होंने कहा कि जब जगली बार जब रुभी तुम दिल्ली आओ ता मैं उनकी और तुम्हारी मेंट का बन्दावस्त कर दू। मैंने उन्हें बता दिया है कि बापू जनवरी में दिल्ली आनेवाले हैं तब तुम भी उनके साथ जाओगे।

सप्रेम
धनश्यामदास

श्री महादेवभाई देमाई
वर्धा

१५६

२८ दिसम्बर १९३६

प्रिय महाशयभाई

जमनाशम गांधी के बारे में प्रजमोहन में पढ़ाया। इस मामले में उनकी कुछ चालनी है। पर यदि मैं भूल नहीं कर रहा हूँ तो मुझे याद पड़ता है कि मौलाना अबुल कलाम आजाद ने एक मुसलमान सज्जन की ज़ारदार सिफारिश की है और यदि प्रजमोहन काई फसला पर चुके हैं तो कोई ताज्जुब नहीं।

तुमने पूछा है कि निकट भविष्य में हमारे मिलन को कोई सम्भावना है। मैं तो आशा लगाया करता हूँ कि दिल्ली में भेंट होगी पर यह तो समय ही बताएगा कि यह आशा सार्वभौमिक होगी या नहीं। मैं गांधीजी के तो मिला ही साथ ही वाइसराय के परिवार के जय मदरसा से भी मरी भेंट हुई। मुझे चारों ओर से बताया गया है कि वाइसराय बड़े उदार हैं क्योंकि उन्हें बड़ी गिराशा हुई है। लेडी लिनलिथगो ने मुझे बताया कि वाइसराय यह मुस्पल दण्ड रहे थे कि उनके शासन काल में एक नये भारत का जन्म होगा, और अभी तक उनकी यह आकांक्षा पूरी नहीं हुई है। यदि इस बार वापू दिल्ली पधारें तो धरना देकर बैठ जाएँ और जब तक सारा मामला तय न हो जाए टलने का नाम न लें। या तो पूरी तरह समझौता हो जाये या यदि नहीं हो, तो अराधिका 'न' हो। मुझे इस बाबत कोई सन्देह नहीं है कि जब उभय पक्ष समझौते की कामना करते हैं, तो समझौता होना नहीं सकता।

क्या मेरा यह कथन तुम्हें ठीक लगता कि जब तक हम जबानों जमा खच करते रहें समझौते की शर्तों का हमने छुआ तक नहीं।

उस दिन डॉ० प्रफुल्ल घोष मिले थे वह यह थे कि वापू ने उनसे कहा है कि वह मुझसे वही कि मैं उह पिलानी जाने क उनके वचन से मुक्त कर दूँ क्याकि वह चीज को पकाने के लिए समय चाहते हैं। मैंने उनसे कह दिया कि जब वापू इतने महत्त्वपूर्ण कार्य में सलग्न हैं, तो मैं उनका समय कदापि नहीं लेना चाहूँगा।

सप्रेम,
धनश्यामदास

पुनश्च

यह पत्र लिख चुकने के बाद मैंने प्रजमोहन से आशावादी भाषी के बारे में बात की। उनका कहना है कि पिन्हाण उपयुक्त स्थान की पूर्ति कराने का कोई इरादा नहीं है। तो भी उस शान जमनादास की सिफारिश करने का क्या किया है।

१५७

२९ दिसम्बर १९३६

प्रिय महादेवभाइ

आजकल मैं बड़े लाना से मुलाकात कर रहा हूँ क्योंकि इस समय बलवत्ता में कई बड़े बड़े लोग जाये चुके हैं। विसंगे क्या-क्या बातें हुईं इसका विवरण नहीं दे रहा हूँ। पर इस बातानाप के पत्रम्बरूप में निम्नलिखित मुद्दों का संक्षेप रूप निश्चित धारणा प्रदान है

१. कन्स्टिट्यूशनल विधान की शर्तों का औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त हो और युद्ध की समाप्ति के तुरन्त बाद उपबन्ध होगा।
२. युद्ध के दौरान औपनिवेशिक स्वराज्य का दर्जा अधिनाधिक मात्रा में जमाने में लाया जायेगा। ऐसा परामशदायिनी समिति के माध्यम से तथा वाइसरॉय की कबिनेट के विस्तार के द्वारा किया जायेगा और अंत में उसकी पूर्ति हमारी सलाह के अनुसार आवश्यक सशोधन के बाद सच की स्थापना करने होगी।
३. साम्प्रदायिक तनाव हमारे मांग का सबसे बड़ा रास्ता है पर इस समस्या का हल युक्त प्रांत बिहार, बंगाल तथा पंजाब में मिली-जुली सरकारों की स्थापना के द्वारा सम्भव है। एसी मिली जुली सरकारों का आधार बहुमतवादी पार्टियों की निर्वाचनकालीन घोषणा पर महामति द्वारा निर्धारित होगा जिसके पश्चात् विभिन्न सम्प्रदाय अपने अपने अक्षलास अपने प्रतिनिधि चुनेंगे। जहाँ अल्पसंख्यक सम्प्रदाय की जनसंख्या १० प्रतिशत से कम होगी वहाँ मिली जुली सरकार बनाने की जरूरत नहीं है। जब हम पंजाब और उ्गान में मुख्यतः अपने ही प्रोग्राम पर मिली जुली

सरकारें बनान में समय हगि, तो हम युक्त प्रात जीर बिहार में भी वसा ही आचरण करने से नही बिदवना चाहिए। यदि ऐसी मिली-जुली सरकारें विशद विचार विमश के द्वारा सम्भव प्रतीत हो तो फिर आशका की कोई बात नही है।

- ४ युद्ध के दौरान भारतीय नरेशो की समस्या और देश की रक्षा की समस्या का समुचित हल खोज निकालना होगा। पर एक बार वाइमराय की कैबिनेट में जा पहुचने के बाद इन प्रश्ना का निबटारा सहज हो जायेगा क्योकि तब बानावरण बिलकुल बदला हुआ रहेगा। और यदि युद्ध के दौरान ही इन दोना प्रश्ना का निबटारा हमारे और सम्राट की सरकार के बीच सम्भव हो जाय तो हम ब्यावहारिक रूप में एक पूण स्वतन्त्र राष्ट्र जसा आचरण करने लगेंगे।

क्या तुम्हारा यह खयाल नही है कि मैं ऊपर जो चित्र उपस्थित किया है उसके द्वारा हमारी आकाशा की यथेष्ट मात्रा में पूर्ति हो जाती है ? हम इतना ही पचा सकेंगे इसमें अधिक नही। और क्या तुम्हारी भी यह धारणा नही है कि यह प्रणाली अपनाते से 'स्वराज्य' एक स्वयंमिद्ध विषय बन जायेगा ? और यदि ऐसी बात हो तो हम सपप का बातावरण क्यो पैदा करें ?

कुछ समय बाद बापू को दिल्ली आने का निमन्त्रण मिलेगा ऐसा लगता है। मैं समझता हू कि मैंने जो सकेत दिए हैं उन पर समझौता सम्भव है। बंगाल में वसी मिली जुली सरकार बनाने की इच्छा अभी से निखाई देने लगी है। यदि बंगाल में ऐसी सरकार बनी तो वह अय प्रातो के लिए एक उदाहरण होगी जिसका वे अनुकरण करेंगे। पर चूकि बाग्रस पल त्याग चुकी है इसलिए ऐमा उदाहरण पश करने में दुविधा है। यदि बंगाल में मिली-जुली सरकार बनी तो उससे सभी का एकसमान हित साधन होगा क्योकि वर्तमान सरकार अकेले मुस्लिम लीग को छोडकर और सबको एकसमान अप्रिय है।

आशा है तुम यह पत्र बापू को पढकर सुना दोगे।

सप्रेम,
घनश्यामदास

मगनवादी
वर्धा (मध्य प्रान्त)

प्रिय घनश्यामदासजी

आशा है आपको बापू क स्वास्थ्य-समाचार नियमित रूप में मिलते रहते होंगे। आपका तार मिल गया था। उत्तर में बापू ने तार भिजवाया था कि डा० गिल्डर और डॉ० जीवराज ने परीक्षा कर ली है पर विधान को आने का अधिकार है जब चाह आ जाए। आशा है आपको वह तार मिल गया होगा। उसके बाद से कल टा० क्लीमेट चेस्टरमन एम० डी० एम० आर० सी० पी० ने बापू की परीक्षा की। उन्होंने उनकी हालत बम्बई के डॉक्टरों द्वारा बताई गई हालत से अधिक मतापजनक पायी। आज का बुलेटिन माथ जा रहा है। पर अस्थायी रूप से लक्षणों के समन से सात्वता मिलनेवाली नहीं है क्योंकि यदि लक्षण इसी प्रकार उभरते दबते रहें तो इसका अर्थ यही है कि मूल अग्नि ज्यो की-रूपा है। स्वयं बापू को यह सब जीवन के एक नये दौर का प्रारम्भ जैसा लगता है और वह उसके अनुरूप अपनी दैनिक जीवन चर्या में हेर फेर करने की बात सोच रहे हैं। उन्हें अपनी प्रवृत्ति में काट छाट करके सरूप पर चलना होगा और मौन व्रत का पालन करना होगा। बसा हरन में वह क्या तक मफल हूँगे जिससे उनका स्वास्थ्य सुधर सके यह हम सब लोगों के सहयोग पर निर्भर करता है। मैं यह बात आपको इसलिए बता रहा हूँ कि आप जैसे सगठन शक्तिवाले पुरुष के लिए इस दिशा में ठोस कदम सुझाना सम्भव है।

आपने जिस पत्र की नकल मागी है वह राजकुमारी से प्राप्त होने की दर है तुरत भेज लूँगा।

आपसे बात करत हुए लेखकेट ने वाइसराय के जिस पत्र का हवाला दिया था वह उस दिन महा पहुंच गया था। उत्तर में बापू ने लिखा था कि 'यदि पारस्परिक सम्पर्क के द्वारा मेरा अज्ञान दूर करना सम्भव हो तो मैं तिल्ली धान को तयार हूँ भले ही बसा करने में मेरा स्वास्थ्य साय न दे।'

बापू की यह धारणा उत्तरोत्तर दृढ़ होती जा रही है कि राजकोट जैसे मामले में जहां नैतिक प्रश्न उठ खड़ा होता है झुकने का सवाल ही नहीं है। वहां ठाकुर

साहब की स्थिति ब्रिटिश सरकार की बदौलत कायम है। जत उ'होने जो वचन दिया था उसके पालन की जिम्मेदारी सरकार पर आती है। यदि हम रियासतो म गुडागर्दी खत्म न कर सके, तथा किसी नरेश को वचन भंग करन से ऊपरी दवाव डलवाकर न रोक सके, तब ता भारतीय शासन विधान का किमी दिन अत ही हुभा समझना चाहिए। वसी स्थिति म हम निरुपाय होकर हाथ पर हाथ धरे बठे रहेंगे, और यह सब कुछ होता रहगा।

कल में कांग्रेस के प्रधान को लेन स्टेशन पर गया था। वापसी के समय हम लोग जमनालालजी के बगले पर रहे। ठीक उसी समय राजकोट से टूक कॉल आई। बा और मणिवहन बोल रही थी। ठाकुर साहब ने कहलवाया था कि उहें खबर मिली है कि बापू सकून बीमार हैं, इसतिए बा के बर्धा लौटने म कोई रुकावट नहीं है। बा और मणिवहन इस खबर की पुगिट करना चाहती थी, इमीलिए शायद उह राजकोट लाया गया था। मैंने उह बापू के स्वास्थ्य के पूरे हालचाल बता दिये और सतक कर दिया कि वे इन चालवाजियो म न जावें। दोना बडी प्रसन्न हुइ। बा ने कहा कि स्वय उनके बारे मे किसी को चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।

भवदीय
प्यारेलाल

१५६

स्वास्थ्य बुलटिन

प्रकाशनाथ नदी

कल म पावा की सूजन फिर कुछ बड गई है। रक्तचाप भी ऊचा जा रहा है। पिछले तान दिनों स बापू ने मौन-व्रत नहीं लिया है, और मुलाकातियो का जमघट है। शारीरिक विश्राम और स्वल्प भोजन जारी है। कल सध्या का रक्तचाप १६०/११० था। आज दोपहर की नीद के बाद १७६/१०४ पर आ गया।

मुगीला नयर

१६०

स्वास्थ्य बुलेटिन

सगाव, वर्धा

बापू का स्वास्थ्य बराबर सुधर रहा है। आज पावो की सूजन बिलकुल उतर गई। आज उनका वजन १०७ पौंड था—अर्थात् गत रविवार से सवा दो पौंड कम।

भोजन में ८ औंस दूध ६७ सतरे ४ औंस ग्लूकोज ६ औंस हरी सब्जी।

शारीरिक विथाम एक मप्ताह और जारी रहेगा जोर यदि सब-कुछ ठीक ठीक चलता रहा तो अगले हफ्त से घूमना शुरू कर देंगे।

हृत्प की ध्वनि पहने की अपक्षा अधिक अच्छी है। आज प्रात काल ५ बजे रक्तचाप १८०/१०४ था।

सुशीला नयर

१६१

तार

सेगाव वर्धा

प्रमुख सदस्य

राजकोट

तार के लिए घयवाद। भूख हडताल के वारे में आप खामोश हैं। अत्याचार सम्बन्धी एक लम्बा तार फिर आया है। विश्वास न करन में कठिनाई हो रही है। ठाकुर साहब के वचन भग तथा दिना दिन बन्दे हुए आतक्वाद की कहानियों से मुझे बड़ी व्यथा हुई है और मैं स्वयं सग्राम में कूट पडने को प्रेरित हो रहा हूँ। ठाकुर साहब अथवा परामशदायिनी समिति को व्यस्त करने का कोई इरादा नहीं

है। एक ऐसे बद्ध पुस्तक के चीत्वार की ओर ध्यान दीजिए, जो राजकोट का हितपी हाने का दावा करता है।

—गांधी

१६२

गांधीजी से 'यूगाक टाइम्स' के सवाददाता
श्री स्टील की मुलाकात का अप्रकाशित विवरण

प्रश्न स्वतंत्रता से आपका क्या अभिप्राय है ?

उत्तर स्वतंत्रता से मेरा आशय यही है कि भारत से ब्रिटिश राज्य पूर्णरूप से हट जाए। दोना स्वतंत्र देशों के बीच साझेदारी का नाता कायम हो सकता है। यह नाता औपनिवेशिक तरीके से भिन्न ही हो यह भी कोई जरूरी नहीं है। हा, यह अवश्य है कि चूंकि भारत अपनी संस्कृति और अपने राजनैतिक गठन में भिन्न है, इसलिए इस नाते का औपनिवेशिक दर्जे का नाम देना शायद उचित नहीं होगा। पर यह नाम ब्रिटिश शासन व्यवस्था की तरह ही लचकदार है और यदि इस नाम को खींच-तानकर भारत की स्थिति के अनुकूल ढांचे में ढाला जा सके और भारत और इंग्लड के बीच सम्मानप्रद समझौता हो जाए तो मैं शब्दों को लेकर बखेड़ा खड़ा नहीं करूंगा। यदि उस सम्मानजनक समझौते को ब्रिटिश राजनेता औपनिवेशिक दर्जे के नाम से जानना चाहें, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

प्रश्न कांग्रेस में बंस और उनके दल जैसे तत्व भी मौजूद हैं जो ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर रहकर पूर्ण स्वतंत्रता की कामना करते हैं।

उत्तर यह केवन शब्दों के हेर फेर का प्रश्न है। हम भिन्न भिन्न शब्द भले ही काम में लायें पर हम सबका उद्देश्य एक ही है। यदि मैं सुभाष बाबू से पूछू कि 'साझेदारी सम्भाव्य हो तो उस जाप किस नाम से पुकारेंगे ?' तो वह उत्तर में कहेंगे कि अंग्रेजा में अपनी बात मनवाना उतना सहज नहीं है, जितना मैं समझे बठा हू। सुभाष बाबू इस विचार का प्रतिपादन करना चाहते हैं कि भारत के लिए एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपना

अस्तित्व बनाये रखना सम्भव है। इसके जवाब में मैं बहूंगा कि जिम भापा का प्रयोग मैं करता हूँ वही मरी अभिरचि के अधिष अनुकूल सिद्ध होगी। वैसी भापा के द्वारा मैं यह भी दिखा सकूंगा कि मानव-स्वभाव सबल एकसमान है।

प्रश्न क्या इस समय सघ व्यवस्था के बार में आपसे और अधिकारिया के बीच कोई बातचीत चल रही है ?

उत्तर ऐसी कोई बात नहीं है। वतमान वाइसराय वसी मिट्टी के नहीं बने हैं।

प्रश्न इससे आपका क्या अभिप्राय है ?

उत्तर वतमान वाइसराय निजी तीर से और गुप्त रूप से काम करन में विश्वास नहीं रखत। वह अपने सार काड भेज पर रख देंगे। कम से-कम मेरी यही धारणा है। मरी धारणा है कि उनका यह विश्वास है कि सघ अस्तित्व में कदापि नहीं आयेगा क्योंकि काप्रेस मुसलमान और राजा नवाब सब समान रूप से उसके खिलाफ है। मरी धारणा बन रही है कि ब्रिटिश राजनेता सघ-व्यवस्था को भारत पर जबदस्ती नहीं लादेंगे। वे सभी दना को सत्पुष्ट करना चाहेंगे। कम से-कम मुझे तो ऐसी ही आशा है। यदि सघ-व्यवस्था भारत पर नादी गयी तो यह एक अवल दज की दु खद घटना होगी। सघीय ढाचे को विरोध और असतोप के दौरान जम देना सम्भव नहीं है। यदि उसका स्वागत करने को कोई भी दल या बग तैयार नहीं पाया जाएगा तो उते बलात लादना परले सिरे का अविवेक पूण काय होगा।

प्रश्न विक्ल्प क्या है ?

उत्तर या तो कोई ऐसी चीज दी जाए जिसे सब स्वीकार करें, या फिर वह तीनों दला में स दो को स्वाकाय हो।

प्रश्न पर आप मिस्टर बोस की इस बात ने महमत नहा है कि चुनौती दना फलप्रत् होगा ?

उत्तर मिस्टर बोस में और मुझमें इसी आधारभूत बात को लेकर मतभेद हैं। वस चुनौती देना कोई बुरी चीज नहीं है पर उसके पीछे प्रभावोत्पाक समथन रहना आवश्यक है। हिंसात्मक समथन के आज तो को लक्षण दिखाई नहीं दे रहे हैं। यदि सारे दल आपस में समझौता कर लें तो अहिंसात्मक शक्ति को प्रभावी बनाना कठिन नहीं होगा।

प्रश्न क्या हिंदू मुस्लिम प्रश्न को लेकर स्थिति दिना दिन खराब होती जा रही है ?

उत्तर लगता तो ऐसा ही है। पर मैं यह आशा लगाये बठा हू कि एक न एक दिन दोनों को एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना है। हम एक सूत्र में बाध रखनवाले हित इतने व्यापक और इतने अधिक हैं कि दोनों जातियाँ के नेताओं को एक दूसरे के साथ समझौता करना ही होगा। हम एक दूसरे से इतने दूर हो गये प्रतीत होते हैं, उसका एकमात्र कारण यही है कि सबमें जागृति की लहर आ गई है। इस जागृति के परिणामस्वरूप दोनों की विभिन्नतायाँ, परस्पर विरोधी भावनायाँ और ईर्ष्या को बल मिल रहा है और नित्य नयी माँगें आ रही हैं जिससे पहले से अधिक खराब स्थिति हुई है। पर मेरी आशा तो यही है कि इस अराजकता के मातावरण से ही व्यवस्था का उदय होगा।

प्रश्न क्या मुस्लिम लीग और कांग्रेस के मतभेदों की खाई का पाटा जाना सम्भव है ?

उत्तर इन मतभेदों में कोई सार नहीं है।

प्रश्न आपकी यह धारणा है कि चुनौती देने का समय नहीं आया है तो अब आपकी राय में अगला कदम क्या होना चाहिए ?

उत्तर हमारा अगला कदम यही होना चाहिए कि सबसे पहले हम अपना घर सभालें। जहाँ हमने यह किया जोर विभिन्न तत्त्वों को घेर-बटोरकर एक स्थान पर एकत्र किया कि हम चुनौती देने की स्थिति में आ जायेंगे।

प्रश्न आप अमरीका से किस ढंग की महायत्ना की अपेक्षा रखते हैं ?

उत्तर मैं अमरीका से बहुत कुछ आशा करता हूँ। यह बहुत कुछ ज्ञानयुक्त और मत्तोपूण आलोचना के रूप में होना चाहिए यदि आलोचना ही करनी है तो फिलहाल तो मैं यही देख रहा हूँ कि या तो हमारे प्रयत्नों की भूरि भूरि प्रशंसा छपती है या फिर ज्ञान शून्य आलोचनाएँ प्रकाशित होती हैं। आपके देश के पत्रों में वहाँ की जनता का हमारे द्वार में ठीक ठीक जानकारी देने की दिशा में अब तक जो कुछ किया है, वह नहीं के बराबर है।

प्रश्न आपने स्वामीर निणय का परित्याग कर दिया है। क्या इसका यह मतलब है कि अब उस दिशा में कोई प्रयत्न नहीं किया जायगा ?

उत्तर इसके विपरीत, अपनी गलती का भार उतार फेंकने के बाद अब मैं एक पत्नी की स्वच्छन्दता की अनुभूति कर रहा हूँ। देशी रियासतों की स्थिति में सुधार लाने के लिए आवश्यक प्रयत्नों को अपने हाथ में लेने में मैं पूर्ण रूप से अपने को स्वतंत्र पा रहा हूँ।

सेगाव, वर्धा

प्रिय जगाथा

आखिर तुम्हारे निजी पत्र की नकल मिल ही गई। इसमें सारी बात खुलासा कर दी गई है। तुम जब आन का सोचा आ सकती हो। भगश्यामदास को तुम्हारी समुद्र-यात्रा के बारे में लिख रहा है। तुम्हारे मित्रों ने तुम्हारे बारे में मुझे लिखा, इसके लिए तुम्हें उन पर कुपित कदापि नहीं होना चाहिए। पर अब जब कि तुमने मुझे यह आश्वासन दे दिया है कि तुम अपनी जरूरतों के बारे में मेरी जानकारी बनाव रखोगी तो मैं निश्चित हो गया हूँ। मैं तुम्हारी सारी जरूरतें पूरी न कर पाऊँ यह दूसरी बात है।

वहाँ तुम लोग का बड़ी चिन्ता के दौर से गुजरना पड़ रहा है। तुम्हारे सम्पर्कों का फल अच्छा ही निकलेगा इसमें संदेह की गुंजाइश नहीं है। वहाँ जो कुछ हो रहा है उसका विवरण भेजोगी ऐसी आशा है।

यहाँ सब सबकी बातचीत से मुझे कोई चिन्ता नहीं है। पर राजनतिक वद्वियों की रिहाई का प्रश्न ने मुझे अवश्य व्यग्र कर रखा है। मैं अभी तक अधिकांशों को अपनी इस दलील की साधकता का विश्वास नहीं दिला सके हैं कि वद्वियों की रिहाई से शांति स्थापना के काम में सहायता मिलेगी। वद्वियों ने अहिंसा-व्रत-पालन करने की जो घोषणा की है उसका ही स्वीकारन की जरूरत नहीं है पर मैं उनकी घोषणा का उपयोग उनके वचन के रूप में अवश्य कर सकता हूँ। अधिकारी लोग सहमे हुए हैं। पर मैं धैर्यपूर्वक अपने काम में लगा हुआ हूँ और मैंने यह आशा नहीं गवाई है कि उन्हें रिहा करने में बहुत अधिक देर नहीं लगाई जायेगी।

कायभार जितना कुछ है उसे देखते हुए मुझे स्वस्थ ही समझना चाहिए।

सस्नेह,
बापू

